डा. अब्राहम जार्ज ग्रियर्सन

कृत

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास

किशोरीलाल गुप्त

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास

डा० सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन

बी. ए., बी. सी. एस.

कृत

द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ़ हिन्दुस्तान

का

स-टिप्पण अनुवाद

किशोरीलाल गुप्त

प्रकाशक : ओम्प्रकाश बेरी
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पो० बॉ० नं० ७०, वाराणसी

प्रथम संस्करण—११००
नवम्बर, १९५७
मूल्य : नौ रुपये मात्र

पुस्तकालय

मुद्रक : ज्योतिष प्रकाश प्रेस
भैरवनाथ, वाराणसी

श्री ग्रियर्सन जी,

आपने विदेशी होते हुए भी हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास लिखा। हम हिन्दी भाषा-भाषी इसके लिए आपके कृतज्ञ हैं, यह इसीसे स्पष्ट है कि आपने जो कुछ लिखा, हमने उसे प्रायः उसी रूप में स्वीकार कर लिया और आपके 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ हिन्दुस्तान' ने बाद में लिखे जानेवाले हिन्दी साहित्य के इतिहासों के रूपरंग को सँवारा। आपके अँगरेजों के लिए अँगरेजी में लिखे हिन्दी साहित्य के प्रथम इतिहास का हिन्दीवालों के लिए यह हिन्दी अनुवाद मैं सटिप्पण प्रस्तुत कर रहा हूँ। अनुवाद तो आपका ही है, उसे क्या समर्पित करूँ?—हाँ, टिप्पणियाँ मेरी हैं, उन्हें स्वीकार करें।

—किशोरीलाल गुप्त

सूची

वक्तव्य	...	...	१
अन्तर्दर्शन	...	...	७
प्रस्तावना	...	...	४१
भूमिका	...	...	४५
१. चारणकाल	...	...	५६
२. पंद्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण	...	...	६६
परिशिष्ट	...	...	७७
३. मलिक मुहम्मद जायसी की प्रेम कविता		...	८१
परिशिष्ट	...	...	८५
४. व्रजका कृष्ण सम्प्रदाय	...	...	८६
परिशिष्ट	...	...	१०८
५. मुगल दरबार	...	...	११४
६. तुलसीदास	...	...	१२४
परिशिष्ट			
(१) तुलसीदास का पाठ	...	...	१३६
(२) अन्य राम-कथाएँ	...	...	१४४
(३) पंचायत-नामा	...	...	१४५
७. रीति-काव्य	....	...	१५१
८ तुलसीदास के अन्य परवर्ती	...	...	
भाग १. धार्मिक कवि	...	...	१६५
भाग २. अन्य कवि	...	...	१६६
परिशिष्ट	...	...	१८८
९. अठारहवीं शताब्दी	...	...	१९५
भाग १. धार्मिक कवि	...	...	१९६
भाग २. अन्य कवि	...	...	१९८
परिशिष्ट	...	...	२१३
१०. कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान	...	...	२२९
प्रथम भाग : बुन्देलखंड और बघेलखंड		...	२३२
परिशिष्ट	...	..	२४०

द्वितीय भाग : बनारस
परिशिष्ट
तृतीय भाग : अवध २५७
परिशिष्ट २६२
चतुर्थ भाग : विविध २६५
परिशिष्ट २७८
११. महारानी विक्टोरिया के शासन में हिन्दुस्तान ... २८४
अनुक्रमणिकाएँ
१. व्यक्ति नाम ३२७
२. ग्रंथ नाम ३६१
३. स्थान नाम ३७४

—:०:—

वक्तव्य

शिवसिंह सरोज में दिए हुए कवियों के तथ्य एवं तिथियों की जाँच मैं इधर पिछले दो-तीन वर्षों से करता रहा हूँ। इस सिलसिले में मुझे हिन्दी साहित्य के प्रथम इतिहास ग्रियर्सन कृत 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान' को भी देख लेने की आवश्यकता प्रतीत हुई। बड़ी कठिनाई से इसकी एक प्रति काशी में कुछ दिनों के लिए मिली, जिसका उपयोग मैं वहीं रहकर कर सकता था। मैंने सं० २०१२ की अमावस्या की छुट्टियों में (१३–२० नवम्बर १९५६) इस ग्रंथ का सदुपयोग किया। भाई मंगलप्रसाद पांडेय के यहाँ तो मैं काशी आने पर सदैव टिकता ही हूँ, इस बार भी टिका। सामान्यतया अन्य अवसरों पर परिवार के अन्य सदस्यों से घुलमिल कर रहता, पढ़ता, लिखता, सोता हूँ; पर इस बार मेरे लिए अलग कमरे की व्यवस्था हुई, जहाँ मैं अपना अध्ययन सुचारु रूप से एवं निर्विघ्न चला सकूँ, जहाँ अकेला रहूँ, भीतर से किवाड़ बन्द कर लूँ और बच्चों की भीड़-भाड़ जहाँ न पहुँच सके। सरोज सर्वेक्षण के सिलसिले में मुझे इस ग्रंथ की बार-बार आवश्यकता पड़ेगी, मैं इस बात को जानता था। पर ग्रंथ चन्द ही दिनों के लिए मिला था, इसे मैं लगातार दो वर्षों तक अपने पास नहीं रख सकता था। ग्रन्थ बहुत बड़ा नहीं है, यह देखते ही मेरे मन में बात उठी कि इसे ज्यों का त्यों उतार लिया जाय और हस्तलिखित प्रति का सदुपयोग सर्वेक्षण में किया जाय। इस दृष्टि से सबसे पहले इसका पहला अध्याय मैंने उतार भी लिया। ऐसा करते समय मुझे लगा कि इस ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद करना कोई कठिन नहीं। अतः प्रतिलिपि करने की अपेक्षा मैंने अनुवाद कर डालना ही समीचीन समझा।

मैंने ग्रन्थ को पहले आदि से अन्त तक पढ़कर अनुवाद किया हो, ऐसा नहीं है। एक-एक पंक्ति पढ़ता जाता था, तुरन्त उसका हिन्दी अनुवाद करता जाता था। यह अनुवाद-कार्य एक सिलसिले से नहीं हुआ। छोटे-छोटे अध्यायों का अनुवाद पहले हुआ, बड़ों का बाद में।

अनुवाद कार्य कुल आठ दिनों में समाप्त हुआ। वे बड़े ही व्यस्त दिन थे। प्रतिदिन लगभग चार बजे उठता और अनुवाद करने बैठ जाता। यह कार्य लगभग छह साढ़े-छह तक चलता। तदुपरांत नित्य कार्य से निवृत्त हो भाई मंगलाप्रसाद के साथ मणिकर्णिका घाट पर गंगा स्नान करने जाता। कभी विश्वनाथ जी का भी दर्शन कर लेता, कभी नहीं। लौटकर वापस आते-आते आठ बज जाते। आते ही कुछ नाश्ता करके फिर काम पर जुट जाता। लगभग बारह बजे तक अनुवाद कार्य करता। तदुपरांत भोजन करने के लिए निकलता। भोजनोपरान्त पुनः अनुवाद कार्य प्रारम्भ होता। सन्ध्या होते-होते फिर घर से निकलता। दशाश्वमेध घाट की ओर चल पड़ता। रास्ते में परिचित मित्रों से आकस्मिक-मिलन लाभ करता, पावन गंगाजल से पूत होता हुआ एक घण्टे के भीतर पुनः लौट आता और अपने काम पर जुट जाता। रात में लगभग नौ-दस बजे पुनः भोजनार्थ निकलता। वापस आने पर 'आज' उलटता-पलटता सो जाता। यदि रात में कभी नींद खुल जाती और बुलाने पर भी न आती, तो उस अनिद्रा का भी सदुपयोग मैं करता था। ऐसी ही एक रात में मैंने ब्रजभाषा में ११ कवित्त-सवैये लिखे थे, जिन्हें आजमगढ़ के मेरे मित्रों ने बहुत पसन्द किया था। ऐसे थे अनुवाद के वे व्यस्त आठ दिन। पर 'वे कुछ दिन कितने सुन्दर थे।'

'सरोज सर्वेक्षण' से इसी जुलाई में अवकाश मिला है। २७ अगस्त से प्रस्तुत ग्रन्थ में हाथ लगाया। अनुवाद तैयार ही था। टिप्पणियाँ लगाने भर की देर थी। मैंने इस ग्रंथ की प्रेस-प्रति उसी दिन से प्रस्तुत करनी प्रारम्भ की। अनुवाद को जहाँ-तहाँ सँभाल दिया है। कवियों के सम्बन्ध में ग्रियर्सन के जो कथन असत्य सिद्ध हो चुके हैं, उनके विवरण के ठीक नीचे दूसरे

अनुच्छेद में 'टि०' के अन्तर्गत बहुत संक्षेप में उनका उल्लेख कर दिया गया है। ये टिप्पणियाँ मुख्यतया 'सरोज सर्वेक्षण' के आधार पर प्रस्तुत की गई हैं। 'सरोज सर्वेक्षण' में सारे प्रमाण विस्तार से देखे जा सकते हैं। इस ग्रन्थ में तो 'सरोज-सर्वेक्षण' के निर्णय ही टिप्पणी रूप में दिए जा सके हैं। यदि मूल ग्रंथ का अनुवाद मात्र प्रस्तुत किया जाता, तो उससे लाभ की अपेक्षा हानि होने की आशंका थी। अपनी ओर से मैंने पाद-टिप्पणियाँ नहीं के बराबर दी हैं, जहाँ ऐसा किया है, उल्लेख कर दिया है।

मूल ग्रन्थ से मैंने प्रस्तुत ग्रन्थ में कुछ अन्तर कर दिया है। प्रस्तावना एवं भूमिका के अनन्तर मूल ग्रंथ में शुद्धि-पत्र एवं परिशिष्ट और इसी के अंतर्गत तुलसीदास लिखित पंचायतनामे का रोमन प्रत्यक्षरीकरण एवं उसका अँगरेजी अनुवाद था। यह शुद्धि-पत्र देने की आवश्यकता नहीं समझी गई है। इस परिशिष्ट में ग्रियर्सन ने ग्रंथ में वर्णित कुछ कवियों के सम्बन्ध में कतिपय नवीन सूचनाएँ संकलित कर दी थीं। ये सूचनाएँ उन्हें उस समय मिलीं, जब ग्रन्थ यंत्रस्थ हो चुका था। अतः ये उचित स्थान पर नहीं जोड़ी जा सकीं। मैंने इस ग्रन्थ में इन सूचनाओं को प्रसंग-प्राप्त कवियों के विवरण में 'पुनश्च' लिखकर नए अनुच्छेद के रूप में संलग्न कर दिया है। तुलसीदास लिखित पंचायतनामे को भी छठें अध्याय के अन्त में तीसरे परिशिष्ट के रूप में दे दिया है। इस प्रकार तुलसी एवं रामायण सम्बन्धी सारी सामग्री एक साथ आ गई है। यहाँ पंचायतनामा ज्यों का त्यों दिया गया है, उसका रोमन प्रत्यक्षरीकरण नहीं; इसका अँगरेजी अनुवाद ज्यों का त्यों दिया जा रहा है, उसका हिन्दी अनुवाद नहीं किया जा रहा है। मूल ग्रंथ में अनुक्रमणिकाएँ आंग्ल वर्णानुक्रम से हैं, मैंने उन्हें इस ग्रंथ में नागरी वर्णमाला के क्रम से प्रस्तुत किया है। इनमें जो अशुद्धियाँ थीं, उन्हें मैंने यों ही ठीक कर दिया है, टिप्पणी लगाकर अनावश्यक विस्तार नहीं किया है। कवि नामानुक्रमणिका के साथ, सरोज का ग्रियर्सन पर आभार प्रदर्शित करने के लिए, मैंने सरोज वर्णित संगती कवि-सूची एवं सरोज-संवत् भी दे दिया है। कवियों का विवरण देने के पहले ग्रियर्सन ने यह सूचना दी

है कि उनकी कविता किस संग्रह में मिलती है। संग्रह का संक्षिप्त नाम दिया है, मैंने संग्रह का पूर्ण नाम दिया है। मूल ग्रंथ में कवियों का विवरण देने के पहले, कवि-नाम जिस प्रकार नागरी लिपि में छपा है, इस अनुवाद में भी उक्त स्थान पर नाम की वही वर्तनी रखी गई है, उसमें अन्तर नहीं किया गया है। अन्यत्र रूप बदल दिया गया है।

ग्रन्थ को भली भाँति समझने की दृष्टि से इस वक्तव्य के अनन्तर अन्तर्दर्शन दिया गया हैं। इसमें ग्रियर्सन की हिन्दी सेवाओं का उल्लेख हुआ है; हिन्दी साहित्य के इस प्रथम इतिहास की रूपरेखा का परिचय दिया गया है; इसके आधार-ग्रन्थों एवं लेखन-पद्धति पर विचार हुआ है; यह शिवसिंह सरोज का कितना आभारी है, इसका भी आँकड़ों के सहित निर्देश किया गया है; ग्रियर्सन के इस ग्रंथ का महत्व भी दिखाया गया है और यह अनुवाद क्यों आवश्यक है, इस पर भी प्रकाश डाला गया है। इस अन्तर्दर्शन के उपरान्त मूल ग्रन्थ का स-टिप्पण अनुवाद है।

'तासी' ने अपने ग्रंथ को 'हिन्दुई और हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास' कहा है। इसके हिन्दी से सम्बन्धित अंश का अनुवाद डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने 'हिंदुई साहित्य का इतिहास' नाम से प्रस्तुत किया है, जो हिन्दुस्तानी अकेडेमी इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ है। यह ग्रंथ मूल का अनुवाद मात्र है। दिए हुए विवरण कहाँ तक ठीक हैं, इस पर विचार नहीं किया गया है, अन्यथा ग्रंथ की उपयोगिता और बढ़ जाती। तासी ने अपने ग्रन्थ को यद्यपि इतिहास कहा है, पर यह इतिहास नहीं है, क्योंकि इसमें न तो कवियों का विवरण काल-क्रमानुसार दिया गया है, न काल-विभाग किया गया है; और जब काल-विभाग ही नहीं है, तब काल-प्रवृत्ति-निरूपण की आशा कैसे की जा सकती है। इस ग्रन्थ में वर्णानुक्रम से कवि प्रस्तुत किए गए हैं। यही दशा सरोज की भी है। यह भी वर्णानुक्रम से कवियों का संक्षिप्त परिचय, अधिकांश में नामोल्लेख मात्र, देता है और इतिहास संज्ञा का अधिकारी नहीं हो सकता। सरोजकार ने इसे तासी के समान अत्यंत महत्वाकांक्षा पूर्ण इतिहास

संज्ञा दी भी नहीं है। जिन लोगों ने तासी एवं सरोज को नहीं देखा है, प्रमाद-वश वे इन्हें हिदी साहित्य का प्रथम अथवा द्वितीय इतिहास समझ बैठे हैं। तासी और शिवसिंह दोनों को इतिहास पद्धति का ज्ञान था, इसमें संदेह नहीं; यह स्वयं उनके ग्रंथों की भूमिकाओं से स्पष्ट है, पर अनिवार्य कारणों से वे अपने ग्रंथों को इतिहास का रूप नहीं दे सके।

ग्रियर्सन का 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान' हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है, जिसका हिन्दी अनुवाद इस ग्रंथ के रूप में पहली बार प्रस्तुत किया जा रहा है। ग्रंथ के नाम से यह आभास नहीं होता कि यह हिन्दी साहित्य का इतिहास है, अतः ग्रियर्सन को प्रस्तावना में इसकी पूरी व्याख्या करनी पड़ी है। इसीलिए पर्याप्त विचार के पश्चात् मैंने ग्रंथ का नाम 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' रखा है, जो मूल नाम का शब्दशः अनुवाद नहीं है।

मूल ग्रंथ अब मिलता नहीं। इसीलिए इसका अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। प्रश्न हो सकता है कि जब हिन्दी साहित्य के अनेक अच्छे इतिहास प्रस्तुत किए जा चुके हैं, फिर इस अनुवाद की क्या आवश्यकता थी, जब कि ग्रंथ अद्यतन है भी नहीं। इसके संबंध में निवेदन है कि इस अनुवाद की उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता। यह हिन्दी साहित्य के इतिहास की नींव का वह पत्थर है, जिस पर आचार्य शुक्ल ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास का भव्य-भवन निर्मित किया। इस इतिहास-ग्रंथ का ऐतिहासिक महत्व है। इसने प्रारंभिक खोज रिपोर्टों एवं मिश्रबंधु विनोद को पूर्णतः प्रभावित किया है। शुक्ल जी के इतिहास के प्रकाश में आने के पूर्व एक युग था, जब यह ग्रंथ अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जाता था। उसकी महत्ता अब यद्यपि अक्षुण्ण नहीं रह गई है, पर उसका महत्व तो है ही।

ग्रियर्सन ने सरोज के 'उ०' का अर्थ 'उत्पन्न' करके सरोज में दिए संवतों को जन्मकाल माना है। सर्वेक्षण से जिन संवतों की जाँच संभव हो सकी है, उनमें से अधिकांश उपस्थिति-संवत सिद्ध हुए हैं। जिन संवतों की जाँच हो चुकी है, उनके संबंध में इस ग्रंथ में निर्णयात्मक टिप्पणियाँ दे दी गई हैं, शेष को

यों ही छोड़ दिया गया है। सरोजकार का 'उ०' से अभिप्राय 'उपस्थित' है, यह मैंने 'सरोज सर्वेक्षण' की भूमिका में पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिया हैं। अतः जिन संवतों की जाँच संभव नहीं हो सकी है, उन्हें तब तक उपस्थिति-काल ही समझना चाहिए, जब तक वे अन्यथा न सिद्ध हो जायँ।

ग्रियर्सन का जीवन-परिचय बकलैण्ड कृत 'डिक्शनरी आफ़ इंडियन बायोग्राफ़ी' (१९०६ ई०) और श्री श्यामसुंदर दास लिखित 'हिंदी कोविद रत्नमाला' प्रथम भाग (१९०९ ई०) के आधार पर दिया गया है। उनके साहित्य का परिचय उक्त रत्नमाला, डा० धीरेन्द्रवर्मा कृत हिन्दी भाषा का इतिहास, डा० माताप्रसाद गुप्त कृत तुलसीदास और नागरी प्रचारिणी सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय की अँगरेजी ग्रंथ-सूची के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। जिन ग्रंथों एवं मित्रों से इस ग्रंथ के प्रणयन में सहायता मिली है, मैं उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन करना अपना धर्म समझता हूँ।

किशोरीलाल गुप्त
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
शिबली कालेज, आजमगढ़

आश्विन नवरात्र,
२०१४

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास—

डा० सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
बी. ए., बी. सी. एस.

अंतर्दर्शन

ग्रियर्सन का जीवन-परिचय

डाक्टर ग्रियर्सन का जन्म आयरलैंड के डब्लिन परगने में, राथफर्नहम घराने में ७ जनवरी १८५१ ई० को हुआ था। इनका पूरा नाम जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन था। यही नाम इनके पिता का भी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर एवं सेंट बी० के स्कूल में हुई। १७ वर्ष की वय में इन्होंने उच्च शिक्षा के लिए डबलिन के प्रसिद्ध ट्रिनिटी कालेज में प्रवेश किया। यहाँ से इन्होंने बी० ए० किया। इन्होंने राबर्ट एटकिंसन से संस्कृत एवं मीर औलाद अली से हिन्दुस्तानी सीखी। इन भारतीय भाषाओं में अच्छी योग्यता प्राप्ति के लिए इन्हें विश्वविद्यालय ने पुरस्कृत किया था।

१८७१ ई० में ग्रियर्सन ने भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा पास की। १८७३ ई० में यह हिन्दुस्तान आए। यहाँ यह बंगाल के जैसोर जिले में नियुक्त हुए। कुछ ही दिनों बाद इनकी बदली अकाल के महकमे में होगई और यह बिहार की दुर्भिक्ष पीड़ित प्रजा की रक्षा के लिए भेजे गए। अब इनकी नियुक्ति तिरहुत में हुई। यहाँ की भाषा इन्हें बँगला और हिन्दी से भिन्न जान पड़ी। इन्होंने समझा कि जो यूरोपियन भारत सरकार की सेवा में आते हैं, वे प्रायः बँगला या हिन्दुस्तानी जानते हैं, पर केवल इन दो भाषाओं से काम नहीं चल सकता। यहीं इन्हें इस भाषा के कोष और व्याकरण की आवश्यकता प्रतीत हुई।

अकाल समाप्त होने पर ग्रियर्सन ने हबड़ा, मुर्शिदाबाद और रंगपुर आदि जिलों में काम किया। इसी समय आप बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी में सम्मिलित हुए और रंगपुर की विचित्र भाषा का व्याकरण बनाया। इन्होंने उक्त भाषा के नमूने भी प्रकाशित किए। सन १८७७ में आप दरभंगा जिले में मधुबनी के सब डिविज़नल आफ़िसर हुए। यहाँ यह ३ वर्ष रहे। इसी बीच इन्होंने देशी पंडितों की सहायता से मैथिली भाषा का एक सांगोपांग व्याकरण बनाया। यहाँ मिलने के लिए आने वाले प्रत्येक पंडित को आप एक जोड़ा धोती और दो रुपया नक़द बिदाई में देते थे।

१८८० ई० में ग्रियर्सन अस्वस्थ हो गए। अतः यह विलायत वापस चले गए। वहाँ इन्होंने अपना विवाह किया और उसी वर्ष पुनः भारत लौट

आए। इनकी पत्नी भी साथ ही आईं। इस साल यह बिहार में स्कूलों के इंस्पेक्टर भी रहे। इस बार सरकार ने इन्हें कैथी के टाइप ढलवाने का कार्य सौंपा। कैथी के अक्षर महाजनी मुड़िया अक्षरों के समन भोंड़े थे, आपने उन्हें नागरी के समान सुंदर और सुडाल बना दिया।

तदनंतर यह पटना के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट हुए। यहाँ इन्होंने 'पीज़ैंट लाइफ़ इन बिहार' नामक ग्रंथ रचा। यहीं इन्होंने सात भागों में बिहारी की बोलियों का व्याकरण प्रस्तुत किया। इसे बंगाल सरकार ने प्रकाशित किया था और इससे इन्हें अच्छी ख्याति मिली थी।

१८८५ ई० में छुट्टी लेकर यह जर्मनी गए। यहाँ आप कई बड़ी-बड़ी सभाओं में सम्मिलित हुए। आस्ट्रिया के वियना नगर में १८८६ ई० में यूरोपीय प्राच्य विद्या विशारदों की अन्तर्राष्ट्रीय सभा का अधिवेशन हुआ था। ग्रियर्सन इसमें भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुए थे। यहां आपने 'हिन्दुस्तान का मध्यकालीन भाषा साहित्य, विशेषकर तुलसी' शीर्षक निबंध पढ़ा था। इस निबंध की तैयारी में आपने जो टिप्पणियाँ प्रस्तुत की थीं, उन्हींके आधार पर दो वर्ष बाद इन्होंने हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास लिखा, जिसका नाम 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान' रखा।

१८८७ ई० में ग्रियर्सन छुट्टी से लौटे और गया जिले में कलेक्टर और मैजिस्ट्रेट नियुक्त हुए। यहां भी आपने गया जिले का संक्षिप्त विवरण लिख डाला। इसी समय इन्होंने रुडाल्फ़ हार्नली के साथ बिहारी भाषा का कोष बनाना प्रारम्भ किया, पर यह पूर्ण न हो सका। आपने इसी समय के आस-पास अशोक के शिलालेखों पर एक लेख लिखा था।

१८९२ ई० में इनकी बदली गया से हबड़ा के लिए हुई। यहाँ यह १८९६ ई० तक रहे। यहाँ इन्होंने बिहारी सतसई, पद्मावत, भाषाभूषण और तुलसीकृत रामायण का संपादन किया और पंडित बाल मुकुंद कश्मीरी की सहायता से सरकार के लिए भारत की भाषाओं पर एक निबन्ध लिखा।

१८९६ ई० में यह बिहार में अफ़ीम विभाग में एजेण्ट हुए। १८९८ ई० में भाषा सर्वेक्षण के लिए इनकी नियुक्ति शिमला में हुई। १९०२ ई० में ये विलायत चले गए, सिविल सर्विस से स्तीफा दे दिया और फिर भारत नहीं लौटे तथा वहीं बैठे बैठे भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण करते रहे।

ग्रियर्सन अत्यन्त सज्जन एवं सच्चरित्र थे। इन्हें भारत सरकार ने १८९४ ई० में सी० आई० ई० की उपाधि दी थी। १८९४ ई० में इन्हें हाले (Halle) विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० की एवं १९०२ में ट्रिनिटी

कालेज डबलिन से डी० लिट० की उपाधियाँ मिली थीं। इन्हें 'सर' का खिताब भी मिला हुआ था। इनका सारा साहित्यिक कार्य हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं से संबंधित है। पर यह सबका सब अँगरेजी में है और अँगरेजों के लिए लिखा गया है। इस हिन्दी प्रेमी अंग्रेज का देहावसान ९० वर्ष की वय में ८ मार्च १९४१ ई० को हुआ। इनका साहित्यिक कार्य १९३२ ई० के आसपास तक चलता रहा।

ग्रियर्सन की साहित्य सेवा

ग्रियर्सन के सर्वाधिक महत्व के तीन कार्य हैं, एक है भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण, दूसरा है हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान' और तीसरा कार्य है तुलसीदास का वैज्ञानिक अध्ययन। ग्रियर्सन की इन तीनों रचनाओं ने हिन्दी साहित्य को बहुत प्रभावित किया है।

ग्रियर्सन ने भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षण का कार्य उन्नीसवीं शती के अन्तिम दशक के मध्य में प्रारम्भ किया था। यह ग्रन्थ जितना विशालकाय है, उतना ही महत्वपूर्ण भी। यह ग्यारह बड़ी बड़ी जिल्दों में है। कई जिल्दें तो कई कई भागों में विभक्त हैं। यह विशाल ग्रन्थ भारतीय सरकार के केंद्रीय प्रकाशन विभाग की कलकत्ता शाख के द्वारा प्रकाशित हुआ था। इसमें भारतीय भाषाओं, उप-भाषाओं और बोलियों के उदाहरण संकलित हैं और इन्हींके आधार पर उनका संक्षिप्त व्याकरण दिया गया है। इसकी जिल्द ६ में पूर्वी हिन्दी और जिल्द ९ भाग १ में पश्चिमी हिन्दी का विवेचन है। हिन्दी की विभिन्न बोलियों का ठीक ठीक रूप एवं सीमा निर्धारण सबसे पहले इन्हीं जिल्दों में मिलता है। प्रत्येक जिल्द में भाषा-सीमा-निर्धारक उपयोगी मानचित्र भी दिए गए हैं। इस ग्रंथ की विभिन्न जिल्दों की तालिका नीचे दी जा रही है :—

जिल्द १—भाग १—भूमिका—भारतीय आर्य भाषाओं के इतिहास का सबसे प्रामाणिक और क्रमबद्ध वर्णन—प्रकाशनकाल		१९२९ ई०
भाग २—तुलनात्मक शब्दावली—	,,	१९२८ ई०
जिल्द २—मांखमेर, स्यामी और चीनी भाषा परिवार—	,,	१९०४ ई०
जिल्द ३—भाग १—सामान्य भूमिका और तिब्बती, हिमालयी और उत्तरी असम भाषा परिवार	,,	१९०९ ई०
भाग २—बोडो, नागा, कुचीन भाषा परिवार	,,	१९०३ ई०
भाग ३—कुचीन और बर्मा भाषा परिवार	,,	१९०४ ई०

जिल्द ४—मुंडा और द्रविड़ भाषाएँ " १९०६ ई०
जिल्द ५—भाग १—बंगाली और असमिया भाषाएँ " १९०३ ई०
भाग २—बिहारी और उड़िया भाषाएँ " १९०३ ई०
जिल्द ६—पूर्वी हिंदी " १९०४ ई०
जिल्द ७—मराठी भाषा " १९०५ ई०
जिल्द ८—भाग १—सिंधी और लहँदा " १९१९ ई०
भाग २—दरद और पैशाची " १९१९ ई०
जिल्द ९—भाग १—पश्चिमी हिंदी और पंजाबी " १९१६ ई०
भाग २—राजस्थानी और गुजराती " १९०८ ई०
भाग ३—भीली " १९०७ ई०
भाग ४—पहाड़ी और गूजरी " १९१६ ई०
जिल्द १०—ईरानी परिवार " १९२१ ई०
जिल्द ११—जिप्सी परिवार " १९२२ ई०

भाषा संबंधी इनकी अन्य रचनाएँ ये हैं:—

१-२. उक्त भाषा सर्वेक्षण के दो पूरक (supplement)—इनमें से द्वितीय का प्रकाशन १९२७ ई० में हुआ था।

३. भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण (मध्यप्रदेश)—भाषाओं की प्रथम सामान्य सूची— प्रकाशन काल १८९७ ई०

४. भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण (असम)—भाषाओं की प्रथम सूची प्रकाशनकाल १८९८ ई०

५. भारतीय भाषाएँ, १९०१ की जनगणना का एक अंश— प्रकाशनकाल १९०३ ई०

६. भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण और १९११ की जन गणना— प्रकाशनकाल १९१९ ई०

७. रंगपुर की विचित्र भाषा का व्याकरण—१८७७ ई० के आसपास विरचित।

८. मैथिली भाषा का सांगोपांग व्याकरण—१८७७–८० के बीच विरचित।

९. बिहारी की बोलियों के सात व्याकरण—१८८३ से १८८७ के बीच प्रकाशित।

१०. कश्मीरी भाषा का कोश भाग १, प्रकाशन काल १९१६ ई०
" भाग २, " १९२४ ई०
" भाग ३, " १९२९ ई०
" भाग ४, " १९३२ ई०

इस कोश की रचना में मुकुन्दराम शास्त्री या बाल मुकुन्द कश्मीरी का भी हाथ है। रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल ने यह कोष प्रकाशित किया था।

११. बिहारी भाषा का तुलनात्मक शब्द कोश—यह ग्रन्थ डाक्टर रुडाल्फ़ हार्नली के सहयोग से लिखा गया था। इसकी रचना 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान' के पहले हुई थी। ग्रियर्सन ने इस ग्रन्थ की प्रस्तावना में इस कोश का उल्लेख किया है। इसका रचनाकाल १८८७ ई० है।

इन ग्रन्थों के अतिरिक्त इण्डियन ऐंटिक्वेरी और रायल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में भी इनके भाषा सम्बन्धी लेख यदा-कदा प्रकाशित होते रहते थे। इनके भाषा सम्बन्धी कुछ निबन्धों की सूची यह है :—

(१) भारतीय भाषाएँ : भाषीय सर्वेक्षण—(व्याख्यान)।
(२) भारतीय आर्य भाषाओं में अनुनासिकता।
(३) आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में प्रत्यय।
(४) आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का ध्वनि-विज्ञान (Phonology)
(५) प्रमुख राजस्थानी बोलियों पर टिप्पणी।
(६) कैथी लिपि प्रवेशिका।

ग्रियर्सन ने 'सूर सूर, तुलसी शशी' की मान्य परम्परा को अपनी तुलसी की आलोचनाओं के द्वारा बदल दिया। उन्हें सूर की अपेक्षा तुलसी ईसाई मत के अधिक निकट जान पड़े। अपने पड़ोसियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसका निदर्शन उन्हें तुलसी में दिखाई पड़ा। तुलसी द्वारा चित्रित मानस के चरित्रों पर, उनकी मर्यादावादिता पर, वे मुग्ध हो गए और उनका विश्वास था कि यूरोपीय पाठक इन कारणों से सूर की अपेक्षा तुलसी को अधिक पसन्द करेगा। तुलसी पर ग्रियर्सन ने कोई बड़ा ग्रंथ नहीं लिखा। भिन्न भिन्न समयों पर उन्होंने उनपर जो फुटकर निबंध लिखे, उनसे उन्होंने तुलसी के मनोवैज्ञानिक अध्ययन को अग्रसर किया। तुलसी पर लिखे इनके निबंधों की सूची नीचे दी जा रही है :—

(१) हिंन्दुस्तान का मध्यकालीन भाषा साहित्य, विशेष रूप से तुलसीदास—१८८६ ई० में वियना की प्राच्य विद्या विशारदों की गोष्ठी में यह निबन्ध पढ़ा गया था।

(२) द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान—यह ग्रंथ १८८८ ई० में रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल के जर्नल में पहले प्रकाशित हुआ। फिर १८८९ ई० में पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। इसके छठें

अध्याय में तुलसी का ही विवरण है। यह विवरण वियना में पढ़े गए निबंध का प्रायः पुनर्मुद्रित रूप है।

(३) नोट्स आन तुलसीदास—१८९३ ई० की इंडियन ऐंटिक्वेरी में प्रकाशित। इस निबंध में तीन नोट हैं। पहले में कवि सम्बन्धी तिथियों की ज्योतिष के अनुसार गणना है। दूसरे में कवि की कृतियों पर विचार है, जिसमें इनके ६ छोटे और ६ बड़े ग्रंथों को प्रामाणिक माना गया है। शेष को तुलसी की रचना नहीं स्वीकार किया गया है। तीसरे नोट में कवि सम्बन्धी परम्पराओं एवं जनश्रुतियों पर विचार है।

(४) तुलसीदास के कवित्त रामायण की रचना तिथि—१८९८ ई० में रायल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में प्रकाशित। इसमें कवितावली में वर्णित महामारी को प्लेग बताया गया है।

(५) तुलसीदास और बनारस में प्लेग विषयक दूसरा नोट—उसी वर्ष, उसी पत्रिका में प्रकाशित। इसमें सुधाकर द्विवेदी के इस अनुमान का उल्लेख है कि तुलसीदास की बाहु पीड़ा प्लेग की गिल्टी थी और इसी से उनकी मृत्यु हुई।

(६) तुलसीदास : कवि और सुधारक—रायल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में १९०३ ई० में प्रकाशित। तुलसी की मृत्यु प्लेग से हुई, इस विचार को लेखक ने यहाँ परित्याग दिया है।

(७) आधुनिक हिन्दू धर्म और नेस्टोरियनों के प्रति उसका ऋण—इसमें दिखाया गया है कि भारतीय भक्तिमार्ग ईसाइयों का ऋणी है। यह निबन्ध १९०७ ई० में उक्त जर्नल में ही छपा था।

(८) तुलसीदास—१९१२ ई० में प्रकाशित इंपीरियल गजेटियर के लिए तुलसी पर लिखित निबंध।

(९) क्या तुलसीदास कृत रामायण अनुवाद ग्रंथ है?—९९१३ ई० में उक्त जर्नल में प्रकाशित। इस समय बलिया से एक संस्कृत रामायण प्रकाशित हुआ था, जिसको रामचरितमानस का मूल कहा गया था। इस निबन्ध में ग्रियर्सन ने इसका खंडन किया है।

(१०) तुलसीदास—१९२१ ई० में प्रकाशित 'इनसाइक्लोपीडिया आफ़ रेलिजन ऐंड एथिक्स' के अंतर्गत यह लेख है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रियर्सन प्रायः ४० वर्षों तक तुलसी पर बराबर लिखते रहे और तुलसी सम्बन्धी आलोचना का पथ-निर्देश करते रहे।

ग्रियर्सन के कुछ अन्य साहित्यिक निबंध ये हैं—

(१) नरैनिया और भागवत
(२) अद्भुत रामायण
(३) एक पुराना कुमायूँनी व्यंग (Satire)
(४) भक्तमाल की झाँकी
(५) आल्हा विवाह के गीत

इनके अतिरिक्त ग्रियर्सन ने बिहार के किसानों पर एक ग्रंथ 'पीज़ेंट लाइफ़ इन बिहार' नाम से प्रस्तुत किया था।

'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान'

परिचय

सर जार्ज ए० ग्रियर्सन रचित 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आफ़ हिन्दुस्तान' हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। आश्चर्य है कि हमारे साहित्य के इतिहास का प्रणयन एक विदेशी विद्वान ने, एक विदेशी भाषा में और वह भी विदेशियों के ही उपयोग के लिये किया। १८८६ ई० में ग्रियर्सन ने प्राच्य विद्या विशारदों की अन्तर्राष्ट्रीय सभा के वियना अधिवेशन में, हिन्दुस्तान (हिन्दी-भाषा-भाषी-प्रदेश) के मध्यकालीन भाषा-साहित्य और तुलसी पर एक लेख पढ़ा था। इसकी तैयारी के लिये इन्होंने कई वर्षों में समस्त हिन्दी-साहित्य पर टिप्पणियाँ प्रस्तुत की थीं, जिनके एक अंश का ही उपयोग उक्त लेख में हो सका था। यह लेख विशेष ध्यान पूर्वक सुना गया था। अतः लेखक को जो प्रोत्साहन मिला, उससे प्रेरित होकर उसने अपनी सारी टिप्पणियों को सुव्यवस्थित कर यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया, जो सर्वप्रथम १८८८ ई० के 'रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल' के जर्नल प्रथम भाग में प्रकाशित हुआ! तदुपरान्त १८८९ ई० में उसी सोसाइटी की ओर से स्वतन्त्र ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ का पुनर्मुद्रण नहीं हुआ और अब यह दुष्प्राप्य हो गया है। पुस्तकालयों में यत्र-तत्र इसकी प्रतियाँ हैं, जो पढ़ने के लिये भी नहीं दी जातीं।

'प्रस्तावना' में लेखक ने अत्यन्त विनम्रता पूर्वक स्वीकार किया है कि उसका ग्रंथ "भाषा साहित्य के उन समस्त लेखकों की सूची मात्र से अधिक और कुछ नहीं है, जिनका नाम मैं एकत्र कर सका हूँ और जो संख्या में ९५२ हैं।" इस ग्रन्थ में मारवाड़ी, हिन्दी और बिहारी के लिखित साहित्य का उल्लेख हुआ है। ग्राम साहित्य की चर्चा नहीं हुई है। अधिकांश लेखकों का केवल नाम दिया गया है, कोई विवरण नहीं। प्रत्येक लेखक की रचना के नमूने

ग्रियर्सन ने पढ़े थे, ऐसा उनका कहना है। पर सबको समझा भी है, ऐसा उनका दावा नहीं है।

ग्रंथ का आकार सामान्य पुस्तकों के आकार से कुछ बड़ा है। यह ग्रन्थ तीन खंडों में विभक्त कहा जा सकता है :–(१) प्रस्तावना आदि, (२) मूल ग्रंथ, (३) अनुक्रमणिका।

प्रथम खण्ड में तीन विभाग हैं :—

(अ) प्रस्तावना (Preface) – इसमें कुल ५ पृष्ठ (७ से ११ तक) हैं। इसमें ग्रंथ लिखने का अवसर और आवश्यकता आदि पर विचार है।

(ब) भूमिका (Introduction)—इसमें कुल ११ पृष्ठ (१३ से २३ तक) हैं। ग्यारहवाँ पृष्ठ सादा है। भूमिका के चार उप विभाग हैं :—

(१) सूचना के सूत्र
(२) विषयन्यास का सिद्धान्त
(३) हिन्दुस्तान (हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेश) के भाषा साहित्य का संक्षिप्त विवरण
(४) चित्र परिचय

(स) शुद्धिपत्र और परिशिष्ट (Addenda)—इसमें दस-बारह पृष्ठ हैं। ग्रंथ के छपते-छपते लेखक को जो नई सूचनायें प्राप्त हुईं, उन्हें उसने परिशिष्ट में दे दिया है। इसी के अन्तर्गत तुलसीदास लिखित प्रसिद्ध पञ्चनामे का रोमन लिपि में प्रत्यक्षरीकरण और उसका अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है।

द्वितीय खण्ड में, जो कि मूल ग्रन्थ है, कुल १६८ पृष्ठ हैं। ग्रन्थ बारह अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में प्राय: तीन अंश हैं, जिनमें सामान्य परिचय, प्रधान कवि परिचय और अप्रधान कवि नाम सूची क्रम से हैं।

तीसरे खण्ड में तीन अनुक्रमणिकायें हैं। पहली में व्यक्ति-नाम सूची, दूसरी में ग्रन्थ-नाम सूची और तीसरी में स्थान-नाम सूची वर्णानुक्रम से है। इन नामों के आगे जो संख्यायें दी गई हैं, वे पृष्ठों की न होकर कवियों की हैं।

आधार-ग्रंथ

भूमिका में ग्रियर्सन ने निम्नलिखित १८ ग्रन्थों से सहायता लेने का उल्लेख किया है :—

ग्रन्थ	लेखक	रचनाकाल
१. भक्तमाल	नाभादास	१५४० ई० के लगभग (?)
२. गोसाईं-चरित्र	बेनीमाधवदास	१६०० ई० के लगभग (?)

३. कविमाला	तुलसी	१६५५ ई०
४. हजारा	कालिदास त्रिवेदी	१७१८ ई०
५. काव्य निर्णय	भिखारीदास	१७२५ ई० के लगभग
६. सत्कविगिराविलास	बलदेव	१७४६ ई०
७. सूदन द्वारा प्रशंसित कवि सूची	सूदन	१७५० ई० के लगभग
८. विद्वन्मोद-तरंगिणी	सुब्बासिंह	१८१७ ई०
९. राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम	कृष्णानन्द व्यासदेव	१८४३ ई०
१०. श्रृंगार संग्रह	सरदार	१८४८ ई०
११. भक्तमाल का उर्दू अनुवाद	तुलसीराम	१८५४ ई०
१२. रसचन्द्रोदय	ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी	१८६३ ई०
१३. दिग्विजय भूषण	गोकुल प्रसाद	१८६८ ई०
१४. सुन्दरी तिलक	हरिश्चन्द्र	१८६९ ई०
१५. काव्य संग्रह	महेशदत्त	१८७८ ई०
१६. कवित्त रत्नाकर	मातादीन मिश्र	१८७६ ई०
१७. शिवसिंह सरोज	शिवसिंह सेंगर	१८८३ ई०
१८. विचित्रोपदेश	नकछेदी तिवारी	१८८७ ई०

इन १८ ग्रन्थों में से १७ वां सरोज है। १८ वां इसका परवर्ती ग्रन्थ है। प्रथम १६ सरोज की पूर्ववर्ती रचनायें हैं। इनमें से केवल श्रृगार संग्रह ऐसा है, जिसका उल्लेख शिवसिंह ने नहीं किया है। शेष १५ की सहायता उन्होंने ली है। ग्रियर्सन इन सभी ग्रन्थों से सहायता लेने का उल्लेख करते हैं, पर यह ठीक नहीं प्रतीत होता। उन्होंने केवल निम्नांकित ५ ग्रन्थों की सहायता ली है—

१. राग कल्पद्रुम
२. श्रृंगार संग्रह
३. सुन्दरी तिलक
४. शिवसिंह सरोज
५. विचित्रोपदेश

रागकल्पद्रुम को बड़े परिश्रमपूर्वक और बड़ी कठिनाई से प्राप्त कर ग्रियर्सन ने देखा था। ऐसा उल्लेख रागकल्पद्रुम द्वितीय संस्करण के सम्पादक

श्री नगेन्द्र नाथ बसु ने उक्त ग्रन्थ में किया है। ग्रियर्सन ने उक्त ग्रन्थ के प्रथम संस्करण की भूमिका से हिन्दी कवियों और ग्रन्थों की सूचियाँ दी हैं, जिससे यह तथ्य स्पष्ट है। शृंगार संग्रह का उल्लेख सरोज में नहीं है। पर ग्रियर्सन ने न केवल इसका उल्लेख किया है, बल्कि इसमें आये कवियों की सूची भी दे दी है। अतः इसका भी सदुपयोग उन्होंने अवश्य किया है। इसी प्रकार सुन्दरी तिलक में आये कवियों की भी सूची ग्रियर्सन ने दी है। अतः उन्होंने उसका भी सदुपयोग किया है, इसमें संदेह नहीं। सरोज तो इस ग्रन्थ का मूल आधार कहा जा सकता है। भूमिका में इस सम्बन्ध में ग्रियर्सन स्वयम् लिखते हैं :—

"एक देशी ग्रन्थ जिस पर मैं अधिकांश में निर्भर रहा हूँ, और प्रायः सभी छोटे कवियों और अनेक अधिक प्रसिद्ध कवियों के भी सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं के लिये जिसका मैं ऋणी हूँ, शिव सिंह द्वारा विरचित और मुंशी नवलकिशोर द्वारा प्रकाशित अत्यन्त लाभदायक शिव सिंह सरोज (द्वितीय संस्करण १८८३ ई०) है।" —भूमिका पृष्ठ १३

विचित्रोपदेश परवर्ती रचना है। शिव सिंह इसका उल्लेख कर भी नहीं सकते थे। ग्रियर्सन ने इसे देखा था, इसमें संदेह नहीं।

इन पाँचों के अतिरिक्त शेष १३ ग्रन्थों को ग्रियर्सन ने देखा था, यह पूर्ण संदेहात्मक है। इनकी सहायता उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नहीं, सरोज द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से ली है। सरोज में कवियों के जीवन चरित्र वाले प्रकरण में बराबर इनका उल्लेख होता गया है। सरोज में स्पष्ट लिखा है कि प्रसंग प्राप्त कवि की रचना किस संग्रह में संकलित है। इन्हीं का उल्लेख ग्रियर्सन ने भी अपने ग्रन्थ में कर दिया है। गोसाईं चरित तो उन्हें मिला नहीं, ऐसा उल्लेख तुलसीदास के प्रकरण में उन्होंने किया है, फिर उससे सहायता ली ही कैसे जा सकती थी। हाँ, शिव सिंह ने इस ग्रन्थ से एक उदाहरण सरोज में अवश्य दिया है, जिससे स्पष्ट है कि उन्होंने उक्त ग्रन्थ अवश्य देखा था। 'काव्य-निर्णय' में दास जी ने एक कवित्त में कुछ कवियों का नाम लिया है, जिनकी व्रज-भाषा को उन्होंने प्रमाण माना है। इस कवित्त को शिव सिंह ने उद्धृत किया है। जिस भ्रान्त ढंग से इसका उपयोग उन्होंने किया है, उसी ढंग से ग्रियर्सन ने भी किया है। इन्होंने भी अब्दुर्रहीम खानखाना और रहीम को दो कवि माना है तथा नीलकण्ठ को मिश्र मान लिया है। अतः स्पष्ट है कि ग्रियर्सन ने काव्य निर्णय को शिवसिंह की आँखों देखा है, स्वयं अपनी आँखों नहीं। ग्रियर्सन न तो सूदन रचित सुजान चरित्र को जानते

थे और न इसके आदि में दिये छन्दों से परिचित थे। ग्रंथारंभ में ही पाँच से लेकर दस संख्यक छह छन्दों में सूदन रचित कवि सूची है। शिव सिंह ने प्रमाद से इसे दस छन्द समझ लिया है। अन्तिम छन्द उनके पास था। इसमें आये कवियों का नाम उन्होंने सरोज में दिया है। इसी का उल्लेख शिव सिंह का निर्देश करते हुये ग्रियर्सन ने भी कर दिया है। अतः स्पष्ट है कि उन्होंने इस ग्रन्थ का भी उपयोग अप्रत्यक्ष रूप से ही किया है। सत्कविगिराविलास में १७ कवियों की रचनायें संकलित हैं। इनकी सूची सरोज में दी गई है। ग्रियर्सन ने यहीं से उक्त सूची अपने ग्रन्थ में उतार ली है। ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता, जिससे सिद्ध हो कि इन्होंने उक्त ग्रन्थ देखा भी था। कविमाला, हजारा, विद्वन्मोद-तरंगिणी, रसचन्द्रोदय, दिग्विजय-भूषण, काव्य संग्रह और कवित्त रत्नाकर को यदि उन्होंने देखा होता तो निश्चय ही इनमें संकलित कवियों की भी सूची उन्होंने दे दी होती। काव्य संग्रह को तो वे कभी भी भूल नहीं सकते थे, क्योंकि इसके अन्त में सरोज के ही समान, इसमें संकलित सभी ५१ कवियों का जीवन चरित्र दे दिया गया है, जिनमें तिथियाँ भी हैं, जो साहित्य शोधी के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और जिनके सहारे सरोज की तिथियों की जाँच भली-भाँति की जा सकती है कि वे जन्म-काल सूचक हैं अथवा रचनाकाल सूचक। 'कवि रत्नाकर' यह अशुद्ध नाम सरोज की भूमिका में प्रमाद से छप गया है। ग्रियर्सन ने भी 'कवि रत्नाकर' ही लिखा है। ग्रन्थ का असल नाम 'कवित्त रत्नाकर' है। सरोजकार ने जीवन चरित्र खण्ड में यह नाम दिया भी है। ग्रियर्सन ने मक्षिकास्थाने मक्षिका लिखा है। यह स्पष्ट सिद्ध करता है कि यह ग्रन्थ भी उनकी आँखों के सामने से नहीं गुजरा। यह सम्भव है कि भक्तमाल और उसका उर्दू अनुवाद तथा एकाध और ग्रन्थ उन्होंने देखे भी रहे हों, पर निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

ग्रियर्सन ने कुछ और भी ग्रंथों तथा सूत्रों का उपयोग किया है। इनकी गणना यद्यपि उन्होंने भूमिका की उक्त सूची में नहीं की है, पर उल्लेख कर दिया है तथा मूलग्रंथ में इनका हवाला बार बार दिया है। इनमें प्रथम ग्रंथ है, प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक गार्सां द तासी कृत 'हिस्त्वायर द ला लितरेत्योर हिन्दुई एं हिन्दुस्तानी'। ग्रियर्सन ने इसका उपयोग स्व-संकलित टिप्पणियों की जांच के लिये किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम संस्करण का ही उपयोग उन्होंने किया है, क्योंकि उन्होंने जहाँ भी हवाला दिया है प्रथम खण्ड का। पहले संस्करण में प्रथम भाग में जीवन वृत्त था, दूसरे भाग में संकलन था। द्वितीय संस्करण में तीन भाग हैं। तीनों में वृत्त और संकलन साथ साथ हैं। साथ ही तासी में

हिन्दी के लगभ ७० ही कवियों के होने का उल्लेख ग्रियर्सन ने किया है। यह भी प्रथम संस्करण की ही ओर संकेत करता है। तासी का द्वितीय संस्करण ग्रियर्सन के ग्रन्थ के पंद्रह सोलह साल पहले प्रकाशित हो गया था, फिर भी न जाने क्यों वे इसका उपयोग नहीं कर सके। इसमें हिन्दी के २५० से अधिक कवि और लेखक हैं।

दूसरा ग्रन्थ, जिसकी सहायता ग्रियर्सन ने ली है, विलसन कृत 'रेलिजस सेक्ट्स आफ़ हिन्दूज़' है। प्रायः सभी भक्त कवियों के सम्बन्ध में इस ग्रन्थ से सहायता ली गई है।

तीसरा ग्रन्थ है टाड का प्रसिद्ध राजस्थान का इतिहास। राजपूताने के चारण कवियों एवं उनके आश्रयदाता राजाओं या राजा कवियों के विवरण एवं तिथियों के सम्बन्ध में इस ग्रन्थ की सहायता पद पद पर ली गई है।

इनका चौथा सहायक सूत्र है "जर्नल आफ़ रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल," विशेषकर भाग ५३ का एक अंक, जिसमें मैथिल कवियों का इतिहास दिया हुआ है। प्रायः सभी मैथिल कवियों का विवरण इसी लेख के आधार पर इस ग्रन्थ में संकलित हुआ है।

लेखन-पद्धति

ग्रियर्सन ने कवियों का इतिवृत्त देते समय निम्नलिखित पद्धति का अनुसरण किया है:—

(१) सर्व प्रथम वे कवि की क्रम संख्या देते हैं। ये संख्या में कुल ९५२ हैं। ७०६ संख्या पर किसी विशेष कवि का उल्लेख न होकर हिन्दी और बिहारी नाटकों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी है। इस प्रकार इस ग्रन्थ में कुल ९५१ कवियों का विवरण है। आगे चलकर विनोद में भी यही पद्धति अपनाई गई।

(२) क्रमसंख्या देने के अनन्तर कवि का नाम देव नागरी अक्षरों में दिया गया है। इस सम्बन्ध में दो नियमों का पालन किया गया है। पहले तो नामों को उस ढंग से लिखा गया है, जिस ढङ्ग से सर्वसाधारण उनका उच्चारण करते हैं। पढ़े लिखे शिष्ट जनों के उच्चारण को महत्व नहीं दिया गया है, यद्यपि साहित्यकारों के सम्बन्ध में यही पद्धति अपनाई जानी चाहिये थी। इस प्रकार बल्लभाचार्य न लिखकर बल्लभाचारज लिखा गया है। इस पद्धति का परित्याग कतिपय जीवित भारतीय साहित्यकारों के ही सम्बन्ध में इस सिद्धान्त पर किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वेच्छानुसार अपना नाम

लिखने की स्वतन्त्रता प्राप्त है। इन लोगों का नाम हिन्दी लिपि में उसी प्रकार लिखा गया है, जिस प्रकार वे अंग्रेजी में लिखते हैं।

विदेशी लोग जिनके लिये यह ग्रन्थ लिखा गया है, हिन्दी नामों का ठीक-ठीक उच्चारण कर सकें, इसलिये नामों के पद विभाजन की दूसरी पद्धति स्वीकार की गई है। जहाँ प्रत्येक पद के अनन्तर रुका जा सके, दो पदों के बीच बिन्दु दे दिया गया है, जो अंग्रेजी के पूर्ण विराम से पर्याप्त बड़ा है। यथा—देओकी. नन्दन. सुकल।

प्रस्तावना में इन दोनों बातों पर लेखक ने विचार किया है।

(३) हिन्दी में नाम देने के अनन्तर उसको रोमन लिपि में भी दिया गया है और यदि नाम के साथ कोई अतिरिक्त अंश भी जुड़ा हुआ है, तो उसका अनुवाद कर दिया गया है, जैसे पुष्य कवि को 'द पोयट पुष्य' लिखा गया है। गोसाईं तुलसीदास के 'गोसाईं' का अनुवाद 'होली मास्टर' किया गया है। इस ग्रंथ के हिन्दी अनुवाद में न तो दो बार नाम देने की आवश्यकता है (एक बार नागरी लिपि में, दूसरी बार रोमन लिपि में) और न तो नामों के बीच अंग्रेजी का बृहत् पूर्ण विराम देने की, क्योंकि इन दोनों में से किसी की कोई उपयोगिता हम भारतीयों के लिये नहीं हैं। विदेशियों के लिये तो ये दोनों बातें आवश्यक थीं।

(४) नाम के साथ साथ पिता का नाम, स्थान का नाम और समय एक साथ दे दिये गये हैं, जैसे वे नाम के ही अंग हों। यह सब बिना किसी क्रिया का सहारा लिये हुये किया गया है। ग्रियर्सन ने यह पद्धति सरोज से अपनाई है।

(५) इसके पश्चात् दूसरे अनुच्छेद में उन संग्रहों का संक्षिप्त नाम दे दिया गया है, जिनमें उस कवि की रचनायें संकलित हैं।

(६) इस प्रकार संग्रह नाम दे देने के अनन्तर उपलब्ध इतिवृत्त दिया गया है। यही क्रम सरोज का भी है।

(७) किसी कवि के इतिवृत्त में यदि किसी अन्य कवि का उल्लेख आ गया है, तो उसकी भी क्रम संख्या सुविधा के लिये नाम के आगे कोष्टक में दे दी गई है।

सरोज का आभार

ग्रियर्सन के ग्रन्थ को ठीक ठीक समझने के लिये उनके द्वारा प्रयुक्त कुछ अंग्रेजी शब्दों का ठीक ठीक हिन्दी अर्थ जान लेना आवश्यक है, नहीं तो

भयानक भ्रान्ति हो सकती है। Style का प्रयोग उन्होंने रस के अर्थ में किया है। उनके द्वारा नवरसों के लिये प्रयुक्त पदावली नीचे दी जा रही है।

(१) श्रृंगार रस	The erotic style
(२) हास्य रस	The comic style
(३) करुण रस	The elegiac style
(४) वीर रस	The heroic style
(५) रौद्र रस	The tragic style
(६) भयानक रस	The terrible style
(७) वीभत्स रस	The satiric style
(८) शान्त रस	The quietistic style
(९) अद्भुत रस	The sensational style

कुछ अन्य शब्द जिनका हिन्दी रूप जानना आवश्यक है, ये हैं:—

Occasional poem	सामयिक कविता
Didactic poem	चेतावनी सम्बन्धी कविता
Emblematic poem	दृष्टिकूट
A work on lovers	नायिका भेद

इस ग्रंथ का अनुवाद करते समय मुझे ज्ञात हुआ कि ग्रियर्सन ने स्थान-स्थान पर सरोज का अंग्रेजी अनुवाद किया है। और यह कभी कभी ऐसा हो गया है, जैसे कोई विद्यार्थी 'मेरा सर चक्कर खा रहा है' का अंग्रेजी अनुवाद "माइ हेड इज़ ईटिंग सरकिल" कर दे अथवा जैसा कि एक अन्य अंग्रेज संस्कृतज्ञ ने कुशासन का अनुवाद "सीट आफ़ रामाज़ सन" किया था। बिचारे को राम के पुत्र कुश का पता था, सन्धि विग्रह भी वह जानता था, पर उसे कुश नामक घास विशेष का पता नहीं था।

गुमान मिश्र ने प्रसिद्ध नैषधचरित्र का हिन्दी पद्यानुवाद 'काव्य कलानिधि' नाम से प्रस्तुत किया था। इस अनुवाद की प्रशंसा करते हुये सरोजकार लिखता है :—

"पंच नली, जो नैषध में एक कठिन स्थान है, उसको भी सलिल कर दिया"

इसका जो अनुवाद ग्रियर्सन ने किया है, उसका हिन्दी रूपान्तर यह है:—

"इन्होंने पंचनलीय पर, जो नैषध का एक अत्यन्त कठिन अंश है, सलिल नाम की एक विशेष टीका लिखी।"

ग्रियर्सन को इस सम्बन्ध में संदेह था। अतः उन्होंने इस सलिल पर यह पाद टिप्पणी दे दी है :—

"अथवा शिवसिंह का, जिनसे मैंने यह लिया है, यह अभिप्राय है कि उन्होंने पंचनलीय को बिल्कुल पानी की तरह स्पष्ट कर दिया है।"

चतुरसिंह राना के सम्बन्ध में शिवसिंह ने लिखा है :—'सीधी बोली में कवित्त हैं।'

उदाहरण से स्पष्ट है कि शिवसिंह का अभिप्राय खड़ी बोली से है। ग्रियर्सन ने सीधी बोली का अनुवाद "सिम्पुल स्टाइल" किया है।

इसी प्रकार शिवसिंह ने नृप शंभु[1] कवि के सम्बन्ध में लिखा है "इनकी काव्य निराली है।" सरोज में काव्य सर्वत्र स्त्रीलिंग में प्रयुक्त हुआ है। ग्रियर्सन ने निराली को ग्रन्थ समझ लिया है। ग्रियर्सन को आधार मानकर यदि कोई अन्वेषक सिर मारता फिरे, तो असम्भव नहीं। इतिहास लेखक तो इस कवि के इस निराले ग्रन्थ 'निराली' का उल्लेख सहज ही कर सकते हैं।

ग्रियर्सन में कुल ९५१ कवि हैं। इनमें से निम्नांकित ६५ कवि अन्य सूत्रों से लिए गये हैं, जिनमें विलसन कृत रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज़ और जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल (विशेष कर अंक ५३) प्रमुख हैं। मैथिल कवि इसी अंक से लिये गये हैं।

१।९ जोधराज	२।१० रामानन्द
३।११ भवानन्द	४।१४ भगोदास
५।१५ श्रुतगोपाल	६।१७ विद्यापति मैथिल
७।१८ उमापति मैथिल	८।१९ जयदेव मैथिल
९।४९ हठी नारायण	१०।५८ ध्रुवदास

१. यही ग्रन्थ, संख्या ८३७।

११।१२२ जगन्नज अकबरी दरबार वाले	१२।१६३ दादू
१३।१६७ प्राणनाथ पन्ना वाले	१४।१६८ बीरभान
१५।१७१ नजीर अकबराबादी	१६।१७४ वेदांग राय
१७।१८४ जगतसिंह चित्तौर के राना	१८।१९४ सूज़ा
१९।२०६ गम्भीर राय	२०।३२० गंगापति
२१।३२१ शिवनारायण	२२।३२२ लाल जी
२३।३२४ दूल्हाराम	२४।३६० मनबोध झा मैथिल
२५।३६१ केशव मैथिल	२६।३६२ मोद नारायण मैथिल
२७।३६३ लाल झा मैथिल	२८।४३४ ठाकुर द्वितीय
२९।४३७ मीर अहमद	३०।४८७ देवीदास, जगजीवनदास के शिष्य
३१।५१८ बलदेव, विक्रमशाहि चरखारी के आश्रित।	३२।५६२ हरिप्रसाद बनारसी
३३।६२८ जयचन्द जयपुरी	३४।६३४ बखतावर हाथरस वाले
३५।६४० तुलसीराम अग्रवाला मीरापुर वाले	३६।६४२ भानुनाथ झा मैथिल
३७।६४२ हरख नाथ झा मैथिल	३८।७०० लछमीनाथ ठाकुर मैथिल
३९।७०१ फतूरी लाल मैथिल	४०।७०२ चन्द्र झा मैथिल
४१।७०३ जान क्रिश्चियन	४२।७०४ पं० अम्बिकादत्त व्यास
४३।७०५ पं० छोटूराम तिवारी	४४।७३८ अम्बिका परसाद
४५।७३९ काली परसाद तिवारी	४६।७४० बिहारी लाल चौबे
४७।७६७ नामदेव	४८।८०६ किसनदास भक्तमाल के एक टीकाकार
४९।८१४ गुमानी कवि पटना के	५०।८२२ चक्रपानि मैथिल
५१।८२३ चतुरभुज मैथिल	५२।८२८ जयानन्द मैथिल
५३।८३४ डाक	५४।८४५ नजामी

५५।८४७ नन्दी पति ५६।८५५ परमल्ल

५७।८५९ प्रेमकेश्वरदास ५८।८६५ बरगराम

५९।८७३ बुलाकीदास ६०।८८१ भंजन मैथिल

६१।८८२ भड्डुरि ६२।८९० महिपति मैथिल

६३।९०० रमापति मैथिल ६४।९११ रमाकान्त

६५।९३० सरसराम मैथिल

इस प्रकार ग्रियर्सन ने ९५१–६५ = ८८६ कवियों का उल्लेख एक मात्र सरोज के सहारे किया है, जो कुल का ९४ प्रतिशत है।

सरोज में कवियों की कुल संख्या १००३ है। इनमें से ४६ कवियों को ग्रियर्सन ने गृहीत नहीं किया है। सरोज के कुल ९५७ कवि ग्रियर्सन में उल्लिखित हैं, जिनमें से ८८६ को तो एक एक स्वतंत्र अंक दिया गया है, शेष ७१ कवि अन्य कवियों में मिला दिये गये हैं।

इन ४६ अस्वीकृत कवियों में से ११ का तो सरोज में सन् सम्वत दिया हुआ है और ४ को "वि०" (विद्यमान) कहा गया है। शेष ३१ तिथिहीन हैं। इनकी सूची यथास्थान आगे दी गई है।

सरोज के १००३ कवियों में से ६८७ कवि तिथियुक्त हैं, ५३ कवि 'वि०' हैं और २६३ कवि तिथिहीन हैं। ६८७ स-तिथि कवियों में से ६७५ ग्रियर्सन में स्वीकृत हैं। इनमें से ४३८ सम्वत् भी ग्रियर्सन ने स्वीकार कर लिये हैं। इन ४३८ संवतों में से ३८५ जन्म संवत् माने गये हैं और ३७ उपस्थिति संवत्। १५ संवतों के सम्बन्ध में ग्रियर्सन यह नहीं निश्चय कर पाये हैं कि इन्हें जन्म संवत् माना जाय अथवा उपस्थिति संवत्। आगे दी हुई सारिणी से स्पष्ट हो जायगा कि किन किन संख्यावाले कवियों के संवत् सीधे सरोज से स्वीकार कर लिये गये हैं। सारिणी में संदिग्धावस्था वाले संवतों की संख्या १७ है। इसका कारण यह है कि ४४३ और ४४७ संख्यक कवि सरोज के एकही कवि सोमनाथ हैं, जिन्हें सोमनाथ और ब्राह्मणनाथ नाम से दो मान लिया गया है। इसी प्रकार ६३५ और और ६३६ संख्यक दलपतिराय एवं वंशीधर वस्तुतः दो कवि हैं। ग्रियर्सन में इन्हें दो अङ्क दिये गये हैं, सरोज में एक ही। इसीलिये इन संख्याओं को कोष्टक में रख दिया गया है। २७८ संख्यक कमच कवि के सम्बन्ध में भी सरोज में दिया सम्वत स्वीकार किया गया है। पर इन्हें उक्त सम्वत् (१६५३ ई०) के पूर्व उपस्थित कहा गया है।

ग्रियर्सन के उन कवियों की तालिका जिनके संवत सरोज से लिए गए हैं।

अध्याय / जन्म सम्वत्	योग	उपस्थिति सम्वत्	योग	संदिग्ध, जन्म या उपस्थिति	योग	पूर्ण योग
१. चारणकाल		१	१			१
२. पंद्रहवीं शती का धार्मिकपुनरुत्थान २२	१					१
परिशिष्ट २३-३०	८					८
३. मलिक मुहम्मद का प्रेम काव्य परिशिष्ट ३२	१					१
४. ब्रज का कृष्ण सम्प्रदाय ५३, ५५, ६४-६९	८					८
परिशिष्ट ७०,७२, ७५, ७७-८३, ८५-१०२	२८	७३, ७४	२			३०
५. मुगल दरबार १०५, १०६ १०९,११५-२१,१२५,१२७	१२	११४, १२६	२			१४
६. तुलसी दास १२९	१					१
७. रीति शास्त्र १४०, १४१, १४४, १५०, १५४, १५५, १५८	७	१४२,१५३,१५७	३	१५६	१	११
८. तुलसीदास के अन्य परवर्ती (क) धार्मिक कवि १६५, १६६, १७०	३					३
(ख) अन्य कवि १७२, १७५-८०, १८२, २०८, २१०, २१३-१७	१५	१७३	१	२११	१	१७
परिशिष्ट २१८-३४, २३६-४५, २४७-५४, २५६-६०, २६२-६६, २६८, २७०-७१, २७३-७७, २७९-८४, २८६-८८, २९१-३०४, ३०६, ३०७, ३०९-१८	८८	२३५,२७२,२८५ २८९-९० ३०८	६			९४

१ / २	३	४	५	६	७	८
९. अठारहवीं शताब्दी						
(क) धार्मिक कवि						
(ख) अन्य कवि ३४४–४६, ३५५,३६४,३६५,३६७	७	३५०,३५८, ३६६,३६९, ३७०,३७२ ३७४,	७			१४
परिशिष्ट ३८२-८५,३८७–९१,३९३-९४,३९७-४०२, ४०४-३०,४३२-३३,४३६-३८,४४०-४२,४४५-४६, ४४८-६०,४६२-८२,४८५, ४८६,४८९,४९१-९६, ५००-०१	९९	४०३,४८८, ४९७	३	(४४३,४४७) ४४४,४८३ ४८४	५	१०७
१०. कम्पनी के अन्दर हिन्दुस्तान						
(क) बुन्देल खंड और बघेलखंड ५१०-१२	३	५०४	१	५२७	१	५
परिशिष्ट ५३३-४३,५४५-५८	२५					२५
(ख) बनारस ५७०,५७४, ५७८	३	५५९,५८२	२	५६०	१	६
परिशिष्ट ५८४-८८	५					५
(ग) अवध ५८९,५९१-९२, ५९४-९७,६०३,६०५-०६	१०	५९०,५९८	२	५९३	१	१३
परिशिष्ट ६०७-१७,६१९-२७	२०					२०
(घ) अन्य ६३०-३२,७४३-४४	५			(६३५,६३६) ६३७,६३९	४	९
परिशिष्ट ६४६-४८,६५०-५९,६६१,६६३-६७,६६९, ६७१,६७३-७६,६७८,६७९, ६८१-८९	३६	६४९,६६० ६६८,६७२ ६७७,६९०	६			४२
११. विक्टोरिया की छत्रछाया में हिन्दुस्तान		६९१ (मृत्यु)	१			१
परिशिष्ट				७०७-०९	३	३
	३८५		३७		१७	४३९
						१

सरोज-दत्त संवत् से पूर्व उपस्थित २७८

कुल ४४०

ग्रियर्सन के प्रथम ११ अध्यायों में स-तिथि कवियों का विवरण है। १२वें अध्याय में उन कवियों का उल्लेख हुआ है, जिनका सन् सम्वत् ग्रियर्सन ने नहीं निर्णय कर पाया है। प्रथम ११ अध्यायों में कुल ७३९ कवि हैं। इनमें से ४४० के संवत (कुल ४३८ संवत) ज्यों के त्यों सरोज से लिये गये हैं। अतः ग्रियर्सन में कुल २९९ संवत नये हैं।

इन २९९ नये संवतों में से ४६ कवि तो पूर्णरूपेण नये हैं। ये ग्रियर्सन में नये आये ६५ कवियों में से प्रथम ४६ कवि हैं। यह सूची पीछे दी जा चुकी है। अतः इन २९९ कवियों में से केवल २५३ कवि सरोज़ से उद्धृत हैं। इनमें से निम्नांकित ११ कवियों की तिथियाँ पूर्णरूपेण नई हैं। सरोज में इनकी कोई तिथि नहीं दी गई है।

क्रम सं०	कवि नाम	ग्रियर्सन-संख्या	सरोज-संख्या
१	गदाधर दास	४६	१५६
२	जगामग	१२३	१०२
३	नीलाधर	१३३	४४१
४	सुन्दरदास (संत)	१६४	८७७
५	हरिचन्द चरखारी वाले	१७४	१००२
६	राव रतन राठौर	२०७	७९६
७	प्रह्लाद चरखारी वाले	५१३	४८५
८	मान कवि बुन्देलखंडी	५१७	७०२
९	देव, काष्ठ-जिह्वा स्वामी	५६९	३६१
१०	दिनेश	६३३	३५५
११	रघुनाथदास महन्त अयोध्या	६९२	७४२

रीवाँ नरेश रघुराज सिंह एवम् राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द को सरोज में वि० लिखा गया है। ग्रियर्सन में इनका जन्म एवम् सिंहासनारोहण संवत दिया गया है, साथ ही इन्हें १८८३ ई० (सरोज के द्वितीय संस्करण का समय) में उपस्थित कहा गया है। ये सम्वत भी नये हैं। अब ग्रियर्सन के २५३ − ११ − २ = २४० कवियों के सम्वतों पर विचार करना शेष रह जाता है।

सरोज में कुल ५२ कवि 'वि०' कहे गये हैं। इनमें से ४४ का उल्लेख ग्रियर्सन के प्रथम ७४० स-तिथि कवियों के भीतर हुआ है। रघुराज सिंह एवम् शिव प्रसाद सितारे हिन्द को छोड़कर शेष ४२ कवियों को सन् १८८३ ई० में जीवित

कहा गया है। यह समय सरोज के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन का है। इस संस्करण का उपयोग ग्रियर्सन ने किया था। सरोजकार ने जिसे १८७८ ई० में विद्यमान कहा था, ग्रियर्सन ने उसे १८८३ में भी विद्यमान मान लिया है। इन ४२ कवियों की सूची निम्नांकित है :—

अध्याय १० :—

१।५७१ सरदार	२।५७२ नारायण राय
३।५७३ गणेश बनारसी	४।५७६ बंदन पाठक बनारसी
५।५७९ सेवक बनारसी	६।५८१ हरिश्चन्द्र बनारसी
७।५८३ मन्नालाल द्विज बनारसी	८।६०१ जगन्नाथ अवस्थी
९।६०४ माधव सिंह राजा अमेठी (छितिपाल)	

अध्याय ११ :—

१०।६९३ अयोध्या प्रसाद वाजपेयी	११।६९४ गोकुल प्रसाद, ब्रज
१२।६९५ जानकी प्रसाद पँवार	१३।६९६ महेशदत्त मिश्र
१४।६९७ नन्दकिशोर मिश्र, लेखराज	१५।६९८ मातादीन मिश्र
१६।७११ आनन्द सिंह उपनाम दुर्गासिंह	१७।७१२ ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी
१८।७१३ उमराव सिंह पँवार	१९।७१४ गुरुदीन राय बंदीजन
२०।७१५ बलदेव अवस्थी	२१।७१६ रणजीतसिंह राजा
२२।७१७ ठाकुर प्रसाद द्विवेदी	२३।७१८ हजारी लाल त्रिवेदी
२४।७१९ गंगा दयाल दुबे	२५।७२० दयाल कवि बेंती वाले
२६।७२१ विश्वनाथ टिकई वाले	२७।७२२ वृंदावन, सेमरौता
२८।७२३ लछिराम होलपुर वाले	२९।७२४ संत बकस
३०।७२५ समर सिंह	३१।७२६ शिव प्रसन्न
३२।७२७ सीतारामदास बनिया	३३।७२८ गुणाकर त्रिपाठी
३४।७२९ सुखराम	३५।७३० देवीदीन बिलग्रामी
३६।७३१ मातादीन शुक्ल अजगरावाले	३७।७३२ कन्हैयाबक्स बैसवाड़ा के

३८।७३३ गिरिधारी भांट मऊ रानी-पुर के   ३९।७३४ जब्रेश

४०।७३५ रणधीर सिंह राजा सिंगरामऊ   ४१।७३६ शिवदीन उपनाम रघुनाथ रसूलाबादी

४२।७३७ राम नारायण कायस्थ

इन ४२ कवियों को भी बाद दे देने पर केवल १९८ कवि ऐसे बचते हैं, जो सरोज एवं ग्रियर्सन में एक ही हैं, पर ग्रियर्सन में इनकी तिथियाँ सरोज की तिथियों से भिन्न हैं। इन १९८ कवियों की संख्या निम्नांकित हैः—

अध्याय	संख्या	योग
१	२, ३, ४, ५, ६, ७, ८	७
२	१२, १३, १६, २०, २१	५
३	३१, ३३	२
४	३४–४५, ४७, ४८, ५०, ५१, ५२, ५४, ५६, ५७, ५९–६३, ७१, ७६, ८४	२८
५	१०३, १०४, १०७, १०८, ११०–१३, १२४	९
६	१२८, १३०, १३१, १३२	४
७	१३४–१३९, १४३, १४५–१४९, १५१, १५२, १५९–६२	१८
८	१६९, १८१, १८३, १८५–९३, १९५–२०३, २०५, २०९, २१२, २४६, २५५, २६१, २६७, २६९, ३०५	३०
९	३१९, ३२३, ३२५–४३, ३४७, ३४८, ३४९, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५६, ३५७, ३५९, ३६८, ३७१, ३७३, ३७५–८०, ३८१, ३८६, ३९२, ३९५, ३९६, ४३१, ४३९, ४६१, ४९०, ४९८, ४९९	५१
१०	५०२, ५०३, ५०५–०९, ५१४–१६, ५१९–२६, ५२८–३१, ५४४, ५६१, ५६३–६८, ५७५, ५७७, ५८०, ५९९, ६००, ६०२, ६१८, ६२९, ६३८, ६४५, ६६२, ६७०, ६८०	४३
११	७१०	१
		कुल १९८

ये १९८ सम्वत् ऐसे हैं जिनमें से लगभग १५० को ग्रियर्सन ने अन्य सूत्रों से जाँच कर लिखा है। शेष ऐसे, जिनका मूल आधार वस्तुतः सरोज ही है। जोड़ने घटाने में साधारण अशुद्धि हो गई है और ग्रियर्सन में दिया हुआ सन् सरोज के सम्वत् से भिन्न हो गया है।

इस प्रकार ग्रियर्सन के ७३९ सम्वतों में से ४४० + ४२ वि० = ४८२ सीधे सरोज के आधार पर हैं। यह कुल का ६४.४% है। सरोज के संवतों के ग्रियर्सन कितने आभारी हैं इससे स्पष्ट हो जाता है। इस सम्बन्ध में स्वयं ग्रियर्सन भूमिका में लिखते हैं:—

"(तिथियों की जाँच के) जब सभी उपाय असफल सिद्ध हुये, अनेक बार सरोज ही मेरा पथ प्रदर्शक रहा है। शिवसिंह बराबर तिथियाँ देते गये हैं। और मैंने सामान्यतया उनको पर्याप्त ठीक पाया है। हाँ, वे प्रसंग प्राप्त कवि की जन्म तिथि ही सर्वत्र देते हैं, जब कि वस्तुतः अनेक बार ये तिथियाँ उक्त कवियों के प्रमुख ग्रन्थों का रचनाकाल हैं। फिर भी सरोज की तिथियों का कम से कम इतना मूल्य तो है ही कि किसी अन्य प्रमाण के अभाव में हम पर्याप्त निश्चिन्त रहें कि प्रसंग प्राप्त कवि उस तिथि को जिसे शिवसिंह ने जन्म काल के रूप में दिया है, जीवित था।"

—ग्रियर्सन, भूमिका, पृष्ठ १४

ग्रियर्सन ने सर्वत्र ई० सन् का प्रयोग किया है। ये सन् प्रायः सरोज के संवतों में से ५७ घटाकर प्राप्त किये गये हैं। ग्रियर्सन ने सरोज के जिन सम्वतों को स्वीकार किया है, उन्हें उन्होंने तिर्यक् अङ्कों में मुद्रित कराया है। विभिन्न अध्यायों के परिशिष्टों में जो अप्रधान कवि परिगणित हुये हैं, वे और उनकी तिथियाँ प्रायः सरोज के ही आधार पर हैं।

सरोज में कुल ६८७ स-तिथि कवि हैं। इनमें से निम्नांकित १३ को ग्रियर्सन में अ-तिथि बना दिया गया है:—

कवि	संबत्	सरोज-संख्या	ग्रियर्सन-संख्या
१ जसवंत	१७६२	२६६	७४७
२ लोधे	१७७०	८१९	७५२
३ लोकनाथ	१७८०	८२०	७५३
४ गुलाम नबी, रसलीन	१७९८	७५५	७५४
५ अलीमन	१९३३	२६	७८४

६ नवलदास	१३१९	४४०	७९८
७ गोसाइं	१८८२	१९६	८१७
८ वंशीधरमिश्र संडीलेवाले	१६७२	५२५	८६४
९ मून	१८६०	६४१	८९५
१० लक्ष्मण सिंह	१८१०	८१४	९१५
११ लोने बुन्देलखंडी	१८७६	८१०	९२२
१२ सोमनाथ	१८८०	९१६	९३७
१३ हेम गोपाल	१७८०	९८१	९५१

निम्नांकित ११ कवियों को ग्रियर्सन में स्वीकार ही नहीं किया गया है :—

१।१७ अनूप १७९८	२।७७ किशोर दिल्ली १८०१
३।१८० गोविन्द कवि १७९१	४।२४७ छेम (१), १७५५
५।४०८ नारायणदास कवि (३), १६१५	६।५९३ बरवै सीता कवि १२४९
७।६२४ भीषम १७०८	८।७०७ मीरा मदनायक १८००
९।७६५ रतन ब्राह्मण बनारसी १९०५	१०।८६६ श्रीधर प्राचीन १७८९
	११।९१० सुखलाल १८५५

४४० की तिथियाँ सरोज से ही ली गई हैं, जिनका विवरण पीछे सारिणी में दिया जा चुका है। १९८ कवियों की तिथियाँ सरोज की तिथियों से भिन्न हैं इनकी भी सूची पीछे दी जा चुकी है। सरोज के स-तिथि कवियों में से गणना के अनुसार ६८७—(१३ + ११ + ४४० + १९८) = २५ कवि अन्य कवियों में विलीन कर दिये गये हैं। इनकी सूची निम्नांकित है—

नाम	सरोज संख्या	ग्रियर्सन के जिस कवि में विलीन हुए हैं उसकी संख्या।
१ अगर	३४	४४
२ आनन्द	३९	३४७
३ कविराम	९२	७८५
४ कामता प्रसाद ब्राह्मण	१३३	६४४
५ गुमान (२)	१८६	३४९
६ घन आनन्द	२१२	३४७

७ छीत कवि	२५०	४१
८ जमाल	२८०	८५
९ तालिब शाह	३२६	४३९
१० देवदत्त कवि	३६२ }	२६१
११ देवदत्त कवि (२)	३६५ }	
१२ नाथ (४)	४३३	१६२
१३ नाथ (५), हरिनाथ	४३४	३५५
१४ प्रधान	४६२	८५४
१५ बल्लभ	५१७	२३९
१६ विजय, राजा बिजयबहादुरबुन्देला	५०५	५१४
१७ विश्वनाथ कवि (१)	५४६	७२१
१८ महेश	६८४	६९६
१९ माखन	६३७	६७०
२० रघुराय (२)	७३५	४२०
२१ रतन (२)	७६६	१५५
२२ श्यामलाल	८९४	२६९
२३ सवितादत्त	९०३	३०४
२४ सुखराम	८७९	७२९
२५ हरिराम	९६४	१४१

सरोज के स-तिथि कवियों को ग्रियर्सन के कवियों की तुलना में संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :—

सरोज	ग्रियर्सन
६८७ स-तिथि कवि	१३ अ-तिथि बना दिये गये
	११ स्वीकार नहीं किये गये
	४४० तिथि सहित स्वीकार किये गये
	१९८ भिन्न तिथि के साथ स्वीकार किये गये
	२५ अन्य कवियों में विलीन कर लिये गये
	योग ६८७

सरोज के ५२ विद्यमान कवियों में से ग्रियर्सन में ४२ सन् १८८३ ई० में जीवित मान लिये गये हैं। रघुराज सिंह एवं शिव प्रसाद सितारे हिन्द इन दो कवियों को नये सम्वत् दे दिये गये हैं। निम्नांकित ४ कवियों को न जाने क्यों ग्रियर्सन ने ग्रहण ही नहीं किया है :—

(१) चोवा

(२) मखजात, जालपा प्रसाद वाजपेयी ।

(३) मनोहर, काशीराम रिसालदार भरतपुर ।

(४) शंकर सिंह, चँड़रा सीतापुर ।

शेष ५ को बारहवें अध्याय में अनिश्चित कालीन कवियों में स्थान दे दिया गया है ।

(१) कविराम, रामनाथ कायस्थ ७८५

(२) रसिया, नजीब खाँ ७८८

(३) हनुमान बनारसी ७९६

सुन्दरी तिलक में इन तीनों की रचना है । अतः इन्हें १८६१ ई० से पूर्व उपस्थित माना गया है ।

(४) कालिका बन्दीजन काशी, ७८० । इन्हें १८६३ ई० से पूर्व उपस्थित कहा गया है, क्योंकि इनकी रचना ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी के रस चन्द्रोदय में है ।

(५) कालीचरण बाजपेयी ८०१

सरोज के वि० कवियों को ग्रियर्सन की तुलना में संक्षेप में इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है:—

सरोज	ग्रियर्सन
५३	२ को नई तिथियाँ दी गई हैं ।
	४२ को १८८३ ई० में जीवित कहा गया है ।
	४ को स्वीकार नहीं किया गया है ।
	५ को अज्ञातकालीन बना दिया गया है ।
	योग ५३

सरोज में कुल २६३ अ-तिथि कवि हैं । इनमें से ११ को ग्रियर्सन में तिथियाँ दे दी गई हैं । इनकी सूची पीछे दी जा चुकी है । निम्नांकित ३१ कवियों को ग्रियर्सन में ग्रहण नहीं किया गया है :—

१।१३४ कृष्ण कवि प्राचीन	२।६४ केशवदास (२)
३।१५० गंगाधर बुन्देलखंडी	४।२१० गदाधर कवि
५।१५७ गदाधर राम	६।१६० गिरधारी (२)
७।२१९ चंद कवि (३)	८।२२० चंद कवि (४)
९।२३४ चैनराय	१०।३०१ जगन्नाथ
११।३१९ तुलसी (४)	१२।३५३ द्विज राम

१३।४३५ नाथ (६)	१४।४०९ नारायण दास वैष्णव (४)
१५।४६४ पंचम (२) डलमऊ वाले	१६।४७३ परशुराम (१)
१७।४९३ फूलचन्द	१८।५५६ बालकृष्ण (२)
१९।५६२ वृन्दाबन कवि	२०।६७७ मदन गोपाल (२)
२१।६८५ मदन गोपाल (३) चरखारी	२२।६५४ मुरली
२३।६६६ मुरलीधर (२)	२४।६५३ मोती लाल
२५।८१७ लछिराम (२) बृजवासी	२६।८२३ लोकनाथ उपनाम बनारसीनाथ
२७।८६० शंकर (२)	२८।८५२ शिवदीन
२९।८७३ संत (१)	३०।९६० सुमेर

इनमें से ४७ अ-तिथि कवि अन्य कवियों में विलीन कर दिये गये हैं, जिनकी सूची यह है :—

	कवि	सरोज-संख्या	ग्रियर्सन-संख्या जिसमें विलीन
१	अनन्य (२)	३१	४१८
२	कृपाराम	१२६	७९७
३	कृपाराम	१२७	
४	खुमान	१३६	१७०
५	खेम बुन्देलखंडी	१४५	१०३
६	चतुर	२२८	६५
७	चतुर बिहारी	२२९	
८	चतुर्भुज	२३०	४०
९	चिन्तामणि	२२२	१४३
१०	चैन	२३२	६२७
११	छत्रपति	२५३	७५
१२	छेमकरण	२४४	३११
१३	जगन्नाथदास	२८६	७६४
१४	जानकीदास (३)	२६२	६९५
१५	जुगलदास	३०३	३१३
१६	जुगलकिशोर कवि (१)	२५७	३४८
१७	जैतराम	२७२	१२०
१८	तारा	३२२	४१९
१९	दयानिधि (२)	३३६	७८७
२०	दयाराम (१)	३३४	३८७

कवि	सरोज-संख्या	ग्रियर्सन-संख्या जिसमें विलीन
२१ दामोदर कवि	३४७	८४
२२ दास बृजवासी	३७५	३६९
२३ नन्द	४२४	६९७
२४ नन्द किशोर	४२९	
२५ नवल	४३८	८४९
२६ प्रेम	४८०	३५१
२७ वंश गोपाल बन्दीजन	५४२	५४९
२८ वंशीधर	५२४	५७४
२९ वंशीधर (३)	५२८	
३० विष्णुदास (१)	५२१	७६९
३१ वीठल	५२१	३५
३२ ब्रह्म, राजा बीरबल	५८९	१०६
३३ बृजबासीदास	५३४	३६९
३४ भगवन्त	६००	३३३
३५ भगवान कवि	६०१	
३६ भीषमदास	६१३	२४०
३७ मनसा	६३९	८८५
३८ मनीराम (१)	६७४	६७६
३९ मान कवि (१)	६२९	५१७
४० राम कृष्ण (२)	७२९	५३८
४१ राय जू	७७९	९१३
४२ रूप	७७१	२६८
४३ शंकर (१)	८५९	६१३
४४ शिव दत्त	८४९	५८८
४५ सबलसिंह	९१२	२१०
४६ हरिलाल (१)	९७३	९४६
४७ हुलास राम	१००३	९४०

सरोज के निम्नांकित १७५ अ-तिथि कवि ग्रियर्सन में गृहीत हुये हैं:—

(क) केवल सरोज में उल्लिखित:—

७९९, ८००, ८०२–५, ८०७–१३, ८१५–१६, ८१८–२१, ८२४–२७, ८२९–३३, ८३५–४४, ८४६, ८४८–५४, ८५६–५८, ८६०–६३, ८६६–७२, ८७४–८०, ८८३–८९, ८९१–९४, ८९६–९९, ९०१–१०, ९१२–१४, ९१६–२१, ९२३–२९, ९३१–३६, ९३८–५०, ९५२, कुल १२८

(ख) अन्य सूत्रों से भी उपलब्ध—

(१) तुलसी के कवि माला में उल्लिखित, अतः १६५५ ई० से पूर्व स्थित,
७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६ योग ६ कवि

(२) कालिदास के हजारा में उल्लिखित, अतः १७१८ ई० से पूर्व स्थित,
७४८ से ५१ योग ४ कवि

(३) भिखारीदास के काव्य निर्णय में उल्लिखित, अतः १७२३ ई० से पूर्व स्थित, ७५५ से ५६ योग २ कवि

(४) सूदन द्वारा उल्लिखित, अतः १७५३ ई० से पूर्व स्थित,
७५७ से ६२ योग ६ कवि

(५) कृष्णानन्द व्यासदेव के राग कल्पद्रुम में उल्लिखित, अतः १७४३ ई० से पूर्व स्थित, ७६३ से ६६, ७६८ से ७९ योग १६ कवि

(६) गोकुल प्रसाद ब्रज के दिग्विजय भूषण में उल्लिखित, अतः १८६८ ई० के पूर्व स्थित, ७८१ से ८३ योग ३ कवि

(७) हरिश्चन्द्र के सुन्दरी तिलक में उल्लिखित, अतः १८६९ ई० से पूर्व स्थित,
७८६ से ८७, ७८९ से ९५ योग ९ कवि

(८) महेशदत्त के काव्य संग्रह में उल्लिखित, अतः १८७५ ई० से पूर्व स्थित,
७९७ योग १ कवि

संक्षेप में अ-तिथि कवियों का तुलनात्मक विवरण यह है—

सरोज	ग्रियर्सन
२६३	११ को नई तिथियाँ दी गईं।
	३० को ग्रहण नहीं किया गया
	१७५ को ग्रहण किया गया और कोई तिथि नहीं दी गई।
	४७ को अन्य कवियों में विलीन कर दिया गया।
	कुल योग २६३

ग्रियर्सन के ग्रन्थ का महत्व

किन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि ग्रियर्सन का यह ग्रन्थ पूर्णतया सरोज का अनुवाद है। इतना विस्तार यह दिखलाने के लिए किया गया कि हिन्दी साहित्य के इतिहास के सहायक सूत्रों में सरोज का महत्व सर्वाधिक है। ग्रियर्सन की अनेक ऐसी विशेषतायें हैं, जिन्होंने बाद में लिखे जाने वाले हिन्दी साहित्य के इतिहासों को पर्याप्त प्रभावित किया है:—

(१) यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास है। इसमें पहली बार कवियों का विवरण काल-क्रमानुसार दिया गया है। इसके पूर्व लिखित सरोज एवं तासी में कवियों का विवरण वर्णानुक्रम से है।

(२) इस ग्रन्थ में हिन्दी साहित्य के इतिहास के विभिन्न काल-विभाग भी किये गये हैं। विनोद में बहुत कुछ इन्हीं काल को स्वीकार कर लिया गया है।

(३) प्रत्येक काल की तो नहीं, कुछ कालों की सामान्य प्रवृत्तियाँ भी दी गई हैं, यद्यपि यह विवरण अत्यन्त संक्षिप्त है।

(४) प्रत्येक कवि को एक एक अंक दिया गया है। बड़ी आसानी से किसी भी कवि को उसके नियत अंक पर देखा जा सकता है। इसी पद्धति का अनुकरण बाद में विनोद में भी किया गया। सरोज में भी किसी अंश तक यह पद्धति है, यहाँ एक एक वर्ण के कवियों की क्रम-संख्या अलग-अलग दी गई है।

(५) सरोज में कवियों के विवरण अत्यन्त संक्षिप्त हैं। इस ग्रन्थ में भी यही बात है। पर निम्नांकित १८ कवियों का विवरण पर्याप्त विस्तार से दिया गया है:—

(१) चन्द बरदाई, (२) जगनिक, (३) सारंगधर, (४) कबीरदास, (५) विद्यापति ठाकुर, (६) मलिक मुहम्मद जायसी, (७) बल्लभाचार्य, (८) बिट्ठल नाथ, (९) सूरदास, (१०) नाभादास, (११) बीरबल, (१२) तुलसीदास, (१३) बिहारीलाल, (१४) सरदार, (१५) हरिश्चन्द्र, (१६) लल्लू जी लाल, (१७) कृष्णानन्द व्यासदेव, (१८) राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द।

इनमें से जायसी और तुलसी पर तो अलग अलग अध्याय ही हैं। सम्भवतः इन्हीं अध्यायों ने आचार्य शुक्ल का विशेष ध्यान इन कवियों की ओर आकृष्ट किया।

इस अनुवाद की आवश्यकता

अब हिन्दी में अनेक अच्छे इतिहास प्रस्तुत हो गये हैं और ग्रियर्सन को आधार मानकर हिन्दी साहित्य के इतिहास की जानकारी प्राप्त करना न तो वांछनीय है और न श्रेयस्कर ही। इसी को आधार मानकर चलने वाले को अनेक भ्रान्तियाँ हो सकती हैं। सरोज की अधिकांश भ्रान्तियाँ यहाँ भी सुरक्षित हैं, जो यहाँ से खोज रिपोर्टों में और अन्यत्र पहुँची हैं। यहीं सरोज के सन सम्वतों के 'उ०' का भ्रान्त अर्थ सर्वप्रथम हुआ, जो इसीके आधार पर आजतक चलता जा रहा है। इतना सब होते हुए भी शोध के विद्यार्थी के लिये इस ग्रन्थ का महत्व है। हिन्दी साहित्व के पहले इतिहास की रूप रेखा क्या थी, बाद में लिखे गये इतिहासों को इसने कहां तक प्रभावित किया, यह सब जानने के लिए इस ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद की नितान्त आवश्यकता रही है, इसीलिये यह स-टिप्पण अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।

हिंदुस्तान

का

आधुनिक भाषा साहित्य

लेखक

जार्ज ए० ग्रियर्सन, बी० ए०, बी० सी० एस०

[द जर्नल आफ़ द एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, भाग १, १८८८ ई०

के

विशेषाङ्क रूप में प्रथम प्रकाशित]

कलकत्ता

द एशियाटिक सोसाइटी, ५७, पार्कस्ट्रीट द्वारा प्रकाशित

१८८९ ई०

प्रस्तावना

१८८६ ई० में वियना में हुए प्राच्य-विद्याविशारदों की अन्तर्राष्ट्रीय सभा के अधिवेशन में, तुलसीदास को विशेषरूप से ध्यान में रखते हुए, हिन्दुस्तान के मध्यकालीन भाषा साहित्य पर एक लेख पढ़ने का सौभाग्य मुझे मिला था। इसकी तयारी में उत्तरी हिन्दुस्तान के सम्पूर्ण भाषा साहित्य पर मुझे टिप्पणी प्रस्तुत करनी पड़ी, जिसको मैंने कई वर्षों में एकत्र किया था, यद्यपि उक्त निबन्ध में सत्रहवीं शताब्दी के पूर्व लिखित साहित्य का ही एक अंश काम में लाया गया।

जिस दत्तचित्तता के साथ उक्त लेख सुना गया, उससे प्रोत्साहित होकर, मैंने इस ग्रन्थ में प्रारम्भिक काल से लेकर आज तक के हिन्दुस्तात के भाषा साहित्य की सम्पूर्ण रूपरेखा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। भाषा साहित्य के उन समस्त लेखकों की सूची मात्र होने के अतिरिक्त यह ग्रन्थ और कुछ होने का दावा नहीं करता, जिनका नाम मैं एकत्र कर सका हूँ और जो संख्या में ९५२ हैं, तथा जिनमें से कुछ ७० का ही उल्लेख गार्सां द तासी ने अपने 'हिस्त्वायर द ला लितरेत्योर हिन्दुई एं हिन्दुस्तानी' में इसके पहले किया है।

ध्यान देने की बात है कि मैं आधुनिक भाषा साहित्य का ही विवरण प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। अतः मैं संस्कृत में ग्रन्थ रचना करने वाले लेखकों का विवरण नहीं दे रहा हूँ, प्राकृत में लिखी पुस्तकों को भी विचार के बाहर रख रहा हूँ। भले ही प्राकृत कभी बोलचाल की भाषा रही हो, पर आधुनिक भाषा के अन्तर्गत नहीं आती। मैं न तो अरबी फारसी के भारतीय लेखकों का उल्लेख कर रहा हूँ, और न तो विदेश से लाई गई साहित्यिक उर्दू के लेखकों का ही। और मैंने इन अन्तिम को, उर्दू वालों को, अपने इस विचार क्षेत्र से जान बूझकर वहिष्कृत कर दिया है, क्योंकि इन पर पहले ही गार्सां द तासी ने पूर्णरूप से विचार कर लिया है। यहाँ मैं यह और कह देना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान से मेरा अभिप्राय राजपूताना और गंगा जमुना की घाटी से है। इस शब्द के भीतर मैं पंजाब और बंगाल के निचले हिस्सों को नहीं सम्मिलित कर रहा हूँ। देशी भाषाएँ जिनको यहाँ अन्तर्भूत किया गया है, सामान्यतया तीन कही जा सकती हैं—मारवाड़ी, हिन्दी और

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी देवी स्मारक
पुस्तकालय

बिहारी, प्रत्येक अपनी विभिन्न बोलियों एवं उपबोलियों के सहित। मैं यहाँ एक परित्याग का भी उल्लेख स-खेद कर देना चाहता हूँ। अगणित एवं अज्ञात कवियों द्वारा विरचित स्वतंत्र महाकाव्यों एवं ग्राम गीतों (जैसे कजरी, जँतसार और इसी प्रकार के अन्य भी) को, जो संपूर्ण उत्तरी भारत में प्रचलित हैं, मैंने इसमें सम्मिलित करने से अपने को रोका है। ये लोगों से जबानी सुनकर वहीं संकलित किए जा सकते हैं; और जहाँ तक मैं जानता हूँ, यह संग्रह-कार्य ढंग से और केवल बिहार में किया गया है। अतः मैंने कुछ सोच बिचार के पश्चात् इस ग्रंथ में इनका एकदम उल्लेख न करने का पूर्ण निश्चय कर लिया; क्योंकि इनकी चर्चा का कोई भी प्रयास अपूर्ण एवं भ्रामक ही होता।

इस ग्रंथ में स्वीकृत विषय-क्रम का सिद्धान्त भूमिका में स्पष्ट किया गया है। अनेक कवियों के उल्लेख तो केवल नाम हैं और कुछ नहीं। इनको मैंने पुस्तक को यथासंभव पूर्ण बनाने के लिए सम्मिलित कर लिया है। जहाँ कोई सूचना मुझे मिली है, मैंने संबद्ध लेखक के नाम के आगे अंकित कर दिया है और मेरा विश्वास है कि कुछ स्थलों पर मैं यूरोपीय विद्वानों के सामने ऐसी सूचनाएँ प्रस्तुत कर सका हूँ, जो आज तक उनके सामने कभी भी नहीं रखी गईं। उदाहरण के लिए मैं पाठकों से सूरदास (संख्या ३७) और तुलसीदास (सं० १२८) पर लिखित लेखों की ओर संकेत करूँगा। मैं इस बात का दावा नहीं करता कि मैंने इन पृष्ठों में उल्लिखित विशाल साहित्य को पूर्णतया अथवा मुख्यतया पढ़ लिया है, किन्तु मैंने प्रायः उन सभी नौ सौ बावन लेखकों की कृतियों के नमूने पढ़े हैं, जिनके विवरण इस ग्रंथ में हैं। मैं यह भी दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने पढ़ा है, वह सब का सब समझा भी है, क्योंकि अनेक उदाहरण तो इतने कठिन हैं कि बिना मौखिक अथवा लिखित टीका की सहायता के इनकी व्याख्या करने का प्रयत्न ही व्यर्थ है। विषय अत्यन्त विस्तृत है और हमारे ज्ञान की वर्तमान स्थिति इतनी सीमित है कि ऐसे कार्य का प्रयत्न भी नहीं किया जा सकता। अतः मैं इसको एक ऐसे सामग्री-संग्रह के रूप में ही, भेंट कर रहा हूँ जो नींव का काम दे सके और जिसपर दूसरे लोग, जो मुझसे अधिक भाग्यशाली हैं और जिनके पास बंगाल के एक जिला कलेक्टर की अपेक्षा अधिक अवकाश है, निर्माण कर सकें।

भाषा शब्दों की वर्तनी के सम्बन्ध में मैं उसी पद्धति पर दृढ़ रहा हूँ, जिसका हमने — डा० हार्नली और मैंने—अपने 'कंपेरेटिव डिक्शनरी आफ़ द बिहारी लैंग्वेज' में अनुसरण किया है; विशेष विवरण के लिए पाठक उसे देखें। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक शब्द को कड़ाई के साथ उसी रूप में

लिखना, जिस रूप में वह बोला जाता है। मैंने इस नियम का परित्याग कतिपय जीवित भारतीय सज्जनों के नामों के ही सम्बन्ध में किया है। इस सिद्धान्त पर कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार अपना नाम लिखने की स्वतंत्रता प्राप्त है, मैंने उनके नामों की वर्तनी वैसी ही रखी है, जैसी वे अंग्रेजी में अपना हस्ताक्षर करते समय व्यवहृत करते हैं। प्रमुख कठिनाई जिसका अनुभव हमें हुआ है, वह है पूर्ण नाम बनाने वाले शब्दों के समूहों के अलग अलग विभाजन की। एकरूपता लाने का प्रयत्न कोई साधारण व्यापार नहीं सिद्ध हुआ है। ऐसा करने में विचित्र और वास्तविक प्रयोग से भिन्न परिणामों पर पहुँचना पड़ा है। इस सम्बन्ध में वर्तमान पद्धति यद्यपि सरल है, फिर भी इसका कोई सिद्धान्त नहीं, और चाहे जिस सिद्धान्त का ग्रहण कर लिया जाय, इसमें कुछ न कुछ गड़बड़ी अवश्य होगी। जहाँ जहाँ इस पुस्तक में एक ही नाम आया है, वहाँ वहाँ सर्वत्र मैंने उसे एक ही रूप में विभक्त करने का प्रयास किया है। परन्तु मुझे स-खेद कहना पड़ता है कि ग्रन्थ में आए चार हजार से कुछ अधिक ही नामों में से कुछ में लेखनी-दोष आ ही गया है।

नव भारतीय भाषाओं के सम्बन्ध में लिखने के लिए क्षमा याचना अब उतनी आवश्यक नहीं है, जितनी वह बीस वर्ष पहले हुई होती। प्रथम तो [यूरोपीय] प्राच्य विद्याविशारद मात्र संस्कृत की समाराधना में रत रहे, फिर बर्नफ़ की देख-रेख में उन्होंने पाली पर धावा किया। पिछले दिनों अमर प्राकृतों ने विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया। इस प्रकार हमारे शोध विषय का काल दिन दिन और भी आधुनिक होता गया है। अब मैं अपने पाठकों से प्रार्थना करूँगा कि वे उस लघु अन्तर के ऊपर एक डग और धरें, जो पिछली प्राकृत को प्रारम्भिक गौड़ीय साहित्य से विलग करता है। हेमचन्द्र ११५० ई०[1] के आस पास उपस्थित था और चंदबरदाई, जो कि गौड़ीय कवियों में प्रथम है, और जिसके कुछ निश्चित अवशेष आज भी हमारे पास सुलभ हैं, ११९३ में मरा।

इतने पर भी यह सम्भव है कि प्राच्य विद्याओं के कुछ विद्यार्थी अब भी संस्कृत से पुराने प्रेम के साथ चिपके रहें, उनसे मैं आगे के इन पृष्ठों में सुलभ उस वैभवपूर्ण असंस्कृत सामग्री की परीक्षा करने के लिए कहूँगा, जिसमें कठिन संस्कृत ग्रन्थों[2] के अनेक भाषाभाष्यों के तथा व्याकरण,

---

१. वह ११७२ ई० में मरा

२. उदाहरण के लिए गुमान जी (संख्या ३४६) ने नैषध पर एक अत्यन्त प्रसिद्ध टीका लिखी, यह अठारहवीं शती के प्रारम्भ में हुए हैं।

छन्दः शास्त्र, शब्द संग्रह[१], साहित्य और ऐसे ही अन्य अनेक विषयों पर लिखित शास्त्रीय ग्रन्थों के नाम हैं। भाषा कवियों में अपने ग्रन्थों में उनका रचनाकाल एवं अपने आश्रयदाता के उल्लेख करने की पद्धति होने के कारण. हिन्दुस्तान के साहित्य में, शिला लेखों के विद्यार्थियों को भी एक उर्वर खान मिलेगी। इसके अतिरिक्त, संस्कृत साहित्य में मूक बना हुआ इतिहास भी, इन भाषा कवियों द्वारा बराबर लिखा गया है और आज भी ऐसे ऐतिहासिक ग्रंथ उपलब्ध हैं, जिनका आधार वह सामग्री है, जो सुदूर नवीं शती में लिखी गई थी। अतः मैं केवल उन विद्वानों के ही समक्ष नहीं, जिन्होंने प्राकृत साहित्य की ही अब तक आराधना की है, बल्कि उन विद्वानों के भी समक्ष, जो नैषध की जटिलताओं में भ्रमण करना पसंद करते हैं अथवा 'द इंडियन ऐंटिक्वैरी' के 'कॉपर-प्लेट-ग्रांट्स' में ही लगे रहना चाहते हैं, ध्यानाकर्षण के इसके अधिकारों को प्रस्तुत करने का साहस करता हूँ।

इनका एक और भी अधिकार है जिसका मैं उल्लेख करना चाहूँगा, यह है इस नव गौड़ीय साहित्य का वास्तविक गुण। जो कुछ संस्कृत और प्राकृत के संबंध में कहा जाता है, उसके अतिरिक्त उत्तरकालीन संस्कृत और प्राकृत कविताएँ कृत्रिम रचनाएँ हैं, जो कक्ष में बैठकर, विद्वानों के द्वारा, विद्वानों के लिए लिखी गईं; किंतु नव गौड़ीय कवियों ने न छोड़नेवाले आलोचकों, जनता, के लिये लिखा। उनमें से अनेक ने प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया और जो कुछ देखा, लिखा। उन्होंने 'वृक्षों में वाणी' पाई, और जो कुछ उन्होंने भली-भाँति अथवा यों ही सुना, उसकी जैसी व्याख्या की, वैसी ही अधिक अथवा अल्प जन-प्रियता उन्हें मिली; और उसी प्रकार उनकी रचनाएँ उनके बाद जीवित रहीं अथवा नहीं रहीं। अनेक ग्रंथ जीवित हैं, जिनके लेखकों का नाम हम जानते तक नहीं, किन्तु वे जनता के हृदयों में जीवित वाणी बनकर बचे हुए हैं, क्योंकि उन्होंने जन की सत्यं और सुन्दरं की भावना को प्रभावित किया।[२]

आशा है कि तीनों अनुक्रमणिकाएँ लाभदायक सिद्ध होंगी। इनको यथासंभव शुद्ध रूप में प्रस्तुत करने में पर्याप्त परिश्रम किया गया है।

—जार्ज ए० ग्रियर्सन

---

१. उदाहरण के लिए, दयाराम (संख्या ३८७) ने एक अत्यन्त लाभदायक 'अनेकार्थ' कोश लिखा था।

२—मेरा अभिप्राय उन ग्राम्य महाकाव्यों, बारहमासों, कजलियों और अन्य लोकगीतों से है जो संपूर्ण भारत में प्रचलित हैं और जिनकी चर्चा पहले ही की जा चुकी है।

भूमिका

अ. सूचना-सूत्र

बाजार में अगणित ग्रंथों को खरीदकर जो टिप्पणियाँ मैंने एकत्र की थीं, प्रचुर मात्रा में यह ग्रन्थ उन्हीं टिप्पणियों पर आधृत है। ये प्रायः पूर्णतया देशी-सूत्रों से ही संकलित हैं। विलसन कृत 'रेलिजस सेक्टस आफ़ द हिंदूज़' और गार्सा द तासी की विभिन्न कृतियाँ, मुख्यतया 'हिन्दुई और हिन्दुस्तानी साहित्य का इतिहास' (स्व-संकलित टिप्पणियों की) जाँच के लिए प्रायः देखे गए हैं और जब मेरे द्वारा संकलित सूचना उनकी सूचना से भिन्न हुई है, तब मैंने ठीक तथ्य को निश्चय करने के लिए कोई भी श्रम बाकी नहीं उठा रखा है। एक मात्र अँगरेजी ग्रन्थ जिसको मैंने प्रमाण माना है, टाड का राजस्थान है, जिसमें राजपूताना के चारणों के सम्बन्ध में ऐसी सामग्री सुलभ है, जो साधारणतया अन्यत्र सहज ही प्राप्त नहीं। जहाँ तक सम्भव हुआ है, मैंने पूर्ण प्रामाणिक देशी सूत्रों की सहायता से टाड की भी जाँच कर ली है। इस सम्बन्ध में मुझे उदयपुर के पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या को, अत्यन्त उदारतापूर्वक दी हुई अधिकांश सहायता के लिए, धन्यवाद देना है।

एक देशी ग्रन्थ जिस पर मैं अधिकांश में निर्भर रहा हूँ और प्रायः सभी छोटे कवियों और अनेक अधिक प्रसिद्ध कवियों के भी सम्बन्ध में प्राप्त सूचनाओं के लिए जिसका मैं ऋणी हूँ, शिवसिंह सेंगर द्वारा विरचित और मुंशी नवलकिशोर लखनऊ द्वारा प्रकाशित (द्वितीय संस्करण १८८३ ई०) अत्यन्त लाभदायक 'शिवसिंह सरोज' है। यह पूर्व रचित अनेक संग्रहों के आधार पर संकलित एक काव्य संग्रह है। निम्नांकित में से अधिकांश सरोज के आधार रहे हैं। सरोज के अतिरिक्त मैंने स्वयं भी उन सभी उपलब्ध काव्य संग्रहों का सदुपयोग किया है, जिन्हें मैं एकत्र कर सका हूँ। इनमें से अनेक संग्रह ऐसे भी हैं, जिनकी सहायता पहले ही सरोज में ली जा चुकी है। जब किन्हीं कवियों की रचनाएँ इनमें से एक अथवा अनेक मुख्य संग्रहों में उपलब्ध हुई हैं, मैंने उक्त संग्रह या संग्रहों का संक्षिप्त नाम, कवि के नाम के आगे, लेख के ठीक प्रारम्भ में ही देकर इस तथ्य की ओर संकेत कर दिया है। सामान्य संग्रहों और एक या दो ऐसे अन्य संग्रहों के सम्बन्ध में मैंने प्रायः सर्वत्र ऐसा नहीं किया है, जो उस समय पर हाथ लगे, जब कि ग्रंथ मुद्रणांतर्गत था।

विभिन्न ग्रंथकारों की तिथियों के सम्बन्ध में मैंने यथासम्भव स्वयं जाँच

करने का श्रम किया है। भाषा कवियों में ग्रंथों का रचना-काल देने की एक अत्यन्त प्रशंसनीय पद्धति रही है, जो अनेक स्थलों पर उपयोगी सिद्ध हुई है। उन्होंने आश्रयदाताओं का भी प्रायः उल्लेख किया है और जब कभी इनकी पूर्ण पहचान हो गई है, उन्होंने अत्यन्त उपयोगी सूत्र दिए हैं। जब सभी उपाय असफल सिद्ध हुए, अनेक बार सरोज ही मेरा पथ-प्रदर्शक रहा है। शिवसिंह बराबर तिथियाँ देते गये हैं और मैंने उनको सामान्यतया पर्याप्त ठीक पाया है। हाँ, वे नियमतः प्रसंग-प्राप्त कवि की जन्मतिथि ही सर्वत्र देते हैं, जबकि अनेकबार ये तिथियाँ उक्त कवियों के प्रमुख ग्रन्थों के वस्तुतः रचनाकाल हैं[1]। फिर भी सरोज की तिथियों का कम से कम इतना मूल्य तो है कि किसी अन्य प्रमाण के अभाव में हम पर्याप्त निश्चित रहें कि प्रसंग-प्राप्त कवि उस तिथि को, जिसको शिवसिंह ने जन्मकाल के रूप में दिया है, जीवित था। वर्तमान ग्रन्थ में जो तिथियाँ केवल शिवसिंह सरोज के आधार पर दी गई हैं, तिरछे अक्षरों में छपी हैं। मैं परिशिष्ट की ओर ध्यान आकृष्ट करूँगा, जिसमें कुछ और तिथियाँ दी गई हैं, जिन्हें मैं ग्रन्थ के मुद्रणाधीन हो जाने पर निश्चित कर सका।

नीचे उन काव्य संग्रहों तथा अन्य ग्रन्थों की सूची दी जा रही है, जो प्रस्तुत ग्रन्थ के आधार हैं :—

संख्या	संग्रह नाम	संक्षिप्त रूप	संग्रह कर्ता का नाम	तिथि
१.	भक्तमाल	भक्त०	नाभा जी दास (सं०५१)	१५५०ई.के लगभग
२.	गोसाइँ चरित्र	गो०	वेनीमाधवदास (सं०१३०)	१६००ई.के लगभग
३.	कवि माला	माल०	तुलसी (सं० १५३)	१६५५ई.
४.	हजारा	हज०	कालिदास त्रिवेदी (सं०१५९)	१७१८ई.
५.	काव्य निर्णय	निर०	भिखारीदास (सं३४४)	१७२५ई.के लगभग
६.	सत्कविगिरा विलास	सत्०	बलदेव (सं० ३५९)	१७४६ई.
७.	दन द्वारा प्रशंसित कवि सूची	सूद०	सूदन (सं० ३६७)	१७५०ई.के लगभग
८.	विद्वन्मोद तरंगिणी	विद्०	सुब्बासिंह (सं०५९०)	१८१७ई.

१—कभी कभी, जैसे मानसिंह के सन्बन्ध में (संख्या ५९९), यह कवि का मृत्यु संवत् उसके जन्म संवत् के रूप में देते हैं।

९.	रामसागरोद्भव रागकल्पद्रुम	राग०	कृष्णानंद व्यासदेव (सं० ६३८)	१८४३ ई०
१०.	शृङ्गार संग्रह	शृंगा०	सरदार (सं० ५७१)	१८४८ ई०
११.	भक्तमाल का उर्दू अनुवाद	उ० भ०	तुलसी दास (सं०६४०)	१८५४ ई०
१२.	रस चंद्रोदय	रस०	ठाकुर प्रसाद (सं० ५७०)	१८६३ ई०
१३.	दिग्विजय भूषण	दिग्०	गोकुल प्रसाद (सं०६९४)	१८६८ ई०
१४.	सुन्दरी तिलक	सुं०	हरिश्चन्द्र (सं० ५८१)	१८६९ ई०
१५.	काव्य-संग्रह	काव्य०	महेशदत्त (सं० ६९६)	१८७५ ई०
१६.	कवि [त्त] रत्नाकर	कवि०	मातादीन मिश्र (सं० ६९८)	१८७६ ई०
१७.	शिवसिंह सरोज	शिव०	शिवसिंह सें. (सं० ५९५)	१८८३ ई०
१८.	विचित्रोपदेश[1]	विचि०	नकछेदी तिवारी	१८८७ ई०

यहाँ कतिपय उन हिंदी शब्दों के अंग्रेजी संगती शब्दों की सूची प्रस्तुत कर देना लाभदायक होगा, जिनका प्रयोग मैंने किया है। नौरस या शैलियाँ ये हैं–

१. शृङ्गार रस	मेरे द्वारा अनूदित	The erotic style
२. हास्यरस	"	The comic style
३. करुण रस	"	The elegiac style
४. वीर रस	"	The heroic style
५. रौद्र रस	"	The tragic style
६. भयानक रस	"	The terrible style
७. वीभत्स रस	"	The satiric style
८. शांति [शांत] रस	"	The quietistic style
९. अद्भुत रस	"	The sensational style

ये अनुवाद एकदम ठीक होने का दावा नहीं करते। प्रत्येक एक हिंदी शब्द का दूसरे अंग्रेजी शब्द में सरल और सामान्य रूपान्तर मात्र है।

१. ग्रंथ के अंतर्गत इस ग्रंथ का वर्णन नहीं हुआ है, क्योंकि १८८३ ई० तक का ही विवरण प्रस्तुत किया गया है। यह काशिका प्रेस, बनारस से प्रकाशित है। ग्रंथकर्ता का नाम डुमरांव वासी नकछेदी तिवारी उपनाम अजान कवि है। उसने सुधाकर कवि के सहयोग से ग्रंथ का प्रणयन किया है। यह नीति-कविताओं का हास्य रस पूर्ण संग्रह है। इसमें लगभग ५० प्रसिद्ध कवि उदाहृत हुए हैं।

नखशिख, नायक भेद और नायिका भेद आदि शब्दों की व्याख्या संख्या ८७ की पाद-टिप्पणी में मिलेगी।

जब किसी ग्रंथ के प्रसंग में 'सामयिक' शब्द का प्रयोग हुआ है, मैंने बिना किसी हिचक के Occasional द्वारा उसे अनूदित किया है। चेतावनी का अनुवाद मैंने didactic किया है। Emblematic पद्यों (हिन्दी में घान दृष्टकूट) से मेरा अभिप्राय उन कल्पना प्रजटिल सूक्तियों से है. जिनसे संस्कृत के वे [पश्चिमी] विद्वान् परिचित हैं, जिन्होंने नलोदय और किरातार्जुनीय का अध्ययन किया है।

ब. विषय-न्यास का सिद्धान्त

सामग्री को यथासंभव कालक्रमानुसार प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। यह सर्वत्र सरल नहीं रहा है. और कतिपय स्थलों पर तो यह असंभव सिद्ध हुआ है। अतएव वे कवि जिनके समय मैं किसी भी प्रकार नहीं स्थिर कर सका, अन्तिम अध्याय में वर्णानुक्रम से एक साथ दे दिए गए हैं। जब ग्रंथ छपने लगा, मुझे अचानक कुछ कवियों की अनुमित तिथियाँ मिल गईं, पर तब इतना विलम्ब हो गया था कि इन्हें उनके उपयुक्त स्थान पर सन्निविष्ट नहीं किया जा सका। अतः वे अन्तिम अध्याय ही में पड़े रह गए, किन्तु अशुद्धि निवारणार्थ मैंने परिशिष्ट में उनकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है।

ग्रंथ अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय सामान्यतया एक काल का सूचक है। भारतीय भाषा काव्य के स्वर्णयुग १६ वीं एवं १७ वीं शती पर मलिक मुहम्मद की प्रेम कविता से प्रारम्भ करके, व्रज के कृष्ण भक्त कवियों तुलसीदास के ग्रंथों (जिन पर अलग से एक विशिष्ट अध्याय ही लिखा गया है) और केशवदास द्वारा स्थापित कवियों के रीति संप्रदाय को सम्मिलित करके कुल ६ अध्याय हैं, जो पूर्णतया समय की दृष्टि से नहीं विभक्त हैं, बल्कि कवियों के विशेष वर्गों की दृष्टि से बँटे हैं।

प्रत्येक अध्याय के अन्त में छोटे अक्षरों में परिशिष्ट दिया गया है, जिनमें उस युग अथवा उस वर्ग के छोटे कवियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इन परिशिष्टों में संकलित अधिकांश सूचनाओं के लिए मैं शिव सिंह सरोज का आभारी हूँ।

स. हिंदुस्तान के भाषा साहित्य का संक्षिप्त विवरण

जहाँ तक मुझे सूचना प्राप्त है हिन्दुस्तान का प्राचीनतम भाषा साहित्य राजपूताने के चारणों द्वारा प्रस्तुत ऐतिहासिक वृत्तांत हैं। प्रथम चारण जिसके

सम्बन्ध में हमें कुछ निश्चित सूचनाएँ प्राप्त हैं, सुप्रसिद्ध चन्द बरदाई है, जिसने बारहवीं शती के अन्तिम भाग में दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान के वैभव और गुणों का वर्णन प्रख्यात 'पृथ्वीराज रासो' में किया है। उसका सम-सामयिक चारण जगनायक था, जो पृथ्वीराज के महान प्रतिद्वन्दी महोबा के परमर्दि का दरबारी था और संभवतः आल्हखंड का रचयिता था, जो पृथ्वीराज रासो की ही भाँति हिन्दुस्तान में समान रूप से प्रख्यात है, किन्तु दुर्भाग्य से हस्तलिखित रूप में सुरक्षित न रहकर मौखिक परम्परा में ही शेष रह सका है।

इन चारणों की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए, हम शारंगधर या सारगंधर का उल्लेख कर सकते हैं, जिसने चौदहवीं शती के मध्य में रणथंमौर के वीर हम्मीर (१३०० ई० में उपस्थित) के शौर्य का गीत गाया है। बुरहानपुर के केहरी (१५८० ई० में उपस्थित) पर दृष्टिपात करते हुए, हम चारणों के दो उज्ज्वल वर्गों के समीप आते हैं, जो १७ वीं शती में मेवाड़ और मारवाड़ राज-दरबारों को सुशोभित करते थे। इस सूची में अन्य साधारण कवियों और बुन्देलखण्ड के एक महत्वपूर्ण इतिहास के रचयिता (१६५० ई० में उपस्थित) लाल के समान प्रसिद्ध कवियों के नाम जोड़े जा सकते हैं। सत्रहवीं शती के अनन्तर राजपूत चारणों ने अपनी विशेषता खो दी और अधिकांश भारत के भाषा कवियों के विशाल समुद्र में पूर्णतया विलीन हो गए; जो कुछ शेष रह गए, वे पुराने अभिलेखों से केवल तथ्य संग्रह करने में अपनी प्रतिभा का ह्रास करते रहे।

जिस काम को टाड इतनी गौरवपूर्ण शब्दावली में पहले ही कर गए हैं, उसी को पुनः करने की और भारतीय साहित्य पर लगाए गए इस आरोप को कि इसमें ऐतिहासिक ग्रन्थ नहीं हैं, ये राजपूत चारण किस प्रकार पूर्णतया निराधार सिद्ध कर देते हैं, यह संकेत करने की कोई आवश्यकता यहाँ नहीं प्रतीत होती। चारणों द्वारा प्रस्तुत इन वृत्तान्तों का महत्व, जिनमें से कुछ के आधार नवीं शताब्दी तक के पुरातन ग्रंथ हैं, जितना ही अधिक आँका जाय, उतना ही कम है। यह सत्य है कि ऐसी अनेक कथाएँ हैं, जिनकी प्रामाणिकता सन्देहास्पद हैं; किन्तु कौन सा तत्कालीन यूरोपीय इतिहास इनसे बरी है ? इसमें भारत और उसके मुसलमान आक्रामकों के बीच हुए सम्पूर्ण संघर्षों के युग के राजपूताना का इतिहास भरा हुआ है, जिसको छह शताब्दियों तक विस्तृत अनेक सम-सामयिक लेखकों ने लिखा है। क्या यह आशा करना अनुचित है कि राजपूताना का कोई प्रबुद्ध राजा अनुचित अन्धकार में पड़े हुए

इन अभिलेखों की रक्षा के लिए पहुँचेगा और उन सबको अँगरेजी अनुवाद सहित प्रकाशित करा देगा ?

इन चारण इतिहासकारों से हटकर, हम गंगा की घाटी में भाषा साहित्य की ओर पुनः चलें, जो १५ वीं शती के प्रारम्भ में वैष्णव धर्म के विकास के साथ साथ विकसित हो रहा था। रामोपासना को सर्वप्रिय बनाने वाले रामानंद १४०० ई० के आसपास विद्यमान थे। उनसे भी बड़े उनके प्रसिद्ध शिष्य कबीर थे, जो एक सम्प्रदाय की स्थापना में सफल हुए, जो आज भी जीवित है, और जिन्होंने हिन्दू और इसलाम धर्मों की प्रमुख विशेषताओं का समन्वय किया था। यहाँ हम पहली बार विचारों की उस महान् उदारता का स्पर्श करते हैं, जिसका मूल सिद्धान्त रामानन्द ने प्रतिपादित किया था और जो उनके सभी अनुयायियों के सिद्धान्तों में प्रतीयमान हो रही है, तथा जो दो शतियों के अनन्तर तुलसीदास के उच्च उपदेशों में अपनी वास्तविक उच्चता को प्राप्त हुई। ईश्वर रूप में अवध के राजकुमार राम की पूजा, पत्नीत्व की पूर्ण प्रतिमा सीता की प्रेममयी पति भक्ति और मातृत्व की मूर्ति कौशल्या स्वाभाविक ढङ्ग से क्रिश्चियन चर्च की उपासना पद्धति के सर्वोत्तम रूप में विकसित हो गए हैं। यह एक ऐसा सिद्धान्त है जो उस सदाशिव स्वरूप के सामने मानव की अनन्त अधमताओं का प्रकथन करता है; साथ ही उसके बनाए हुए प्रत्येक पदार्थ में अच्छाई देखता है; किसी धर्म अथवा दर्शन-पद्धति की निंदा नहीं करता; और शिक्षा देता है कि तुम अपने प्रभु, अपने देवता को सम्पूर्ण हृदय से, सम्पूर्ण आत्मा से, सम्पूर्ण शक्ति से और सम्पूर्ण मन से प्यार करो तथा अपने प्रतिवासी को उतना ही प्यार करो जितना स्वयं अपने को करते हो।[१]

वैष्णव धर्म की दूसरी बड़ी शाखा राधाकृष्ण के परस्पर प्रेम की रहस्यमयी व्याख्या पर निर्भर है। इसका भाग्य रामकाव्य से अत्यंत भिन्न है। स्वतः सुन्दर, अनेक ईसाई धर्माचार्यों के उपदेशों के ही समान, पश्चिम में मीराबाई (उपस्थित १४२० ई०) और पूर्व में विद्यापति ठाकुर (उपस्थित १४०० ई०) के इंद्रजाल-मधुर काव्य से और भी रमणीय बन गई इसकी भावोच्छ्वासपूर्ण उपासना, जिसका आंतर अर्थ साधारण शिष्यजनों के लिए अत्यधिक सांकेतिक

१. श्री ग्राउस ने (उदाहरण के लिए रामायण बालकांड दोहा २४ की टिप्पणी में) रामचरित के अपने अनुवाद में क्रिश्चियन चर्च और तुलसीदास के सिद्धांतों की समता की कई बातें इङ्गित की हैं। हमारे चर्च के मंत्रों में से अनेक ऐसे हैं जो इस महाकवि के द्वारा रचित पद्यांशों के अक्षरशः अनुवाद हो सकते हैं।

है, अनेक स्थलों पर अधम कोटि के तांत्रिक शिव-साधकों के अनुरूप ही पतित हो गई है। अपने सर्वश्रेष्ठ रूप में भी कृष्ण काव्य रामानंद के उपदेशों के उदात्त तत्वों से रहित है। आत्म-विस्मृति ही नहीं, सर्व-विस्मृति उत्पन्न करने वाला, उस प्रेम-स्वरूप प्रिय के चरणों में निवेदित यह ऐकांतिक प्रेम, इसका सार है, जो प्रायः स्वार्थमय है। यह ईसाई धर्म के प्रथम और सर्वश्रेष्ठ आदेश की शिक्षा देता है; परंतु दूसरे आदेश को पूर्णतः भुला देता है। यह दूसरा आदेश इसप्रकार है—'अपने पड़ोसी को उतना ही प्यार करो जितना स्वयं अपने को करते हो।'

इन दोनों संप्रदायों को कुछ देर के लिए अलग छोड़कर, हमें एक असाधारण व्यक्ति के सामने रुकना चाहिए जो कुछ बातों में राजपूत चारणों का वंशज था और दूसरी तरफ जिसकी रचना में कबीर के उपदेशों का प्रभाव भी पूर्ण रूप से स्पष्ट है। मलिक मुहम्मद (उपस्थित १५४० ई०) ने मुसलमान और हिंदू दोनों आचार्यों से पढ़ा था और उन्होंने अपने युग की शुद्धतम भाषा में पद्मावत नामक दार्शनिक महाकाव्य लिखा। सुन्दरी पद्मावती के लिए रतनसेन की खोज की, अभी तक अनाक्रांत चित्तौर के अलाउद्दीन द्वारा घेरे जाने की, रतनसेन की वीरता की और पद्मावती के पातिव्रत की यह कहानी जिसकी समाप्ति भयानक जौहर की उस ज्वाला में हुई, जिसमें उस अभागे नगर की सारी पवित्रता और सुन्दरता, विजेता की कुवासना से अपनी रक्षा करने के लिए, भस्म हो गई, स्पष्ट भाषा में कहता हुआ भी, यह ग्रंथ एक रूपक काव्य है, जिसमें बुद्धिमत्ता के लिए आत्मा की खोज और वे सभी कठिनाइयाँ एवं दुर्लोभ जो उस पर यह यात्रा करते समय आक्रमण करते हैं, वर्णित हैं। मलिक मुहम्मद का आदर्श अत्युच्च है और इस मुसलमान फकीर के संपूर्ण काव्य में, अपने देशवासी हिंदुओं के कुछ महात्माओं की सी विशालतम उदारता और सहानुभूति की शिराएँ सर्वत्र प्रवाहित हैं, जब कि हिंदू लोग अभी अँधेरे ही में उस प्रकाश के लिए टटोल रहे थे, जिसकी झलक उनमें से कुछ को मिल भी गई थी।

केवल भाषा के अध्येता के लिए, सौभाग्य से पद्मावत इतना अमूल्य है कि इसका महत्त्व आँका नहीं जा सकता। सोलहवीं शती के प्रारंभिक भाग में लिखित यह ग्रंथ हमारे सामने उस युग की भाषा और उसके उच्चारण का प्रतिनिधित्व करता है। परंपरा की श्रृंखलाओं में जकड़े हिंदू लेखक शब्दों को उस प्रणाली पर लिखने के लिए वाध्य थे, जिस पर वे शब्द प्राचीन संस्कृत में उनके पुरखों द्वारा लिखे जाते थे, न कि उस रूप में जिसमें वे उस समय बोले

जाते थे। मलिक मुहम्मद ने इस हिंदू परंपरा की चिंता नहीं की और अपना ग्रंथ फारसी लिपि में लिखा और इस प्रकार जो शब्द उन्होंने लिखा उसके उच्चारण का विशेष ध्यान रखा। यह (फ़ारसी) पद्धति पूर्ण नहीं थी, क्योंकि परंपरानुसार इसमें स्वर बहुत कम लिखे जाते थे, फिर भी पद्मावत में प्रत्येक शब्द का व्यंजन-समूह उसी रूप में हमें मिलता है, जिस रूप में रचना करते समय वह बोला जाता था।

मलिक मुहम्मद के साथ हिंदुस्तान के भाषा साहित्य का शैशवकाल समाप्त समझा जा सकता है। विशाल देव के इस बच्चे में अब स्पंदन हुआ और उसे विदित हुआ कि अब वह दृढ़ और सबल हो गया है और गृद्ध के समान अपनी उड़ान लेने के लिए उसने अपने तरुण स्फूर्तिमान पंख पसार दिए। प्रारंभिक राजपूत चारणों ने संक्रमण काल में एक ऐसी भाषा में रचना की थी, जिसको ठीक-ठीक या तो उत्तरकालीन प्राकृत अथवा राजपूताना की आधुनिक भाषा का प्राचीन रूप कहना सर्वथा कठिन है। यह शैशवावस्था थी। फिर तरुणाई आई, जब बौद्ध धर्म द्वारा गृहीत स्थान को ग्रहण करने के लिए एक जन-प्रिय धर्म का प्रादुर्भाव हो रहा था और अभिनव सिद्धांतों के प्रवर्तक महात्माओं को उस बोली में लिखना आवश्यक हो गया, जिसे सर्वसाधारण समझते थे। मलिक मुहम्मद और दोनों वैष्णव संप्रदायों के गुरुओं को अपना पथ निर्मित करना था और वे अनिश्चय के साथ इस दिशा में अग्रसर हो रहे थे। जब वे लोग रचना कर रहे थे, उस समय बोली जानेवाली भाषा प्रकृत्या वही थी, जो आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में बोली जाती है, और उन्हें वही हिचक हुई होगी जो स्पेंसर और मिल्टन को अपनी भाषा में लिखने में हुई थी। स्पेंसर ने अशुद्ध प्रणाली ग्रहण की और उसने अपने 'फ़ेअरी क्वीन' को पुरातनता के साँचे में ढाला, लेकिन मिल्टन ने ठीक पथ पकड़ा, यद्यपि उसने भी पहले 'पैराडाइज़ लास्ट' को लैटिन में लिखने का विचार किया था, और तभी से अंगरेजी भाषा निर्मित हुई। यही हिंदुस्तान में हुआ। प्रारंभिक भाषा कवियों ने बड़ा साहस किया और उन्हें सफलता मिली।

सोलहवीं तथा सत्रहवीं शती हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य का श्रेष्ठतम युग है। इस देश का प्रायः प्रत्येक महान साहित्यकार इसी युग में हुआ। इसके महानतम लेखक एलिज़ाबेथ युगीन हमारे महान लेखकों के समकालीन थे। हम अंग्रेजों को यह जानना बड़ा मनोरंजक होगा कि जब हमारा देश राजदूतों के द्वारा प्रथम बार मुगल दरबार से संबंधित हुआ, जब ईस्टइंडिया कंपनी की स्थापना हुई और दोनों जातियाँ जब जल और स्थल के कारण

इतनी पृथक और दूरस्थ थीं, उस समय दोनों राष्ट्र अपने साहित्यिक गौरव के चरम शिखर पर पहुँच गए थे। विभिन्न वर्गों के जो लेखक इस युग में हुए, उनपर हमें अलग-अलग विचार करना चाहिए।

गायों के गोष्ठ वाले देश ब्रज में, जहाँ कृष्ण ने अपना शैशव बिताया था, जहाँ उन्होंने गोकुल की गोपियों के साथ प्रेम लीलाएँ की थीं, कृष्ण संप्रदाय की जड़ स्वभावतः दृढ़ता के साथ जमी और सोलहवीं शती में यह उस कृष्णोपासक संप्रदाय के कवियों का गढ़ था, जो वल्लभाचार्य और उनके पुत्र विट्ठलनाथ द्वारा प्रतिष्ठित हुआ था। उनके आठ प्रमुख शिष्यों में से, जो अष्टछाप नाम से वर्गवद्ध थे, कृष्णदास और सूरदास सर्वाधिक कुशल थे। अपने देशवासियों द्वारा यह बाद वाले [सूर], तुलसी के साथ-साथ काव्यकला की परम पूर्णता के सिंहासन के अधिकारी समझे जाते हैं, लेकिन यूरोपीय आलोचक इस बाद वाले कवि तुलसी को ही सर्वश्रेष्ठता का मुकुट पहनाना चाहेंगे और आगरा के इस अन्धे कवि को उससे नीचा, यद्यपि फिर भी बहुत ऊँचा, स्थान देंगे। इस वर्ग के एक और कवि का उल्लेख, उसकी संगीत-दक्षता की प्रसिद्धि के कारण, यहाँ किया जा सकता है। मैं तानसेन की ओर संकेत कर रहा हूँ, जो कवि होने के साथ-साथ, बादशाह अकबर का प्रधान दरबारी गायक भी था। सोलहव शती के कृष्ण भक्त कवियों के लिए, प्रमुख प्रामाणिक देशी सूत्र नाभादास की गूढ़ भक्तमाल और उसकी विविध टीकाएँ हैं।

जिस समय वल्लभाचार्य के अनुयायी ब्रज को स्व-संगीत से मुखरित कर रहे थे, अनति दूर पर स्थित दिल्ली के मुगल दरबार ने राज कवियों का एक मंडल ही एकत्र कर लिया था, जिसमें से कुछ साधारण प्रसिद्धि के ही कवि नहीं थे। टोडरमल, जो महान अर्थमंत्री होने के अतिरिक्त, उर्दू भाषा के स्वीकरण के तात्कालिक कारण थे, बीरबल, जो अकबर के मित्र और अनेक चमत्कारपूर्ण आशु कविताओं के रचयिता थे, अब्दुर्रहीम खानखाना और आमेर के मानसिंह, ए सब स्वयं भाषा के लेखक होने की अपेक्षा भाषा कवियों के आश्रयदाता होने की दृष्टि से अधिक प्रख्यात हैं; किन्तु नरहरि, हरिनाथ, करन। और गंग अत्यंत उच्च कोटि के कवि समझे जाते हैं, जो उचित ही है।

राम का गुणानुवाद करनेवाले सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास (उपस्थित १६०० ई०, मृत १६२४ ई०) इन कवियों के मध्य में एक ऐसे स्थान को सुशोभित करते हैं, जो सर्वथा उनके ही योग्य है। चारों ओर से शिष्यों और अनुयायियों से घिरे रहने वाले ब्रज के वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तकों से कहीं भिन्न, वे बनारस में अपने यशोमंदिर में अकेले ही इतने उदासीन थे, जहाँ कोई पहुँच ही

नहीं सकता। उनके शिष्य बहुत थे, आज तो वे करोड़ों की संख्या में हैं, पर अनुकरण करने वाला कोई नहीं। शतियों के तरु-राजि वेष्टित आंतर पथ से पीछे दृश्यात्रलोकन करने पर हमें अपने उज्ज्वल प्रकाश में खड़ी हुई उनकी उदात्त प्रतिमा हिंदुस्तान के रक्षक और पथ-प्रदर्शक के रूप में दिखाई देती है। उनका प्रभाव कभी भी समाप्त नहीं हुआ; नहीं, यह बढ़ गया है, और निरंतर बढ़ता ही जा रहा है; जब हम तंत्रारोहित बंगाल के भाग्य के सम्बन्ध में, अथवा रात्रि में उत्सव के रूप में मनाई जाने वाली उन चञ्चल जात्राओं के सम्बन्ध में सोचते हैं, जो कृष्ण भक्ति के नामपर निकाली जाती हैं, तब हम निश्चय ही और उचित रूप में इस महापुरुष की प्रशंसा करते हैं, जिसने बुद्ध के अनन्तर पहली बार मनुष्य को अपने पड़ोसियों के प्रति स्व-कर्तव्य सिखाया और अपने उपदेश को ग्रहण कराने में पूर्ण सफल भी हुआ। उनका महान काव्य-ग्रंथ इस समय १० करोड़ लोगों का एक मात्र धर्म ग्रंथ है और यह सौभाग्य की बात है कि इन्होंने यह पथ-प्रदर्शक पाया। यह आदर्श ग्रंथ के आदर्श उदाहरण रूप में समादृत है और इस प्रकार इसका प्रभाव केवल अशिक्षित जनता पर ही नहीं है, बल्कि साहित्यकारों की उस दीर्घ श्रेणी पर भी है, जिसने इनका अनुसरण किया है, और विशेषकर उस भीड़ पर है, जिसका रूप वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में छापे की कलों के प्रयोग से एकाएक विस्तृत हो गया है। जैसा कि इस ग्रंथकर्ता के रामायण के अपने अनुवाद की भूमिका में श्री ग्राउस कहते हैं—"दरबार से लेकर झोंपड़ी तक, यह ग्रंथ सबके हाथों में है, और प्रत्येक वर्ग के हिन्दुओं द्वारा, वे चाहे बड़े हों या छोटे, धनी हों या निर्धन, बालक हों अथवा बूढ़े, पढ़ा जाता है, सुना जाता है और भली भाँति समझा जाता है।" इस कवि के सम्बन्ध में अन्य विशेष विवरणों की जानकारी के लिए पाठक मूल ग्रंथ की ओर आमंत्रित किया जाता है।

यह महान काल सूर की श्रृंगारी कविताओं और तुलसी की प्रकृति सम्बन्धी कविताओं का ही युग नहीं था, यह काव्यकला को सुव्यवस्थित करने वाले प्रथम प्रयास के कारण भी यशः प्राप्त है। इस नवांकुर ने प्रबल वेग से पल्लवित होने की प्रवृत्ति दिखलाई। मलिक मुहम्मद तक ने ऐसी कविताएँ लिखी थीं, जो अद्भुत रूप से संगीत-हीन थी। सूरदास और तुलसीदास में तो देवों की सी शक्ति थी और अपने सभी सम-सामयिकों से वे परिष्कार और अनुपात-ज्ञान में बहुत आगे थे, लेकिन अन्य प्रारम्भिक रचयिताओं की कृतियाँ उन विद्वानों के कानों में खटकती हैं, जो पूर्ण रूपेण संस्कृत पदावली के

अभ्यस्त हैं। इसलिए खेम (संख्या ८७) जैसे कवियों के एक या दो लघु प्रयासों के अनन्तर,[1] केशव दास (उपस्थित १५८० ई०) आगे आए और उन्होंने काव्य शास्त्र के सिद्धान्तों को सदा के लिए स्थिर कर दिया। एक स्वच्छन्द कहानी उन्हें कवयित्री प्रवीणराय से सुसम्बद्ध करती है और यह कहा जाता है कि उन्होंने अपनी महान पुस्तक 'कवि प्रिया' उसी के लिए लिखी। सत्तर वर्ष पश्चात्, सत्रहवीं शती के मध्य में, चिन्तामणि त्रिपाठी और उनके भाइयों ने इनके द्वारा स्थापित नियमों को विकसित और पल्लवित किया। इस वर्ग के आचार्य कवियों की समाप्ति अत्यन्त उचित रूप में सत्रहवीं शती के अन्त में कालिदास त्रिवेदी से होती है, जो हजारा के रचयिता हैं, जो कि हिन्दुस्तान के इस स्वर्ण-काल की रचनाओं के चयन का सर्वश्रेष्ठ और प्रथम विशाल संग्रह है।

इस युग अर्थात् सत्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध में कुछ धार्मिक सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने प्रचुर साहित्य सृष्टि की। प्रमुख सुधारक, जिनके उल्लेख यहाँ किए जा सकते हैं, ये हैं—दादू (उपस्थित १६०० ई०)—दादू सम्प्रदाय के प्रवर्तक, प्राणनाथ (उपस्थित १६५० ई०)—प्राणनाथी सम्प्रदाय के प्रवर्तक, गोविन्द सिंह (उपस्थित १६९८ ई०)—सैनिक सिक्ख धर्म के प्रवर्तक और 'ग्रंथ' अथवा उक्त संप्रदाय के पवित्र ग्रंथ के संकलयिता।[2]

इस स्वर्ण-काल के राजपूत चारणों का उल्लेख पहले किया जा चुका है, जनप्रिय और स्निग्ध नजीर पर दृष्टिपात करते हुए, अब इस युग का एक ही महान कवि और रह जाता है, जिसका उल्लेख आवश्यक है। यह कवि गौरव-पूर्ण बिहारी लाल चौबे (उपस्थित १६५० ई०) हैं, जो टीकाकारों की खान के रूप में प्रख्यात हैं। इनका कोई भी विवरण इतना सटीक नहीं हुआ है। यह सात सौ दोहों के रचयिता हैं। इनके आश्रयदाता जयसिंह की ओर से इन्हें प्रत्येक दोहे पर सोने की एक अशर्फी मिलती थी। प्रत्येक दोहा जान बूझकर यथासम्भव अलंकृत और श्लेष से परिपूर्ण किया गया है और पूर्णरूपेण चिक्कणी-कृत रत्न है। बड़े बड़े साहित्यकारों ने भी इस प्रतिभाशाली कवि की रमणीय जटिलताओं को सुलझाने के लिए टीकाएँ लिखने से अपने को नहीं रोका है।

इस गौरवपूर्ण कवि के साथ साथ हमारा हिन्दुस्तानी भाषा साहित्य के स्वर्ण काल का सर्वेक्षण समाप्त होता है। अठारहवीं शती के प्रारम्भ ही से

---

१. खेम ने काव्यशास्त्र का कोई ग्रंथ नहीं लिखा।—अनुवादक।

२. गुरुगोविन्द सिंह 'गुरु ग्रंथ साहब' के संकलयिता नहीं हैं। इसका संकलन सिक्खों के पाँचवें गुरु अर्जुन ने किया था। —अनुवादक

एक अपेक्षाकृत अनुर्वर युग प्रारम्भ होता है। यह मुगल साम्राज्य के पतन और ह्रास का तथा मराठा शक्ति के आधिपत्य और पतन का युग था। मुगल आधिपत्य की समाप्ति के साथ साथ किसी अन्य आधिपत्य के अभाव में राजपूताना झगड़ों में पड़कर विभक्त हो गया था और एक राजा दूसरे राजा से, उस अपने पड़ोसी को ही लूटने के लिए, लड़ रहा था। चारण बहुत कम थे और चूँकि इन्हें केवल रक्तपात और विश्वासघात के ही गीत गाना पड़ता अतः इन्होंने चुप रहना ही उचित समझा। साहित्य के अन्य विभागों में भी इसी प्रकार का ह्रास हुआ। प्रथम कोटि का कोई भी मौलिक लेखक नहीं उत्पन्न हुआ। बड़े नाम हमें वे ही मिलते हैं जो या तो पिछली द्वि-शताब्दी में लिखित ग्रंथों के टीकाकारों के हैं या केशवदास द्वारा प्रतिष्ठापित रीति शास्त्र को और भी विकसित करने वाले लोगों के हैं। पिछली श्रेणी के लोगों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं उदयनाथ त्रिवेदी और जसवंत सिंह, जो क्रमशः रस चंद्रोदय और भाषा भूषण ग्रंथों के रचयिता हैं। इसी प्रकार इस युग में अनेक काव्य संग्रह प्रस्तुत किए गए, जैसे बलदेव कृत सत्कविगिराविलास, भिखारी दास कृत काव्य निर्णय[1] और अन्य। इस अनुर्वर शताब्दी का अंत, हिंदुस्तान की कुछ कवयित्रियों में से एक, बीबी रतन कुँवरि कृत प्रेमरत्न से समृद्ध हो जाता है।

उन्नीसवीं शती का पूर्वार्द्ध मराठा शक्ति के पतन से प्रारंभ होता है और गदर से समाप्त होता है। यह विशेषताओं से युक्त एक अन्य युग है। पिछली शती के साहित्यिक अभावों के पश्चात् यह पुनर्जागरण काल है। मुद्रण यंत्रों का प्रवेश उत्तर भारत में पहली बार हुआ; और तुलसीदास से प्रेरणा प्राप्त कर, एक स्वस्थ ढंग का साहित्य शीघ्रता से संपूर्ण देश में ओर छोर फैल गया। यह हिंदी[2] भाषा का जन्मकाल है, जिसे अंगरेजों ने आविष्कृत किया था और १८०३ ई० में सर्वप्रथम गिलक्रिस्त के शिक्षण में प्रेमसागर के रचयिता लल्लू जी लाल ने जिसे साहित्यिक गद्य रचना के माध्यम के लिए प्रयुक्त किया। यह प्राचीन से नवीन की ओर अग्रसर होनेवाला एक संक्रमण काल भी था। मुद्रण यंत्रों का प्रवेश अभी तक मध्य भारतवर्ष में नहीं हुआ था और यहाँ प्राचीन परिस्थिति ज्यों की त्यों बनी रही। इन कवियों ने, जिनमें पद्माकर भट्ट सर्वाधिक

---

१. भिखारीदास कृत काव्य निर्णय संग्रह ग्रंथ नहीं है।—अनुवादक।

२. ग्रियर्सन का अभिप्राय खड़ी बोली से है। ग्रियर्सन की यह धारणा भ्रांत है कि अँगरेजों ने खड़ी बोली का आविष्कार किया। इनके इस भ्रांत मत का खंडन आचार्य शुक्ल ने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास में पूर्ण रूप से किया है। —अनुवादक।

प्रसिद्ध थे, केशवदास और चिंतामणि त्रिपाठी द्वारा छोड़ी काव्यधारा के परिच्छद को भलीभाँति और योग्यता पूर्वक धारण किया। विक्रमसाहि ने बिहारी लाल की सुप्रसिद्ध सतसई के अनुकरण पर एक मौलिक सतसई लिखी।

इसके विपरीत बनारस में मुद्रण यंत्रों ने विद्वानों के लिए नए सामाजिकों [श्रोताओं, पाठकों] की सृष्टि कर दी और इस प्रकार उत्पन्न माँग की पूर्ति के लिए, अनेक अत्यंत महत्व की कृतियाँ प्रस्तुत की गईं। इनमें मुख्य है महाभारत का गोकुलनाथ कृत भाषानुवाद। एक नए ढंग के आलोचना लेखक भी सामने आए, जिनमें सुंदरीतिलक एवं अन्य अनेक सुंदर ग्रंथों के रचयिता हरिश्चंद श्रेष्ठतम हैं, जब कि राजा शिवप्रसाद में शिक्षा के आदर्श ने अपना एक प्रबुद्ध मित्र और अच्छी पाठ्य पुस्तकों के लिखने के कठिन कार्य में एक पथ-प्रदर्शक पाया। प्रेमसागर के रचयिता लल्लू जी लाल की चर्चा पहले की जा चुकी है। कलकतिया सभ्यता की एक अन्य और बिलकुल दूसरे ढंग की सृष्टि कृष्णानन्द व्यासदेव कृत विशाल काव्यसंग्रह रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम है, जो अधिक प्रसिद्ध संस्कृत शब्द कोष 'शब्द कल्पद्रुम' के अनुकरण पर प्रस्तुत किया गया था।

इसी युग ने हिन्दी नाटकों का उदय देखा,[१] जो अब भली-भाँति प्रतिष्ठित हो गया है और जो निकट भविष्य में महत्वपूर्ण सुन्दर रचनाओं की प्राप्ति की आशा दिलाता है।

इस संक्षिप्त विवरण में गदर के बाद के साहित्य की चर्चा नहीं की जायगी[२]। एक संक्षिप्त और अपूर्ण विवरण ग्रन्थ के अन्तर्गत मिलेगा। यह भी ध्यान देने की बात है कि प्रमुख युगों के साहित्य का और विस्तृत विश्लेषण सातवें से ग्यारहवें अध्यायों की भूमिकाओं में मिलेगा। इस लेख में जो कुछ भी प्रयास किया गया है वह हिन्दुस्तान के भाषा साहित्य के इतिहास में अनल्प गौरवपूर्ण अतीत की अत्यन्त प्रमुख विशेषताओं के दिग्दर्शन मात्र के उद्देश से।

(द) चित्र परिचय[३]

मुख पृष्ठ पर दिया गया चित्र कौशल्या के घर में बालक राम का है। मैं इस चित्र के लिए राजा शिवप्रसाद सी० एस० आई० की उदारता का आभारी

१. ग्रंथ के अंतर्गत संख्या ७०६ भी देखिए।
२. ऊपर वर्णित हरिश्चंद्र एवं सारा नाटक-साहित्य गदर के बाद के हैं।—अनुवादक।
३. इस अनुवाद ग्रन्थ में चित्र और प्लेट नहीं दिये जा रहे हैं।—अनुवादक

हूँ, जिन्होंने महाराज बनारस के एक अत्यन्त सुसज्जित हस्तलिखित ग्रन्थ के एक चित्र का मूल फोटो प्राप्त किया।

उन्हीं महाशय की कृपा का ऋणी मैं उन अन्य (१४) प्लेटों के लिए भी हूँ, जिनमें से दस राजापुर रामायण के दस पृष्ठों के हैं, जिसका विवरण पृष्ठ ४५ पर दिया गया है और जिसके कवि की हस्तलिखित प्रति होने का विश्वास किया जाता है; और तीन बनारस की हस्तलिखित प्रति के तीन पृष्ठों के हैं, जिनका उल्लेख उसी पृष्ठ पर किया गया है; और एक कवि के हस्तलेख में एक पंचनामे का है। प्रथम दो प्लेटों का प्रत्यक्षरीकरण और अँगरेजी अनुवाद इस ग्रन्थ के पृष्ठ ५१ पर दिया गया है और अन्तिम का परिशिष्ट में।

मुख पृष्ठ का चित्र रामायण के श्री ग्राउस कृत उत्तम अनुवाद के एक संस्करण में निकल चुका है; किन्तु जैसा कि यह ग्रन्थ विभिन्न कोटि के पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है और चित्र स्वयं अपने में हिन्दू कला का श्रेष्ठ उदाहरण है, इसको यहाँ पुनः प्रकाशित करने में मुझे कोई झिझक नहीं है।

अध्याय १

चारण काल (७००–१३०० ई०)

१. पुष्य कवि—उज्जैन के निवासी, ७१३ ई० में उपस्थित।

यह प्राचीनतम भाषा कवि है, जिसका कोई उल्लेख मुझे देशी लेखकों की कृतियों में मिला है। शिवसिंह सरोज का कथन है कि यह ७१३ ई० में उपस्थित था और 'भाषा (काव्य) की जड़' यही कवि है। इस विवरण से स्पष्ट नहीं होता कि इसका नाम पुष्य या पुष्प था अथवा पुंड था। इसमें स्पष्ट लिखा गया है कि कर्नल टाड ने अपने 'राजस्थान' में इस कवि का उल्लेख किया है। यदि भाषा से अभिप्राय प्राकृत के पश्चात्कालीन भाषा रूप से है, तब तो यह पूर्णरूपेण अस्वाभाविक वक्तव्य प्रतीत होता है। मुझे तो टाड में सरोज के इस कथन का कोई प्रमाण नहीं मिलता। टाड (भाग १ पृष्ठ २२९; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ २४६) में किसी पुष्य का उल्लेख अवश्य है, पर यह एक उत्कीर्ण लेख का रचयिता है। इस उत्कीर्ण लेख का टाड (भाग १ पृष्ठ ७९९) में अनुवाद भी दिया हुआ है। पुष्य के प्रति राजस्थान में यही एक मात्र उल्लेख है, जिसका संबंध सरोज के पुष्य से बाह्य तौर पर जोड़ा जा सकता है, पर यह उत्कीर्ण लेख किस भाषा में लिखा गया था, टाड में मुझे इसका भी कोई उल्लेख नहीं मिला।

टि०—सरोज के प्रताप से इस कवि का उल्लेख हिंदी के प्रथम कवि के रूप में प्रायः सभी इतिहास ग्रंथों में होता आया है। पर इस कवि के संबंध में अभी तक कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं हो सकी है।

—सर्वेक्षण ४९०।

२. खुमान सिंह—उपनाम खुमान राउत गुहलौत, चित्तौर (मेवाड़) के राजा, ८३० ई० में उपस्थित।[1]

इनके नाम से खुमान रायसा बनाया गया। यह मेवाड़ की प्राचीनतम पद्यबद्ध वंशावली है और नवीं शती[2] में लिखा गया था। इसमें खुमान राउत एवं

१—देखिए टाड का राजस्थान भाग १ पृष्ठ २४०; कलकत्ता संस्करण भाग १ पृष्ठ २५८

२—टाड भाग २ पृष्ठ ७५७; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ८१४

उनके वंश का इतिहास है। प्रताप सिंह (१५७५ में उपस्थित) के शासन-काल में इसका पुनः संस्कार हुआ और जिस रूप में आज यह उपलब्ध है उसमें प्रताप और अकबर के युद्धों तक का वर्णन है और एक पर्याप्त बड़े अंश में तेरहवीं शती[1] में चित्तौर पर डाले हुए अलाउद्दीन खिलजी के घेरे का वर्णन है। अतः ऐसा समझा जा सकता है कि इस समय इस ग्रन्थ की जो प्रतियाँ उपलब्ध हैं, वे मेवाड़ की उस बोली में हैं, जो १६ वीं शताब्दी के अंत के बाद की नहीं है।

टि०—खुमान रासो के रचयिता तपागच्छीय जैन कवि दौलत विजय हैं। दीक्षा के पूर्व इनका नाम दलपत था। ग्रंथ की रचना सं० १७६७ और १७९० वि० के बीच किसी समय हुई। इसमें राणा प्रताप के बाद के भी अन्य ७ राजाओं का विवरण है। इसमें वर्णित अन्तिम राजा संग्राम सिंह द्वितीय हैं। ग्रंथ राजस्थानी भाषा में है। यह ग्रंथ नवीं शती का नहीं है और न किसी खुमान के ही नाम पर यह रचा गया। खुमान चित्तौड़ के राजाओं की सामान्य उपाधियों में से एक है। राणा प्रताप के समय में इसके परिवर्द्धित होने की बात भी मिथ्या है। —सर्वेक्षण १३७.

३. केदर कवि, कवि और वंदीजन, ११५० ई० में उपस्थित।

शिवसिंह सरोज का कथन है कि यह अलाउद्दीन गोरी के यहाँ थे। अतः यह ११५० ई० के लगभग उपस्थित थे और यदि इनकी कोई भी रचना सुलभ हो जाय, तो वह उपलब्ध भाषा साहित्य का सम्भवतः प्राचीनतम नमूना होगी। 'इनकी कोई भी कविता हमारी नजर से नहीं गुजरी', और यदि टाड-संग्रह में वे सुलभ नहीं हैं, तो मुझे आशंका है कि वे खो गईं। सम्भवतः इनका उल्लेख टाड में हुआ है, पर मुझे टाड में इनका नाम नहीं मिला।

टि०—सरोज में गंग के विवरण में एक कवित्त उद्धृत है जिसका तृतीय चरण यह है—

चंद चउहान के केदार गोरी साहि जू के,
गंग अकबर के बखाने गुन गात हैं

इसके अनुसार केदार किसी गोरी साहि के यहाँ थे। इस गोरी का नाम अलाउद्दीन नहीं था, सम्भवत: शहाबुद्दीन था। शुक्ल जी इस कवित्त को भट्ट भणंत मानते हैं। शुक्ल जी के अनुसार यह केदार (केदर नहीं, जैसा कि ग्रियर्सन ने लिखा है) कन्नौज के राजा जयचंद के यहाँ सं० १२२४ और १२४३

१—टाड भाग १, पृष्ठ २१४, भाग २ पृष्ठ ७५७; कलकत्ता संस्करण भाग १ पृष्ठ २३१, भाग २, पृष्ठ ८१४

के बीच थे। इन्होंने जयचंद प्रकाश नामक महाकाव्य लिखा था, जो आज उपलब्ध नहीं, पर इसका उल्लेख बीकानेर के राज पुस्तक भण्डार में सुरक्षित सिंघायच दयालदास कृत राठौडां री ख्यात में हुआ है।

—सर्वेक्षण १२५

४. कुमारपाल—महाराजा अनहल वाले, ११५० ई० में उपस्थित।

इसी शतो के समाप्ति काल में राजपूताने के किसी अज्ञात कवि ने 'कुमार पाल चरित'[1] नाम वंशावली लिखी, जिसमें अन्हल के बौद्ध[2] राजा कुमार पाल की वंशावली ब्रह्मा से लेकर इन तक दी गई है। ग्रंथ की एक हस्तलिखित प्रति टाड संग्रह में है। रायल एशियाटिक सोसाइटी की सूची में इसका नाम ३१ वीं संख्या पर है।

पुनश्चः—

१०८८–११७२ ई० में शासन किया। प्रसिद्ध हेमचंद इन्हीं के दरबार में थे।

टि०—कुमारपाल गुजरात के नाथ प्रसिद्ध सिद्धराज जयसिंह के उत्तराधिकारी थे। इन्होंने सं० ११९९ से १२३० वि० तक राज्य किया। अनहल से अभिप्राय अन्हलपट्टन या अन्हलवाड़ा से है। कुमारपाल चरित की रचना प्रसिद्ध जैनाचार्य हेमचन्द्र सूरि ने की थी। इसमें सिद्धराज जयसिंह एवं कुमारपाल का इतिहास है। इसकी रचना सं० १२१८ और १२२९ के बीच किसी समय हुई। न तो हेमचन्द्र राजपूताने के कवि थे और न कुमार पाल बौद्ध थे। हेमचन्द्र गुजरात के थे और कुमारपाल जैन थे।

—सर्वेक्षण ७२

अब हम पिथौरा या पृथ्वीराज चौहान, दिल्ली, के समय में पहुँचते हैं जिसका जन्म ११५९ ई० में और देहावसान ११९३ ई० में हुआ था। यह बहादुर योद्धा[3] ही नहीं थे, साहित्य के बड़े संरक्षक भी थे। यदि हम शिव सिंह का विश्वास करें तो कम से कम इनके दरबारी दो बन्दीजनों की रचनाएँ आज भी उपलब्ध हैं। वे आगे वर्णित ५ और ६ संख्यक कवि हैं।

---

१ टाड भाग १, पृष्ठ ८१, ८० टि०, २४१ टि०, २५६, भाग २, पृष्ठ २४२ टि०; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ८६, ८७ टि०, २५६ टि०, २७५, भाग २ पृष्ठ २६६।

२ देखिए टाड, भाग १, पृष्ठ ९८; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १०६।

३. इनके जीवन चरित्र और समय के लिए देखिए, टाड भाग १, पृष्ठ ९५, २५६; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १०२, २७५।

५. अनन्यदास—चकदेवा जिले गोंडावासी, ११४८ ई० में उत्पन्न।

इस कवि के लिए एक मात्र प्रमाण शिव सिंह सरोज है, जिसके अनुसार यह अनन्य योग नाम ग्रन्थ के रचयिता थे। इसमें इस ग्रन्थ से उद्धरण भी दिया गया है। मुझे सन्देह है कि यह वास्तव में एक दूसरे पृथ्वीराज (बीकानेर वाले) के सम-सामयिक थे, जो कि १६ वीं शती में हुए हैं। (टाड, भाग १, पृष्ठ ३४३ और आगे, भाग २ पृष्ठ १८६; कलकत्ता संस्करण, भाग १, पृष्ठ ३६३ और आगे, भाग २ पृष्ठ २०३)। देखिए संख्या ७३।

टि०—यह अनन्यदास प्रसिद्ध संत अक्षर अनन्य से अभिन्न है। अक्षर अनन्य का समय सं० १७१०-९० वि० है। इन अनन्यदास के प्रकरण में दिए गए पृथ्वीराज न तो दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान हैं, जैसा कि सरोज में दिया गया है; और न यह अकबर के समसामयिक बीकानेर वाले पृथ्वीराज हैं, जैसा कि ग्रियर्सन का अनुमान है। यह दतिया के राजा रामचंद्र के पुत्र एवं सेनुहड़ा के जागीरदार पृथ्वीचंद हैं। अनन्ययोग में अक्षर अनन्य ने पृथ्वीचंद को अनेक बार संबोधित किया है। सर्वप्रथम महेशदत्त ने इन्हें अक्षर अनन्य से भिन्न अन्य अनन्यदास माना और पृथ्वीचंद के पृथ्वीराज चौहान समझने के भ्रम से इनका देहावसान काल स० १२७५ दिया। सरोज-कार ने इस कवि का विवरण एवं उसकी कविता का उदाहरण महेशदत्त के भाषा काव्य से ही लिया है।

—सर्वेक्षण ३६

६. चंद्रकवि—चंद्र या चंद्रबरदाई कवि और बंदीजन, ११९१ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम, (?) सुंदरी तिलक। यह रणथंभौर के बीसलदेव चौहान (टाड, भाग २, पृष्ठ ४४७ और आगे; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ४९२ और आगे) नामक एक प्राचीन बंदीजन परिवार के थे और अपने वंशज सूरदास के विवरण के अनुसार यह जगात[1] गोत्र के थे।

'यह पृथ्वीराज के दरबार में आकर उनके मन्त्री एवं कवीश्वर दोनों पद को प्राप्त हुए।' सत्रहवीं शती के प्रारम्भ में, मेवाड़ के अमर सिंह[2] (दे० सं० १९१) के द्वारा इनका काव्य संकलित हुआ। यह असम्भव नहीं कि उसी समय इसका आधुनिकीकरण एवं पुनः संस्कार हुआ हो, जिसके कारण

---

१. सूरदास का वंशवृक्ष आगे संख्या ३७ पर देखिए।

२. शासनकाल १५९७–१६२१ ई०; देखिए टाड भाग १, पृष्ठ १३ (भूमिका), पृष्ठ ३५० और आगे; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १२ (भूमिका), ३७१ और आगे।

आज इस मान्यता[1] की स्थापना हो गई है कि यह आधुनिक काल का एक जाल है। इनका प्रमुख ग्रन्थ प्रख्यात पृथ्वीराज रायसा (रागकल्पद्रुम) या इनके संरक्षक का जीवन चरित्र है। टाड[2] के अनुसार जिस समय चन्द्र बरदाई रचना कर रहा था, रासो उस समय का सामान्य इतिहास है; इसमें ६९ समय हैं, जिनमें कुल १ लाख छन्द हैं; इनमें से टाड ने ३० हजार छन्दों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है। (हिन्दी से अंग्रेजी में) यह अनुवाद निश्चय ही किसी भी अन्य यूरोपियन द्वारा किए गए ऐसे अनुवाद से परिमाण में अधिक है। चन्द और पृथ्वीराज दोनों ११९३ ई० में मुसलमानों से युद्ध करते हुए मारे गए थे। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इनके वंशजों में से एक कवि सूरदास थे और दूसरे वंशधर कवि सारङ्गधर (सं० ८) थे, जिन्होंने, कहा जाता है, हमीर रायसा और हमीर काव्य[3] लिखे थे। पृथ्वीराज रायसा का एक अंश बीम्स द्वारा संपादित हुआ है। इसके एक अन्य अंश का संपादन एवं अंग्रेजी अनुवाद हार्नली ने किया है। इस कार्य की अत्यधिक कठिनता ने दोनों विद्वानों के अधिक प्रगति करने में अवरोध डाला है। पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने अभी हाल इस सम्पूर्ण ग्रन्थ के एक आलोचनात्मक संस्करण का संपादन प्रारम्भ किया है, जिसकी प्रथम दो किस्तें प्रकाशित भी हो चुकी हैं। (मेडिकल हाल प्रेस, बनारस, १८८७)। इसका महोबा खण्ड, जो संभवतः जाली है अथवा कम से कम चन्द का नहीं है, कई बार हिन्दी में अनूदित हो चुका है[4]। इसमें प्रसिद्ध वीर आल्हा और ऊदल (या पूर्वी हिन्दुस्तान की परम्परा के अनुसार आल्हा और रूदल) का वर्णन है, और वह हिन्दी रूपान्तर जिससे मेरा सर्वाधिक परिचय है (अनुवाद की प्रामाणिकता के सम्बन्ध में कुछ भी कहने की स्थिति में मैं नहीं हूँ) फतेह गढ़ के ठाकुरदास का है, जो आल्ह खण्ड नाम से प्रस्तुत

---

१. देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, १८८६ ई०, (पृष्ठ ५) में प्रकाशित कविराज श्यामलदास का "चंदबरदाई के महाकाव्य पृथ्वीराज रासो की प्राचीनता, प्रामाणिकता और वास्तविकता" शीर्षक लेख, जिसमें चंद पर आक्रमण किया गया है; और पण्डित मोहन लाल विष्णु लाल पंड्या लिखित "चंद बरदाई कृत पृथ्वीराज रासो की संरक्षा" (बनारस मेडिकल हाल प्रेस, १८८७), जो कि उक्त लेख का प्रत्युत्तर है।

२. टाड भाग १, पृष्ठ २५४; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ २७३

३. टाड भाग २, पृष्ठ ४५२ टि०; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ४६७ टि० ;

४. महोबा खण्ड के एक प्रकरण के अंग्रेजी अनुवाद के लिए देखिए टाड, भाग १ पृष्ठ ६१४ और आगे; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ६४८ और आगे।

किया गया है। यद्यपि इसमें उन्हीं वीरों का वर्णन है, फिर भी यह वही आल्ह खंड नहीं है, जिसका विवरण आगे जगनिक (सं० ७) के प्रकरण में दिया गया है। गार्सां द तासी (इस्त्वायर इत्यादि भाग १, पृष्ठ १३८) के अनुसार राबर्ट लेंज नामक एक रूसी शोधी विद्वान ने चन्द्र के इस काव्य के एक अंश का अनुवाद (रूसी में) किया था, जिसे वह १८६३ ई० में सेंट पीटर्सबर्ग वापस जाकर प्रकाशित करना चाहता था, पर इस विद्वान की अकाल मृत्यु ने (यूरोपीय) प्राच्य विद्या विशारदों को इस मनोरंजक काव्य से वंचित कर दिया। कर्नल टाड ने इसके एक प्रकरण को 'द वाऊ ऑफ़ संजोगिता'[1] (संयोगिता प्रतिज्ञा) नाम से एशियाटिक जर्नल की २५ वीं जिल्द, पृष्ठ १०१-११२, १९७-२११, २७३-२८६ में मुद्रित कराया था।

इस कवि के ग्रंथ का जो मेरा अपना अध्ययन है, उसने इसके काव्यगत सौंदर्य के लिए मेरे मन में अत्यन्त प्रशंसापूर्ण भावना भर दी है। परन्तु मुझे संदेह है कि राजपूताने की विभिन्न बोलियों की पूर्ण अभिज्ञता के बिना कोई इसे रस लेकर पढ़ सकता है। जो हो, भाषा विज्ञान के विद्यार्थी के लिए इसका सर्वाधिक महत्व है, क्योंकि यूरोपीय अन्वेषकों के लिए अंतिम प्राकृत और प्रारंभिक गौड़ीय लेखकों के बीच के घोर गह्वर में पदन्यास के लिए यह एक मात्र स्थान है। यद्यपि हमें चन्द का वास्तविक पाठ उपलब्ध नहीं है, फिर भी निश्चय ही उसकी रचनाओं में हमें विशुद्ध अपभ्रंश, शौरसेनी प्राकृत रूपों से परिपूर्ण गौड़ीय साहित्य के प्राचीनतम ज्ञात नमूने प्राप्त हैं।

गार्सां द तासी के अनुसार जयचन्द प्रकाश या जयचन्द का इतिहास के लिए भी हम इस कवि के आभारी हैं। यह भी रायसा की ही भाषा में लिखा गया है और वार्ड ने इसके उद्धरण दिए हैं।

टि०—चन्द रनथंभौर के बीसल देव चौहान के वंशज नहीं थे। सरोज में इन्हें "महाराज बीसलदेव चौहान रनथभोर वाले के प्राचीन कवीश्वर की औलाद" कहा गया है। यहाँ ग्रियर्सन ने अनुवाद करने में थोड़ी सी भूल कर दी है। सरोज के अतिरिक्त इस कथन का उल्लेख अन्यत्र कहीं देखने में नहीं आया। सूरदास चन्द के वंशज थे, इस सम्बन्ध में भी विद्वानों को घोर संदेह है और 'साहित्य लहरी' का प्रसंग-प्राप्त पद प्रक्षिप्त माना जाता है। अतः चन्द के जगात गोत्रीय होने के सम्बन्ध में भी कुछ निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। हम्मीर रासो का रचयिता शारंगधर चन्द का वंशज था, इसके भी कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं। फतेहगढ़ के ठाकुरदास वाला आल्हखंड रासो

१. टाड, भाग १, पृष्ठ ६३२ और आगे, कलकत्ता संस्करण, भाग १, पृष्ठ ६५७ और आगे।

के महोबा खंड का अनुवाद नहीं है, यह परंपरा-प्राप्त, लोक-प्रचलित आल्ह-खंड का मुद्रित रूप मात्र है। जैसा कि हम केदार (सं० ४) के प्रकरण में देख चुके हैं 'जयचंद प्रकाश' केदार भट्ट की रचना है, चन्द की नहीं। रासो के अतिरिक्त चन्द की और किसी कृति का पता नहीं।

७. जगनिक—जगनिक या जगनायक बंदीजन, महोबा, बुन्देलखण्ड, ११९१ ई० में उपस्थित।

जगनिक चंद के समकालीन थे। मैं निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि मैंने इस कवि की कोई रचना देखी है। यह महोबा बुन्देलखण्ड के राजा परमाल (परमर्दि)) के दरबार में थे और इन्होंने परमाल और पृथ्वीराज के युद्धों का वर्णन किया है। जनश्रुति के अनुसार, जो असम्भव भी नहीं, आल्ह खण्ड, जिसके अनेक रूपान्तर सुलभ हैं और जो कभी कभी चंद के महाकाव्य का एक प्रक्षिप्त खण्ड भी माना जाता है, मूलतः इसी कवि की रचना है। जहाँ तक मेरी अभिज्ञता है, आल्हखण्ड मौखिक रूप में ही प्रचलित है और सम्पूर्ण भारतवर्ष में पेशेवर अल्हइतों द्वारा गाया जाता है। जैसा कि सहज ही सोचा जा सकता है, ये सभी प्राप्त रूप भाषा की दृष्टि से एक दूसरे से पर्याप्त भिन्न हैं और गानेवाले की अपनी बोलचाल के अनुरूप आधुनिक हो गए हैं। आल्हखण्ड के पूर्ण विवरण के लिए 'इंडियन ऐंटीक्वैरी' जिल्द १५, पृष्ठ २०९, २५५ देखिए। पृथ्वीराज एवं परमाल के युद्धों में आल्हा ने जो भाग लिया, उसके विवरण के लिए 'आरकेआलोजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया' की रिपोर्ट ७, पृष्ठ १३--२० देखिए।

चन्द (सं० ६) के विवरण में महोबा खण्ड का उल्लेख पहिले ही किया जा चुका है। इसमें और काव्य के अन्य पश्चिमी परिवर्तित संस्करणों में इसके वीरों का नाम आल्हा और ऊदल या ऊदन दिया गया है। ऊदल या ऊदन उदय सिंह का संक्षिप्त रूप है। पूर्वी संस्करणों में इनके नाम आल्हा और रूदल हैं। पश्चिमी संस्करण के दो विभिन्न पाठ मुद्रित हो चुके हैं, एक का सम्पादन भटपुरिया के चौधरी घासीराम ने किया है और दूसरे का सर (तब श्री) सी० इलियट की देख रेख में फतेहपुर के ठाकुरदास ने। इसका उल्लेख पहिले किया जा चुका है। ठाकुरदास ने कन्नौज के तीन निरक्षर पेशेवर अल्हइतों से आल्हा सुनकर लिख लिया था। इनमें से एक जोशी, एक तेली और एक ब्राह्मण था। कुछ अपने, कुछ उधार ली हुई अन्य विभिन्न हस्त-लिखित प्रतियों के उद्धरणों और इन तीनों के सुने पाठों के जोड़-तोड़ से

ठाकुरदास ने अपना संस्करण प्रस्तुत किया था,[1] ऐसा मेरा विश्वास है। इस प्रकार यह एक खिचड़ी रचना है। इस संस्करण के कुछ अंश का बैलड छंद में अंग्रेजी अनुवाद श्री वाटरफील्ड ने किया था, जो "कलकटा रिव्यू" में "द नाइन लाख चेन" (नौलखा हार) या "द मारू फ़्यूड" (मारू युद्ध) नाम से जिल्द ६१, ६२ और ६३ में छपा था। पूर्वी संस्करण केवल घुमक्कड़ गवैयों की जबान पर है और यह प्रायः बिहारी भाषा की भोजपुरी बोली में अभिव्यक्त है। पूर्वी परम्परा के अनुसार यह कविता मूलतः जगनिक द्वारा बुन्देलखण्डी बोली में लिखी गई थी। श्री विंसेंट स्मिथ ने इस बोली में लिखी कई रचनाएँ मुझे भेंट की हैं। जिनमें से अनेक किसी बड़े ग्रन्थ की कलाएँ प्रतीत होती हैं। इनमें उपनायक ऊदल कहा गया है।

टि०—जगनिक निःसंदेह परमाल के दरबारी एवं चन्द के सम-सामयिक थे। पर इनकी कृति जनवाणी में घुल-मिलकर अपना मूल रूप खो चुकी है। आज कोई भी रचना इनकी वास्तविक कृति के रूप में नहीं प्रस्तुत की जा सकती।

—सर्वेक्षण ३०६

८. सारंगधर कवि—बन्दीजन, रणथंभौर निवासी, १३६३ ई० में उपस्थित।

इसके बाद डेढ़ शताब्दियों का सूनापन है। फिर १३६३ ई० में हम सारंगधर को उपस्थित पाते हैं। इनका उल्लेख चन्द के वंशज के रूप में पहले किया जा चुका है। टाड के अनुसार यह रणथंभौर के परम वीर राजा हम्मीरदेव चौहान (१३०० ई० में उपस्थित) के दरबारी कवि थे, जो कि चन्द के पूर्वज बीसलदेव के वंशज थे। हम्मीर के हठी शौर्य और अलाउद्दीन खिलजी के हाथों उसकी वीरतापूर्ण मृत्यु ने अनेक कहावतों को जन्म दिया है और भारत की अनेक भाषाओं में इनका गौरवपूर्ण पद्यवद्ध वर्णन किया गया है। इनमें से कोई भी इतना सर्वप्रिय नहीं हुआ, जितना सारंगधर के दो ग्रन्थ हम्मीर रायसा और हम्मीर काव्य हुए।[2] एम० बार्थ ने मुझे जताया है कि यह वही शारंगधर है, जिसने संस्कृत काव्य-संग्रह 'शारंगधर पद्धति' का संकलन किया है, जिसका उल्लेख श्री फ़िट्ज़ एडवर्ड हाल ने वासवदत्ता की भूमिका और प्रोफेसर आफ्रेक्ट ने ज़ेड० डी० एम० जी०, जिल्द २७, पृष्ठ २ पर किया है। मैंने पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या को इस सम्बन्ध में लिखा था।

---

१ इस सूचना के लिए मैं श्री ग्राउस का कृतज्ञ हूँ।

२. टाड, भाग २, पृष्ठ ४५२ टि०, ४७२ टि०; कलकत्ता संस्करण, भाग २, पृष्ठ ४६७ टि०, ५१७ टि०।

उनके उत्तर ने इस सूचना की सत्यता को सुदृढ़ कर दिया है। मैं इन महाशय का उन उद्धरणों के लिए भी कृतज्ञ हूँ, जिनसे सिद्ध होता है कि सारंगधर या शारंगधर नहीं, बल्कि उनके पितामह रघुनाथ हम्मीर के दीक्षा गुरु थे। सारंगधर पद्धति की रचना सन् १३६३ ई० में हुई थी।

मैंने इस कवि की रचनाओं के कुछ फुटकर अंश ही देखे हैं, अतः मैं यह कहने में असमर्थ हूँ कि अन्य दोनों काव्य ग्रंथ निश्चित रूप से इसी कवि के हैं अथवा नहीं। जयपुर के बाबू ब्रजनाथ वंद्योपाध्याय कृत 'हम्मीर रासा' या 'रणथंभौर के राजा हम्मीर का इतिहास' के अनुवाद (जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ४८, १८७९ ई०, पृ० १८६) ने संदेह उत्पन्न कर दिया है। इस अनुवाद की भूमिका के अनुसार मूल-ग्रंथ नीमराना, अलवर के किसी जोधराज की रचना है। यह जोधराज[1] पृथ्वीराज चौहान के वंशज चंद्रभान के दरबारी कवि थे, यह गौड़ ब्राह्मण थे और बिजावर में पैदा हुए थे। रायल एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में टाडसंग्रह के अन्तर्गत, (ग्रंथांक ३२) सारंगधर (या शारंगधर) पद्धति की एक प्रति है। मुझे २९९ दुपतिये पत्रों के इस बड़े ग्रंथ को सरसरी तौर से ही देखने का अवसर मिला था। प्रोफ़ेसर पीटर्सन ने इसका एक संस्करण बंबई से प्रकाशित कराया है। उक्त संग्रह में ग्रंथांक ४२ का नाम 'हम्मीरचरित' है, पर मैं यह कहने में असमर्थ हूँ कि यह ऊपर वर्णित ग्रंथों में से ही कोई है अथवा नहीं।

टि०—बीसलदेव चंद के पूर्वज नहीं थे। बीसलदेव के दरबारी कवि चंद के पूर्वज थे। सारंगधर चंद के वंशज थे, इसका कोई प्रमाण सुलभ नहीं। सरोज को छोड़ ऐसा उल्लेख और कहीं देखने में नहीं आया। हम्मीर पर अनेक काव्य-ग्रंथ प्रस्तुत किए गए हैं। जोधराज का हम्मीर रासा, शारंगधर के हम्मीर रासा से भिन्न रचना है। जोधराज के हम्मीर रासा का अनुवाद ब्रजनाथ वंद्योपाध्याय ने किया था। जोधराज ने भी एक हम्मीर रासा लिखा था, इससे यह कदापि नहीं सिद्ध होता कि सारंगधर ने हम्मीर रासा नहीं लिखा था। एक ही विषय और नाम के विभिन्न ग्रंथ, विभिन्न समयों में, विभिन्न व्यक्तियों द्वारा बराबर लिखे गए हैं। टाड संग्रह का हम्मीर चरित (ग्रंथांक ४२) नाम की विभिन्नता के कारण सारंगधर के ग्रंथ से अभिन्न नहीं प्रतीत होता।

---

१. अकबर के दरबार में जोध (सं० ११८) नामक एक कवि हुआ है, वह यही कवि हो सकता है।

शारंगधर के पिता का नाम दामोदर और पितामह का राघवदेव (रघुनाथ नहीं, जैसा कि ग्रियर्सन में कहा गया है) था, जो हम्मीर के दरबारी थे ।

—सर्वेक्षण ९३२।

९. जोधराज—नीमराना, अलवर के निवासी, १३६३ ई० में उपस्थित। ऊपर संख्या ८ देखिए ।

टि०—ये गौड़ ब्राह्मण बालकृष्ण के पुत्र थे। इन्होंने नींवगढ़ (वर्तमान नीमराना, अलवर) के राजा चंद्रभान चौहान के अनुरोध से हम्मीर रासा नामक एक बड़ा प्रबंध काव्य सं० १८७५ में लिखा था। ग्रियर्सन में दिया इनका समय १३६३ ई० अशुद्ध है । यह कवि रीतिकालीन है और हिंदी साहित्य के आदि काल में इसे स्थान नहीं दिया जाना चाहिए ।

—हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ० ३५१

अध्याय २

पन्द्रहवीं शती का धार्मिक पुनर्जागरण

१०. रामानन्द स्वामी—१४०० ई० के आसपास उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। अब हम चारणकाल को पीछे छोड़ते हैं और प्राचीनता के कुहासे से निकलकर, पन्द्रहवीं शती के प्रारम्भ में, वैष्णव धर्म के उत्थान के साथ साथ, साहित्य के महान पुनरुत्थान के युग में प्रवेश करते हैं। इस सम्बन्ध में जो पहला नाम हमें मिलता है, वह है रामानन्द का (१४०० ई० के लगभग उपस्थित)। यह लेखक की अपेक्षा धार्मिक सुधारक अधिक थे। (देखिए विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ हिंदूज़, भाग १, पृष्ठ ४७)। मैंने इनके द्वारा लिखित, या इनकी रचना होने के अभिप्राय से लिखित कुछ पद (hymns) एकत्र किए हैं, जो लोगों की जबान पर चढ़कर पूर्व में मिथिला तक पहुँच गए हैं।

टि०—स्वामी रामानन्द प्रयाग के पुण्यसदन और सुशीला देवी नामक कान्यकुब्ज ब्राह्मण की संतान थे और काशी में स्वामी राघवानन्द के शिष्य थे। यह श्री संप्रदाय के वैष्णव थे। संप्रदाय के अनुसार इनका जन्मकाल सं० १३५६ माघ कृष्ण सप्तमी और मृत्युकाल सं० १४६७ वैशाख शुक्ल तृतीया है। डा० श्री कृष्णलाल ने इनकी वय १३५–३६ वर्ष और मृत्युकाल सं० १४९१–९२ स्वीकार किया है।

—रामानन्द की हिंन्दी रचनाएँ, पृष्ठ ३४, ४०, ४१,

११. भवानन्द—१४०० ई० के आसपास उपस्थित।

रामानन्द के शिष्यों में से एक (विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ हिंदूज़, भाग १, पृष्ठ ५६)। १४ अध्यायों में लिखित 'अमृत धार' नामक वेदांत दर्शन के एक हिन्दी भाष्य के प्रसिद्ध लेखक। देखिये मैक० सूचीपत्र, भाग २, पृष्ठ १०८; गार्सों द तासी द्वारा भाग १ पृष्ठ १४० पर उल्लिखित एवं उदाहृत।

टि०—इनका शुद्ध नाम भावानन्द है। नाभादास ने रामानन्द के १२ शिष्यों में इनका नाम दिया है—

अनन्तानन्द, कबीर सुखा, सुरसुरा, पद्मावति, नरहरि।
पीपा, भावानन्द, रैदास, धना, सेन, सुरसुर की घरहरि। ३६

१२. सेन कवि—बांधव वाले। १४०० ई० के आसपास उपस्थित।

हजारा। जाति के नाई और रामानंद जी के शिष्यों में से एक। सिक्ख ग्रंथ में भी इनकी कविताएँ हैं। यह और इनके वंशज कुछ दिनों तक बांधो (रीवाँ) के राजाओं के कौटुंबिक गुरु थे। इनके संबंध में एक जनश्रुति के लिए देखिए विलसन, 'रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज' भाग १, पृष्ठ ११८.

टि०—ऊपर उद्धृत रामानंद के शिष्यों की सूची वाले नाभा के छप्पय में सेन का भी नाम है। इनका संबंध बांधवगढ़ के राजा रामचंद्र बघेला (शासनकाल सं० १६११–१६४८ वि०) से कहा जाता है। ऊपर जिस जन-श्रुति की ओर संकेत किया गया है, वह यह है। सेन उक्त राजा के यहाँ देह दबाने जाया करते थे। एक दिन भक्त अतिथि आ गए। उनके स्वागत सत्कार में सेवा का समय टल गया और भगवान ने स्वयं सेन का रूप धारणकर ठीक समय पर राजा के पाँव दबाए। जब विलंब से सेन गए, तब राजा ने कहा कि तुम बावले तो नहीं हो गए हो, अभी तो देह दबाकर गए हो, अब फिर आ गए। सेन एवं राजा पर यह भगवत् रहस्य खुलते देर न लगी। सेन के भक्ति-प्रभाव को देखकर राजा उनका शिष्य हो गया।

१३. कबीरदास—बनारस के जुलाहा। १४०० ई० के आसपास उपस्थित।

हजारा, राग कल्पद्रुम। रामानंद के शिष्यों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध थे। शब्दावली, रमैनी, साखी और सुखनिधान में इनकी प्रमुख रचनाएँ सम्मिलित हैं। ये सर्वत्र प्रख्यात रचनाएँ हैं और अब भी उद्धृत की जाती हैं। परंपरा के अनुसार यह एक अक्षत-योनि ब्राह्मण विधवा के पुत्र थे। यह छोड़ दिए गए थे। एक जुलाहे की स्त्री नीमा अपने पति नूरी के साथ एक बारात में जा रही थी। उसने बनारस के निकट लहरतारा नामक तालाब में एक कमल के ऊपर इन्हें पाया। कहा जाता है कि यह ११४९ ई० से १४४९ ई० तक लगभग तीन सौ वर्षों तक जीवित रहे। वस्तुतः यह पंद्रहवीं शती के प्रारंभ में उपस्थित थे।[1]

'खास ग्रंथ' नामक संग्रह में सुरक्षित, कबीर के कहे जाने वाले भारी भरकम ग्रंथों की पूरी सूची, विलसन के रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज़' भाग १ पृष्ठ ७६ पर सुलभ है। तात्कालिक उपयाग के लिए यहाँ यह उद्धृत कर दी

---

१. विशेष विवरण के लिए विलसन कृत 'रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज' भाग १, पृ० ७१ देखिए।

जा रही है। गार्सां द तासी भी देखिए (हिस्त्वायर इत्यादि भाग १, पृष्ठ २७४)।

१. सुखनिधान।
२. गोरखनाथ की गोष्ठी।
३. कबीर पंजी।
४. बलख की रमैनी।
५. रामानन्द की गोष्ठी।
६. आनन्द राय सागर।
७. शब्दावली—१००० शब्दों या लघु सैद्धांतिक रचनाओं का संग्रह।
८. मंगल—१०० लघुकविताएँ, जिनमें ऊपर लिखी हुई कबीर की प्राप्ति-कथा है।
९. वसंत—रागों में १०० पद।
१०. होली—होली नामक २०० गीत।
११. रेखता—१०० रचनाएँ (odes)
१२. झूलना—विभिन्न शैलियों में ५०० रचनाएँ (odes)
१३. खसरा—विभिन्न शैलियों में ५०० रचनाएँ (odes)
१४. हिंडोल—विभिन्न शैलियों में १२ रचनाएँ (odes)

इन सब रचनाओं (odes या hymns) का विषय सदैव नैतिक अथवा धार्मिक है।

१५. बारहमासा—धार्मिक, विशेषकर कबीर-पंथ के दृष्टिकोण से १२ महीनों का वर्णन।
१६. चाँचर—२२
१७. चौंतीसा, दो—नागरी वर्णमाला के ३४ अक्षर, धार्मिक महत्व के साथ।
१८. अलिफ़ नामा—इसी प्रकार पारसी वर्णमाला।
१९. रमैनी—सैद्धांतिक अथवा विचारात्मक लघु कविताएँ।
२०. साखी—५०००। यह एक एक छन्द की रचनाएँ (texts) समझी जा सकती हैं।
२१. बीजक (राग कल्पद्रुम) (बड़े और छोटे)—६५४ खंडों में।

जो लोग इस संप्रदाय के सिद्धांतों का गम्भीर अध्ययन करना चाहते हैं, उनके लिए आगम, बानी आदि पद्यों की विविधता है, जिसमें अध्ययन के लिए प्रचुर सामग्री है।

टि०—कबीर का जन्म काल सं० १४५५ वि० एवं मृत्युकाल सं० १५७५ वि० स्वीकार किया जाता है। इनके नाम पर बहुत साहित्य मिलता है, जो सब का सब इनका नहीं है। ऊपर वर्णित सभी रचनाएँ भी कबीर की नहीं कही जा सकतीं। इनमें कबीर-पन्थ के अनुयायियों की रचनाएँ ही अधिक मात्रा में हैं।

१४. भगोदास—१४१० ई० में उपस्थित।

कबीर के शिष्यों में से एक और लघु बीजक के संकलयिता या लेखक। देखिए विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ हिन्दूज़ भाग १, पृष्ठ ७९; गार्सां द तासी, भाग १ पृष्ठ ११८.

१५. सुतगोपाल—१४२० ई० में उपस्थित।

कबीर के अन्य शिष्य और सुखनिधान के रचयिता। देखिए, विलसन, पूर्वानुसार, पृष्ठ ९०।

१६. कमाल कवि—बनारसी १४५० ई० में उपस्थित।

हजारा, राग कल्पद्रुम। यह कबीर के पुत्र थे। यह अपने पिता के कथनों के विरुद्ध दोहे (Couplets) बनाया करते थे, इसलिए यह कहावत—
"बूड़ा वंश कबीर का कि उपजा पूत कमाल।"

देखिए फ़ैलन की हिन्दुस्तानी डिक्शनरी—उपजना, पृष्ठ १२।

१७. विद्यापति ठाकुर—दरभंगा जिले में बिसपी के रहनेवाले, १४०० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। रामानंद और कबीर द्वारा प्रसिद्ध बना दिये गये मध्य हिंदुस्तान को थोड़ी देर के लिए छोड़कर यदि हम अपने पगों को थोड़ा और पूर्व की ओर मोड़ें, तो हम पूर्वी भारत के सर्वाधिक प्रसिद्ध वैष्णव कवियों में से एक को सन् १४०० ई० में उपस्थित पाएँगे। विद्यापति ठाकुर उस महान् गीत परम्परा के प्रवर्तक थे, जो बाद में संपूर्ण बंगाल में फैल गई; और उनका नाम आज तक कर्मनाशा से कलकत्ता तक प्रत्येक घर में सुपरिचित है। इन सीमाओं के अन्तर्गत बोली जानेवाली अनेक बोलियों में उनके गीतों के रूपान्तर हुए हैं और उनके अनुकरण पर नूतन गीतों की सृष्टि हुई है। उनके जीवन के सम्बन्ध में बहुत कम अभिज्ञता प्राप्त है। वह गनपति ठाकुर के पुत्र थे, जो जयदत्त ठाकुर के पुत्र थे। इस वंश के प्रवर्तक विष्णु शर्मन थे, जो विद्यापति से सात पीढ़ी पहले बिसपी, आजकल के बिसफी, गाँव में रहते थे। यह गाँव सन् १४०० ई० में सुगौना के राजा शिवसिंह (उस समय युवराज) के द्वारा कवि को माफ़ी के तौर पर दिया गया था। कृष्णार्पण का अभिलेख अब भी उपलब्ध है। विद्यापति

कई संस्कृत ग्रन्थों के रचयिता थे, जिनमें से मुख्य हैं सुप्रसिद्ध पुरुष-परीक्षा, दुर्गा भक्ति तरंगिणी, दान वाक्यावली, विवाद सार और गया पत्तन; किन्तु इनका प्रमुख गौरव मैथिली बोली में रचित इनके अतुलित पदों में है, जो राधा कृष्ण के प्रेम व्याज से आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध की रूपकात्मक अभिव्यक्ति करते हैं। सुप्रसिद्ध हिन्दू सुधारक चैतन्य सोलहवीं शती के प्रारम्भ में (जन्म १४८४ ई०) हुए। उन्होंने इनके पदों को सहज ही स्वीकार कर लिया था और बड़े उत्साह से इन्हें गाते थे। उनके द्वारा ये गीत इन निचले प्रान्तों में घरेलू काव्य बन गए। फलतः अनेक अनुकरण करने वाले हो गए, जिनमें से अनेक ने विद्यापति के ही नाम से लिखा, अतः असल को नकल से अलग करना अत्यन्त कठिन हो गया है, विशेषकर उस दशा में और भी जब कि असल भी समय के फेर से बंगाली महावरों एवं छंदों के अनुकूल बदल गए हैं। विद्यापति बंगाली कवि चण्डीदास और उमापति तथा जयदेव के सम-सामयिक थे तथा इनमें से प्रथम (चण्डीदास) के साथ इनकी अच्छी मित्रता भी थी, यह हम जानते हैं। हम देख चुके हैं कि यह १४०० ई० में एक प्रसिद्ध कवि थे। इनके हाथ की लिखी भागवत पुराण की एक पोथी अभी तक उपलब्ध है, जिस पर ल० संवत् ३४९ (१४५६ ई०) अंकित है, अतः वे पर्याप्त वृद्धावस्था तक जीवित रहे। इनके जीवन की यही दो निश्चित तिथियाँ हमें ज्ञात हैं। निम्नांकित तिथियाँ अजोध्या प्रसाद के गुलज़ारे बिहार में उल्लिखित विभिन्न राजाओं के सिंहासनारोहण की तिथियों के अनुसार हैं। अजोध्या प्रसाद की तिथियाँ ये हैं—

राजा देव सिंह १३८५ ई० में सिंहासनासीन हुए

शिव सिंह १४४६

दो रानियों ने १४४९ से १४७० तक राज्य किया

नरसिंहदेव १४७०

धीर सिंह १४७१

पुष्पिका के अनुसार पुरुष-परीक्षा देव सिंह के समय में अर्थात् १४४६ ई० के पूर्व लिखी गई; और दुर्गा भक्ति तरंगिणी नरसिंह देव के समय में अर्थात् १४७० ई० में। अतः विद्यापति के जीवन की उपलब्ध तिथियों को हम इस प्रकार रख सकते हैं, इनमें से जो अजोध्या प्रसाद के अनुसार हैं, वे तिरछे अक्षरों में दी गई हैं:—

बिसपी गाँव पाया, अतः इस समय के पूर्व ही पूर्ण विद्वान्	१४०० ई०
इस तिथि के पहले पुरुष-परीक्षा लिखी	१४४६ ई०

इस तिथि के पहले शिवसिंह को समर्पित सभी गीत लिखे १४४९ ई०
भागवत पुराण की प्रतिलिपि की १४५६ ई०
दुर्गाभक्ति तरंगिणी लिखी १४७० ई०

यदि इन तिथियों को ठीक माना जाय तो इन्होंने अपना ग्रंथ कम-से-कम ९० वर्ष की वय में पूर्ण किया होगा। विद्यापति के महान् आश्रयदाता राजा शिवसिंह रूपनारायण भी कहे जाते थे, जो उस वंश के अनेक लोगों की सामान्य उपाधि प्रतीत होती है। इनकी कई पत्नियाँ थीं, जिनमें से कवि ने लखिमा ठकुराइन, प्राणवती और मोदवती को अमर कर दिया है। एक जनश्रुति है कि बादशाह अकबर[1] ने शिवसिंह को किसी अपराध पर दिल्ली बुलाया और विद्यापति ने अपनी दैवी-शक्ति का प्रदर्शन कर अपने आश्रयदाता को बंधन मुक्त कराया। बादशाह ने विद्यापति को एक काष्ठ-मंजूषा में बन्द कर दिया और नगर की कुछ मंगला मुखियों को सरिता स्नान के लिए भेज दिया। जब सब समाप्त हो गया, बादशाह ने विद्यापति को मंजूषा से मुक्त किया और जो कुछ हुआ था उसका वर्णन करने के लिए कहा। तब विद्यापति ने तत्काल एक गीत बनाकर सुनाया, जो उनके सर्वाधिक मनोहर गीतों में से एक है। यह परंपरा से हम तक पहुँचा है और इसमें एक स्नान-रता सुंदरी का वर्णन है। इनकी प्रतिभा से चमत्कृत होकर बादशाह ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर शिवसिंह को मुक्त कर दिया। दूसरी जनश्रुति यह है कि कवि ने अपना अंत निकट आया जानकर पवित्र गंगा के तट पर मरना निश्चित किया। मार्ग में उन्होंने सोचा कि धारा तो भक्तों की बेटी है; और उन्होंने उसे अपने पास बुलाया। आज्ञाकारिणी बाढ़ तीन धाराओं में विभक्त हो गई और जहाँ विद्यापति बैठे थे, वहाँ तरंगायित होने लगी। प्रसन्नतापूर्वक इसके पवित्र जल पर दृष्टि-निक्षेप करते हुए, विद्यापति ने अपना शरीर गिरा दिया और दिवंगत हो गए। जहाँ वे मरे, वहाँ एक शिवलिंग निकल आया। यह शिवलिंग और सरिता के चिह्न अभी तक वहाँ दिखाए जाते हैं। यह स्थान दरभंगा जिले में बाजितपुर कस्बे के निकट है। उस महान वृद्ध गीताचार्य के उपयुक्त ही उसकी यह मृत्यु-गाथा है।

पूर्वी हिंदुस्तान के साहित्य के इतिहास पर विद्यापति का प्रभाव अत्यधिक है। यह उन धार्मिक प्रेम गीतों की रचना की कला में पूर्ण प्रवीण थे, जो

---

१. यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि (यदि इस कथा पर विश्वास किया जाय तो) अकबर इस कथा का वास्तविक नायक कदापि नहीं हो सकता क्योंकि वह सोलहवीं शती के उत्तरार्द्ध में हुआ है।

बाद में अत्यंत विकृत रूप में वैष्णव पोथियों के सार बने। परवर्ती कवियों ने अनुकरण करने के सिवा और कुछ नहीं किया है। किंतु जब कि इस गीत परंपरा के प्रवर्तक ने कोई भी विषय ऐसा नहीं लिया, जिसे उसने वस्तुतः सच्ची काव्यकला से मंडित न कर दिया हो, उसके अनुकरणकारियों ने उनकी विचित्र मनोरम स्पष्टता को प्रायः अस्पष्टता में बदल दिया है और उनके भावोच्छ्वास-पूर्ण प्रेम गीतों को वासना साहित्य में।

१८. उमापति—१४०० ई० में उपस्थित।

यह मिथिला के महान कवियों में से एक थे और परम्परा के अनुसार यह शिवसिंह के दरबारी कवि और विद्यापति के सम-सामयिक थे। देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, अंक ५३, पृष्ठ ७७, और ज़ेड० डी० एम० जी०, अंक ४०, पृष्ठ १४३, जहाँ प्रोफेसर आफ्रेक्ट एक उमापति की तिथि ग्यारहवीं शती के पूर्वार्द्ध में स्थिर करते हैं। मैथिल परम्परा इनको वही उमापति मानती है, जिनका उल्लेख यहाँ किया गया है।

१९. जैदेव—१४०० ई० में उपस्थित।

एक मैथिल कवि। कहा जाता है कि यह गीत गोविंद के रचयिता जयदेव से भिन्न थे। यह सुगौना के शिवसिंह के दरबारी कवि और विद्यापति के सम-सामयिक थे। देखिये जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, अंक ५३, पृ० ८८.

२०. मीराबाई—मारवाड़ी। १४२० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। विद्यापति और उनके उत्तराधिकारियों को यहीं छोड़कर, अब हम हिंदुस्तान के एक दम पश्चिम में चल सकते हैं, जहाँ मेवाड़ में, मीराबाई, उत्तर भारत की एक मात्र महान कवयित्री रनछोड़ कृष्ण के भावोच्छ्वासपूर्ण गीत गा रही है। यह असाधारण नारी, जो सन १४२० ई० में उपस्थित थी, मेड़ता के राठौर राजा रतिया राना[1] की पुत्री थी और संवत १४७० (१४१३ ई०) में चित्तौर[2] के राना मोकलदेव के पुत्र, राजा कुंभकरन (संख्या २१) के साथ बिवाहित हुई थी। इनके पति संवत १५३४ (१४६९ ई०) में अपने पुत्र ऊदा राना द्वारा मारे गए। इनका महान कृतित्व 'राग गोविन्द' है। इन्होंने जयदेव के गीत गोविन्द की एक अत्यंत प्रसिद्ध टीका भी लिखी थी। यह कृष्ण के रणछोड़ रूप की पुजारिन थीं और परम्परा कहती

१—टाड के अनुसार (भाग २, पृष्ठ २१३ कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ २४) मीरा के पिता का नाम दूदा था।

२—विलसन के अनुसार उदयपुर।

है कि उनके विग्रह की इस भाव-विभोरता से पूजा करती थीं कि यह सजीव हो जाता था और देवता अपना स्थान छोड़कर 'आओ मीरा' कहते हुए इन्हें आकर्षित कर लेता था। इन शब्दों को सुनकर भावातिरेक में, वह उनकी भुजाओं में ही दिवंगत हो गईं। विलसन के अनुसार,[१] अपने धार्मिक सिद्धांतों के कारण अपने पति के परिवार वालों द्वारा यह अत्यधिक सताई गईं। यह घुमक्कड़ वैष्णवों की आश्रयदात्री हो गईं और इन्होंने वृन्दावन तथा द्वारिका की तीर्थ यात्रा की। द्वारिका छोड़ने के पहले, इन्होंने अपने प्रिय देवता की आज्ञा लेने के लिए उनके मंदिर में प्रवेश किया। पूजा के पश्चात् मूर्ति फट गई। मीरा दरार में कूद गईं, मूर्ति पूर्ववत बंद हो गई और मीरा सदा के लिए अंतर्धान हो गईं। मैंने मिथिला के लोगों से जबानी सुनकर इनके कहे जानेवाले कुछ गीतों का संकलन किया है। इस तथ्य से इनकी कविताओं की सर्वप्रियता का कुछ अनुभव सहज ही किया जा सकता है।[२]

टि०—मीरा रतिया राना की पुत्री नहीं थीं, यह जोधपुर राज्य के अंतर्गत मेड़तिया के राजा राठौर रत्न सिंह की पुत्री थीं। मेड़तिया को ही सरोज में रतिया कहा गया है एवं इसका अनुसरण कर ग्रियर्सन में भी यही रतिया नाम आ गया है। इनके पिता का नाम दूदा नहीं था, जैसा कि टाड में लिखा गया है। इनका जन्म कुड़की नामक गाँव में सं० १५५५ के आस पास हुआ था। इनका विवाह सं० १५७३ ई० में चित्तौर ने महाराना भोजराज के साथ हुआ था, न कि कुम्भकर्णसी के साथ। चित्तौर, उदयपुर एवं मेवाड़ सब एक ही राज्य के सूचक हैं। जिस समय का यह विवरण है, उस समय उदयपुर अस्तित्व में नहीं आया था। इसकी स्थापना अकबर के समय में राना प्रताप सिंह के पिता उदयसिंह ने की थी। सं० १५७५ में मीरा विधवा हुईं। सं० १५९१ में उन्होंने गृह त्याग किया। सं० १६०३ में द्वारिका में इनका देहावसान हुआ।

—सर्वेक्षण ७००

२१. कुम्भकरन—चित्तौर (मेवाड़) के राजा, मीराबाई के प्रति, १४१९ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह १४०० ई० के आसपास सिंहासनासीन हुए और अपने पुत्र ऊदा द्वारा १४६९ ई० में मारे गए। टाड के अनुसार (प्रथम

१—रेलिजस सेक्ट्स आफ़ हिन्दूज़, पृष्ठ १३७

२—देखिये टाड, प्रथम भाग पृष्ठ २८९, द्वितीय भाग पृष्ठ ७६०;
कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ३०६, भाग २, पृष्ठ ८१८.

भाग पृष्ठ २८९; कलकत्ता संस्करण प्रथम भाग पृष्ठ ३०८) यह कुशल कवि थे और इन्होंने गीत गोविंद की टीका लिखी थी। कहा जाता है कि काव्य की शिक्षा प्रारम्भ में इन्हें इनकी पत्नी, प्रसिद्ध मीराबाई (संख्या २०) से मिली।

टि०—कुंभकरण जिन्हें राना कुंभा भी कहा जाता है, न तो मीरा के पति थे और न उसके समकालीन ही। कुंभा मीरा के पर्याप्त पहले हुए हैं। इनके संबंध में सारी सूचना टाड के आधार पर दी गई है और अशुद्ध है। राना कुम्भा के कवि होने की बात भी सत्य नहीं प्रतीत होती। —सर्वेक्षण १३१

२२. नानक—पंजाब के अंतर्गत तिलवड़ी के बेदी खत्री (देखिए, विलसन एसेज़, भाग २, पृष्ठ १२३)। जन्म १४९९ ई० मृत्यु १५३९ ई०।

राग कल्पद्रुम। नानक पंथी संप्रदाय के प्रसिद्ध प्रवर्तक, 'ग्रंथ' (राग कल्पद्रुम) के एक अंश के रचयिता (देखिए संख्या १६९)। 'ग्रंथ' (देखिए विलसन) में, शिवसिंह के अनुसार (१) नानक, (२) अंगद, (३) अमरदास, (४) रामदास, (५) हरीरामदास, (६) तेग बहादुर, (७) गोविंद सिंह, (८) कबीरदास, (९) त्रिलोचनदास, (१०) धना भगत, (११) रामदास, (१२) सेन, (१३) शेख फरीद, (१४) मीराबाई, (१५) नामदेव (राग कल्पद्रुम), और (१६) बलिभद्र की रचनाएँ है। (एक भिन्न सूची के लिए देखिए विलसन कृत रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज़' भाग १, पृ० २७४)

इन नामों में से प्रथम सात नाम सिक्खों के १० गुरुओं में से सात के हैं। शेष तीन गुरु हैं, (८) हरिगोविंद, (९) हरिराम, (१०) हरिकिसुन। नानक की सर्वप्रियता का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि मैंने मध्य मिथिला में नानक के कहे जाने वाले अलिखित गीतों का संग्रह किया है। (गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ ३८५ भी देखिए)।

अध्याय २ का परिशिष्ट

२३. चरणदास—पंडितपुर जिला फैजाबाद के ब्राह्मण। १४८० ई० में उत्पन्न।

राग कल्पद्रुम। ज्ञान स्वरोदय नामक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—ज्ञान स्वरोदय के रचयिता चरणदास न तो पण्डितपुर जिला फैजाबाद के ब्राह्मण थे और न १४८० ई० में उत्पन्न हुए थे। ग्रियर्सन ने यह विवरण सरोज से एवं सरोजकार ने महेशदत्त के भाषा काव्य संग्रह से लिया है। चरणदास अलवर राज्य के अंतर्गत दहरा नाम के गाँव में मुरली नामक दूसर बनिए के घर भाद्रपद शुक्ल ३, मंगलवार, संवत् १७६० को उत्पन्न हुए थे। इनकी मृत्यु सं० १८३९ में अगहन सुदी ४ को दिल्ली में

हुई। भाषाकाव्य संग्रह के अनुसार सं० १५३७ चरणदास का मृत्यु काल है। इसे ग्रियर्सन में जन्मकाल मान लिया गया है। चरणदास का बचपन का नाम रनजीत था। बाल्यावस्था में यह घूमते घामते दिल्ली पहुँचे, जहाँ गुरु सुखदेव से इनकी भेंट हुई और यह चरणदास हो गए। इन्होंने चरणदासी संप्रदाय चलाया।

—सर्वेक्षण २३६

२४. अजबेस प्राचीन—जन्म १५१३ ई०।

सुन्दरा तिलक। यह बाँधो (रीवाँ) [1] के राजा बीरभान सिंह (१५४०-१५५४ ई०) के दरबारी कवि थे और उस प्रान्त के पेशेवर भाट प्रतीत होते हैं। देखिए संख्या ५३० भी।

टि० - बांधव नरेश वीरभान सिंह के दरबार में अजबेस नामक कोई कबि नहीं हुआ। यह वस्तुतः वही अजबेस हैं, जो रीवाँ नरेश महाराज जयसिंह और उनके पुत्र महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव (शासनकाल सं० १८९२-१९११ वि०) के आश्रित थे। इन्होंने सं० १८६८ में बिहारी सतसई का एक टीका लिखी थी और १८९२ या उसके कुछ पूर्व 'बघेल वंश वर्णन' नामक ग्रंथ प्रस्तुत किया था। संभवतः ग्रियर्सन को भी इस संबध में संदेह है, तभी ५३० संख्यक अजबेस को भी देखने का निर्देश किया गया है।

—सर्वेक्षण २

२५. गदाधर मिसर—व्रजवासी। १५२३ ई० में उत्पन्न।

राग कल्पद्रुम।

टि० – यह गदाधर मिश्र नहीं हैं, भट्ट हैं। यह दाक्षिणात्य ब्राह्मण और चैतन्य महाप्रभु के गौड़ीय संप्रदाय के वैष्णव थे। यह उनके शिष्य रघुनाथ भट्ट के शिष्य थे। इनकी मृत्यु सं० १६७० वि० के आस-पास किसी समय हुई।

—सर्वेक्षण १५८

२६. माधवदास—ब्राह्मण। १५२३ ई० में उत्पन्न।

रागकल्पद्रुम। यह भगवत रमित (सं० १६) के पिता थे। यह संभवतः

---

१. शिव सिंह सरोज में 'जोधपुर' दिया है, जो स्पष्ट ही 'जोधपुर' का अशुद्ध छपा रूप है। किन्तु मुझे जोधपुर के किसी वीरभान नामक राजा का पता नहीं चला है। अजबेस ने अपनी एक कविता में लिखा है कि इस राजा ने अकबर की रक्षा की थी, जब वह बच्चा था। अतः वीरभान बांधो (रीवां) का राजा था, जिसके यहां हुमायूं ने शरण ली थी। 'इम्पीरियल गजेटियर आफ़ इण्डिया' में, जहां तिथियां अशुद्ध दी गई हैं, रीवां देखिए और रिपोर्ट आफ़ आर्किआलोजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया अध्याय २७, पृष्ठ १०१ और अध्याय २१, पृष्ठ १०१ देखिए। संख्या ११३ एवं ५३० भी देखिए।

वही माधवदास हैं, जिनका अमोनाइट (Ammonite) की प्रशंसा में लिखित एक गीत मैंने मिथिला में संकलित किया है।

टि०—यह माधवदास जगन्नाथी हैं। सरोजकार ने इनका विवरण भक्तमाल के आधार पर दिया है। यह पत्नी की मृत्यु की पश्चात् जगन्नाथपुरी में रहने लगे थे। एक बार वृन्दावन भी आए थे। १५२३ ई० इनका उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल। भगवत रमित ग्रियर्सन के प्रमाद का प्रमाण है, 'भगवत रमित' अशुद्ध है, शुद्ध नाम है 'भगवत रसिक'। भगवत रसिक के पिता का नाम भी माधवदास था। पर भगवत रसिक के पिता माधवदास, माधवदास जगन्नाथी से भिन्न हैं। —सर्वेक्षण ६८७

शब्दकोष के अनुसार अमोनाइट (Ammonite) एक प्रकार का पृथ्वी के अंग से खोदकर निकाला हुआ प्रस्तरीभूत अवशेष है, जो फूल पत्तेवाले और कोठरीदार कड़े आवरण से युक्त होता है, जिसे पहले लोग समझते थे कि कुण्डलित सर्प ही पत्थर बन गया है और उसी के आधार पर इसे 'नाग-पाषाण' कहते थे—

"A fossil genus of Caphalopods, with whorled chambered shells, once thought to be coiled snakes petritied, called snake-stones."

—Shorter Oxford Dictionary.

२७. गोपा कवि—जन्म १५२३ ई०

इन्होंने राम भूषण और अलंकार चन्द्रिका लिखी।

टि०—कवि का नाम गोप है, गोपा नहीं। गोप का पूरा नाम संभवतः गोपालभट्ट था। यह ओरछा के राजा पृथ्वी सिंह (राज्यकाल सं० १७९३–१८०९ वि०) के दरबारी कवि थे। इसी समय के बीच किसी समय इन्होंने रामालंकार नाम ग्रन्थ रचा, जिसमें अपना पूरा परिचय भी दिया है। रामालंकार ग्रंथ ही रामभूषण और अलंकार चन्द्रिका अभिधान से ऊपर वर्णित है। ग्रियर्सन-दत्त संवत पूर्णतः भ्रष्ट है, यह न जन्मकाल है और न उपस्थितिकाल। गोप बहुत परवर्ती कवि हैं।

—सर्वेक्षण १७१

२८. नरमिया कवि—उपनाम नरमी। गुजरात के अंतर्गत जूनागढ़ के निवासी। जन्म १५२३ ई०।

टि०—ग्रियर्सन ने सरोज में छपे 'स' को 'म' समझ कर 'नरसी' को 'नरमी' और 'नरसिया' को 'नरमिया' बना दिया है।

रूपकला जी के अनुसार नरसी भगत का जन्मकाल सं० १६०० और मृत्युकाल सं० १६५३ है।

— सर्वेक्षण ४०४

२९. भगवानदास—मथुरावासी। जन्म १५३३ ई०।

राग कल्पद्रुम।

टि०—भगवानदास मथुरावासी का विवरण भक्तमाल छप्पय १८८ में है। इन्होंने गोवर्द्धन में हरदेव जी का मन्दिर बनवाया था। १५३३ ई० इनका उपस्थितिकाल ही होना चाहिए।

—सर्वेक्षण ६०५

३०. मोतीलाल कवि—बाँसी राज्यवासी। जन्म १५३३ ई०।

राग कल्पद्रुम। इन्होंने गणेश पुराण का भाषानुवाद किया।

टि०—सरोज में इन्हें सं० १५९७ में उ० कहा गया है। ग्रियर्सन ने १५९७ को १५९० समझ कर इन्हें १५३३ ई० में उत्पन्न कहा है। भाषा काव्य संग्रह में इनका मृत्युकाल सं० १५९८ दिया हुआ है। अतः १५३३ ई० में इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। मोतीलाल जी बाँसी जिला बस्ती के रहने वाले नहीं थे। यह नौबस्ता, नागनगर परगना, जिला इलाहाबाद के रहने वाले थे। इनका ठीक-ठीक समय ज्ञात नहीं। गणेशपुराण की प्राप्त प्राचीनतम प्रति सं० १८६२ की लिखी हुई है। अतः यह १८६२ के पूर्व किसी समय हुए। यह इतने पुराने कवि नहीं हैं, जितना कि भाषाकाव्य संग्रह, सरोज एवं ग्रियर्सन में स्वीकार किया गया है। —सर्वेक्षण ६६७

अध्याय ३

मलिक मुहम्मद जायसी की प्रेम (Romantic) कविता

३०. मलिक मुहम्मद जायसी—अवध के अन्तर्गत जायस के रहने वाले, १५४० ई० में उपस्थित।

यह शेरशाह के शासनकाल में १५४० ई० में उपस्थित थे। यह पद्मावत (राग कल्पद्रुम) के रचयिता हैं। मेरा विश्वास है कि यह गौड़ीय भाषा में किसी मौलिक विषय पर लिखी हुई अपने ढंग की एक-मात्र और प्रथम पुस्तक है। मुझे ऐसा कोई अन्य ग्रंथ नहीं ज्ञात है, जिसके अध्ययन में पद्मावत की अपेक्षा अधिक परिश्रम की आवश्यकता हो। यह निश्चय ही अध्यवसायपूर्ण अध्ययन के योग्य है, क्योंकि साधारण विद्वान को इसकी एक भी पंक्ति स्पष्ट नहीं हो सकती, कारण यह कि यह जनसाधारण की विशुद्ध बोलचाल की भाषा में विरचित है। इसके लिए जितना भी परिश्रम किया जाय, इसकी मौलिकता और काव्यगत सौंदर्य दोनों की दृष्टि से वह उचित ही है।

मलिक मुहम्मद अत्यंत पाक मुसलमान फकीर थे। अमेठी के राजा विश्वास करते थे कि उन्हें पुत्र-प्राप्ति और सामान्य धन-धान्य की वृद्धि इसी संत के कारण हुई थी और वे इनके प्रमुख भक्तों में से थे। जब कवि मरा, वह अमेठी में राजा के किले के फाटक के पास दफन किया गया, जहाँ उसकी कब्र आज भी पूजी जाती है। वह स्वयं अपने काव्य की भूमिका में सूचित करते हैं कि वह सैयद अशरफ जहाँगीर और शेख बुरहान[1] के शिष्य थे और उन्होंने बाद में हिन्दू पंडितों से भी पढ़ा। वह कोई बहुत विद्वान व्यक्ति नहीं कहे जाते, परन्तु अपनी बुद्धिमता के लिए प्रसिद्ध थे। यह इस तथ्य से भी प्रकट है कि उन्होंने जनता के लिए जनता की बोलचाल की भाषा में लिखा। पद्मावत के बनारस संस्करण के पाठ के अनुसार, जो कि अत्यंत अशुद्ध है, कवि ने इसको ९२७ हिजरी (१५२० ई०) में लिखना प्रारंभ किया; किंतु संभवतः यह अशुद्ध है क्योंकि वह भूमिका में स्वयं कहते हैं कि सूरवंश का शेरशाह

१—शेख बुरहान बुंदेलखण्ड के अन्तर्गत कालपी के रहने वाले थे और कहा जाता है कि यह १०० वर्ष की आयु में ९७० हिजरी (१५६२-६३ ई०) में मरे। देखिए, रिपार्ट आफ़ आर्केआलोजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया, भाग २१; पृष्ठ १३१

जो कि ९४७ हिजरी (१५४० ई०) में सिंहासनासीन हुआ, उस समय शासन करनेवाला सुलतान था। अतः संभवतः ९४७ के स्थान पर ९२७ अशुद्ध पाठ है।[1]

पद्मावत की कहानी की रूपरेखा यह है—चित्तौर में रतनसेन नामक एक राजा था, जिसने एक तोते से सिंहल द्वीप (सीलोन) के राजा की लड़की पद्मावत अथवा पद्मिनी के अद्भुत सौंदर्य का वर्णन सुना। उसने योगी रूप में सिंहल की यात्रा की। वहाँ उसने विवाह किया और उसे ले चित्तौर लौटा। इसके पश्चात् राघव ने, जो रतनसेन के दरबार का निकलुआ एक ज्योतिषी था, उस समय के दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन खिलजी से पद्मिनी के अद्भुत रूप की चर्चा की। फलतः अलाउद्दीन ने उसे प्राप्त करने के लिए चित्तौर-विजय का प्रयत्न किया, जो असफल रहा। वह किसी प्रकार छल से रतन को कैद करने में सफल हुआ और पद्मिनी के आत्म-समर्पण के लिये जमानत रूप में उसे रख छोड़ा। रतनसेन के बन्दीगृह में होने की परिस्थिति में कुंभलनेर के राजा देवपाल ने उससे अनुचित प्रस्ताव किया, जिसे पद्मिनी ने घृणापूर्वक ठुकरा दिया। अंततः रतन अपने दो वीरों, गोरा और बादल, के शौर्य से बंदीगृह से मुक्त हुआ। जो युद्ध इसके अनंतर हुआ, गोरा उसमें खेत रहा। जैसे ही रतन पुनः सिंहासनासीन हुआ, उसने अपनी पत्नी के अपमान का बदला लेने के लिए कुंभलनेर पर आक्रमण किया और देवपाल को सुरधाम भेज दिया; किंतु साथ ही वह भी बुरी तरह घायल हुआ और चित्तौर आते आते स्वयं भी दिवंगत हो गया। उसकी दोनों पत्नियाँ पद्मिनी और नागमती सती हो गईं। अभी उनकी चिता की राख गर्म ही थी कि अलाउद्दीन की सेना पुनः चित्तौर के किले के फाटक पर पहुँच गई। बादल ने वीरतापूर्वक उसकी रक्षा की, पर फाटक पर युद्ध करता हुआ मारा गया। अंत में चित्तौर जीत लिया गया, लूट लिया गया और 'इसलाम हो गया।' अपने अंतिम छंद में कवि कहता है कि पद्मावत रूपक है। चित्तौर से उसका अभिप्राय मनुष्य शरीर से है, रतनसेन

१—मेरे मित्र, बांकीपुर कालेज के संस्कृत के प्रोफेसर पं० छोटूराम तिवारी ने इस महत्वपूर्ण ग्रंथ के शुद्ध पाठ और उसके अनुवाद का कार्य-भार 'बिब्लिओथेका इण्डिका' के लिये लिया है। (शोक, जब से ऊपर का अंश लिखा गया, एक विद्वान और विनम्र अध्येता, जिसने कभी किसी से कोई कटु बात नहीं कही, जिनसे घनिष्टता स्थापित करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है, उन भलेमानसों और शुद्धाचरण लोगों में से एक, सदा के लिये अपने सुदूर निवास को चला गया। इनकी असामयिक मृत्यु से मैंने अपना एक सच्चा मित्र और आदरणीय अध्यापक खो दिया।)

आत्मा है, सुआ गुरु है, पद्मिनी बुद्धि है, राघव शैतान है, अलाउद्दीन माया है, और इसी प्रकार और भी।

पद्मावत की कथा चित्तौर के घेरे के ऐतिहासिक तथ्य पर निर्भर है, जिसका उल्लेख टाड ने किया है (राजस्थान भाग १, पृष्ठ २६२ और आगे, कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ २८१ और आगे)। इसका सारांश यह है—चित्तौर का अल्पवयस्क राजा लखनसी १२७५ ई० में सिंहासनासीन हुआ। उसका चाचा भीमसी उसकी नाबालगी में शासन करता था। उसने सीलोन के राजा हम्मीर संख (सिंह) चौहान की कन्या पद्मिनी से विवाह किया था। अलाउद्दीन ने उसे प्राप्त करने के लिए चित्तौर पर घेरा डाल दिया और बहुत दिनों के लम्बे और व्यर्थ घेरे के अनन्तर उसने पद्मिनी के रूप का दर्शन मात्र कर लेने तक अपनी इच्छाओं को सीमित कर लिया और उसकी झलक दर्पण में देख लेने पर ही सहमत हो गया। राजपूत के विश्वास पर निर्भर होकर वह चित्तौर गढ़ में, अल्प सुरक्षा में ही, प्रविष्ट हुआ, और अपनी इच्छा पूर्ण करके लौट आया। विश्वास करने में पिछड़ने को न तैयार हो, राजपूत गढ़ी के द्वार तक बादशाह को पहुँचाने आया। यहाँ अलाउद्दीन के कुछ सिपाही छिपे खड़े थे। उन्होंने भीमसी को बंदी बना लिया और उसकी स्वतंत्रता पद्मिनी के आत्म-समर्पण पर निर्भर कर दी। यह सूचना मिलने पर उसने पति की जमानत के लिए आत्म-समर्पण स्वीकार कर लिया। अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा का पूर्ण प्रबंध कर लेने पर, उसने अपने चाचा गोरा और अपने भतीजा बादल नामक दो सरदारों से, जो उसके वंश के थे और साथ में सीलोन से आए थे, मन्त्रणा की, और अपने प्राण एवं प्रतिष्ठा को बिना खतरे में डाले हुए राजा की मुक्ति की योजना बनाई। वह अलाउद्दीन के खेमे में बहुत सी पालकियों के जलूस में गई, जिनके ढोने वाले और जिनमें बैठने वाले अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित दासी और नारी वेशाय पुरुष थे। उनमें से कुछ पद्मिनी और भीमसी को छद्मवेश में लिए हुए लौट आए। शेष शत्रु के खेमे में ही रह गए, जब तक कि छल नहीं खुल गया। उन्होंने शत्रु सेना का पूर्ण मार्गावरोध किया और स्वामी की वापसी में ढाल बन गए। ऐसा करने में सब एक एक कर काट डाले गए। भीमसी और पद्मिनी चित्तौर पहुँच गए। किले को पुनः घेर लेने के प्रयास में असफल हो अलाउद्दीन ने घेरा उठा लिया। इस युद्ध में गोरा मारा गया। वह १२९० में पुनः चित्तौर को घेरने के लिए लौटा। (फिरिश्ता के अनुसार वह १३ वर्ष बाद पुनः आया)। एक एक करके राजा के १२ पुत्रों में से ११ मारे गए। तब अपने द्वितीय पुत्र अजयसिंह के बाहर

निकल जाने का प्रबन्ध करके, जिससे वंश परम्परा जीती जागती रहे, राना ने अपने वंश के भक्तों को बुलाया। उनके लिए जीवन में अब कोई आकर्षण नहीं रह गया था। उन्होंने स्वयं गढ़ी का फाटक खोल दिया और अलाउद्दीन के दल में मृत्यु का हाहाकार मचा दिया एवं स्वयं भी मृत्यु का आलिंगन किया। "किंतु आत्म प्रियता के इस कार्य के पहले एक और भयानक नरमेध, जौहर के रूप में हुआ, जहाँ अपवित्र होने से अथवा बंदी बनाए जाने से बचने के लिए नारियाँ बलिदान हो जाती हैं। उन भीतरी तहखानों में चिता जला दी गई, जहाँ दिन का प्रकाश भी नहीं पहुँचता था। चित्तौर के रक्षकों ने अपनी रानियों, पत्नियों, बेटियों को कई सहस्र की संख्या में जलूस के रूप में देखा। सुन्दरी पद्मिनी ने इस भीड़ को बन्द कर दिया, जिसमें वह सब नारी सौंदर्य अथवा तारुण्य प्रवृद्ध था, जो तातारों की वासना द्वारा कलुषित हो सकता था। वे उस गर्भ-गृह में ले जाई गईं, जहाँ निगलने वाली आग की लपटों में वे कलंकित होने से अपने को बचा सकती थीं, और द्वार बंद हो गया।" तातार विजेता ने जन रहित राजधानी पर अधिकार पाया, जो उसके बीर रक्षकों के शवों से ढकी हुई थी और अब भी भीतर से धुआँ उठ रहा था, जहाँ उसकी इष्ट सुन्दरी राख का ढेर बनी हुई पड़ी थी।

मलिक मुहम्मद ने नायक का नाम भीमसी से रतन में बदल दिया है, जो उस समय मेवाड़ का राजा था, जब यह ग्रंथ लिखा गया। (टाड, भाग १, पृष्ठ ३०९, कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ३२८)।[१]

उन्होंने अपनी कहानी का कुछ अंश एक अन्य पद्मावत, उदयन की पद्मावती और रत्नावली से भी उधार लिया है। वह अपने नायक को प्रिया-प्राप्ति के लिए योगी बना देता है और दोनों रानियों के जलने का दृश्य यद्यपि वास्तविक करुण दुर्घटना से ही प्रेरित है, फिर भी यह रत्नावली में आई हुई ऐसी परिस्थिति के पूर्ण मेल में है।

पद्मावत के रचनाकाल से हिन्दुस्तान का साहित्य दो धाराओं में जमकर स्थिर सा हो गया। यह रामानंद और वल्लभाचार्य के सुधारों के कारण हुआ। इनमें से पहले ने, जिसका विवरण पहले दिया जा चुका है, विष्णु के अवतार राम की उपासना की आधुनिक पद्धति चलाई; और दूसरे ने विष्णु के अवतार कृष्ण की उपासना की। इस तिथि के अनंतर सभी बड़े काव्य-ग्रंथ या तो राम की उपासना को लेकर लिखे गए, अथवा कृष्ण की। मलिक मुहम्मद की कृति

---

१. यह ध्यान देने योग्य है कि गुजरात के बहादुरशाह द्वारा डाला गया चित्तौर का दूसरा घेरा १५३३ ई० में पड़ा। (टाड भाग १ पृष्ठ ३११; कलकत्ता संस्करण, भाग १ पृष्ठ ३३१)

एक उत्कृष्ट और प्रायः अकेले उदाहरण के रूप में है, जो यह संकेत करती है कि एक हिंदू मस्तिष्क, जो साहित्य और धर्म के जंजाल से अलग हो गया हो, क्या कर सकता है। यह सत्य है कि आनेवाले साहित्यकारों की लंबी सूची में उपदेशपूर्ण, शास्त्रीय, चिकित्सा संबंधी ग्रंथों के भी उदाहरण हैं; परन्तु यह तथ्य अपने स्थान पर स्थिर है कि सोलहवीं शताब्दी के मध्य से आज तक जितने भी हिंदुस्तानी[1] साहित्य के बड़े और अच्छे ग्रन्थ लिखे गए, वे सभी प्रथा की श्रृंखला या भावोच्छ्वास अथवा दोनों से, राम और कृष्ण के बार बार दुहराए जाने वाले विषयों से आबद्ध हैं। रामानंद की चर्चा पहले हो चुकी है। उनके एक मात्र महत्वपूर्ण अनुयायी तुलसीदास हैं, जिनके संबंध में आगे चलकर मैं विस्तारपूर्वक लिखूंगा। वल्लभाचार्य और उनके द्वारा प्रतिष्ठापित व्रज मंडल के कवियों पर विचार करने के पहले यह अच्छा होगा कि दो छोटे-छोटे कवियों की चर्चा करके पथ प्रशस्त कर दिया जाय।

टि०—पद्मावत का प्रारंभ ९२७ हिजरी (सं० १५७७ के लगभग) में ही हुआ। इसकी समाप्ति शेरशाह के शासनकाल (सं० १५९६-१६०० वि०) में किसी समय हुई। आखिरी कलाम की रचना ९३६ हिजरी (सं० १५८५ वि०) में बाबर के शासनकाल में हुई। नसरुद्दीन जायसी के अनुसार जायसी की मृत्यु ४ रज्जब ९४९ हिजरी को हुई। यह समय सं० १६०० के कुछ पहले ही पड़ जाता है। —सर्वेक्षण ७०८,

तीसरे अध्याय का परिशिष्ट

३२. दील्ह—जन्म १५४८ ई०।
कोई विवरण नहीं।
टि०—सरोज के अनुसार दील्ह उक्त संवत में 'उ०' या उपस्थित थे।

३३. नरोत्तमदास—बाड़ी जिला सीतापुर के ब्राह्मण।
जन्म १५५३ ई०
रागकल्पद्रुम। सुदामाचरित्र (रागकल्पद्रुम) के रचयिता।
टि०—महेशदत्त एवं विनोद (७२) में सुदामाचरित्र का रचनाकाल सं० १५८२ दिया गया है। सरोज में नरोत्तम दास को सं० १६०२ में उ० कहा गया है। ग्रियसंन में इन्हें सं० १६१० में उत्पन्न माना गया है। कवित्त सवैयों के प्रचलन को ध्यान में रखते हुए सं० १६१० के आसपास नरोत्तम का जन्म मानना अनुचित नहीं प्रतीत होता। —सर्वेक्षण ४१५

१. मैं यहाँ और अन्यत्र भी इस शब्द को हिन्दुस्तान संज्ञा के विशेषण रूप में प्रयुक्त कर रहा हूं, न कि तथाकथित हिंदुस्तानी भाषा के रूप में।

अध्याय ४

व्रज का कृष्ण सम्प्रदाय

(१५००–१६०० ई०)

३४. वल्लभा चारज—व्रजांतर्गत गोकुल के निवासी। जन्म १४७८ ई०।

रागकल्पद्रुम। यद्यपि वल्लभाचार्य धार्मिक सुधारक अधिक थे, साहित्यिक कम, फिर भी मैं उनके सम्बन्ध में रामानन्द की अपेक्षा कुछ अधिक विस्तार से कहूँगा, एक तो उनके अधिक महत्व के कारण, दूसरे इसलिए भी कि उनके संबंध में मैं कुछ ऐसे विवरण दे सकता हूँ, जो अभी तक यूरोपीय विद्वानों को सुलभ नहीं हो सके हैं। वल्लभाचार्य जी राधावल्लभी[1] संप्रदाय के प्रसिद्ध प्रवर्तक हैं। हरिश्चन्द्र के अनुसार इनके पिता का नाम लछमन भट्ट (मद्रास के एक तैलंग ब्राह्मण) था, और इनकी माता का इल्लमगारु। यह तीन भाई थे—रामकृष्ण, वल्लभाचार्य और रामचन्द्र। इनके दोनों भाई प्रसिद्ध वैष्णव ग्रन्थकार थे।[2] लछमन भट्ट अयोध्या में रहते थे और वे काशी की यात्रा कर रहे थे, जब कि मार्ग में ही बिहार के चम्पारन जिले में बेतिया के पड़ोस में चौरा नामक गाँव के पास मिती बैशाख बदी ११, रविवार, सं० १५३५ (१४७८ ई०) को वल्लभाचार्य पैदा हुए।[3]

बनारस में ५ वर्ष की वय में इन्होंने मध्वाचार्य, (राग कल्पद्रुम) से पढ़ना प्रारंभ किया और वहीं अपने पिता की मृत्यु तक रहे। इसके पश्चात् वे भ्रमण-शील जीवन बिताते रहे और विजय नगर के राजा कृष्ण देव, स्पष्ट ही कृष्ण रायलू, के दरबार में गए, जो १५२० ई० के आसपास शासन करता था। यहाँ उन्होंने स्मार्त ब्राह्मणों को शास्त्रार्थ में पराजित किया। (देखिए विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़, पृष्ठ १२०)। हरिश्चन्द्र के अनुसार यह शास्त्रार्थ संवत् १५४८ (१४९१ ई०) में हुआ, जब यह केवल १३ वर्ष के थे। इसी वर्ष इन्होंने व्रज यात्रा की, जहाँ इन्होंने भागवत पुराण का अध्ययन किया और अंत

---

१. देखिए विलसन कृत, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज़, पृष्ठ १२०

२. प्रसिद्ध महात्माओं का जीवन चरित्र भाग २, पृष्ठ २८

३. वल्लभ दिग्विजय का तीसरा खंड देखिए, संवत १५३५ शाके बैशाख मास कृष्ण पक्ष रविवार मध्यान्ह। हरिश्चंद्र द्वारा उद्धृत द्वारिकेश कृत पद भी देखिये।

में वैष्णव सिद्धांतों का उपदेश करते हुए बनारस लौट आए। बनारस से यह सर्वत्र अपने सिद्धान्तों का प्रचार करते हुए गया, जगन्नाथ और दक्षिण गए। इन्होंने अपनी प्रथम यात्रा (दिग्विजय) संवत् १५५४ (१४९७ ई०) में उन्नीस[1] वर्ष की वय में पूर्ण की। तदनन्तर इन्होंने व्रज को अपना केन्द्र बना लिया और गोवर्द्धन में श्रीनाथ की मूर्ति स्थापित की। अपने इस प्रधान केन्द्र से इन्होंने अपनी दूसरी प्रचारात्मक यात्रा सम्पूर्ण भारत में की। ये ३४ वर्ष की वय में बनारस में, दो पुत्रों गोपीनाथ और बिट्ठलनाथ, को छोड़कर, संवत् १५८७ (१५३० ई०) में दिवंगत हुए। यह बहुत से ग्रंथों के रचयिता हैं। इनके सर्वाधिक प्रशंसित ग्रंथ ये हैं—भागवत पुराण की सुबोधनी[2] नामक टीका, अणुभाष्य और जैमिनीय सूत्र भाष्य। अन्तिम दोनों संस्कृत में हैं। अणुभाष्य बिब्लिओथेका इंडिका में छप रहा है। हरिश्चन्द्र ने इनके संपूर्ण ग्रंथों की सूची दी है। भाषा में रचित एक प्रामाणिक ग्रंथ 'विष्णुपद' के भी रचयिता यही समझे जाते हैं। इनके छन्द रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम नामक काव्य-संग्रह में उद्धृत हैं। और भी जानकारी के लिए देखिए, संख्या ३५।

टि०—महाप्रभु वल्लभाचार्य वल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक हैं, न कि राधावल्लभी संप्रदाय के। राधावल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक हित हरिवंश जी हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य का जन्म बिहार के चंपारन जिले में बेतिया के पड़ोस में स्थित चौरा गाँव में नहीं हुआ था। इनका जन्म-स्थान मध्यप्रदेश के अन्तर्गत रायपुर जिले का चंपारण्य नामक बन है। यह उस समय हुए थे जब इनके माता-पिता बहलोल लोदी के आक्रमण के भय से काशी से दक्षिण की ओर भागे जा रहे थे। ग्रियर्सन में यद्यपि सारा विवरण भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (भारतेन्दु ग्रंथावली, तृतीय भाग, पृष्ठ ६८–७०) से ही लिया गया है, फिर भी अशुद्धि हो गई है। इन्होंने काशी में मध्वाचार्य से नहीं पढ़ा था। भारतेन्दु ने इनके गुरु का नाम "काशी के प्रसिद्ध पण्डित माधवानन्द तीर्थ त्रिदंडी" दिया है। भागवत की वल्लभाचार्य कृत टीका का नाम 'सुबोधिनी' है, न कि 'सुबोधनी'। व्रज भाषा में इनकी कोई रचना नहीं। इन्होंने 'विष्णुपद' नामक कोई ग्रंथ व्रज भाषा में नहीं लिखा। राग सागरोद्भव रागकल्पद्रुम में जो रचनाएँ वल्लभ के नाम से हैं और जो सरोज में उद्धृत हैं, वे किसी दूसरे वल्लभ की हैं, जो वल्लभ संप्रदाय का वैष्णव एवं वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ का शिष्य था।

—सर्वेक्षण ५१८

---

१. यही हरिश्चन्द्र द्वारा दी हुई तिथि है।

२. विलसन के अनुसार 'सुबोधिनी'।

३५. विट्ठलनाथ गोसाँई—ब्रजवासी। १५५० ई० में उपस्थित।

रागकल्पद्रुम। राधावल्लभी संप्रदाय के गुरु रूप में विट्ठलनाथ ब्रजवासी (उपस्थिति काल १५५० ई०) वल्लभाचार्य के उत्तराधिकारी हुए। विट्ठलनाथ के सात पुत्र हुए, जिनमें से प्रत्येक गोसाँई अर्थात् राधावल्लभ संप्रदाय का गुरु हुआ। इनमें से दो, (गिरधर और जदुनाथ[1]) के वंशधर अब भी गोकुल[2] में हैं। इनके अनेक छन्द रागसागरोद्भव में संकलित हैं और यह सम्भवतः वही हैं जिनका उल्लेख शिव सिंह सराज में 'विट्ठल कवि' नाम से 'श्रृङ्गारी कवि' के रूप में हुआ है।

वल्लभाचार्य के चार प्रसिद्ध शिष्य कृष्णदास पय-अहारी (संख्या ३६), सूरदास (सख्या ३७), परमानन्ददास (संख्या ३८) और कुम्भनदास (संख्या ३९) थे। विट्ठल नाथ के भी चतुर्भुजदास (संख्या ४०), छीत स्वामी (संख्या ४१), नन्ददास (संख्या ४२) और गोविन्ददास (संख्या ४३) नामक चार प्रसिद्ध शिष्य थे। प्रथम चार को १५५० ई० में उपस्थित समझा जा सकता है और अंतिम चार को १५६७ ई० के आसपास। ये आठो ब्रज में रहते थे, ब्रजभाषा में लिखते थे, अष्टछाप अर्थात् ब्रजभाषा साहित्य के सर्वमान्य आठ श्रेष्ठ कवि नाम से अभिहित थे। विलसन तथा अन्य लोगों ने अष्टछाप नामक एक ग्रन्थ की भी चर्चा की है, जिसमें इन आठों कवियों का जीवन चरित है; और एक समय मैं स्वयं ऐसे किसी ग्रन्थ में विश्वास करता था; लेकिन अब मैं समझ गया हूँ कि अष्टछाप का अभिप्राय इसी कवि सूची से है, जो जहाँ तक मैं समझ सका हूँ, पहली बार सूरदास के कुछ पदों में (संख्या ३७ में अनूदित) व्यवहृत और अभिहित हुआ और दूसरीबार, जैसा कि मैंने देखा है, ब्रजवासी गोपालसिंह कृत तुलसी शब्दार्थ प्रकाश में, जिसका समय मैं निश्चित नहीं कर सका हूँ।

टि०—यहाँ भी 'वल्लभ' संप्रदाय के लिए अज्ञानवश 'राधा वल्लभी' शब्द का प्रयोग हो गया है। भारतेंदु ने लिखा है, "बड़े गिरधर जी और छोटे यदुनाथ जी का वंश अब तक वर्तमान है।" (भारतेंदु ग्रंथावली, तृतीय भाग, पृष्ठ ७०)। उन्होंने यह नहीं लिखा है कि कहाँ वर्तमान है। ग्रियर्सन ने गोकुल में वर्तमान मान लिया है। यह ठीक नहीं। गिरधर जी के

---

१. हरिश्चंद्र भाग २, पृष्ठ ३६

२. और अधिक सूचना के लिए विलसन कृत 'रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़', भाग १, पृष्ठ १२५ देखिए, जहाँ वह भ्रम से 'बितलनाथ' कहे गए हैं।

वंशजों की गद्दी कोटा में और यदुनाथ जी के वंशजों की गद्दी सूरत में चली। विट्ठलनाथ अपने पिता वल्लभाचार्य के ही समान व्रजभाषा के कवि नहीं थे। इनकी रचनाएँ राग कल्पद्रुम में नहीं हैं। राग कल्पद्रुम में 'विट्ठल गिरिधरन' छापवाले कुछ पद हैं, जिन्हें सरोजकार ने इन विट्ठलनाथ की रचना समझ रखा है। इस छाप से विट्ठलनाथ की शिष्या गंगाबाई लिखा करती थीं। सरोज के "२५ विट्ठल कवि ३" (सर्वेक्षण ५२१) के ग्रियर्सन में इन विट्ठल नाथ से अभिन्न होने की सम्भावना की गई है, यह ठीक नहीं।

—सर्वेक्षण ५१९

विट्ठलनाथ का जन्म सं० १५७२ पौष कृष्ण ९, शुक्रवार को काशी के निकट चरणाट में हुआ एवं मृत्यु फाल्गुन कृष्ण ७, संवत् १६४२ में हुई।

कृष्णदास पय-अहारी, रामानन्द के शिष्य अनन्तानन्द के शिष्य थे और जयपुर के निकट गलता में रहते थे। इन्हीं पय-अहारी जी के शिष्य अग्रदास थे, जिनके शिष्य नाभादास हुए। यह सब रामावत संप्रदाय के हैं। वल्लभाचार्य के शिष्य का नाम कृष्णदास अधिकारी था। ग्रियर्सन का यह भ्रम बहुत दिनों तक, आजतक, यत्र तत्र चलता आया है।

अष्टछाप निश्चय ही आठ कवियों का समूह था, किसी ग्रंथ का नाम नहीं था। पर ये आठ कवि व्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि थे, इसका यह अभिप्राय कभी नहीं। अष्टछाप का अर्थ है उस समय तक के (सं० १६०७), जब कि अष्टछाप की स्थापना बिट्ठलनाथ जी ने की, वल्लभ संप्रदाय के आठ सर्वश्रेष्ठ कवियों का समुदाय। ये आठो वल्लभ सम्प्रदाय के सर्वश्रेष्ठ कवि थे, न कि संपूर्ण व्रजभाषा काव्य साहित्य के। जिस समय अष्टछाप की स्थापना हुई उस समय तक अष्टछाप में सम्मिलित सूर को छोड़कर अन्य सभी से श्रेष्ठ मीरा, हित हरिवंश, गदाधर भट्ट, श्री भट्ट, स्वामी हरिदास जैसे उत्कृष्ट कवि हो चुके थे या थे। अष्टछापी कवियों में नंददास भी हैं, पर अष्टछाप की स्थापना के समय तक इन्होंने बहुत थोड़ी रचनाएँ प्रस्तुत की थीं।

सूरदास के अभीष्ट पद से तात्पर्य 'हठि गोसाइँ करी मेरी आठ मध्ये छाप' से है।

३६. क्रिशनदास पय अहारी—व्रजांतर्गत गोकुलवासी। १५५० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह वल्लभाचार्य के शिष्य और अष्टछाप के कवि थे। (देखिए संख्या ३५)। "इनकी कविता अत्यंत ललित और मधुर है।" "इनके बहुत पद राग सागरोद्भव में लिखे हैं।" एक जनश्रुति है कि कृष्ण के

संबंध में जो कुछ भी कहा जा सकता है, सूरदास ने कह दिया था, अतः कृष्णदास जो कुछ भी लिखते थे, वह सूरदास जो पहले लिख चुके रहते थे, उससे मेल खा जाता था। "एक दिन सूर जी बोले आप अपना कोई पद सुनाओ, जैसा हमारे काव्य में न मिले"। कृष्णदास ऐसा करने में असफल रहे। तब उन्होंने दूसरे दिन एक नया पद बनाकर लाने के लिए कहा और सारी रात नया पद बनाने का व्यर्थ प्रयास करते रहे। प्रभात में उन्होंने अपनी तकिया पर रहस्यमय ढंग से अंकित एक पद पाया, जिसे वह सूरदास के पास ले गए। सूरदास ने तत्काल पहचान लिया, यह उनके महाप्रभु बल्लभाचार्य की रचना है। इस दंत-कथा के होते हुए भी, जो कि यह संकेत करती है कि इन दोनों कवियों में स्पर्धा थी, कृष्णदास का काव्य सर्वदा ललित और अपनी सीमाओं के भीतर यथासंभव मौलिक है। इनका सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ प्रेम-रस-रास है। इनके सर्वाधिक प्रसिद्ध शिष्य हैं अग्रदास (संख्या ४४), केवल राम (संख्या ४५), गदाधर (संख्या ४६), देबा (संख्या ४७), कल्याण (संख्या ४८), हटीनारायण (संख्या ४९), पदुमनाभ (संख्या ५०)। अग्रदास के शिष्य भक्तमाल के कर्ता नाभादास थे, जिनके संबंध में आगे विस्तार से कहा जायगा।

टि०—अष्टछापी कृष्णदास का नाम कृष्णदास अधिकारी है, न कि कृष्णदास पयअहारी। ग्रियर्सन ने इन दोनों को मिला दिया है। नाम पय अहारी का है, विवरण अधिकारी का। अंत में जो शिष्य नामावली है, वह कृष्णदास पय अहारी के शिष्यों की है—

कील्ह, अगर, केवल, चरण, व्रत हटीनरायन
सूरज, पुरुषों, पृथू, तिपुर हरि भक्ति परायन
पद्मनाभ, गोपाल, टेक, टीला, गदाधारी
देबा, हेम, कल्यान, गंगा गंगा सम नारी
विष्णुदास, कन्हर, रंगा, चन्दन सबीरी गोविन्द पर
पैहारी परसाद तें शिष्य सबै भये पारकर

—भक्तमाल छप्पय ३९

कृष्णदास के सिरहाने जो पद लिखा गया था, वह महाप्रभु बल्लभाचार्य का लिखा नहीं था, स्वयं कृष्ण का लिखा था। इस संबंध में सरोज की पदावली यह है—

"सूर जी जान गए कि यह करतूत किसी और ही कौतुकी की है। बोले—अपने बाबा की सहायता की है।"

प्रसंग प्राप्त पद का प्रथम चरण यह है—

'आवत बने कान्ह गोप बालक संग छुरित अलकावली ।'

३७. सूरदास--ब्रजवासी भाट, १५५० ई० में उपस्थित ।

काव्य निर्णय, रागकल्पद्रुम । सूरदास पर कुछ विस्तृत विवेचन की आवश्यकता है । यह अपने पिता बाबा रामदास (सं० ११२) के साथ बादशाह अकबर के दरबारी गवैए थे । (देखिए आईन-ए-अकबरी का ब्लाचमैन कृत अनुवाद पृ० ६१२) । यह और तुलसीदास भारतीय भाषा काव्य गगन के दो महान नक्षत्र हैं । तुलसीदास 'एकान्त रामसेवक' थे, जब कि सूरदास 'एकान्त कृष्णसेवक'; और ऐसा समझा जाता है कि इन्हीं दोनों ने संपूर्ण काव्य कला को समाप्त कर दिया है ।

भक्तमाल की टीकाओं और चौरासी वार्ता में सुरक्षित परम्परा के अनुसार यह सारस्वत ब्राह्मण थे और इनके माता-पिता भिखारी थे, जो गऊ घाट पर अथवा दिल्ली में रहते थे । इन दोनों ग्रंथों पर जो भी प्रामाणिक कृतियाँ हैं, वे इसी मान्यता का अनुमोदन करती हैं । मध्यकालीन भारतीय लेखक स्वतंत्र शोध की अपेक्षा परम्परा पर अधिक विश्वास रखते हैं, यह तथ्य इसी प्रवृत्ति का द्योतक है । बाद के अँगरेज एवं अन्य विदेशी लेखकों ने भक्तमाल का अनुसरण किया है और गलतफ़हमी कर गए हैं, क्योंकि हमारे पास सबसे बड़ी साक्षी स्वयं सूरदास की है कि वह सारस्वत ब्राह्मण नहीं थे और उनके पिता न तो भिखारी थे और न गऊघाट पर रहते ही थे ।[1]

सूरदास ने दृष्टिकूटों के संग्रह की एक पुस्तक, आवश्यक टिप्पणी[2] के सहित लिखी है और इस टिप्पणी में ग्रंथकार ने अपने सम्बन्ध में स्वयं यह विवरण दिया है[3]—

---

१. यह न भूलना चाहिए कि भक्तमाल के टीकाकार प्रियादास ने सूरदास की मृत्यु के प्रायः १०० वर्ष पश्चात् उनके संबंध की परम्पराओं को संकलित किया ।

२. यह ग्रंथ लाइट प्रेस बनारस से प्रकाशित हो चुका है ।

३. हिंदुस्तान के सबसे बड़े और मेरी समझ से एक मात्र आलोचक, स्वर्गीय हरिश्चंद्र बनारसी ने इस संबंध में सर्वप्रथम लोगों का ध्यान अपनी पत्रिका हरिश्चंद्र चंद्रिका जिल्द ६, अंक ५, पृष्ठ १-६ में आकर्षित किया । बाद में उक्त लेख 'प्रसिद्ध महात्माओं का जीवन चरित्र' नामक संग्रह में संकलित होकर पुनर्मुद्रित हुआ (बांकीपुर, साहिब प्रसाद सिंह, खड्ग विलास प्रेस, १८८५ ई०) ।

'मेरे वंश के प्रवर्तक ब्रह्मराव[१] जगात (अथवा प्रथ जगात[२]) गोत्र के प्रथम कवि थे। उनके प्रसिद्ध वंश में सुंदर और प्रख्यात चंद[३] हुआ, जिसको पृथ्वीराज (११९० ई० में उपस्थित) ने ज्वाला देश दिया। उनके चार पुत्र थे, जिनमें सबसे बड़ा 'नरेश' रूप में उनका उत्तराधिकारी हुआ। दूसरा गुणचंद्र था, जिसका पुत्र शीलचंद्र हुआ, पुनः जिसका [शीलचंद्र का] पुत्र वीरचंद्र था। यह अंतिम [वीरचंद्र] रणथंभौर नरेश हम्मीर[४] के साथ खेला करता था। उसके वंश में हरिचंद्र पैदा हुआ, जो आगरा में रहता था। हरिचंद्र का वीर[५] पुत्र गोपाचल में रहता था, जिसके सात पुत्र थे—(१) कृष्णचंद्र, (२) उदारचंद, (३) जरूपचंद (अथवा संभवतः रूपचंद), (४) बुद्धिचंद, (५) देवचंद, (६) ? संस्तुतचंद, और (७) स्वयं मैं सूरजचंद। मेरे छह भाई मुसलमानों से युद्ध करने में मारे गए। केवल मैं, अन्धा[६] और अयोग्य सूरजचंद, बच रहा। मैं एक कुँए[७] में गिर गया, और यद्यपि मैंने सहायता के लिए पुकारा, किसी ने नहीं बचाया। सातवें दिन जदुपति (कृष्ण) आए और मुझे बाहर खींचा[८], तथा मुझे अपना दर्शन देकर (अथवा मुझे मेरी देखने की शक्ति प्रदानकर) कहा, "पुत्र, जो चाहो, वर माँगो।" मैंने कहा, "प्रभु, मैं शत्रु[९] विनाश के लिए पूर्ण भक्ति का वरदान माँगता हूँ, और चूँकि मैंने अपने प्रभु का दर्शन कर लिया है, मेरी आँखें अब और कुछ न देखें।" जैसे ही करुणासिंधु ने सुना, वह बोले, "एवमस्तु। दक्षिण के एक प्रबल

१. 'राव' उपाधि से यह संभावना है कि यह या तो 'राजा' था अथवा गुणगायक भांट।

२. यह वंश पंडित राधेस मिसर द्वारा प्रस्तुत सारस्वत ब्राम्हणों की वंशावली में नहीं है। जगात अथवा जगतिया का अर्थ है प्रशंसा करने वाला।

३. अथवा संभवतः भावचंद, यदि हम 'भौ' (हुआ, था) को भाव का संक्षिप्त रूप मानें।

४. रणथंभौर का प्रसिद्ध राजा, जिसपर अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया था और जिसकी १००० पत्नियाँ सती हुई थीं। उसकी मृत्यु तिथि १३०० ई० के लगभग है।

५. उसके पुत्र का नाम संभवतः रामचंद्र था जिसको उसने वैष्णव परंपरा के अनुसार रामदास में बदल दिया। किंतु उक्त अंश का एक संभावित अनुवाद उसका नाम वीर (चंद्र) देता है।

६. अक्षरशः या आलकारिक रूप से। उनकी असंदिग्ध अंधता के कारण अब प्रत्येक गानेवाला अंधा भिखारी अपने को सूरदास कहता है।

७. यह अक्षरशः लिया जा सकता है अर्थात् वह एक कुएँ में गिर गए, अथवा, आलंकारिक रूप से, वह पापी थे।

८. अथवा आलंकारिक रूप से, सात दिनों के आंतरिक संघर्ष के बाद मैं भक्त हो गया और मुझे मोक्ष मिल गया।

९. बुरे विचारों के 'शत्रु' अथवा संभवतः मुसलमान (शत्रु)

ब्राह्मण[१] द्वारा तुम्हारे शत्रुओं का विनाश होगा।" तब उन्होंने मेरा नाम सूरजदास, सूर और सूरश्याम रखा और अन्तर्धान हो गए। तदनंतर मेरे लिए सर्वत्र अन्धकार हो गया।[२] तब मैं व्रज में रहने के लिए चला गया, जहाँ गोसाईं विट्ठलनाथ ने मेरा नाम अष्टछाप[३] में सम्मिलित कर लिया।

इस प्रकार निम्नांकित वंशावली प्रस्तुत होती है :—

ब्रह्मराव, जगात
|
चन्द्र (११९० ई० में उपस्थित)
|
(द्वितीय पुत्र) गुन चन्द्र
|
शीलचन्द्र
|
बीरचन्द्र (१३०० ई० में उपस्थित)
|
हरिचंद्र (आगरावासी)
|
अज्ञात वंशज
|
रामचन्द्र (गोपाचल वासी)
|
सूरजचन्द्र (१५५० ई० में उपस्थित) और अन्य छह।

स्पष्ट है कि यह ब्राह्मण नहीं थे, बल्कि राजवंश के थे।[४] परम्परा के अनुसार यह संवत १५४० (१४८३ ई०) में पैदा हुए थे और इन्होंने आगरा में अपने पिता से संगीत, फ़ारसी और भाषा की शिक्षा पाई थी। अपने पिता की मृत्यु के अनन्तर इन्होंने पद लिखना प्रारम्भ किया और कई शिष्य बनाए। इस समय वे अपने पदों में "सूरस्वामी" छाप रखते थे और इसी नाम से उन्होंने नल दमयंती[५] की कथा लेकर एक कविता लिखी। उस समय वह

१. वल्लभाचार्य
२. अपनी तीसरी प्रार्थना के अनुरूप ही वह अक्षरशः अंधे हो गए। 'दूसरो ना रूप देखो, देखि राधा श्याम', इस पंक्ति का यह अनुवाद भी हो सकता है—'रात्रि के अंतिम पहर में वह अदृश्य हो गया।'
३. व्रज के आठ महान कवियों की सूची।
४. यह चंद्र के ज्येष्ठ पुत्र को 'नरेश' कहते हैं।
५. इसकी एक भी प्रति ज्ञात नहीं है।

अपनी जवानी के अलम में थे और कहा जाता है कि वे आगरा से नौ कोस दूर, मथुरा की सड़क पर स्थित गऊ घाट पर रहते थे। इसी समय के लगभग यह बल्लभाचार्य के शिष्य हो गए और अपनी कविताओं में सूरदास, सूरजदास या पहले की ही भाँति सूरश्याम[१] छाप रखने लगे। इस समय इन्होंने सूर-सागर का भाषा छन्दों में अनुवाद किया और अपने पदों को सूरसागर[२] (रागकल्पद्रुम) नाम से संकलित किया। इनकी वृद्धावस्था में इनका यश बादशाह अकबर के कानों तक पहुँचा, जिसने इन्हें अपने दरबार में बुलाया। इनकी मृत्यु गोकुल में सम्वत १६२० (१५६३ ई०) के आसपास हुई। जहाँ तक तिथियों और सूरदास के पिता का सम्बन्ध है, उक्त परम्परा निश्चय ही अशुद्ध है; क्योंकि आईन-ए-अकबरी में जो कि १५९६-९७ ई० में समाप्त हुई, सूरदास और बाबा रामदास दोनों का उल्लेख स्पष्ट ही उस समय जीवित व्यक्तियों के रूप में हुआ है। अबुल फजल का कहना है कि रामदास ग्वालियर से आए थे, किन्तु बदाऊनी (भाग २, पृष्ठ४२) कहता है कि वह लखनऊ से आए।

सूरदास के सम्बन्ध में एक और भी भारत प्रचलित दन्तकथा का उल्लेख किया ज़ा सकता है। अन्धे होने के बाद उनके लिखक की अनुपस्थिति में कृष्ण स्वयं आते थे और उन शब्दों को लिख जाया करते थे, जो संदेह न करने वाले कवि के मुख से प्रस्रोत के समान स्वयं फूट पड़ते थे। अंत में सूरदास ने अनुभव किया कि लिखने वाला उनकी वाणी का अतिक्रमण कर जाता है और उनके विचारों को उनके उच्चरित होने के पहले ही लिख लेता है। इससे अपने अंतर्यामी प्रभु को पहचानकर सूरदास ने उनका हाथ पकड़ लिया। लेकिन कृष्ण ने उन्हें पीछे ढकेल दिया और अंतर्धान हो गए। तब सूरदास के मुँह से एक कविता निकल गई जो आज भी प्राप्त है; और मेरी सम्मति में तो यह निश्चय ही उनकी कल्पना की उच्चतम उड़ान है। इसका मुख्य भाव यह है—यद्यपि कोई भी मनुष्य मुझे ढकेल सकता है, पर मेरे हृदय से परमात्मा के अतिरिक्त कोई भी उन्हें नहीं निकाल सकता[३]।

साहित्य में सूरदास के स्थान के संबंध में मैं इतना ही जोड़ना चाहता हूँ कि उनका स्थान न्यायतः बहुत ऊँचा है। वह सभी शैलियों में अच्छा लिखते

---

१. संभवतः संतदास भी (देखिए संख्या २३५)।

२. कहा जाता है कि इसमें साठ हजार छंद (verses) हैं।

३. कर छटकाए जात हो, दुरबल जानी मोहि
हिरदय से जो जाहुगे, मरद बखानौं तोहि

थे। यदि आवश्यकता पड़ी तो वह इतने अस्पष्ट हो जाते थे जितना 'स्फिंक्स', और दूसरे ही छंद में प्रकाश की किरण के समान स्पष्ट। अन्य कवि किसी एक गुण में उनकी समता कर सकते हैं, पर वह सभी के श्रेष्ठ गुणों से संयुक्त हैं[१]। भारतीय लोग इनको कीर्ति के सर्वोच्च गवाक्ष में स्थान देते हैं, पर मेरा विश्वास है कि यूरोपीय पाठक आगरा के अन्धे कवि की अत्यधिक माधुरी की अपेक्षा तुलसीदास के उदार चरित्रों को अधिक पसंद करेगा।

टि०—सूरदास न तो अकबरी दरबार के गवैए थे और न अकबरी दरबार के गायक रामदास इनके पिता ही थे। —सर्वेक्षण ७३३, ९२८

भक्तमाल में सूरदास का विवरण छप्पय ७३ में है, पर इसमें इनके लौकिक जीवन की कोई बात नहीं आई है। प्रियादास ने इनकी टीका में एक भी कवित्त नहीं लिखा है। प्रियादास की टीका सं० १७६९ में सूर की मृत्यु के लगभग सवा सौ या डेढ़ सौ वर्ष बाद लिखी गई थी। ग्रियर्सन का यह भ्रामक उल्लेख भारतेंदु के आधार पर है। भारतेंदु के ही आधार पर यह सारा विवरण है (भारतेंदु ग्रंथावली भाग ३ पृष्ठ ७१-७७)। यहाँ तक कि पाद टिप्पणियाँ भी भारतेंदु की ही पाद टिप्पणियों का अनुवाद हैं।

सूरदास के दृष्टिकूटों वाले ग्रंथ से अभिप्राय 'साहित्य लहरी' से है। इनकी मूल टिप्पणियों के लिए भारतेंदु ने संभावना व्यक्त की है कि थे स्वयं सूरदास की है। प्रसंग-प्राप्त पद यह है—

प्रथम ही प्रथ जगत में प्रगट अद्भुत रूप
ब्रह्मराव बिचारि ब्रह्मा राखु नाम अनूप
पान पय देवी दियो सिव आदि सुर सर पाय
कह्यो दुर्गा पुत्र तेरो भयो अति अधिकाय
पारि पायन सुरन के सुर सहित अस्तुति कीन
तासु वंश प्रसिद्ध मैं भौ चन्द चारु नवीन
भूप पृथ्वीराज दीन्हों तिन्हैं ज्वाला देस
तनय ताके चार, कीन्हों प्रथम आप नरेस

---

१. जैसा कि किसी अज्ञात कवि ने कहा है—
उत्तम पद कवि गंग के उपमा को बलबीर
केशव अर्थ गंभीरता सूर तीन गुन धीर
नोट—अंगरेजी में इस दोहे का भावार्थ दिया गया है, मूल रूप में दोहा ही नहीं॥
—अनुवादक

दूसरे गुनचन्द ता सुत सीलचन्द सरूप
बीर चन्द प्रताप पूरन भयो अद्भुत रूप
रन्नभौंर हमीर भूपति संग खेलत आय
तासु वंश अनूप भो हरिचन्द अति बिख्याय
आगरे रहि गोपचल में रहौ ता सुत वीर
पुत्र जनमें सात ताके महा भट गम्भीर
कृष्णचन्द, उदारचन्द जु, रूपचन्द सुभाइ
बुद्धिचन्द प्रकाश चौथौचन्द भे सुखदाइ
देवचन्द प्रबोध संसृतचन्द ताको नाम
भयो सप्तो नाम सूरज़चन्द मंद निकाम
सो समर करि स्याहि सेवक गए विधि के लोक
रहो सूरजचन्द दृग ते हीन भरि बर सोक
परो कूप, पुकार काहू सुनी ना संसार
सातएँ दिन आइ जदुपति कीन आपु उधार
दियो चख, दै कही, सिसु सुनु माँगु बर जो चाइ
हौं कही प्रभु भगति चाहत, शत्रु नाश सुभाइ
दूसरो ना रूप देखौं देखि राधा स्याम
सुनत करुणा सिन्धु भाख्यौ एवमस्तु सुधाम
प्रबल दच्छिन ब्रिप्रकुल तें सत्रु ह्वै है नास
असित बुद्धि विचारि विद्यामान माने सास
नाम राखो मोर सूरजदास, सूर सुश्याम
भए अन्तरधान बीते पाछली निसि जाम
मोहि पन सोइ है ब्रज की बसे सुखि चित थाप
थपि गोसाइं करी मेरी आठ मद्धे छाप
विप्र प्रथ जगात को है भाव भूरि निकाम
सूर है नँदनन्द जू को लयो मोल गुलाम

—भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग ३, पृष्ठ ७६–७७

सूरदास ने नल दमयन्ती की कोई कथा नहीं लिखी। जिसे सूर कृत 'नल दमन' समझा जाता है, वह ग्रंथ मिल चुका है, और डा० मोतीचन्द ने सिद्ध कर दिया है कि वह ग्रंथ किसी अन्य सूरदास की कृति है।

सूरदास ने सूरसागर का अनुवाद नहीं किया, उन्होंने श्रीमद्भागवत का अनुवाद किया, वस्तुत: अनुवाद नहीं किया, सहारा लिया।

सूर का मृत्युकाल सं० १६२० सर्वप्रथम हरिश्चन्द्र द्वारा अनुमान किया गया, जो ग्रियर्सन की बदौलत आज तक स्वीकार किया जाता रहा है। प्रभुदयाल मीतल ने सूर-निर्णय में इनका मृत्युकाल सं० १६४० के आसपास ठहराया है।

अन्त में जो दंत-कथा दी गई है, वह भारतेन्दु वाले लेख में नहीं है।

स्फिक्स एक काल्पनिक जीव है। जिसका धड़ शेर का और सर नारी का माना गया है। यह मिस्री कल्पना है।

भारतीय लोग सूर को सर्वोच्च स्थान देते हैं। ग्रियर्सन की यह उक्ति इस कथन पर निर्भर है—

'सूर सूर, तुलसी ससी, उडगन केशवदास

३८. परमानन्द दास—व्रजवासी। १५५० ई० में उपस्थित। राग कल्पद्रुम।

३९. कुंभन दास—व्रजवासी। १५५० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। ये दोनों वल्लभाचार्य (संख्या ३४) के शिष्य थे और अष्टछाप में सम्मिलित थे।

४०. चतुरभुज दास—१५६७ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह विट्ठलनाथ गोकुलस्थ (संख्या ३५) के शिष्य थे और अष्टछाप में सम्मिलित थे। यही सम्भवतः यह दूसरे चतुर्भुज भी हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने किया है। गार्सां द तासी ने (भाग १, पृष्ठ १४२) प्रेम सागर की भूमिका का हवाला देते हुए भागवत पुराण दशम स्कंध का दोहा चौपाइयों में व्रज भाषा में अनुवाद करने वाले एक चतुर्भुज मिसर का उल्लेख किया है।

टि०—सरोज के चतुर्भुज (सर्वेक्षण २३०) कवित्त सवैया रचने वाले रीति कालीन श्रृंगारी कवि हैं, यह निश्चय ही अष्टछापी चतुर्भुजदास से भिन्न हैं। ग्रियर्सन की कल्पना ठीक नहीं।

भागवत का अनुवाद करनेवाले चतुर्भुज मिश्र भी अष्टछाप चतुर्भुजदास से असंदिग्ध रूप से भिन्न हैं। एक तो इन चतुर्भुजदास ने केवल फुटकर पद लिखे, दूसरे यह गोरवा क्षत्रिय कुम्भनदास के पुत्र थे, अतः इन्हें चतुर्भुज मिश्र से नहीं मिलाया जा सकता।

४१. छीत स्वामी—१५६७ ई० में उपस्थित।

रागकल्पद्रुम। यह विट्ठलनाथ (संख्या ३५) के शिष्य और अष्टछाप के

कवि थे। यह संभवतः वही छीत कवि हैं, जिनकी कविताएँ हजारा में हैं और जिनका समय शिव सिंह ने १६४८ ई० दिया है।

टि०—सरोज के छीत कवि (सर्वेक्षण २५०), जिनकी रचनाएँ हजारा में थीं और जिनको सरोज में सं० १७०५ में 'उ०' कहा गया है, रीतिकालीन श्रृंगारी कवि हैं और अष्टछापी छीत स्वामी से भिन्न हैं।

४२. नन्ददास—रामपुर के ब्राह्मण। १५६७ ई० में उपस्थित।

रागकल्पद्रुम। यह विट्ठल नाथ (संख्या ३५) के शिष्य थे और इनका नाम अष्टछाप में परिगणित है। इनके सम्बन्ध में एक कहावत है—'और सब गढ़िया, नन्ददास जड़िया।' इनके प्रमुख ग्रंथ हैं—(१) नाम माला, (२) अनेकार्थ, (३) पंचाध्यायी (रागकल्पद्रुम) (प्रकाशित, गीत गोविन्द के अनुकरण पर यह कविता है, देखिए गार्सां द तासी भाग १, पृष्ठ ३८७), (४) रुक्मिणी मंगल (रागकल्पद्रुम), (५) दसम स्कंध, (६) दानलीला (७) मानलीला। यह अनेक मुक्तक कविताओं के भी रचयिता हैं।

टि०—अनेकार्थ के नाम अनेकार्थ मंजरी, अनेकार्थ नाम माला और अनेकार्थ माला हैं। नाममाला वस्तुतः मानमंजरी है। इसके नाम मान मंजरी या नाममंजरी या नाममाला या नाम चिन्तामणि माला हैं। पंचाध्यायी से अभिप्राय रास पंचाध्यायी है, क्योंकि यह ग्रंथ बराबर प्रकाशित होता रहा है। यहां सिद्धान्त पंचाध्यायी अभिप्रेत नहीं है। रास पंचाध्यायी और गीत गोविन्द में किसी प्रकार का साम्य नहीं। अतः यह गीत गोविन्द के अनुकरण पर लिखी गई, यह कथन पूर्णतया अशुद्ध है। दानलीला नन्ददास की एक लघु रचना है, यह ब्रजरत्न दास द्वारा संपादित नन्ददास ग्रंथावली में है। मानलीला संभवतः मानमंजरी या नाममाला का ही अन्य नाम है। 'अनेक मुक्तक कविताओं' से ग्रियर्सन का अभिप्राय स्फुट पदों से है।

४३. गोविन्द दास—ब्रजवासी। १५६७ ई० में उपस्थित।

रागकल्पद्रुम। यह विट्ठलनाथ (संख्या ३५) के शिष्य थे। इनकी गणना अष्टछाप में है।

४४. अग्रदास—आमेर (जयपुर) के अन्तर्गत गलता के रहने वाले। १५७५ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह कृष्णदास पय अहारी (संख्या ३६) के शिष्य थे, जो सूरदास की ही भाँति स्वयं वल्लभाचार्य के शिष्य थे। यह स्वयं (अग्रदास) भक्तमाल के प्रसिद्ध रचयिता नाभादास (संख्या ५१) के गुरु थे। राग कल्पद्रुम में इनके अनेक प्रगीत पद हैं। यह संभवतः वही

कवि हैं, जिनका उल्लेख करते हुए शिवसिंह ने कहा है कि यह १५६९ ई० में उत्पन्न हुए थे और नीति संबंधी कुंडलिया, छप्पय और दोहा छंदों के रचयिता हैं।

टि०—अग्रदास कृष्णदास पय अहारी के शिष्य थे, इसमें संदेह नहीं। पर कृष्णदास पयअहारी वल्लभाचार्य के शिष्य नहीं थे। वल्लभाचार्य के शिष्य कृष्णदास अधिकारी थे। ग्रियर्सन ने सरोज के अगर कवि (संख्या ३४) को अग्रदास से अभिन्न होने की जो संभावना व्यक्त की है, वह यथार्थ है।

४५. केवलराम कवि—व्रजवासी। १५७५ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। भक्तमाल में उल्लेख। कृष्णदास पयअहारी (सं० ३६) के शिष्य।

टि०—केवलराम व्रजबासी वृंदावन में रहते थे। इनकी छाप 'केवलराम वृंदावन जीवन' है। यह कृष्णभक्त गोसाईं थे। इनका निश्चित समय ज्ञात नहीं। यह उन 'केवल' से भिन्न हैं, जिनका नामोल्लेख भक्तमाल के ३९ वें छप्पय में कृष्णदास पय अहारी के शिष्य वर्ग की सूची में हुआ है। ग्रियर्सन के यह 'केवलराम' केवल 'केवळ' हैं, और इनके व्रजबासी होने की भी संभावना नहीं, यह राजस्थानी रहे होंगे। यह भी निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह कवि थे ही। राग कल्पद्रुम में 'केवलराम वृंदावन जीवन' के पद हैं, 'केवल' के नहीं।

—सर्वेक्षण १२३

४६. गदाधर दास—१५७५ ई० में उपस्थित।

यह कृष्णदास पयअहारी (संख्या ३६) के शिष्य थे। यह संभवतः वही गदाधर हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने शांत रस के कवि के रूप में किया है।

टि०—भक्तमाल छप्पय ३९ में कृष्णदास पयअहारी के शिष्यों में एक 'गदाधारी' हैं, इन्हें गदाधरदास माना जा सकता है, जैसा कि टीकाकारों ने स्वीकार भी किया है। कृष्णदास के इन शिष्य का कवि होना ज्ञात नहीं है। यदि यह कवि होंगे तो राम का गुणानुवाद करने वाले होंगे। सरोज के जिन शांत रस के गदाधर कवि से इनके अभेद की संभावना की गई है, उनके संबंध में कोई जानकारी सुलभ नहीं। अतः इन दोनों के तादात्म्य के संबंध में भी कुछ नहीं कहा जा सकता।

—सर्वेक्षण १५७

४७. देवा कवि—उदयपुर (मेवाड़) के रहने वाले। १५७५ ई० में उपस्थित

४८. कल्यान दास—व्रजवासी। १५७५ ई० में उपस्थित

४९. हटी नारायन—ब्रजवासी। १५७५ ई० में उपस्थित

५०. पदुम नाभ—ब्रजवासी। १५७५ ई० में उपस्थित

रागकल्पद्रुम—ये चारो कृष्णदास पय अहारी (संख्या ३६) के शिष्य थे।

टि०—निश्चय ही ये चारों कृष्णदास पय अहारी के शिष्य थे, अतः इनका समय ठीक ही है। पर कल्याण दास, हटी नारायण और पदुमनाभ को ब्रजवासी कहा गया है, यह ठीक नहीं प्रतीत होता। कृष्णदास पय अहारी के सभी शिष्य गण कवि भी थे, इसका कोई प्रमाण नहीं।

देवा का उल्लेख सरोज (सर्वेक्षण ३७०) में है। इनकी कविता भी २७८ संख्या पर उदाहृत है। अतः यह कवि हैं।

सरोज में कृष्णदास पयअहारी के शिष्य कल्याणदास को कवि स्वीकार किया गया है। पर इन्हें ब्रजवासी नहीं कहा गया है। साथ ही इनकी कविता का जो उदाहरण दिया गया है, वह गो० विट्ठलनाथ के पुत्र गो० गोकुलनाथ के शिष्य, वल्लभ संप्रदाय के वैष्णव कल्याणदास ब्रजवासी की रचना है। अतः कृष्णदास पय अहारी के एक शिष्य कल्याणदास का होना सिद्ध है (भक्तमाल छप्पण ३९), पर उनका कवि होना सिद्ध नहीं।

इसी प्रकार भक्तमाल छप्पय ३९ में कृष्णदास पयअहारी के शिष्यों में हटीनारायण का नाम अवश्य है, पर इनके कवि होने का कोई प्रमाण नहीं। सरोज में भी इन्हें स्वतंत्र कवि के रूप में ग्रहण नहीं किया गया है, यद्यपि पद्मनाभ के प्रकरण में इन्हें भी महान कवि मान लिया गया है।

सरोज में पद्मनाभ को कृष्णदास पयअहारी का शिष्य कहा गया है। ब्रजवासी भी कहा गया है। इनके पदों के रागसागरोद्भव में होने का भी उल्लेख है। साथ ही कृष्णदास के शिष्य कील्ह, अग्रदास, केवलराम, गदाधर, देबा, कल्याण, हटी नारायण और पदुमनाभ सभी के महान कवि होने का उल्लेख है। इनमें से केवल अग्रदास और देबा का कवि होना सिद्ध है। प्रायः एक ही समय में तीन पद्म नाभ हुए हैं। (१) कबीर के शिष्य पद्मनाभ—भक्तमाल छप्पय ६८; (२) कृष्णदास पयअहारी के शिष्य—भक्तमाल छप्पय ३९; (३) वल्लभाचार्य के शिष्य। इनमें से वल्लभाचार्य के शिष्य निश्चित रूप से कवि थे। सरोज में विवरण दूसरे पद्मनाभ का और उदाहरण तीसरे का दिया गया है। प्रथम एवं द्वितीय के कवि होने का कोई प्रमाण नहीं।

—सर्वेक्षण ४७८

५१. नाभादास कवि—उपनाम नारायणदास, दक्षिण के रहनेवाले। १६०० ई० में उपस्थित।

व्रज कवियों के इस प्रसिद्ध मंडल का इतिहास पूर्ण करने के लिए, हम समय की सीमा (१६०० ई०) का अब थोड़ा सा अतिक्रमण करेंगे। कृष्णदास पयअहारी (संख्या ३६) के एक शिष्य गलतावासी अग्रदास (संख्या ४४) थे, जो नाभादास उपनाम नारायणदास दक्षिणी के गुरु थे। यह १६०० ई० में उपस्थित थे और डोम जाति के थे। परंपरा के अनुसार यह अंधे पैदा हुए थे, और जब ५ बरस के थे, अकाल के समय, अपने पिता द्वारा, मरने के लिए, जंगल में छोड़ दिए गए थे। ऐसी ही परिस्थिति में अग्रदास और कील्ह नामक एक अन्य वैष्णव ने इन्हें पाया। उन्हें इनकी असहाय दशा पर दया आ गई। कील्ह ने अपने कमंडल से जल लेकर इनकी आँखों पर छिड़का, और बच्चा देखने लगा। वे नाभा को अपने मठ में ले गए, जहाँ इनका पालन पोषण हुआ। यहीं अग्रदास ने इन्हें दीक्षा दी। जब यह प्रौढ़ हुए, अग्रदास की आज्ञा से इन्होंने भक्तमाल (राग कल्पद्रुम) लिखा जिसमें १०८ छप्पय छंद हैं।[१] यह व्रजभाषा में लिखित कठिनतम ग्रंथों में से एक है। नाभादास के एक शिष्य ने, जिसका नाम नारायणदास था और जो शाहजहाँ के शासन-काल (१६२८–१६५८ ई०) में था, इसको संपादित किया, यह तो निश्चित है, उसने संभवतः इसे पुनः लिखा। आज यह इसी (संपादित अथवा पुनर्लिखित) रूप में उपलब्ध है। श्री ग्राउस, जिनका इस सूचना के लिए मैं आभारी हूँ, लिखते हैं—

"सामान्यतया एक व्यक्ति के संबंध में एक ही छप्पय है। इसमें उसकी प्रमुख विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए उस व्यक्ति की प्रशंसा ऐसी शैली में की गई है, जिसे अतुलनीय अस्पष्टता की संज्ञा दे दी गई होती, यदि संवत् १७६९ (१७१२ ई०) में प्रियादास ने इसके प्रत्येक छंद की टीका न लिख दी होती, जो कि संतों के जीवन की विभिन्न दंतकथाओं के असंबद्ध और अस्पष्ट संकेतों से और भी अधिक गड़बड़ हो गई है।"

प्रियादास की टीका कवित्तों में है। तदनंतर काँधला के एक कायस्थ लाल जी ने (संख्या ३२२), ११५८ हिजरी (१७५१ ई०) में भक्त उरबसी नामक इसकी एक और टीका लिखी। १८५४ ई० में मीरापुर के तुलसीराम अगरवाला (संख्या ६४०) ने 'भक्तमाल प्रदीपन' नाम से इसका एक उर्दू अनुवाद किया।

नारायणदास, जिसको श्री ग्राउस ने नाभादास का शिष्य कहा है, देखो

१—यह सब मुख्यतया विलसन के रेलिजस सेक्ट्स आफ द हिन्दूज़, भाग १, पृष्ठ ६० से लिया गया है। देखिए गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ २७८।

लेखकों के अनुसार नाभादास का असली नाम है, नाभादास तो उनका उपनाम है। नाभादास संभवतः वही नारायणदास कवि हैं, जिनको शिवसिंह ने १५५८ ई० में उत्पन्न कहा है और जिन्हें हितोपदेश तथा राजनीति का भाषानुवाद करने वाला माना है। संभवतः यह वह नारायणदास भी हैं, जिन्हें शिवसिंह ने छंदसार नामक ५२ छंदों के एक पिंगल ग्रंथ का कर्त्ता वैष्णव माना है।

टि०—नाभादास और नारायणदास दो व्यक्ति हैं। दोनों अग्रदास के शिष्य हैं। नारायणदास ज्येष्ठ हैं, नाभादास कनिष्ठ। नारायणदास ने सं० १६४९ वि० में भक्तमाल लिखी, उसमें १०८ छप्पय थे। तदनंतर नाभादास ने इसमें कुछ और परिवर्द्धन किया। आज भक्तमाल जिस रूप में उपलब्ध है, वह नाभादास का दिया हुआ है। नाभादास की मृत्यु सं० १७१९ वि० में हुई। अतः यह संपादन परिवर्द्धन कार्य १६४९ और १७१९ के बीच किसी समय सं० १७०० वि० के आस पास हुआ।

—सर्वेक्षण ४०२

सरोज में वर्णित हितोपदेश एवं राजनीति के अनुवादक नारायणदास (सर्वेक्षण ४०८) इन नाभादास और नारायणदास से निश्चय ही भिन्न हैं। यह हितोपदेश वाले नारायणदास ऊँच गाँव के नारायण भट्ट (सर्वेक्षण ४०६) से अभिन्न हो सकते हैं। इसी प्रकार छंदसार पिंगल के रचयिता नारायणदास वैष्णव (सर्वेक्षण ४०९) भी इनसे भिन्न हैं। यह ग्रंथ सं० १८२९ में चित्रकूट में रचा गया था।

५२. कान्हरदास कवि—व्रजवासी। १६०० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह मथुरा के विट्ठलदास चौबे के पुत्र थे। इनके घर पर एक सभा हुई थी, जिसमें नाभादास (संख्या ५१) को गोसाईं की उपाधि मिली थी।

५३. श्री भट्ट कवि—जन्म १५४४ ई०।

राग कल्पद्रुम। प्रिया प्रीतम विलास वर्णन में यह अत्यंत दक्ष थे, ऐसा कहा जाता है। संभवतः यह नीमादित्य के शिष्य केशवभट्ट ही हैं। (देखिए विलसन कृत 'रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़, भाग १, पृष्ठ १५१)।

टि०—श्री भट्ट और केशव भट्ट एक ही व्यक्ति नहीं हैं। श्री भट्ट केशव भट्ट के शिष्य हैं। १५४४ ई० इनका जन्मकाल नहीं है। यह इनका उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ८६४

५४. व्यास स्वामी, उपनाम हरि राम सुकल—बुंदेलखण्ड के अंतर्गत उरछा के रहने वाले। १५५५ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह देवबन्द के गौड़ ब्राह्मण थे और राधावल्लभी संप्रदाय में दीक्षित थे। १५५५ ई० में जब यह ४५ वर्ष के थे, यह बृंदाबन में बस गए और हरिव्यासी नामक एक नया वैष्णव संप्रदाय चलाया। विलसन के अनुसार (रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़, भाग १, पृष्ठ १५१) यह और केशव भट्ट नीमावत सम्प्रदाय के संस्थापक नीमादित्य (राग कल्पद्रुम) के शिष्य थे।

टि०—हरीराम शुक्ल कथा वाचक होने के नाते व्यास भी कहलाते थे। यह ओरछा वासी थे, देवबंद वासी नहीं। हित हरिवंश के पिता केशव प्रसाद मिश्र भी व्यास कहलाते थे। यही व्यास देवबंद जिला सहारनपुर के रहने वाले थे और गौड़ब्राह्मण थे। —सर्वेक्षण ९७०

हरीराम व्यास राधावल्लभ संप्रदाय में कभी भी नहीं दीक्षित हुए। इन्होंने अपने पिता समोखन शुक्ल से दीक्षा ली थी। हित हरिवंश से इन्हें अवश्य ही अपनी साधना में पर्याप्त सहायता मिली।

हरिव्यासी सम्प्रदाय भी इनका चलाया हुआ नहीं है। ऊपर उल्लिखित श्रीभट्ट के शिष्य हरि व्यासदेव थे। इन्हीं हरि व्यास देव के शिष्य हरिव्यासी कहलाते हैं।

केशव भट्ट अवश्य ही निम्बार्क सम्प्रदाय के थे। हरीराम व्यास का उक्त सम्प्रदाय से कोई संबंध नहीं। —सर्वेक्षण ५१५

५५. परशुराम—व्रजवासी। जन्म १६०३ ई०।

राग कल्पद्रुम, दिग्विजय भूषण। यह श्री (केशव) भट्ट और हरिव्यास के अनुयायी थे। (देखिए, विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़, पृष्ठ १५१)। यह निश्चित नहीं है कि राग कल्पद्रुम और दिग्विजय भूषण के परशुराम एक ही हैं।

टि०—परशुराम व्रजवासी हरिव्यास देव के शिष्य और निंबार्क संप्रदाय के वैष्णव थे। दिग्विजय भूषण में जिन परशुराम के कवित्त हैं, वे कोई रीतिकालीन श्रृङ्गारी कवि हैं और इनसे निश्चय ही भिन्न हैं (सर्वेक्षण ४७२)। १६०३ ई० (सं० १६६० वि०) उपस्थिति काल है। 'विप्रमती' का रचना काल सं० १६७७ वि० है। —सर्वेक्षण ४७४

५६. हित हरिवंश स्वामी गोसाँई—१५६० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। इनके पिता व्यास स्वामी उपनाम हरिराम सुकल (संख्या ५४) थे। यह अत्यंत प्रसिद्ध कवि हैं। इन्होंने संस्कृत में 'राधा सुधानिधि' और भाषा में 'हित चौरासी धाम' लिखा। इनके शिष्यों में कवि नरबाहन (संख्या ५७) थे। देखिए विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़, पृष्ठ १७७ और ग्राउस, जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ४७ (१८७८ ई०), पृष्ठ ९७, जहाँ इनकी दोनों कृतियों के नमूने और उनके अनुवाद दिए गए हैं।

टि०—हित हरिवंश के पिता का नाम व्यास मिश्र और पितृव्य का केशव प्रसाद मिश्र था। यह व्यास मिश्र हरीराम व्यास से भिन्न हैं। हरीराम व्यास तो हित हरिवंश के कुछ अंशों में शिष्य भी कहे जा सकते हैं और वय में भी उनसे पर्याप्त कनिष्ठ थे। इनके हिंदी ग्रंथ का नाम 'हित चौरासी' है, न कि 'हित चौरासी धाम'। हरिवंश जी का जन्म सं० १५५९ वैशाख शुक्ल ११ को और देहवसान आश्विन शुक्ल पूर्णिमा सं० १६०९ वि० को हुआ। अतः १५६० ई० या सं० १६१७ में यह उपस्थित नहीं थे और उक्त तिथि अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ९७०

५७. नरबाहन जी कवि—भोगाँव वासी। १५६० ई० में उपस्थित।

यह हित हरिवंश (संख्या ५६) के शिष्य थे। इनका उल्लेख भक्तमाल में हुआ है।

टि०—हित हरिवंश ने प्रसन्न होकर अपने दो पदों में इनकी छाप रख दी थी, जो हित चौरासी के ११, १२ संख्याओं पर संकलित हैं। नरबाहन के नाम पर यही दो पद मिलते हैं। इनके गाँव का नाम भैगाँव है, जो वृंदावन से चार मील दूर है।

—सर्वेक्षण ४०२

५८. ध्रुवदास—१५६० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। हित हरिवंश (संख्या ५६) के शिष्य और अत्यधिक लिखनेवाले कवि। श्री ग्राउस ने जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ४७ (१८७८ ई०), पृष्ठ ११३ में इनके ग्रंथों की पूर्ण सूची दी है।

टि०—ध्रुवदास स्वप्न में हित हरिवंश के शिष्य हुए थे। इनके ४० से भी अधिक छोटे छोटे ग्रंथ हैं। इनमें से सभामंडली का रचनाकाल सं० १६८१, वृंदावन सत का १६८६ और रहस्य मंजरी का सं० १६९८ है। ग्रियर्सन में दिया संवत अशुद्ध है।

—हिंदी साहित्य का इतिहास पृष्ठ १९३-९४

५९. हरिदास स्वामी—व्रजांतर्गत बृंदावन के निवासी। १५६० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। इनकी संस्कृत रचनाएँ जयदेव के समान और भाषा कविताएँ सूरदास और तुलसीदास के बाद समझी जाती हैं। इनके सर्वाधिक ज्ञात ग्रंथ हैं—'साधारण सिद्धांत' और 'रस के पद'। इनके अनेक प्रसिद्ध शिष्य हुए हैं, जिनमें तानसेन (सं० ६०) इनके चाचा विपुल विट्ठल (सं० ६२) और भगवत रमित (सं० ६१) का उल्लेख किया जा सकता है। विलसन के अनुसार यह चैतन्य के शिष्य थे, जो १५२७ ई० में अन्तर्धान हुए। (रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़ पृष्ठ १५९)। किंतु यह संदेहास्पद है। देखिए ग्राउस, जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ४५ (१८७६ ई०) पृष्ठ ३१७, जहाँ इस संबंध में पूर्ण विचार किया गया है और जहाँ (पृष्ठ ३१८) 'साधारण सिद्धांत' का मूल पाठ और अनुवाद दिया गया है।

टि०—स्वामी हरिदास बृंदावनी केवल हिंदी के कवि थे। राग कल्पद्रुम में हरिदास की छाप से युक्त जो संस्कृत रचनाएँ मिलती हैं, वे इनकी न होकर वल्लभ संप्रदाय के वैष्णव, विट्ठलनाथ के शिष्य हरीदास नागर की हैं। हरिदास का स्थान हिन्दी कवियों में इतना ऊँचा नहीं हैं, जितना ग्रियर्सन ने समझा है। स्वामी हरिदास के कुल ११० पद हैं, जो विभिन्न राग रागनियों में बँटे हैं। भगवत रमित के स्थान पर भगवत रसिक होना चाहिए। यह स्वामी हरिदास के न तो शिष्य थे, न इनके समकालीन ही। इनके टट्टी संप्रदाय के अवश्य थे। स्वामी हरिदास चैतन्य महाप्रभु के शिष्य नहीं थे। यह तो निंबार्क संप्रदाय के थे और इसीके अंतर्गत इन्होंने टट्टी संप्रदाय की संस्थापना की थी।

—सर्वेक्षण ९६२

६०. तानसेन कवि—ग्वालियर वासी। १५६० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह गौड़ ब्राह्मण मकरंद पांड़े के पुत्र थे। यह हरिदास (संख्या ६९) के शिष्य थे, जिनसे इन्होंने काव्य कला सीखी थी। फिर यह ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक मुहम्मद गौस की शरण में गए। दंत-कथा है कि मुहम्मद गौस ने तानसेन की जीभ को अपनी जीभ से छू दिया; और तानसेन अपने युग के सर्वश्रेष्ठ गायक हो गए।

यह प्रसिद्ध शेर खाँ के पुत्र दौलत खाँ के इश्क में मुब्तला हो गए और उनकी तारीफ में इन्होंने अनेक कविताएँ लिखीं। जब दौलत खाँ दिवंगत हो गया, यह बाँधव (रीवाँ) के बघेल राजा रामचंद्र सिंह के दरबार में चले गए। वहाँ से यह १५६३ ई० में बादशाह अकबर द्वारा बुला लिए गए, जहाँ यह दरबारी

गायक हो गए और सूरदास के अभिन्न मित्र हो गए। (देखिए आईन-ए-अकबरी का ब्लाचमैन कृत अनुवाद, पृष्ठ ४०३, ६१२)। जब तानसेन ने दरबार में पहली बार गाया, कहा जाता है, बादशाह ने २ लाख पुरस्कार में दिया। इनकी अधिकांश रचनाएँ अकबर के नाम पर हैं और इनकी लय और राग अब तक लोगों द्वारा हिन्दुस्तान में दुहराए जाते हैं। संगीत पर इनका सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ है 'संगीतसार' (रागकल्पद्रुम)।

टि०—तानसेन (त्रिलोचन पांडेय) ने हरिदास स्वामी से पिंगल के साथ-साथ संगीत विद्या भी पढ़ी थी। इनका जन्मकाल सं० १५७८ एवं मृत्युकाल सं० १६४६ वि० है। —सर्वेक्षण ३२०

६१. भगवत रमित—व्रजान्तर्गत वृन्दावन के निवासी। १५६० ई० में उपस्थित।

यह माधवदास (संख्या २६) के पुत्र और हरिदास (सं० ५९) के शिष्य थे। यह कुछ प्रसिद्ध कुण्डलियों के रचयिता हैं।

टि०—एक भगवन्त मुदित नामक वैष्णव हुए हैं जिनके पिता का नाम माधवदास था और जिन्होंने हरिदास से दीक्षा ली थी, यह हरिदास वृन्दावन में गोविन्ददेव जी के मन्दिर के अधिकारी थे और प्रसिद्ध स्वामी हरिदास से भिन्न थे। भगवन्त मुदित का विवरण भक्तमाल छप्पय १९८ में है। इन्होंने सं० १७०७ में वृन्दावन शतक नाम ग्रंथ रचा था। ग्रियर्सन ने वस्तुतः इन्हीं का विवरण दिया है, पर नाम और समय में भूल हो गई है।

भगवत रसिक का जन्मकाल १७९५ है। इनका रचनाकाल सं० १८३०-५० वि० है। यह टट्टी सम्प्रदाय के थे। इन्हीं की कुण्डलियाँ सुप्रसिद्ध हैं। सरोज एवं ग्रियर्सन दोनों में भगवत रसिक और भगवन्त मुदित का घालमेल हो गया है। सरोज के प्रारम्भिक संस्करणों में भगवत रसिक के स्थान पर रमित ही छपा था।

—सर्वेक्षण ५९८

६२. विपुल विट्ठल—व्रजान्तर्गत गोकुल निवासी। १५६० ई० में उपस्थित।

रागकल्पद्रुम। यह हरिदास (सं० ५९) के मामा और शिष्य थे। यह मधुवन के राजा के दरबारी थे और इनकी बहुत सी रचनाएँ रागकल्पद्रुम में हैं।

टि०—सरोज में लिखा है—"यह महाराज मधुवन में बहुधा रहा करते थे।" इसी के अँगरेजी अनुवाद का पुनः हिंदी अनुवाद यह है—"यह मधुवनके राजा के दरबारी थे।" ग्रियर्सन ने सरोज के वाक्य को ठीक से नहीं समझा। मधुवन के स्थान पर 'निधुवन' होना चाहिए। यह वृन्दावन के अन्तर्गत एक

रक्षित लघु वन है। इसी में स्वामी हरिदास की कुटिया थी, जो अब तक है।

—सर्वेक्षण ५२०

६३. केसवदास—कश्मीरी। १५४१ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। परम प्रसिद्धि प्राप्त कर यह ब्रज आए और यहाँ कृष्ण चैतन्य से शास्त्रार्थ में पराजित हुए।

टि०—चैतन्य महाप्रभु की मृत्यु सं० १५८४ में हुई। अतः यह शास्त्रार्थ इस समय के पूर्व हुआ रहा होगा। प्रियादास के अनुसार यह शास्त्रार्थ शांतिपुर नदिया में हुआ था (भक्तमाल की टीका, कवित्त संख्या ३२३-२५)।

—सर्वेक्षण १२२

६४. अभयराम कवि—ब्रजांतर्गत-वृंदावन-वासी। जन्मकाल १५४५ ई०।

हजारा, राग कल्पद्रुम।

टि०—वृंदावनी अभयराम के संबंध में कोई जानकारी सुलभ नहीं। सरोज में इन्हें सं० १६०२ में 'उ०' कहा गया है। यह 'उ०' 'उपस्थिति' का सूचक है, न कि 'उत्पत्ति' का, जैसा कि यहाँ स्वीकार किया गया है।

६५. चतुर बिहारी कवि—ब्रजवासी। जन्मकाल १५४८ ई०।

राग कल्पद्रुम। यही संभवतः शिवसिंह द्वारा बिना तिथि दिए हुए उल्लिखित चतुर कवि और चतुर बिहारी भी हैं।

टि०—सरोज में इन्हें सं० १६०५ में उ० कहा गया है। इसी को यहाँ १५४८ ई० में उत्पन्न बना दिया गया है। सरोज के चतुर (सर्वेक्षण २२८) और चतुर बिहारी (सर्वेक्षण २२९) इन भक्त चतुर बिहारी से भिन्न हैं। सरोज के ये कवि कवित्त सवैये लिखनेवाले रीतिकालीन शृङ्गारी कवि हैं।

६६. नारायन भट्ट—ब्रजांतर्गत ऊँचगाँव बरसाना के निवासी। जन्मकाल १५६३ ई०।

राग कल्पद्रुम। यह बहुत ही पवित्र पुरुष थे।

६७. इब्राहीम—सैयद इब्राहीम उपनाम रसखान कवि, हरदोई जिले के अंतर्गत पिहानी के रहनेवाले। जन्मकाल १५७३ ई०।

सुंदरी तिलक। यह पहले मुसलमान थे, बाद में वैष्णव होकर ब्रज में रहने लगे थे। इनका वर्णन भक्तमाल में है। इनकी कविताएँ माधुर्य से भरी कही जाती हैं। इनके एक शिष्य कादिर बख्श (संख्या ८९) थे।

टि०—रसखान दिल्ली के पठान थे, पिहानी के नहीं। सरोज में दिया संवत १६३० रसखान का रचनाकाल है। ग्रियर्सन ने इसे जन्मकाल मानकर भ्रम की ही सृष्टि की है।

—सर्वेक्षण ७४५

६८. नाथ कवि—जन्मकाल १५८४ ई०

राग कल्पद्रुम, १ सुंदरी तिलक। यह गोपाल भट्ट के पुत्र थे, व्रज में रहते थे। ऋतुओं एवं अन्य विषयों पर लिखी इनकी रचनाएँ राग कल्पद्रुम में हैं।

टि०—भक्तमाल छप्पय १५९ में इन नाथ व्रजवासी का विवरण है, अतः १५८४ ई० या सरोज का सं० १६४१ इनका उपस्थिति काल है। भक्तमाल की रचना सं० १६४९ में हुई थी। —सर्वेक्षण ४३१

६९. विद्यादास—व्रजवासी। जन्मकाल १५९३ ई०।

राग कल्पद्रुम।

चतुर्थ अध्याय का परिशिष्ट

७०. केहरी कवि—जन्म १५५३ ई०

यह राजा रतनसिंह के दरबारी कवि थे और काव्य कला में अत्यंत प्रवीण थे। यह रतनसिंह संभवतः बुरहानपुर जिला नीमार के रावरतन हैं, जो १५७९ ई० में हुए। (देखिए टाड, भाग २, पृष्ठ ७६; कलकत्ता संस्करण, भाग २, पृष्ठ ८२)।

टि०—केहरी कवि ओरछा निवासी थे, ओरछा के राजा रामशाह के आश्रित और महाकवि केशव के समकालीन थे। इन्होंने उन रतन की प्रशंसा की है जिनके शौर्य का प्रदर्शन केशव ने रतन बावनी में किया है। इनका जन्मकाल १६२० के लगभग और कविताकाल सं० १६६० है।

—सर्वेक्षण १०७

७१. आसकरनदास—ग्वालियर के अन्तर्गत नरवरगढ़ के कछवाहा राजपूत। १५५० ई० के आसपास उपस्थित थे।

राग कल्पद्रुम। यह राजा भीमसिंह के पुत्र थे। देखिए टाड, भाग २, पृष्ठ ३५३; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ३९०।

७२. चेतन चन्द्र कवि—जन्मकाल १५५९ ई०।

इन्होंने शालिहोत्र सम्बन्धी 'अश्व विनोद' नामक ग्रन्थ सेंगर वंश के राजा कुशल सिंह के लिए बनाया था।

पुनश्चः—अश्वविनोद की तिथि सं० १६१६ (१५५९ ई०) दी गई है, जिसे शिवसिंह कवि का जन्म संवत मानते हैं।

टि०—१५५९ ई० जन्मकाल नहीं है इसी वर्ष सं० १६१६ में कवि ने अश्व विनोद की रचना की थी। सरोजकार ने उपस्थितिकाल दिया है, न कि जन्म काल। —सर्वेक्षण २३७

७३. प्रिथ्वीराज कवि—राजा और कवि; १५६७ ई० में उपस्थित।

हजारा, राग कल्पद्रुम। यह बीकानेर के राजा थे और संस्कृत तथा भाषा दोनों में रचना करते थे। यह कल्यानसिंह के पुत्र और राजा रामसिंह के भाई थे। देखिए टाड का राजस्थान, प्रथम भाग, पृष्ठ ३४३ और आगे, भाग २, पृष्ठ १८६; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ३६३ और आगे, तथा भाग २ पृष्ठ २०३.

७४. परबत कवि—१५६७ ई० में उपस्थित।

हजारा।

टि०—बुन्देलवैभव के अनुसार यह ओरछावासी सुनार थे। इनका नाम परबतें था। इनका जन्म काल सं० १६८४ और रचनाकाल सं० १७१० दिया गया है।

—सर्वेक्षण ४७२

७५. छत्र कवि—जन्म १५६८ ई०

महाभारत के पद्यबद्ध सार 'विजय मुक्तावली' के रचयिता। यह अत्यन्त संक्षिप्त है और सूचीपत्र से कुछ ही अच्छा है। यह सम्भवतः वही हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने 'छत्रपति कवि' नाम से किया है।

टि०—विजय मुक्तावली का रचनाकाल सं० १७५७, श्रावण सुदी ११ है। अतः ग्रियर्सन का समय पूर्ण रूपेण अशुद्ध है। यह सरोज के आधार पर दिया गया है।

—सर्वेक्षण २५३

कुछ निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि यह छत्र और सरोज के छत्रपति कवि (सर्वेक्षण २४६) एक ही हैं या दो।

७६. उदय सिंघ—मारवाड़ के महाराज। १५८४ ई० में उपस्थित।

किसी अज्ञात कवि ने इनके नाम से एक ख्यात नामक ग्रन्थ लिखा है। जिसमें उदयसिंह, उनके पौत्र गजसिंह और प्रपौत्र जसवन्तसिंह का विस्तृत इतिहास है। देखिए टाड, भाग २, पृष्ठ २९; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ३२।

७७. जीवन कवि—जन्म १५५१ ई०

हजारा, राग कल्पद्रुम।

७८. मानिक चन्द कवि—जन्म १५५१ ई०

राग कल्पद्रुम।

टि०—१५५१ ई० या सरोज में दिया सं १६०८ मानिकचन्द जी का निश्चित रूप से उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ६९२

७९. ऊधोराम कवि—जन्म १५५३ ई०

हजारा, ? राग कल्पद्रुम । देखिए संख्या ४९५.

टि०—यह सं० १७५० के पूर्व उपस्थित थे। इनके संबंध में इतना ही निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है। —सर्वेक्षण ५८

८०. नंदलाल कवि—जन्म १५५४ ई०

हजारा।

टि०—यह सं० १७५० से पूर्व उपस्थित थे। इतना ही इनके संबंध में असंदिग्ध रूप से कहा जा सकता है। —सर्वेक्षण ४२५

८१. गनेस जी मिसर—जन्म १५५८ ई०

टि०—इन गणेश ने सं० १८१८ में 'रसबल्ली' नाम ग्रंथ रचा था। अतः सरोज के आधार पर दिया इनका समय अशुद्ध है। —सर्वेक्षण २०४

८२. जलालउद्दीन कवि—जन्म १५५८ ई०

हजारा।

टि०—सं० १७५० के पहले यह कवि हुआ इतना ही निश्चित रूप से कहा जा सकता है। —सर्वेक्षण २८७

८३. ओलीराम कवि—जन्म १५६४ ई०

हजारा।

टि०—सं० १७५० के पहले यह कवि हुआ, इतना ही इसके संबंध में सुनिश्चित रूप से कहा जा सकता है। —सर्वेक्षण १९

८४. दामोदरदास—ब्रजवासी, जन्म १५६५ ई०।

राग कल्पद्रुम, संभवतः वही जिनका उल्लेख बिना तिथि दिए हुए शिवसिंह ने 'दामोदर कवि' नाम से किया है।

टि०—दामोदर दास जी सं० १६८७-९२ के लगभग वर्तमान थे। इनके नेम बत्तीसी का रचनाकाल सं० १६८७ और जजमान कन्हाई जस का सं० १६९२ वि० है। १५६५ ई० या सं० १६२२ वि० इनका जन्मकाल हो सकता है। —सर्वेक्षण ३४६

सरोज के तिथि हीन कवि दामोदर कवि (सर्वेक्षण ३४७), रीतिकालीन श्रृङ्गारी कवि हैं, और हित हरिवंश के राधा बल्लभी संप्रदाय के इस भक्त कवि से भिन्न हैं।

८५. जमालउद्दीन—पिहानी, जिला हरदोई के। जन्म १५६८ ई०।

कोई विवरण नहीं। यह संभवतः वही हैं, जिन्हें शिवसिंह ने १५४५ ई० में उत्पन्न और कूट में प्रवीण 'जमाल कवि' कहा है।

टि०—१५६८ ई० या सं० १६२५ उपस्थिति काल है। जमाल और जमालुद्दीन की अभिन्नता की संभावना ठीक है। —सर्वेक्षण २८०,२९८

८६. नन्दन कवि—जन्म १५६८ ई०।

हजारा।

८७. खेम कवि—व्रजवासी, जन्म १५७३ ई०।

राग कल्पद्रुम। इन्होंने नायिकाभेद[1] लिखा। यह संभवतः वही हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने दोआब वासी 'छेम' नाम से किया है। देखिए संख्या १०३, और ३११।

टि०—खेम व्रजवासी के सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ ज्ञात नहीं। यह कृष्णभक्त थे। इन्होंने नायिका भेद का कोई ग्रंथ लिखा होगा, न तो इसकी संभावना है, और न अन्यत्र कहीं ऐसा उल्लेख ही मिलता है। सरोज (सर्वेक्षण १४६) के अनुसार १५७३ ई० या सं० १६३० में यह 'उ०' अर्थात् उपस्थित थे। दोआब वाले कवि का नाम छेम नहीं है, छेमकरन २ (सर्वेक्षण २४४) है, इनकी छाप 'छेम' है, जो 'खेम' भी हो सकती है। पर दोनों कवियों की अभेदता के सम्बन्ध में कुछ कहना संभव नहीं।

८८. शिव कवि—जन्म १५७४ ई०।

हजारा, सुन्दरी तिलक।

टि०—इनको सं० १७५० के पूर्व उपस्थित माना जा सकता है। इससे अधिक इनके विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। —सर्वेक्षण ९३४

८९. कादिर बखस—पिहानी जिला हरदोई के मुसलमान। जन्म १५७८ ई०।

कुशल कवि। यह सरस कवि सैयद इब्राहीम पिहानी वाले के शिष्य थे।

टि०—१५७८ ई० या सं० १६३५ कादिर का उपस्थितिकाल है, क्योंकि इनके काव्य गुरु रसखान का रचनाकाल भी प्रायः यही है।

—सर्वेक्षण ७८

९०. अमरेश कवि—जन्म १५७८ ई०।

---

१. जब यह कहा जाता है कि किसी कवि ने लवर्स (Lovers) पर लिखा है, तब इसको देशी लेखकों द्वारा लिखित 'उसने नायक भेद या नायिका भेद लिखा' इस मंतव्य का अनुवाद समझना चाहिए। यह सब उन ग्रंथों के पारिभाषिक नाम हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के (heroes) और (heroines) वर्णित हैं तथा बहुत दूर तक सूक्ष्मातिसूक्ष्म, यहां तक कि कभी-कभी व्यर्थ, विभेदों में विभक्त हैं। इसका एक 'विकास नखशिख है, जिसके उदाहरण आगे मिलेंगे। इसमें नायक नायिका के अंग प्रत्यंग का पैर के नख (Toe nails) से शिखा (top knot) तक का वर्णन रहता है।

अत्यन्त अच्छे कवि के रूप में प्रसिद्ध। इनकी बहुत सी रचनाएँ हजारा में हैं।

टि०—इनके सम्बन्ध में अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि यह सं० १७५० के पूर्व उपस्थित थे। —सर्वेक्षण ११

९१. निहाल—प्राचीन। जन्म १५७८ ई०।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण ४४३) में निहाल प्राचीन को सं० १६३५ में उ० कहा गया है।

९२. घनश्याम सुकल—असनी जिला फतहपुर के। जन्म १५७८ ई०।

हजारा, सुन्दरी तिलक। यह बाँधव (रीवाँ) नरेश के दरबारी कवि थे।

टि०—रीवाँ नरेश के दरबारी घनश्याम शुक्ल सं० १७३७ के लगभग उत्पन्न हुए और सं० १८३५ तक वर्तमान रहे। हजारा में इनकी कविता नहीं हो सकती। हजारा वाले घनश्याम दूसरे होंगे, जो सं० १७५० के पूर्व वर्तमान थे। इनके सम्बन्ध में इतना ही कहा जा सकता है। —सर्वेक्षण २११

९३. चन्दसखी—व्रजवासी। जन्म १५८१ ई०।

रागकल्पद्रुम। यही संभवतः शिव सिंह द्वारा उल्लिखित 'चन्द कवि' और हजारा तथा सुन्दरी तिलक में उद्धृत चन्द कवि भी हैं।

टि०—चन्द सखी व्रजवासी राधावल्लभ संप्रदाय के प्रसिद्ध भक्त कवि हैं। यह १८ वीं शती के मध्य में उपस्थित थे। यह सरोज के चन्द कवि ४ (सर्वेक्षण २२०) से निश्चित रूप से भिन्न हैं। इन्हीं श्रृंगारी चन्द की रचनाएँ हजारा में थीं।

९४. मुबारक अली—बिलग्रामी, जिला हरदोई वाले। जन्म १५८३ ई०।

सुंदरी तिलक। यह लोगों की जबान पर चढ़ी हुई और प्रचलित सैकड़ों कविताओं के सुप्रसिद्ध रचयिता हैं।

टि०—यह केवल मुबारक के नाम से प्रसिद्ध हैं।

९५. नागर कवि—जन्म १५९१ ई०।

हजारा। संभवतः वही जिनका उल्लेख राग कल्पद्रुम की भूमिका में 'नागरीदास' नाम से हुआ है;

टि०— १५९१ ई० या सं० १६४८ वाले कवि का नाम सरोज में नागरीदास ही दिया हुआ है। यह प्रसिद्ध कृष्णगढ़ नरेश महाराज सावंतसिंह हैं, जिनका जन्म सं० १७५६ में एवं मृत्यु १८२१ में हुई। अतः सरोज और ग्रियर्सन का समय अशुद्ध है। इन नागरीदास की रचना हजारा में नहीं हो सकती। हजारा में विहारिनिदास के शिष्य नागरीदास (सं० १६०० के

लगभग उपस्थित) या ओड़छा वाले नागरीदास (सं० १६०० ही के लगभग वर्तमान) की रचना रही होगी। —सर्वेक्षण ३९८

९६. दिलदार कवि—जन्म १५९३ ई०।

हजारा।

टि०—इनके संबंध में इतना ही, निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यह सं० १७५० के पूर्व उपस्थित थे। —सर्वेक्षण ३५२

९७. दौलत कवि—जन्म १५९४ ई०।

९८. जगन कवि—जन्म १५९५ ई०।

शृंगारी कवि।

टि०—यह अकबरी दरबार के कवि हैं। अतः १५९५ ई० या सं० १६५२ इनका रचनाकाल है।

९९. ताज कवि—जन्म १५९५ ई०।

हजारा।

टि०—१५९५ ई० या सं० १६५२ ताज का रचनाकाल है।

—सर्वेक्षण ३२५

१००. लालनदास—डलमऊ जिला रायबरेली के ब्राह्मण। जन्म १५९५ ई०

हजारा। शांतरस के कवि।

टि०—लालनदास हलवाई थे, ब्राह्मण नहीं। इस कवि ने हरिचरित्र नामक भागवत का भाषानुवाद १५८५, १५८७ या १५९५ वि० में प्रस्तुत किया था। अतः १५९५ ई० इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। इस समय तक तो शायद कवि जीवित भी न रहा हो। —सर्वेक्षण ८०८

१०१. बारक कवि—जन्म १५९८ ई०।

१०२. विस्वनाथ कवि—प्राचीन। जन्म १५९८ ई०।

अध्याय ५

मुगल दरबार

१०३. छेम कवि—डलमऊ जिला रायबरेली के कवि और बन्दीजन, १५३० ई० में उपस्थित।

यह बादशाह हुमायूँ (१५३०–४० ई०) के दबारी कवि थे। सम्भवतः यही शिव सिंह द्वारा उल्लिखित खेम बुन्देलखंडी भी हैं। देखिए संख्या ८७ और ३११.

टि०—खेम बुन्देलखंडी से इनकी अभिन्नता स्थापित करने के कोई भी सूत्र सुलभ नहीं।

१०४. अकबर बादशाह—शासन काल १५५६–१६०५ ई०।

अब हम अकबर बादशाह के प्रभापूर्ण दरबार और वहाँ चमकने वाले कवियों रूपी नक्षत्र पुंज की झलक ले सकते हैं। मलिक मुहम्मद (सं० ३१) के बाद उल्लिखित कवियों में से अधिकांश, विद्या के इस बड़े संरक्षक बादशाह के सम-सामयिक थे। यह देखा जा सकता है कि अकबर बादशाह का शासन काल और इंगलैण्ड की महारानी एलिजाबेथ का शासनकाल प्रायः एक ही है और इन दोनों शासकों के शासनकाल साहित्यिक प्रतिभा के एक असाधारण एवं अभूतपूर्व स्फुरण से परिपूर्ण हैं; और यदि तुलसीदास और सूरदास की शेक्सपियर तथा स्पेंसर के साथ सचमुच ही तुलना की जाय, तो ये भारतीय कवि बहुत पीछे नहीं रहेंगे। निम्नांकित कवियों के अतिरिक्त तानसेन (सं० ६०) और सूरदास (सं० ३७) भी इनके दरबारी कवि थे। इनके सम्बन्ध में विशेष विवरण पिछले अध्याय में दिया जा चुका है।

अकबर का हिंदी कवियों में परिगणित किए जाने का अधिकार कुछ मुक्तक रचनाओं पर ही निर्भर है। इनमें उसकी छाप अकब्बर राय है। सम्भवतः ये वस्तुतः तानसेन द्वारा विरचित हैं। (देखिए सं० ६०)

टि०—'तुलसी और सूर शेक्सपियर और स्पेंसर से तुलना में बहुत पीछे नहीं रहेंगे'—यह मतव्य निःसंदेह विवादास्पद है। इसका विस्तार मैं यहाँ नहीं करना चाहता।

सूरदास कभी अकबरी दरबार से सम्बद्ध नहीं रहे।

अकबर की रचनाओं में आवश्यक नहीं कि 'अकबर राय' ही छाप हो। शाह अकब्बर भी छाप है। जिन रचनाओं में अकबर सम्बोधित है, वे अन्यों की हो सकती हैं। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि अकबर ने छन्द रचना की ही नहीं। उसकी रचनाओं को 'अकबर संग्रह' नाम से मयाशंकर याज्ञिक ने संकलित किया है।

—सर्वेक्षण १

१०५. टोडरमल खत्री—जन्म १५२३ ई०।

अकबर बादशाह के प्रसिद्ध मंत्री। गलती से यह पंजाबी कहे जाते हैं क्योंकि मआसिरुल उमरा के अनुसार यह लाहौर में पैदा हुए थे, वस्तुतः यह अवध के अंतर्गत लहरपुर में उत्पन्न हुए थे (देखिए, आईन-ए-अकबरी, ब्लाचमैन कृत अनुवाद, पृष्ठ ६२०)।

इन्होंने भागवत पुराण का फारसी में अनुवाद किया। इनकी भाषा में सर्व प्रसिद्ध रचनाएँ नीति संबंधी हैं। इनकी मृत्यु ९९८ हिजरी (१५८९ ई०) में हुई, इनके जीवन के लिए देखिए आईन-ए-अकबरी पृष्ठ ३५१। हिंदुओं को फ़ारसी सीखने के लिए तय्यार करने में इनका प्रभाव था, जो ध्यान देने योग्य है, क्योंकि यह उर्दू के निर्माण और स्वीकरण का मूल कारण है।

टि०—ग्रियर्सन ने सरोज में दिए 'सं० १५८० में उ०' को विक्रम संवत में उत्पत्तिकाल मानकर इनका जन्मकाल १५२३ ई० दिया है। वस्तुतः सरोज में दिया समय १५८० ईस्वी सन में कवि का उपस्थिति काल है। इनका जन्मकाल अभी तक अज्ञात है। **—सर्वेक्षण ३०८**

१०६. बीरबल—राजा बीरबल, उर्फ बीरवर, उर्फ महेसदास, उर्फ ब्रह्म कवि, उर्फ कविराय। जन्म १५२८ ई० के आसपास।

काव्य निर्णय, सुंदरी तिलक। अकबरी दरबार के कविराय और प्रसिद्ध मंत्री। यह अपनी दानशीलता के लिए जितने प्रसिद्ध थे, उतने ही अपनी संगीत निपुणता और काव्य-प्रतिभा के लिए भी। इनकी छोटी कविताएँ, हाजिर जवाबी के चुटकुले और दिल्लगियाँ आज भी हिंदुस्तान में लोगों की जबान पर हैं। कट्टर मुसलमानों द्वारा यह बड़ी घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे, क्योंकि उनका यह विश्वास था कि इन्हीं के प्रभाव के कारण अकबर इसलाम से विरक्त हो गया था। शिवसिंह के अनुसार यह संवत १५८५ (१५२८ ई०) में पैदा हुए थे। ब्लाचमैन आईन-ए-अकबरी के अपने अनुवाद में इस विषय को अंधकार ही में छोड़ देता है। इनका असली नाम महेशदास था। यह हमीरपुर जिले के अंतर्गत कालपी के रहनेवाले कान्यकुब्ज दूबे ब्राह्मण थे।

पहले यह आमेर के राजा भगवानदास[1] के दरबारी कवि थे, जिन्होंने अकबर के सिंहासनासीन होने के कुछ ही समय बाद इन्हें 'नज़र' में दे दिया। इस समय यह अपनी कविताओं में 'ब्रह्म' कवि ही छाप रखते थे। अकबरी दरबार में यह पहले तो अत्यंत निर्धन थे, किंतु यह अत्यंत प्रत्युत्पन्नमति थे और अपनी शीघ्र धारणा शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे। इनके चुटकुलों ने इन्हें शीघ्र ही सर्वप्रिय बना दिया। इनकी हिंदी कविताएँ भी बहुत पसंद की जाती थीं और अकबर ने इन्हें कविराय की उपाधि दी थी, तथा पास ही रहकर किए जानेवाले अन्य अनेक महत्वपूर्ण कार्य भी इन्हें दिए गए थे। नगरकोट इन्हें जागीर में दिया गया था, किंतु यह संदिग्ध है कि वस्तुतः यह इन्हें कभी मिला भी। यूसुफ़जाइयों से जैत खाँ कोकह बिजावर में लड़ रहा था। उसकी सहायता के लिए सेना लेकर यह ९९० हिजरी (१५८३ ई०) में भेजे गए और वहीं लड़ाई में मारे गए। बदाऊनी (आईन-ए-अकबरी का अनुवाद पृष्ठ २०४) कहता है :—

"बीरबल भी, जो अपनी जान के डर से भग गया था, मारा गया और नर्क के कुत्तों की कतार में पहुँच गया और अपने जीवनकाल में उसने जो दुष्कृत्य किए थे, उनका इस प्रकार कुछ दण्ड उसे मिला।...... । हजूर सलामत को और किसी अमीर के मरने की कोई इतनी फिकर नहीं थी, जितनी बीरबल के मरने की। उन्होंने कहा, 'अफ़सोस! उस दर्रे में उसकी लाश भी नहीं मिली कि जला दी जाती।' लेकिन अन्त में उन्होंने यह सोचकर संतोष किया कि बीरबल सांसारिक श्रृंखलाओं से अब पूर्णरूपेण मुक्त और स्वतंत्र हो गए और उनकी शुद्धि के लिए सूर्य की किरणें ही पर्याप्त हैं, अग्नि की कोई आवश्यकता नहीं। इस वर्ष (१५८८ ई०) जो बहुत सी बे सिर पैर की गप्पें तमाम देश में उड़ीं उनमें से एक अफ़वाह यह भी है कि दोज़खी बीरबल अभी ज़िन्दा है, गो कि असलियत यह थी कि वह उस समय सातवें नरक में जल रहा था। हिन्दुओं ने, जिनसे कि बादशाह हमेशा घिरे रहते थे, देखा कि बीरबल की मृत्यु से बादशाह सलामत कितने दुखी और उदास हैं और उन्होंने गप उड़ा दी कि बीरबल नगरकोट की पहाड़ियों में जोगियों और संन्यासियों के साथ घूमता हुआ देखा गया है। बादशाह सलामत ने इस अफ़वाह को यह सोचकर यक़ीन कर लिया कि यूसुफ़जाइयों से हार जाने के सबब से बीरबल दरबार में आने से शरमा रहा है; और साथ ही यह भी संभव हो सकता है कि वह इसलिए जोगियों के साथ देखा गया हो, क्योंकि वह संसार को कुछ नहीं समझता था।

१. टाड, भाग २, पृष्ठ ३६२; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ३९०.

इस अफ़वाह की सच्चाई की जाँच के लिए एक अहदी नगरकोट भेजा गया, तब कहीं जाकर यह साबित हुआ कि यह बे सिर पैर की बात थी। फिर कुछ दिनों बाद बादशाह सलामत के पास खबर आई कि बीरबल कालिंजर में देखा गया है, (जो कि उस कुत्ते की जागीर थी), और उस जिले के करोड़ी ने बताया कि एक नाई ने उसके शरीर पर के कुछ चिह्नों की सहायता से उसे पहचाना है, जिनको उसने साफ़ साफ़ देखा था, जब कि बीरबल ने उसे एक दिन मालिश के लिए बुलाया था। जो हो, बीरबल उस समय से छिप गया है। तब बादशाह सलामत ने नाई को दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया और हिन्दू करोड़ी ने बेचारे किसी मुसाफ़िर को पकड़ा, उस पर क़त्ल का जुर्म लगाया और कैद कर दिया तथा जाहिर किया कि वह बीरबल है। असलित तो यह है कि करोड़ी नाई को दरबार में भेज नहीं सकता था। इसलिए उसने इस कम्बख़्त मुसाफ़िर को मार डाला, जिससे शिनाख्त न हो सके और खबर दी कि वाकई बीरबल ही था, मगर अब वह मर गया। बादशाह सलामत को दूसरी बार ग़म मनाना पड़ा और उन्होंने करोड़ी और अन्य अनेक लोगों को दरबार में हाजिर होने का हुक्म दिया। पहले ही सूचना न देने के सबब से वे सब सज़ा के तौर पर कुछ दिनों तक सताए गए, पर करोड़ी को तो भारी जुरमाना भी देना पड़ा।"

बीरबल ने अकबर पुर नामक क़स्बा बसाया था और वहीं रहते थे। उस कस्बे के नारनौल नामक हिस्से में उनके वंशज अब भी रहते हैं।

बीरबल की कोई पूर्ण कृति हम तक नहीं पहुँच सकी है। लेकिन अनेक कविताएँ और चुटकुले जो उनके कहे जाते हैं, अब भी हर हिन्दू की जबान पर हैं। किसी अज्ञात लेखक का लिखा हुआ 'बीरवर नामा' नामक ग्रंथ बिहार के किसी भी बाजार में चन्द पैसों में खरीदा जा सकता है। यह काल्पनिक कहानियों का संग्रह है, जिसके पात्र अकबर और बीरबल हैं, जिसमें बीरबल अपनी हाजिर जवाबी या भद्दे चुटकुलों से हमेशा जीतता है। वस्तुतः यह 'जो मिलर्स जेस्टबुक' का भारतीय प्रतिरूप है। कुछ कहानियाँ तो सार्वदेशिक हैं।

टि०—बीरबल जाति के ब्रह्मभट्ट थे। अपनी जाति के ही आधार पर उन्होंने अपना उपनाम 'ब्रह्म' रखा था।

सरोज में दिया संवत् १५८५ विक्रम संवत् नहीं है। यह ईस्वी सन् में कवि का उपस्थितिकाल है। बीरबल के जन्मकाल पर अभी और विचार की आवश्यकता है।

—सर्वेक्षण ४९७

१०७. मनोहरदास कवि—कवि और राजा मनोहरदास कछवाहा। १५७७ ई० में उपस्थित।

यह राजा लूनकरन कछवाहा का बेटा और अकबरी दरबार के चार सौ मनसबदारों में से एक थे। (देखिए आईन-ए-अकबरी, अनुवाद, पृष्ठ ४९४) यह फारसी में तोशनी नाम से लिखते थे।

१०८. अब्दुलरहीम—खानखाना, नवाब। सामान्यतया खानखाना नाम से ही अभिहित; बैरम खाँ के पुत्र, जन्म १५५६ ई०।[1]

काव्यनिर्णय। यह अरबी फारसी और तुरकी इत्यादि के ही विद्वान् नहीं थे, संस्कृत और व्रज भाषा के भी थे। अकबर इन्हें बहुत चाहता था। (देखिए, आईन-ए-अकबरी का ब्लाचमैन कृत अनुवाद, पृष्ठ ३३४ और आगे। यह रहीम नाम से लिखते थे—पृष्ठ ३३८)। इनके पिता प्रसिद्ध बैरम खाँ थे, वस्तुतः जिनकी बदौलत हुमायूँ ने हिन्दुस्तान जीता था। (देखिए ब्लाचमैन पृष्ठ ३१५)। इनके जीवन के पूर्ण विवरण ऊपर कथित अंशों में मिलेंगे। शिव सिंह लिखते हैं कि यह कवियों के बहुत बड़े आश्रयदाता ही नहीं थे, स्वयं भी संस्कृत में अत्यन्त कठिन श्लोक लिखा करते थे। भाषा की प्रत्येक शैली में लिखित इनके कवित्त और दोहे अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। इनमें सर्वश्रेष्ठ हैं इनके नीति सम्बन्धी दोहे। यहाँ उनकी पारसी कृतियों का विचार नहीं किया जा रहा है। इनके सर्व प्रसिद्ध फ़ारसी ग्रंथ, वाकयाते बाबरी, बाबर चगताई के संस्मरणों के अनुवाद का उल्लेख कर देना ही पर्याप्त है। इनके दरबारी कवियों में से मिथिला के लक्ष्मीनारायण (सं० १२४) का उल्लेख किया जा सकता है।

पुनश्चः—यह कवि गंग (संख्या ११९) के आश्रयदाता थे। गंग ने अपनी एक रचना में इनकी और इनके पुत्र तुराब खाँ की प्रशंसा की है।

टि०—सरोज में दिया सं० १५८० ईस्वी सन् में कवि का उपस्थितिकाल है। सरोजकार ने जन्मकाल नहीं दिया है, जैसा कि टिप्पणी में ग्रियर्सन ने संकेत किया है।

१०९. मान सिङ्घ—आमेर के महाराज मानसिंह कछवाहा। जन्म १५३५ ई०।

यह विद्वानों के बहुत बड़े संरक्षक थे और हरिनाथ (सं० ११५) आदि कवियों को एक-एक कविता पर लाख-लाख रुपया दे दिया करते थे। यह भगवानदास के पुत्र थे। (देखिए आईन-ए-अकबरी, अनुवाद, पृष्ठ ३३९, जहाँ इनके

१, अर्थात् ९६४ हिजरी, जो कि ब्लाचमैन द्वारा नीचे उद्धृत अवतरण में दी हुई तिथि है। शिव सिंह संवत १५८० अर्थात् १५२३ ई० तिथि देते हैं।

जीवन का पूर्ण वृत्तांत दिया गया है)। यह अकबर के सेनापति थे, पहले काबुल, सीमा प्रदेश में, फिर बिहार में। यह दकन में १६१८ ई० में दिवंगत हुए, जब कि इनकी १५०० पत्नियों में से ६० जल मरीं। जिस भूमि पर आगरे का ताज खड़ा हुआ है, वह मानसिंह की थी। इनके दरबारी कवियों ने 'मान चरित्र' लिखा है, जो इनके जीवन और युग का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। (देखिए टाड का राजस्थान, भाग १, अध्याय १५, और भाग २, पृष्ठ ३५३; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ३९०)।

टि०—सरोज में दिया सं० १५९२ ईस्वी सन में मानसिंह का उपस्थिति काल है। यह विक्रम संवत में उत्पत्तिकाल नहीं है, जैसा कि ग्रियर्सन में स्वीकार कर लिया गया है।

—सर्वेक्षण ७१५

११०. अबुल फैज—उपनाम फ़ैज़ी। जन्म १५४७ ई०।

यह प्रसिद्ध शेख मुबारक का पुत्र, अबुल फजल का भाई और अकबर का मित्र था। यह ९५४ हिजरी (१५४७ ई०) में उत्पन्न हुआ था। देखिए, आईन-ए-अकबरी का ब्लाचमैन कृत अनुवाद, पृष्ठ ४९०।

यह संस्कृत का अच्छा विद्वान और भाषा के अने फुटकर दोहों का रचयिता था।

१११. फहीम—जन्म १५५० ई० के आसपास।

शिवसिंह के अनुसार यह फैजी और अबुलफजल का छोटा भाई था। जो हो, मुझे आईन-ए-अकबरी में इसका उल्लेख नहीं मिला। यह अनेक फुटकर भाषा दोहरों का रचयिता है।

टि०—फहीम, अबुलफजल का उपनाम है। यह फैजी के छोटे भाई थे। ग्रियर्सन ने सरोज को समझने में भूल की है। सरोज का लेख यह हैं—

"फहीम, शेख अबुलफजल, फैजी के कनिष्ठ सहोदर।"

११२. रामदास—बाबा रामदास, गोपाचल वाले। १५५० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह सूरदास (संख्या ३७) के पिता और अकबरी दरबार के गायकों में से एक थे। देखिए आईन-ए-अकबरी (ब्लाचमैन का अनुवाद) पृष्ठ ६१२। बदाऊनी के अनुसार यह लखनऊ से आए। ऐसा प्रतीत होता है यह बैरमखाँ के विद्रोह के समय उसके यहाँ थे, और एक बार, जब बैरमखाँ का खजाना खाली हो गया था, तब भी एक लाख तनखाह पाया था। यह पहले इसलामशाह के दरबार में थे। अकबरी दरबार के सर्वश्रेष्ठ गायक तानसेन (संख्या ६०) के बाद दूसरे स्थान पर यही समझे जाते थे।

टि०—यह सूरदास और रामदास प्रसिद्ध कवि सूर और उनके पिता से भिन्न हैं।

११३. नरहरि सहाय—फतहपुर जिले के अंतर्गत असनी के भाट, महापात्र की उपाधि से युक्त। १५५० ई० में उपस्थित।

१ राग कल्पद्रुम। यह अकबरी दरबार के कवि थे। असनी गाँव इन्हें माफी मिला था। एक विचित्र दंत-कथा के अनुसार जब शेरशाह (उपस्थित १५४० ई०) ने हुमायूँ को हराया, अपनी चोली बेगम को दिल्ली में छोड़कर, वह पश्चिम भाग गया। बेगम विजयी शेरशाह द्वारा पकड़ ली गई। कुछ ही दिनों बाद नरहरि की कविता से प्रसन्न होकर, शेरशाह ने उससे कुछ मांगने के लिए कहा। भाँट ने चोली बेगम को माँग लिया। बादशाह ने स्वीकार कर लिया। नरहरि चोली को बांधो (रीवा) ले गया, जहाँ शीघ्र ही उसने अकबर को जन्म दिया। इस दंतकथा के विवरण निश्चय ही अशुद्ध हैं, क्योंकि अकबर मारवाड़ के अन्तर्गत अमरकोट में पैदा हुआ था। जो हो, वह बांधों के राजा से लड़कपन से ही परिचित प्रतीत होता है। मिलाइए संख्या ३४। देखिए रिपोर्ट आफ् आर्केआलोजिकल सर्वे आफ् इण्डिया, अंक १७, पृष्ठ १०१, अंक २१ पृष्ठ १०९। नरहरि के बेटों में से एक कवि हरिनाथ (संख्या ११४) थे। नरहरि के वंशज अब भी बनारस में, रायबरेली जिले के अंतर्गत बेंती में, और हिन्दुस्तान के अन्य भागों में बिखरे हुए हैं। असनी अब इनके वंशजों के अधिकार में नहीं है और इनका असली घर गंगा की धारा में बह गया है। इनके घर के खंडहर अब रोड़े के रूप में बिक रहे हैं और दिन में ही वहाँ गीदड़ और अन्य वीभत्स जानवर विचरण किया करते हैं। यद्यपि इस कवि का कोई पूर्ण ग्रंथ बचा नहीं है, फिर भी इनकी बहुत सी फुटकर रचनाएँ उद्धृत की जाती हैं।

अकबर ने यह कहकर कि अन्य भाट गुण के पात्र हैं, यह महापात्र हैं, इन्हें महापात्र की उपाधि दी थी।

यह संभवतः वही नरहरिदास हैं, जिनका उल्लेख राग कल्पद्रुम की भूमिका में हुआ है।

टि०—अन्यत्र इनका नाम नरहरिराय या केवल नरहरि मिलता है। यह रागकल्पद्रुम वाले नरहरिदास से भिन्न हैं।

११४. हरिनाथ कवि—असनी फतहपुर के भाँट हरिनाथ, महापात्र उपाधिधारी, १५८७ ई० में उपस्थित।

प्रसिद्ध कवि, नरहरि (संख्या ११३) के पुत्र, बादशाह अकबर के दरबारी कवि। यह एक दरबार से दूसरे दरबार में जाया करते थे। इस प्रकार बांधों (रीवाँ) के बघेल राजा नेजाराम[1] ने इनके एक दोहा पर एक लाख रुपया और आमेर नरेश मानसिंह (संख्या १०९) ने दो दोहों पर दो लाख रुपया दिया था। लौटते समय इन्हें एक नगर भिखारी मिला, जिसने एक दोहा कहा, जिसपर यह इतने प्रसन्न हुए कि इन्होंने जो कुछ संग्रह किया था, सब उसे दे दिया। और खाली हाथ घर लौट आए। वहाँ पहुँचकर अपने पिता द्वारा अर्जित संपति को इसी प्रकार लुटाते हुए अपना शेष जीवन यापन किया।

टि०—१५८७ ई० हरिनाथ का जन्मकाल है। बघेल राजा का नाम राजा रामचन्द्र है, न कि नेजाराम।

—सर्वेक्षण ९५९

११५. करनेस कवि वंदीजन—अथवा करन। जन्म १५५४ ई०।

यह अकबरी दरबार में नरहरि (सं० ११३) के साथ आया जाया करते थे। इन्होंने तीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखे हैं:—कर्णाभरण, श्रुति भूषण और भूप भूषण।

टि०—सरोज में दिया १६११ ईस्वी सन् में करनेश का उपस्थिति काल है। अतः इसी के आधार पर ग्रियर्सन द्वारा स्वीकृत १५५४ ई० इनका जीवन काल नहीं हो सकता। मेरी धारणा है कि कर्णाभरण, श्रुति भूषण और भूप-भूषण एक ही अलंकार ग्रंथ के तीन विभिन्न नाम हैं।

—सर्वेक्षण ६८

११६ मानराय—असनी, फतहपुर के मानराय भाट। जन्म १५२३ ई०।

११७. जगदीश कवि—जन्म १५३१ ई०।

११८. जोध कवि—जन्म १५३३ ई०।

ये तीनों अकबर के दरबार में आया जाया करते थे।

टि०—सरोज में मानराय (सर्वेक्षण ७०४), जगदीश (सर्वेक्षण २९४) और जोध (सर्वेक्षण ३००) को १५८०, १५८८, १५९० में उ० कहा गया है। ये तीनों ईस्वी सन् में उपस्थिति काल हैं। इन्हीं को विक्रम संवत और जन्मकाल मानकर ग्रियर्सन में इनका ईस्वी सन में रूपान्तर दिया गया है। अतः ये तीनों सन् अशुद्ध हैं।

---

१. इस राजा का नाम रिपोर्ट आफ़ आर्केआलोजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया की जिल्द २१ में दी हुई सूची में नहीं है।

११९ गंगा परसाद्—ब्राह्मण, सामान्यतया गंग कवि के नाम से प्रसिद्ध। जन्म १५३८ ई० ।

सुंदरीतिलक। यह एकनौर जिला इटावा के ब्राह्मण थे। यह अकबरी दरबार से संबंधित कवि थे। इन्होंने बीरबल, खानखाना और अन्यों से अनेक पुरस्कार पाए थे। आईन-ए-अकबरी के ब्लाचमैन वाले अनुवाद में इनका हवाला नहीं है। कैप्टेन प्राइस ने लिखा है कि इन्होंने १५५५ ई० में कोई अलंकार ग्रंथ लिखा था। (हिंदी ऐंड हिंदुस्तानी सिलेक्शन्स, भूमिका पृष्ठ १०)। देखिए गार्सां द तासी भाग १, पृष्ठ १८२।

पुनश्चः खूबचंद (सं० ८०९) के एक कवित्त से ज्ञात होता है कि एक बार खानखाना (सं० १०८) ने गंग को ३६ लाख का पुरस्कार दिया था। निश्चय ही गंग ने खानखाना की प्रशंसा अपनी रचनाओं में से एक में की है।

टि०—गंग का जन्मकाल सरोज के आधार पर दिया गया है। सरोज में दिया सं० १५९५ ईस्वी सन् में कवि का उपस्थिति काल है। अतः १५३८ ई० इनका जन्मकाल नहीं हो सकता। गंग ने कोई अलंकार ग्रंथ लिखा, इसका कोई प्रमाण नहीं। इनके फुटकर छंद ही मिलते हैं।

—सर्वेक्षण १४८

१२०. जैत कवि—जन्म १५४४ ई०।

यह बादशाह अकबर के दरबार में आते जाते थे। यह संभवतः वही जैतराम कवि हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने बिना कोई तिथि दिए हुए शांत-रस के कवि के रूप में किया है।

टि०—जैत का जन्मकाल १५४४ ई० सरोज के सं० १६०१ में उ०' के अधार पर दिया गया है। सरोज का संवत ईस्वी सन् में उपस्थिति काल है। अतः ग्रियर्सन का संवत ठीक नहीं। यह जैत (सर्वेक्षण २७३), जैतराम से भिन्न हैं। जैतराम का रचनाकाल सं० १७९५ है। यह भक्त कवि थे।

१२१. अम्रित कवि—जन्म १५४५ ई०।

१२२. जगन्नज कवि—(?) १५७५ ई० में उपस्थित।

१२३. जगामग—(?) १५७५ ई० में उपस्थित।

ये तीनों बादशाह अकबर के दरबार में जाया करते थे।

टि०—अमृत कवि का सरोज में दिया संवत १६०२ ईस्वी सन में उपस्थितिकाल है। अतः ग्रियर्सन में दिया इनका जन्मकाल १५४५ ई० ठीक नहीं।

जगन्नज और जगामग अकबरी दरबार के कवि हैं। इनका उपस्थितिकाल १५५६-१६०५ के बीच होना चाहिए। व्यर्थ के लिए ग्रियर्सन ने १५७५ ई०

के पहले संदिग्धता का चिह्न लगा दिया है। सरोज में जगन्नज हैं नहीं; और जगामग का कोई समय नहीं दिया गया है।

१२४. लछमीनारायन—मैथिल १६०० ई० में उपस्थित।

१२५. परसिद्ध कवि—प्राचीन, जन्म १५३३ ई०।

ये दोनों अब्दुर्रहीम खानखाना (संख्या १०८) के दरबारी कवि थे।

टि०—प्रसिद्ध प्राचीन का सरोज में दिया संवत १५९० ईस्वी सन में कवि का उपस्थिति काल है। अतः ग्रियर्सन में इसी के आधार पर दिया गया कवि का जन्मकाल ठीक नहीं। —सर्वेक्षण ४६०

१२६. होलराय कवि—होलपुर जिला बाराबंकी के कवि और भाट होलराय। १५८३ ई० में उपस्थित।

इनके आश्रयदाता राजा हरिवंशराय थे, जो बादशाह अकबर के दीवान थे। अकबर ने इन्हें वह भू-क्षेत्र प्रदान किया था, जहाँ पर बाद में इन्होंने होलपुर गाँव बसाया। एक बार तुलसीदास (सं० १२८) इस गाँव में होकर निकले और कवि होलराय को अपना पीतल का लोटा दिया, जिसको उन्होंने देवता के समान प्रतिष्ठित कर दिया और पूजा करने लगे। यह अब भी वहाँ है, और पूजा जाता है। गाँव अब भी होलराय के वंशजों के अधीन है। गिरिधर (सं० ४८३), नीलकंठ (सं० १३२), लछिराम (सं० ७२३) और संत बकस (सं० ७२४) आदि सभी इसी गाँव के रहनेवाले थे।

१२७. मुकुंद सिंह हाड़ा—कोटा के राजा, जन्म १५७८ ई०।

शाहजहाँ (१६२८-१६५५ ई०) के सहायक। कवियों के आश्रयदाता होने के साथ साथ यह कवि भी थे। देखिए, टाड, भाग २, पृष्ठ ५०६; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ५५३।

टि०—सरोज में उद्धृत इनकी कविता के उदाहरण में जो छंद दिया गया है, वह भूषण के नाम से भी प्रसिद्ध है और छत्रसाल दशक में संकलित है। यदि मुकुंद नाम का कोई कवि हुआ भी है, तो वह हाड़ा वंश का राजा नहीं था, वह हाड़ा राजाओं का कोई कीर्तिगायक कवि था। उक्त छंद में औरंगजेब और दारा का युद्ध वर्णित है। अतः इस कवि का रचनाकाल १६५८ ई० के आसपास होना चाहिए और जन्मकाल १६२५ ई० के आसपास।

अध्याय ६

तुलसीदास

१२८. गोसाँईं तुलसीदास—१६०० ई० में उपस्थित। मृत्यु १६२४ ई०।

राग कल्पद्रुम। अब हम मध्यकालीन भारतीय काव्यगगन के श्रेष्ठतम नक्षत्र, प्रामाणिकता में बाल्मीकि के संस्कृत ग्रंथ से प्रतिद्वंदिता करनेवाले सुप्रसिद्ध भाषा रामायण (राग कल्पद्रुम) के रचयिता, तुलसीदास के प्रसंग पर आते हैं।

मुझे अत्यंत दुःख है कि उपलब्ध सामग्री अत्यल्प है। मुझे सूचना मिली है कि पसका के रहनेवाले बेनीमाधवदास ने जो कवि के साथ ही रहते थे, कवि के जीवन का विस्तृत विवरण 'गोसाँईं चरित्र' नाम से लिखा है; और यह मेरे लिए अत्यधिक अधीरता की बात है। यद्यपि मैंने इस ग्रंथ की बहुत दिनों तक खोज की है, पर मुझे इसकी कोई प्रति नहीं मिली; और मैं अपने इस विवरण को मुख्यतया भक्तमाल के गूढ़ छप्पयों और प्रियादास तथा अन्य लोगों द्वारा लिखी गई इसकी टीकाओं के आधार पर ही प्रस्तुत करने के लिए विवश हुआ हूँ। इनका मूल और अक्षरशः अनुवाद, रामायण के श्री ग्राउस कृत अनुवाद की भूमिका में मिलेगा, जिससे मैंने पूर्ण सहायता ली है।

भारत के इतिहास में तुलसीदास का महत्व जितना भी अधिक आँका जाता है, वह अत्यधिक नहीं है। इनके ग्रंथ के साहित्यिक महत्व को यदि ध्यान में न रक्खा जाय, तो भी भागलपुर से पंजाब और हिमालय से नर्मदा तक के विस्तृत क्षेत्र में, इस ग्रंथ का सभी वर्ग के लोगों में समान रूप से समादर पाना निश्चय ही ध्यान देने योग्य है। "राजमहल से झोपड़ी तक यह ग्रंथ प्रत्येक हाथ में है, और हिंदू समाज के छोटे-बड़े, धनी-निर्धन, बालक वृद्ध चाहे जो हों, प्रत्येक वर्ग द्वारा समान रूप से पढ़ा, सुना और समझा जाता है।[१]" पिछले तीन सौ वर्षों से हिंदू समाज के जीवन, आचरण और कथन में यह घुलमिल गया है, और अपने काव्यगत सौंदर्य के कारण यह न केवल उनका प्रिय एवं प्रशंसित ग्रंथ है, बल्कि उनके द्वारा पूजित भी है और उनका धर्म ग्रंथ हो

---

१. श्री ग्राउस (जिनसे यह उद्धरण लिया गया है) कहते हैं कि पेशेवर संस्कृत पंडित तुलसीदास के इस ग्रंथ को निरक्षर जनता के प्रति अनुचित रियायत समझ कर इससे घृणा करते हैं; किन्तु मेरा अनुभव ऐसा नहीं है।

गया है। यह १० करोड़ जनता का धर्मग्रंथ है और उनके द्वारा यह उतना ही भगवत्प्रेरित माना जाता है, अंगरेज पादरियों द्वारा जितनी भगवत्प्रेरित 'बाइबिल' मानी जाती है। पंडित लोग वेद और उपनिषद की बातें कर सकते हैं, और कुछ उनका अध्ययन भी कर सकते हैं, कुछ कह सकते हैं कि उनका विश्वास पुराणों के साथ संलग्न है; किंतु हिंदुस्तान की अधिकांश जनता के लिए चाहे वह विद्वान हो अथवा अविद्वान, चरित्र का एक मात्र प्रतिमान तुलसीकृत रामायण है। हिंदुस्तान के लिए सचमुच यह परम सौभाग्य की बात है कि यह ऐसा है, क्योंकि इसने इस क्षेत्र को शैव धर्म की तांत्रिक अश्लीलताओं से बचा लिया है। रामानन्द उत्तरी भारत के प्रारम्भिक रक्षक हैं, जिन्होंने उस दुर्भाग्य से इसे बचाया जो कि बंगाल के ऊपर पड़ा। लेकिन तुलसीदास तो वह महान देवदूत हैं जो उनके सिद्धान्त को पूर्व और पश्चिम ले गए तथा उसे स्थिर विश्वास में परिणत कर दिया।

जिस धर्म का उपदेश उन्होंने किया, वह अत्यन्त सरल साथ ही विशिष्ट—राम नाम में पूर्ण विश्वास है। अनैतिकता के उस युग में जब हिन्दू समाज के बन्धन शिथिल हो रहे थे और मुगल साम्राज्य संगठित हो रहा था, इस ग्रन्थ की सबसे विशिष्ट बात इसकी कठोर नैतिकता है, जो इस शब्द के किसी भी अर्थ में मानी जा सकती है। तुलसी प्रतिवासी के प्रति अपने कर्तव्य की शिक्षा देनेवाले महान उपदेशक थे। बाल्मीकि ने भरत की कर्तव्य-परायणता, लक्ष्मण की भ्रातृभक्ति और सीता के पतिव्रत की प्रशंसा की है, लेकिन तुलसी ने तो आदर्श ही प्रस्तुत कर दिया है।

इसी प्रकार उस घोर विलासिता के युग में, रामायण से बढ़कर मर्यादापूर्ण और पवित्र कोई दूसरा ग्रन्थ नहीं है। वह स्वयं कहते हैं और ठीक कहते हैं :—

"अति खल जे विषयी बग कागा
एहि सर निकट न जाहिं अभागा
संबुक भेक सेवार समाना
इहाँ न विषय कथा रस नाना
तेहि कारन आवत हियँ हारे
कामी काक बलाक बिचारे[1]"

---

१. मूल में इन चौपाइयों के स्थान पर इनका यह भावार्थ दिया हुआ है—अनु०
"Here are no prurient seductive stories, like snail's, frogs and scum on the pure water of Ram's legend; and therefore the lustful crow and the greedy cranes, if they do come, are disappointed."

दूसरे वैष्णव कवि जो कृष्ण भक्ति का उपदेश करते थे, अपने श्रोताओं को आकृष्ट करने के लिए अपनी भारती को प्रायः वार विलासिनी बना देते थे; लेकिन तुलसीदास ने अपने देशवासियों में उदार विश्वास किया और उनका विश्वास पूर्णरूपेण प्रतिफलित और पुरस्कृत भी हुआ।

तुलसीदास सरवरिया ब्राह्मण थे। यह सोलहवीं शती के प्रारम्भ में उत्पन्न हुए थे और १६२४ ई० में पर्याप्त दीर्घायु होकर दिवंगत हुए, जैसा कि पुरानी कविता है :—

संवत सोलह सै असी, असी गंग के तीर
सावन सुकला सत्तमी, तुलसी तजेउ शरीर[1]

सावन सुदी ७, संवत् १६८० को, तुलसी ने गंगा के किनारे असी घाट पर शरीर त्याग किया।

भक्तसिन्धु और बृहद् रामायण माहात्म्य के अनुसार इनके पिता का नाम आत्माराम और माता का हुलसी था तथा वे हस्तिनापुर में पैदा हुए थे। लेकिन दूसरे प्रमाणों के अनुसार वे चित्रकूट के निकट हाजीपुर में उत्पन्न हुए थे। जो हो, सामान्य परम्परा तो यह है कि जमुना तट स्थित, बाँदा जिले के राजापुर को उनकी जन्मभूमि होने का गौरव प्राप्त है। लड़कपन में यह सूकरखेत (सोरों)[2] में रहे, जहाँ पहली बार रामभक्ति का उदय इनमें हुआ। प्रियादास (संख्या ५१ और ३१९) के अनुसार इनकी पत्नी ने पहले पार्थिव प्रेम को दिव्य प्रेम में परिणत करने के लिए प्रोत्साहित किया और उसकी प्रबोध-वाणी से उत्तेजित होकर इन्होंने उसका परित्याग कर दिया और बनारस चले गए, जहाँ इन्होंने अपने जीवन का अधिकांश, अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, कुरुक्षेत्र, प्रयाग (इलाहाबाद), पुरुषोत्तमपुरी और अन्य तीर्थ स्थानों में यदा-कदा जाते हुए, बिताया। (कुछ ग्रंथों की तिथियों को छोड़) उनके जीवन का एक मात्र तथ्य, जिसके सम्बन्ध में यथार्थ असंशय है, यह है कि ये आनन्द राय और कन्हई के बीच जमीन के एक झगड़े के सम्बन्ध में पञ्च बनाए गए थे। इनके हाथ का लिखा हुआ पञ्चायतनामा अब भी उपलब्ध है, इसकी तिथि उनकी मृत्यु से ११ वर्ष पहले की, संवत् १६६९ है। इसका एक फोटो, प्रत्यक्षरीकरण और अनुवाद इस ग्रंथ में जोड़ दिए गए हैं। प्रियादास द्वारा वर्णित और श्री ग्राउस द्वारा रामायण के अपने अनुवाद की भूमिका में सन्निहित, कुछ दन्त-कथाएँ संक्षेप में यहाँ दी जा रही हैं। एक कृतज्ञ भूत

१. इस उद्धरण के पश्चात् दोहे का अंगरेजी अनुवाद भी दिया हुआ है।—अनुवादक.
२. रामायण बालकांड दोहा ८७.

ने इनका परिचय हनुमान से कराया था; जिनके द्वारा इन्हें राम और लक्ष्मण के दर्शन मिले। इन्होंने एक हत्यारे की हत्या छुड़ा दी, जब उसने भक्ति-भाव से राम का नाम भर ले लिया। जब लोगों ने इनके इस कथन को प्रमाणित करने के लिए ललकारा, इन्होंने उस हत्यारे के हाथ द्वारा दिए गए प्रसाद को शिव से स्वीकार कराके अपनी बात सिद्ध भी कर दी। कुछ चोर इनके यहाँ चोरी करने आए, पर इनके घर की देखभाल एक रहस्यमय पहरेदार द्वारा हो रही थी, जो और कोई नहीं था, स्वयं राम थे; और चोरी करने के बदले, वे चोर भक्त और शुद्ध हृदय हो गए। इन्होंने एक ब्राह्मण को पुनर्जीवन प्रदान कर दिया था[1]। उनकी प्रसिद्धि दिल्ली पहुँची, जहाँ शाहजहाँ (१६२८–१६५८; परन्तु कवि तो १६२४ में ही मर गया था) बादशाह था। बादशाह ने इन्हें बुलाया, चमत्कार दिखाने को कहा, और अपने राम को प्रत्यक्ष कराने की भी बात कही। तुलसीदास ने अस्वीकार किया। बादशाह ने इन्हें कैद में डाल दिया। जो हो, वह शीघ्र ही उन्हें मुक्त करने के लिए विवश हो गया, क्योंकि अगणित बन्दर बन्दीगृह के पास आ जुटे और उसको तथा पास पड़ोस की अन्य इमारतों को तोड़ने फोड़ने लगे। शाहजहाँ ने कवि को छोड़ दिया और इनका जो अपमान हुआ था, उसके बदले में इनसे कुछ माँग लेने के लिए कहा। तदनुसार तुलसीदास ने उससे दिल्ली छोड़ देने की प्रार्थना की, क्योंकि अब वह राम-निवास हो गई थी। इनकी प्रार्थना की पूर्ति के लिए बादशाह ने दिल्ली छोड़ दी और नया नगर शाहजहानाबाद नाम से बसाया। इसके बाद तुलसी वृन्दावन गए, जहाँ यह (भक्तमाल के रचयिता) नाभादास से मिले। यहाँ इन्होंने कृष्ण भक्ति की अपेक्षा राम भक्ति की श्रेष्ठता प्रतिपादित की, यद्यपि कृष्ण स्वयं आए और इन्हें विश्वास दिलाया कि दोनों में कोई अन्तर नहीं है। इन लड़कपन से भरी दंतकथाओं के जाल से तथ्य के कुछ सूत्र निकालना संभव हो सकता है, किंतु जब तक हमें गोसाँई चरित्र की कोई प्रति नहीं मिल जाती, उन तक पहुँचने की कोई विशेष आशा नहीं की जा सकती।

इनका सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ है रामचरित मानस, जिसका लिखना इन्होंने अयोध्या में, संवत १६३१ चैत्र नवमी मंगलवार (१५७४–७५ ई०)[2] को प्रारम्भ किया था। प्रायः अशुद्ध ढंग से यह 'रामायण' या 'तुलसीकृत रामायण'

---

१. इसके आगे प्रायः विलसन के ही शब्दों में लिखा जा रहा है।
२. रामायण वालकांड, चौपाई ४२।

या (इसके छंद का संकेत करते हुए) 'चौपाई रामायण' कहा जाता है; किंतु ग्रंथ के बालकांड की ४४ वीं चौपाई के अनुसार ऊपर लिखित नाम ही इसका शुद्ध और पूर्ण नाम है। इस ग्रंथ की स्वयं कवि के हाथ की लिखी हुई दो प्रतियाँ उपलब्ध कही जाती हैं। इनमें से एक, जो राजापुर में थी, खो गई। इसका केवल द्वितीय कांड रह गया है। दंतकथा है कि पूरी प्रति जो यहाँ थी, चोरी चली गई। चोरों का पीछा किया गया। उन्होंने उसे जमुना में फेंक दिया, जहाँ से केवल द्वितीय कांड निकाला जा सका। मेरे पास इस ग्रंथ के दस पृष्ठों का फोटोग्राफ है, जिसपर पानी का चिह्न स्पष्ट है। दूसरी प्रति मलीहाबाद में है, ऐसा शिवसिंह का कथन है; ग्राउस कहते हैं कि बनारस के सीताराम मन्दिर में है, जिसका केवल पन्ना खोटा है। मेरे पास राजापुर के अवशिष्ट अंश की एक ठीक-ठीक अक्षरशः प्रतिलिपि है। मेरे पास एक मुद्रित प्रति भी है, जो महाराज बनारस की पोथी से सावधानी के साथ मिलाकर शुद्ध कर ली गई है। महाराज बनारस की उक्त पोथी सं० १७०४ (१६४७ ई०) में ग्रंथकार की मृत्यु के २४ ही वर्ष बाद लिखी गई थी।

स्वयं रामचरित मानस को यूरोपीय विद्यार्थी बहुत कम जानते हैं। फिर फिर उनके और ग्रन्थों की जानकारी तो उन्हें और भी कम है। जिन्हें मैंने देखा और पढ़ा है, ये हैं—

(१) गीतावली (राग कल्पद्रुम)—यह राम कथा है, गाने के लिए पदों के रूप में लिखी गई है। इसके अशुद्ध पाठवाले अनेक मुद्रित संस्करण हैं, जिनमें कुछ विभिन्न योग्यता की टीकाओं से भी संयुक्त हैं।

(२) कवित्तावली या कवित्त रामायाण (राग कल्पद्रुम)—कवित्त छंदों में वही विषय।

(३) दोहावली या दोहा रामायण (राग कल्पद्रुम)—जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यह दोहा छंदों में है। यह महाकाव्य होने की अपेक्षा नीति काव्य है। मुझे पूर्ण निश्चय नहीं कि यह बाद में किसी अन्य कवि के द्वारा तुलसी के ही विभिन्न ग्रन्थों से लिए हुए दोहों का संग्रह है अथवा नहीं। हाँ, मैंने कुछ दोहों की पहचान अवश्य की है।

(४) छप्पै रामायण—छप्पय छन्द में। मैंने इस ग्रन्थ की एक अशुद्ध और अपाठ्य हस्तलिखित प्रति देखी भर है, जिसके आधार पर इसका वैसा ही एक संस्करण मुद्रित भी हुआ है।

(५) सतसई (राग कल्पद्रुम)—सात सौ गूढ़ (emblematic) दोहों का संग्रह (सप्त शतिका)।

(६) पंच रतन (राग कल्पद्रुम)—पाँच छोटी पुस्तकों का संग्रह, सामान्यतया ये एक वर्ग में रखी जाती हैं। वे हैं :—

(अ) जानकी मंगल।

(ब) पार्वती मंगल।

(स) वैराग्य संदीपनी।

(द) रामलला नहछू।

(य) बरवै रामायण (राग कल्पद्रुम)

प्रथम दो गीत हैं जिनमें क्रमशः सीता और गौरी के विवाह का वर्णन है। तीसरा एक उपदेशात्मक ग्रन्थ है; चौथा एक गीत है, जो विवाह के समय, राम के नाखून काटने के संस्कार पर लिखा गया है; और पाँचवाँ, बरवै छन्दों में राम का एक लघु इतिहास है।

(७) श्री राम आज्ञा—राम सगुनावली नाम से भी अभिहित। ग्रंथ में सात सात अध्यायों के सात सर्ग हैं। प्रत्येक अध्याय में सात सात दोहे हैं। यह राम के जीवन से सम्बन्धित सगुनों का संग्रह है। मुझे इसके जाली होने का सन्देह है। इसमें कवि के अन्य ग्रन्थों के भी कुछ अंश हैं। मैंने इसकी एक अत्यन्त साधारण कोटि की टीका देखी है।

(८) संकटमोचन—एक लघु उपदेश-प्रधान ग्रन्थ। मैंने इसका एक रद्दी छपा संस्करण देखा है।

(९) विनय पत्रिका (राग कल्पद्रुम)—२७९ पदों का संग्रह। अत्यंत प्रसिद्ध; प्रशंसा के योग्य है भी। यह प्रायः छपती रही है और शिव प्रसन्न (सं० ६४३) ने इस पर एक अत्यंत सुन्दर टीका लिखी है।

(१०) हनुमान बाहुक (राग कल्पद्रुम)—हनुमान की प्रशस्ति में विरचित छन्द-संग्रह। परम्परा के अनुसार इन्होंने इन्हें राम और लक्ष्मण का दर्शन कराया था।

इनके अतिरिक्त शिवसिंह सरोज इनके निम्नलिखित और ग्रंथों का भी उल्लेख करता हैं :—

(११) राम सलाका (रागकल्पद्रुम)

(१२) कुंडलिया रामायण

(१३) कड़खा रामायण

(१४) रोला रामायण

(१५) झूलना रामायण

इनमें से किसी को भी मैंने नहीं देखा है। इनमें अंतिम चार जिन छन्दों में लिखे गये हैं, उनके नाम पर हैं।

(१६) कृष्णावली (राग कल्दुम)—व्रजभाषा में। मुद्रित है और बाजारों में मिलती भी है। यह कृष्ण जीवन से संबन्धित है और मैं नहीं विश्वास करता कि यह उन्हीं तुलसीदास की कृति है, जिनपर मैं यहाँ विचार कर रहा हूँ।

इनमें से अनेक मुद्रित हैं, जो सर्वदा ही अत्यन्त अशुद्ध हैं और कुछ में टीकाएँ भी हैं। रामचरित मानस की अत्यन्त प्रसिद्ध टीकाओं में से एक रामचरनदास की टीका है। गीतावली, कवितावली और सतसई की श्रेष्ठतम टीकाएँ बैजनाथ की हैं। रामचरनदास की टीका लखनऊ के नवल किशोर द्वारा प्रकाशित है, पर अब मुद्रण बाह्य और अनुपलब्ध है। अन्य टीकाएँ किसी भी भारतीय बाजार में खरीदी जा सकती हैं। सभी टीकाकारों की प्रवृत्ति कठिन अंशों को छोड़ जाने की और सरल अंशों का ऐसा रहस्यमय अर्थ देने की है, जो तुलसी को कभी भी अभीष्ट नहीं थे। दुर्भाग्य से इनमें आलोचनात्मक दृष्टि का सर्वथा अभाव है। यद्यपि कम से कम रामचरितमानस का पूर्णतया यथार्थ पाठ देने के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है, फिर भी टीकाकार इनका उल्लेख करने का सपना भी नहीं देखते और अपनी अन्तरात्मा पर ही पूर्ण विश्वास करते हैं। यहाँ मैं एक अतिगामी उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। एक टीकाकार ने प्रत्येक कांड में क्रमशः कम होते जाने वाले छन्दों की योजना बनाई, क्योंकि ग्रंथ का नाम मानस है और मानस (तालाब) की सीढ़ियाँ ऊपर बड़ी होती हैं, नीचे गहराई की ओर छोटी होती जाती हैं।

इस विचार से बढ़कर मनोरंजक और क्या बात हो सकती है, अतः उसने अपनी धारणा के अनुकूल बनाने के लिए अपनी अभागी पोथी में काँट छाँट की और उसे पर्याप्त सफलता के साथ प्रकाशित भी कराया। यह न तो उसके दिमाग में आया और न उसके पाठकों के, कि वह यह देखते कि क्या तुलसीदास ने ऐसा ही और यही लिखा था। यदि उन्होंने यह सोचा होता तो उनको यह उपहासास्पद सिद्धांत पहली ही झलक में स्पष्टहो गया होता।

जहाँ तक तुलसीदास की शैली का संबंध है, वे सरलतम प्रवाहपूर्ण वर्णनात्मक शैली से लेकर जटिलतम सांकेतिक पद्य-प्रणाली तक सभी के आचार्य थे। उन्होंने सदैव पुरानी बैसवाड़ी बोली में लिखा है, और यदि एक बार इसकी विशेषताएँ भली भाँति समझ ली जायँ, तो उनका रामचरित मानस सरलता एवं आनंद के साथ पढ़ा जा सकता है। गीतावली और कवितावली में वे कुछ अधिक जटिल हो गए हैं, फिर भी इन्हें सानंद पढ़ा जा सकता है; दोहा-

वली में वह सूत्रमय हो गए हैं; सतसई[1] में तो वह इतने कठिन और अस्पष्ट हो गए हैं, जितना कि 'नलोदय' का कोई भी प्रेमी पसंद कर सकता है। सतसई वस्तुतः प्रतिभापूर्ण रचना है और मुझे प्रसन्नता है कि अपने ढंग की इस प्राचीनतम रचना का संपादन प्रोफेसर बिहारीलाल चौबे बिब्लिओथेका इंडिका के लिए कर रहे हैं।[2] पचास वर्षों बाद यही प्रणाली (टीकाकारों के लिए आकर) बिहारीलाल (संख्या १९६) द्वारा अपने चरम पर पहुँच गई। पुनः, विनय पत्रिका एक दूसरी ही शैली में है। यह पदों की पुस्तक है, जो प्रायः अत्यंत उन्नत वर्णनों से पूर्ण हैं; लेकिन जिन दो टीकाओं को मैंने देखा है, उनमें इसकी कठिनाइयाँ बड़े ही असंतोष जनक ढंग से स्पष्ट की गई हैं।

मेरी धारणा है कि इनकी काव्य-प्रतिभा के सम्बन्ध में अत्युक्ति पूर्ण ढंग से कुछ कहना कठिन है। इनके पात्र शौर्य काल के पूर्ण गौरव के साथ जीवंत हैं और चलते फिरते हैं। अपने वचन पर दृढ़ दशरथ, जिन्हें भाग्य ने विफल मनोरथ बनाया; उच्च और अटल आचार वाले राम जिनकी अपने प्रेम परिपूर्ण पर क्रोधी भाई लछिमन से पूर्ण विषमता दिखाई गई है; 'उत्कृष्ट निर्मित एवं निर्दोष नारी' सीता; और रावण, जिसके भाग्य में दशरथ के ही समान पहले से ही असफलता लिख दी गई थी, और जो अपनी सारी दानवी शक्ति के साथ मिल्टन के शैतान के समान भाग्य से अन्त तक लड़ता रहा और जो लगभग आधे काव्य का प्रमुख पात्र है—इस समय जब मैं लिख रहा हूँ ये सब मेरे अन्तःचक्षुओं के सामने उसी स्पष्टता के साथ विद्यमान हैं, जिस स्पष्टता के साथ सम्पूर्ण अंगरेजी साहित्य का कोई भी चरित्र विद्यमान हो सकता है। तदनन्तर भरत के चरित्र में कितनी विनम्र भक्ति है, जो केवल अपनी सत्यता से माँ कैकेयी और उसकी दासी की सभी असत्य योजनाओं पर विजयिनी होती है। इनके खलपात्र भी केवल कालिमा से पुती तसवीरें नहीं हैं। प्रत्येक की अपनी चरित्रगत विशिष्टता है और इनमें से कोई भी ऐसा नहीं है, जिसमें दोष की कमी को पूरा करने वाला कोई गुण न हो।

संजीवन-शक्ति एवं विविध नाटकीय तत्वों की दृष्टि से, रामचरित मानस इनका सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है, ऐसा मेरा विचार है। किंतु इनके अन्य ग्रंथों में भी अच्छे अंश हैं। गीतावली के प्रारंभ में शिशु एवं बालक राम की वर्णना अथवा

---

१. यह संवत १६४२ अर्थात १५८५ ई० में लिखी गई (सतसई, प्रथम शतक, संख्या २१) विद्यापति के कूट पद १४०० ई० के आसपास लिखे गए थे।

२. इसके लिखे जाने के बाद इस ग्रंथ का एक संस्करण गीतावली के संपादक बैजनाथ की टीका के सहित लखनऊ के नवलकिशोर के यहाँ से १८८६ ई० में निकल गया।

वनवास के दिनों पयादे पाँव बन पथ पर थकावट से घसिटते राम, लक्ष्मण, सीता और ग्राम वधूटियों के कथनोपकथन में दिए रंगों के कोमल स्पर्शों से बढ़कर और क्या मनोरम हो सकता है ? पुनः, कवित्तावली के सुंदरकांड के अन्तर्गत लंकादहन की संपूर्ण वर्णना में शब्दों पर कवि का कैसा अधिकार है ! आग की लपटों की चटचटाहट, गिरते भवनों की गड़गड़ाहट, नरों का कोलाहल और घबराहट, 'पानी पानी' चिल्लाते हुए विवश नारियों की बिलबिलाहट सभी ध्वनियों को हम स्पष्ट सुन सकते हैं।

तुलसीदास भी भारतीय काव्य-प्रणाली के परंपरागत घने कुहासे से पूर्णतया ऊपर नहीं उठ सके हैं। मैं स्वीकार करता हूँ कि उनके युद्ध-वर्णन प्रायः अस्वाभाविक और विकर्षक हैं और कभी-कभी दुखद और उपहासास्पद के बीच की सीमा का भी अतिक्रमण कर जाते हैं। देशी लोगों की दृष्टि में कवि के लिखे हुए ये ही सर्वोत्तम छंद हैं; पर मैं ऐसा नहीं समझता कि सुसंस्कृत यूरोपीय को इनमें कभी भी अधिक आनंद आ सकता है। राम को बारबार विष्णु के अवतार रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता भी उनके मार्ग में बाधक हुई है। यद्यपि भावुक भक्त की दृष्टि में यह विनम्र श्रद्धाभाव मात्र है, पर हम म्लेक्षों के लिए तो यह घोर अत्युक्ति ही है।

इस महान कवि की इस कृति के गुणों के कारणों को ढूँढ़ने के लिए दूर न जाना होगा। सबसे महत्वपूर्ण कारण कवि की अति-विनम्रता है, रामचरित मानस की भूमिका ग्रंथ के अत्यंत विशिष्ट प्रकरणों में से एक है। कालिदास रघुवंश के प्रारम्भ में अपनी बामन से और अपने भाषाधिकार की असीम सागर में एक लघु तरणी से तुलना कर सकते हैं; पर इस विनम्र उक्ति के भीतर से उनकी श्रेष्ठता की सज्ञानता झलक रही है। उनकी विनम्रता स्पष्ट ही कृत्रिम है, और सत्यता तो यह है कि कवि सर्वदा कहता प्रतीत होता है—"मैं शीघ्र ही अपने पाठकों को प्रदर्शित करूँगा कि मैं कितना विद्वान हूँ, और नव रसों पर मेरा कितना अधिकार है।" पर (और यह उनकी श्रेष्ठता का दूसरा कारण है) तुलसी ने कभी भी एक पंक्ति नहीं लिखी, जिसमें वे अन्तरतम से विश्वास न करते रहे हों। वे अपने विषय, अपने स्वामी की भक्ति और उनके गौरव, में पूर्णतया निमग्न थे; और वह भक्ति और गौरव उनसे इतने उच्च थे कि वह सदैव अपने को दीन समझते रहे। जैसा कि वह कहते हैं—

करन चहउँ रघुपति गुनगाहा
लघु मति मोरी चरित अवगाहा

सूझ न एकउ अंग उपाऊ
मन मति रंक मनोरथ राऊ
× × ×
छमिहहिं सज्जन मोरि ढिठाई
सुनिहहिं बाल बचन मन लाई
जौं बालक कह तोतरि बाता
सुनहिं मुदित मन पितु गुरु माता[1]

कालिदास ने राम से खूँटी का काम लिया, जिस पर वे अपनी मधुर रचनाएँ लटका सकें, पर तुलसी ने चिर सौरभ की माला गूँथी और जिस देवता की भक्ति वे करते थे, उसके चरणों पर उसे दीनता पूर्वक चढ़ा दी।[2]

अब मैं एक और बात पर बल देना चाहता हूँ, जो, मेरा खयाल है कि इस कवि के भारतीय विद्यार्थियों की भी दृष्टि से बच गई है। संभवतः यह एक मात्र बड़े भारतीय कवि हैं जिसने अपनी उपमाएँ सीधे प्रकृति की पुस्तिका से ली हैं, न कि अपने पूर्वगामी अन्य कवियों से। यह स्थूल वस्तुओं के इतने सूक्ष्म द्रष्टा थे कि इनके बहुत से सत्य और सरलतम पद्यांश इनके उन टीकाकारों की समझ में नहीं आए, जो वस्तुतः विद्वान मात्र थे और जो अपनी आँखें पुस्तकों से बन्द किए हुए, अपने चतुर्दिक स्थित सुन्दर संसार में विचरण करते थे। हम जानते हैं कि शेक्सपियर ने विलो की पत्तियों के जल में पड़ने वाले उज्ज्वल प्रतिबिंब का उल्लेख किया है और इस प्रकार अपने सभी संपादकों को परेशान किया था, जो अपनी सारी विद्वत्ता लिए हुए कहते थे कि विलो की पत्तियाँ तो हरी होती हैं। मेरा खयाल है कि सबसे पहले चार्ल्स लैम को सूझी की नदी के किनारे चला जाय और देखा जाय कि शेक्सपियर

१. ग्रियर्सन ने ये पंक्तियाँ न देकर इनका निम्नांकित अँगरेजी अनुवाद दिया है—अनुवादक
"My intellect is beggarly, while my ambition is imperial. May good people all pardon my presumption and listen to my childish babbling, as a father and mother delight to hear the lisping practice of their little one."

२. गया जिले के अंतर्गत दाउद नगर के रहने वाले बाबू जवाहिर मल्ल ने मुझे सूचित किया है कि वे एक वृद्ध को जानते हैं जिसके पूर्वज कवि से परिचित थे और तुलसीदास ने इनके उस पूर्वज से कहा था कि मैंने कभी भी एक पंक्ति नहीं लिखी, जिसमें 'र' या 'म' ('राम' शब्द के प्रथम एवं अंतिम अक्षर) न आया हो। (यदि यह सत्य है, तो) यह एक अमूल्य कसौटी है; जिसपर संदिग्ध अंशों की जांच की जा सकती है कि वे असल हैं या नकल।

ने ठीक लिखा है या नहीं। इस प्रकार उसने प्रस्तावित संशोधनों के बादलों को उड़ा दिया।[1] इसी प्रकार यह श्री ग्राउस के लिए कहना शेष रह गया था कि तुलसीदास प्रकृति के बारे में अपने टीकाकारों से अधिक जानते थे।

इस कवि की रचनाओं के शुद्ध संस्करण की आवश्यकता की ओर संकेत करना ही अब शेष रह जाता है। इस समय सबसे अच्छा संस्करण पंडित रामजसन का है; परन्तु उन्होंने भी अन्य संपादकों के समान प्राप्त प्रतियों का एक नूतनीकृत संस्करण ही मुद्रित किया है। मैंने इसको मूल से बड़ी सावधानी के साथ मिलाया है और इस स्थिति में हूँ कि कह सकूँ कि इससे बढ़कर भ्रामक किसी अन्य बात की कल्पना भी नहीं की जा सकती। तुलसीदास ने शब्दों को प्राचीन बोली में, ध्वनि की दृष्टि से उस ढंग से लिखा था जिस ढंग से वे उनके समय में उच्चरित होते थे। मुद्रित प्रतियों में बोली आधुनिक हिन्दी के स्तर पर परिवर्तित कर दी गई है और वर्तनी भी पाणिनी के नियमों के अनुकूल सुधार दी गई है। बोली के आधुनिकीकरण के उदाहरण ये हैं:—तुलसीदास प्राकृत और अपभ्रंश के नियमों का अनुसरण करते हुए कर्ताकारक एक वचन के अन्त में 'उ' का प्रयोग करते हैं और 'अ' को रचना में अन्य विहित कार्यों के लिए छोड़ देते हैं। इस प्रकार उन्होंने लिखा था—कपि कटकु, प्रबल मोह दलु इत्यादि पर सभी आधुनिक संस्करणों में आधुनिक उच्चारण के अनुकूल 'दल' मिलता है। इसी प्रकार आधुनिक संपादक मूल 'पसाउ' के लिए 'प्रसाद', 'भुअंगिनी' के लिए 'भुजंगिनी', 'जागबलिकु' के लिए 'याज्ञवल्क्य' 'बन्दउँ' के लिए 'बन्दौं', 'भगति' के लिए भक्ति इत्यादि लिखते हैं। प्रायः प्रत्येक चरण से उदाहरण एकत्र किए जा सकते हैं। वर्तनी सम्बन्धी परिवर्तन भी इतने ही संख्याधिक हैं। एक उदाहरण पर्याप्त होगा। तुलसीदास स्पष्ट ही राम के पिता को 'दसरथु' कहते थे। क्योंकि यह उनके लिखने की प्रणाली है, पर आधुनिक संपादक संस्कृत 'दशरथ' लिखते हैं, जैसा कि यह आजकल भी नहीं बोला जाता। पर प्राप्त प्रति में दूसरी और इनसे बड़ी अशुद्धियाँ हैं। यह छूटों से भरी है, कभी कभी पूरे के पूरे पृष्ठ छूट गए हैं। छोटे छोटे परिवर्तन तो प्रत्येक पृष्ठ पर हैं। संक्षेप में, २३ पंक्तियों के पृष्ठ में, मूल से मिलाने पर मुझे कम से कम ३५ से कम प्रमुख परिवर्तन नहीं मिले हैं। अतः मुझे यह लिखते समय परम हर्ष हो रहा है कि पटना के एक साहसी प्रकाशक (बाबू रामदीनसिंह, खड्ग विलास प्रेस, बाँकीपुर) उन पुरानी प्रतियों के आधार पर, जिनका

---

१. विलो की पत्ती का तल भाग उज्ज्वल होता है, अतः उसकी जल-छाया भी उज्ज्वल होती है।

उल्लेख मैं कर चुका हूँ, रामचरित-मानस का एक संस्करण प्रकाशित करने जा रहे हैं।

इस अध्याय के परिशिष्ट में मैं पूर्वोल्लिखित बनारस और राजापुर की प्रतियों के आधार पर रामचरित मानस के असली पाठ का नमूना दे रहा हूँ, साथ में मूल का फोटो भी लगा हुआ है। पाद टिप्पणियों में प्राप्त प्रतियों का पाठ भेद भी दिखाया गया है। मैं इन फोटोग्राफों के लिए राजाशिवप्रसाद सी. एस. आई. की उदारता का आभारी हूँ।

१२९. निपट निरंजन कवि—जन्म १५९३ ई०।

काव्य निर्णय। शिवसिंह के अनुसार यह तुलसीदास के ही समान बड़े महात्मा थे। सैकड़ों फुटकर रचनाओं के अतिरिक्त, जो कि अभी तक संकलित नहीं है, यह संत सरसी और निरंजन संग्रह के रचयिता हैं!

टि०—निपट निरंजन औरंगजेब के शासनकाल (सं० १७१५-६४ वि०) में हुए। ग्रियर्सन का समय अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ३८९

१३०. बेनीमाधवदास—पसका, जिला गोंडा के। १६०० ई० में उपस्थित।

यह गोसाइँ तुलसीदास के शिष्य थे और लगातार उनके साथ रहते थे, इन्होंने उनका जीवन चरित्र 'गोसाइँ चरित्र' नाम से लिखा था। (इस ग्रंथ में ग्रियर्सन ने इसका संकेत 'Go' से किया है)। यह १६४२ ई० में मरे।

१३१. निधि कवि—१६०० ई० में उपस्थित।

गोसाइँ चरित; (?) राग कल्पद्रुम।

१३२. नीलकंठ मिसर—दोआब के। १६०० ई० में उपस्थित।

गोसाइँ चरित, काव्य निर्णय।

टि०—दास के काव्य-निर्णय के भ्रांत आधार पर इस कवि का अस्तित्व निर्भर है। वस्तुतः इस नाम का कोई कवि नहीं हुआ।

—सर्वेक्षण ४१८.

१३३. नीलाधर कवि—१६०० ई० में उपस्थित।

गोसाइँ चरित; काव्य निर्णय।

टि०—दास ने 'लीलाधर' कवि का नाम लिया है, न कि नीलाधर का। वस्तुतः इस नाम का कोई कवि नहीं हुआ।

—सर्वेक्षण ४४१

छठें अध्याय का परिशिष्ट

१. तुलसीदास का पाठ

पिछली शताब्दियों में तुलसीदास का पाठ निरंतर किस प्रकार बदलता रहा है, यह दिखाने के लिए, नीचे लिखे हुए अंश रामायण से दिए जा रहें हैं, जो प्राचीनतम उपलब्ध प्रतियों के पाठ के अनुसार हैं। पाद-टिप्पणियो में अच्छे मुद्रित संस्करणों के पाठ-भेद दिए गए हैं। ये हस्तलिखित प्रतियाँ वही है जिनका उल्लेख अध्याय ६ में हुआ है, अर्थात् अयोध्या कांड की राजापुर वाली प्रति, जो कि स्वयं कवि के हाथ की लिखी हुई कही जाती है और बनारस की प्रति, जो उनकी मृत्यु के केवल २४ वर्ष बाद लिखी गई थी।

बालकांड से (बनारस प्रति)

(पाद-टिप्पणियाँ प्राप्त ग्रंथों के पाठांतर हैं)

चौपाई—को शिव[1] सम रामहि[2] प्रिय भाई ॥
दोहा—प्रथमहि मैं कहि शिव चरित
बूझा मरमु तुम्हार[3]।
सुचि सेवक तुम्ह[4] राम के
रहित समस्त बिकार ॥१०४॥[5]
चौपाई—मैं[6] जाना तुम्हार गुन सीला।
कहौं सुनहु[7] अब रघुपति लीला ॥
सुनु मुनि आजुं समागम तोरें[8]।
कहि न जाइ[9] जस सुखु[10] मन मोरें[11] ॥
रामचरित अति अमित मुनीसा।
कहि न सकहि[12] सत कोटि अहीसा ॥
तदपि जथा श्रुत[13] कहौं बखानी।
सुमिरि गिरा पति प्रभु धनुपानी ॥
सारद दारु नारि सम स्वामी।
रामु[14] सूत्रधर अन्तरजामी।
जेहि पर कृपा करहि जनु[15] जानी।
कवि उर अजिर नचावहि[16] बानी ॥

१. सिव २. रामहिं ३ प्रथम कहे मैं भिवचरित बूझा मरम तुम्हार ४. तुम ५. ११२, ६. मैं ७. सुनहुँ ८. तोरे ९. जाय १०, सुख ११. मोरे १२. सकहिं १३. स्रुत १४. राम १५. करहिं जन १६. नचावहिं—एक प्रति में 'वानी' के लिए 'अनी' है।

अजोध्याकांड से (राजापुर प्रति)

चौपाई—(देहिं कु) चालिहि कोटिक[१] गारी ॥
जरहिं बिखम जर[२] लेहि उसासा ।
कवनि[३] राम बिनु जीवन आसा ॥
बिपुल[४] वियोग प्रजा अकुलानी ।
जनु[५] जलचर गन सूखत पानी ॥
अति बिखाद बस लोग लोगाई[६] ।
गए मातु पहिं[७] रामु[८] गोसाई[९] ॥
मुखु[१०] प्रसन्न चित चौगन चाऊ ।
मिटा सोचु[११] जनि राखै[१२] राऊ ॥

दोहा—नव गयंदु रघुबीर मनु[१३]
राजु[१४] अलान समान ।
छूट जानि बन गवनु[१५] सुनि
उर अनंदु[१६] अधिकान ॥५१॥[१७]

चौपाई—रघुकुल तिलक जोरि दोउ[१८] हाथा ।
मुदित मातु पद नायेउ[१९] माथा ॥
दीन्हि[२०] असीस लाइ उर लीन्हे ।
भूखन बसन निछावरि कीन्हे ॥
बारबार मुख चुम्बति[२१] माता ।
नयन नेह जलु[२२] पुलकित गाता ॥
गोद राखि पुनि हृदय लगाए[२३] ।
श्रवत[२४] प्रेम रस पयद सुहाए[२५] ॥
प्रेमु प्रमोदु[२६] न कछु कहि जाई ।
रङ्क धनद पदवी जनु पाई ॥
सादर सुंदर बंदनु[२७] निहारी ।
बोली मधुर बचन महतारी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी ।
कबहिं लगन मुद मङ्गलकारी ॥

---

१. हु २. ज्वर ३. कवन ४. विकुल ५. जिमि ६. लुगाईं ७, पहं ८. राम ९, गुसांईं १०. मुख ११. इहै सोच १२. राखहिं १३. गयद रघुबंस मनि १४. राज १५. गवन १६. आनंद १७. ५०. १८. द्वौ १९. नायउ २०. दीन्ह २१. चूमति २२. जल २३. लगाई २४. स्रवत २५. सुहाई २६. प्रेम प्रमोद २७. बदन

सुकृत सील सुख सीव[1] सुहाई।
जनम लाभ कइ अवधि[2] अघाई॥
दोहा—जेहि चाहत नर नारि सब
अति आरत एहि[3] भाँति।
जिमि चातक चातकि त्रिखित[4]
वृष्टि सरद रितु[5] स्वाति॥५२॥[6]
चौपाई—तात जाउँ बलि बेगि नहाहू[7]।
जो मन भाव मधुर कछु खाहू॥
पितु समीप तब जायेहु भैआ।
भइ बढ़ि[8] बार जाइ बलि मैआ॥
मातु बचन सुनि[9] अति अनुकूला।
जनु सनेह सुरतरु के फूला॥
मुख मकरंद भरे श्रिय[10] मूला।
निरखि राम मनु भवरु[11] न भूला॥
धरम[12] धुरीन धरम[13] गति जानी।
कहेउ मातु सन अति मृदु बानी॥
पिता दीन्ह मोहि कानन राजू।
जहँ सब भाँति मोर बढ़[14] काजू॥
आयेसु देहि[15] मुदित मन माता।
जेंहि[16] मुद मङ्गल कानन जाता॥
जनि सनेह बस डरपसि भोरें[17]।
आनँदु अंब[18] अनुग्रह तोरें[19]।
दोहा—बरख[20] चारि दस बिपिन बसि
करि पितु बचन प्रमान।
आइ[21] पाय पुनि देखिहौं
मनु[22] जनि करसि मलान॥५३॥[23]
चौपाई—बचन विनीत मधुर रघुबर के।
सर सम लगे मातु उर करके॥

---

१. सींव २. जनम लाभ कहि (या लहि) अवध ३. इहि ४. चातकि चातक. तृषित ५. ऋतु ६. ५१. ७. अन्हाहू ८. वढ़ि ९. यहाँ प्रति का २८ वाँ पन्ना समाप्त होता है। १०. श्री ११. राम मन भंवर १२. धर्म १३. धर्म १४. वड़ १५. आयसु देहु १६. जेहि १७. मोरे १८. आनंद मातु १९. तोरे २०. वखं २१. आय २२. मन २३. ५२

सहमि सूखि सुनि सीतलि[१] बानी।
जिमि जवास परे[२] पावस पानी॥
कहि न जाइ कछु हृदय बिखादू।
मानहुँ मृगी सुनि[३] केहरि नादू॥
नयन सजल[४] तन[५] थर थर कापी[६]।
माजहि खाइ मीन जनु मापी[७]॥
धरि धीरजु[८] सुत बदनु[९] निहारी।
गदगद[१०] बचन कहति महतारी॥
तात पितहि तुम्ह[११] प्रान पिआरे।
देखि मुदित नित चरित तुम्हारे॥
राजु[१२] देन कहुँ[१३] सुभ दिन साधा।
कहेउ जान बन केहि अपराधा॥
तात सुनावहु मोंहि निदानूँ।
को दिनकर कुल भयेउ[१४] कृसानूँ॥

दोहा—निरखि राम रुख सचिव सुत
कारनु[१५] कहेउ बुझाइ।
सुनि प्रसङ्गु[१६] रहि मूक जिमि[१७]
दसा बरनि नहि[१८] जाइ॥५४॥[१९]

चौपाई—राखि न सकइ[२०] न कहि सक जाहू।
दुहूँ भाँति उर दारुण दाहू॥
लिखत सुधाकर, गा[२१] लिखि राहू।
बिधि गति बाम सदा सब काहू॥
धरम[२२] सनेह उभय मति घेरी।
भइ गति साँप छछूंदरि केरी॥
राखौं सुतहि करौं[२३] अनुरोधू।
धरमु[२४] जाइ अरु बन्धु बिरोधू॥
कहौं जान बन तौ बढ़ि[२५] हानी।
संकट सोच बिबस[२६] भइ रानी॥

---

१. सीतल २. पर ३. जनु सहमे करि ४. सलिल ५. तनु ६. काँपी ७. मांजा मनहुं मीन कहं व्यापी ८. धीरज ९. बदन १०. गद्गद ११. तुम १२. राज १३. कहं १४. भयो १५. कारन १६. प्रसंग १७. मुक गति १८. नहिं १९. (५३) २०. सकहिं। यहां प्रतिका २९ वां पन्ना समाप्त होता है। २१. लिखिगा २२. धर्म २३. होइ २४. धर्म २५. बढ़ि २६. विकल।

बहुरि समुझि तिय धरमु[1] सयानी।
रामु भरतु दोउ[2] सुत सम जानी॥
सरल सुभाउ[3] राम महतारी।
बोली बचन धीर धरि भारी॥
तात जाउ बलि कीन्हेहु[4] नीका।
पितु आयेसु[5] सब धरम क[6] टीका॥

दोहा—राजु[7] देन कहि[8] दीन्ह बनु[9]
मोहि न सो[10] दुख लेस।
तुम्ह[11] बिनु भरतहि भूपतिहि,
प्रजहि प्रचंड कलेस॥५५॥[12]

चौपाई—जौं[13] केवल पितु आयेसु[14] ताता।
तौ जनि जाहु जानि बड़ि माता[15]॥
जौं[16] पितु मातु कहेउ[17] बन जाना।
तौ कानन सत अवध समाना॥
पितु बन देव मातु बन देवी।
खग मृग चरन सरोरुह सेवी॥
अंतहु उचित नृपति बन बासू।
बय बिलोकि हिय होइ[18] हरासू॥
बड़[19] भागी बनु[20] अवध अभागी।
जो[21] रघुबंस तिलक तुम्ह[22] त्यागी॥
जौं[23] सुत कहौं संग मोहि लेहू।
तुम्हरे हृदय होइ संदेहू॥
पूत[24] परम प्रिय तुम्ह[25] सबही के।
प्रान प्रान के जीवन जी के॥
ते तुम्ह[26] कहहु मातु बन जाऊँ।
मैं[27] सुनि बचन बैठि पछिताऊँ॥

दोहा—एहि[28] बिचारि नहि[29] करौं हठ,
झूठ सनेहु बढ़ाइ[30]।

---

१. धर्म २. राम भरत द्वौ ३. सुभाव ४. कीन्हेउ ५. आयसु ६. धर्म के ७. राज ८. कहाँ ९. बन १०. मुहि न सोच ११. तुम १२. ५४. १३. जौ १४. आयसु १५. जाइ बलि माता १६. जौ १७. कहै १८. होत १९. बड़ २०. बन २१. जौ २२. तुम २३. जौ २४. पुत्र २५. तुम २६. तुम २७. मैं २८. यह २९. नहिं—यहाँ प्रति का तीसवाँ पन्ना समाप्त होता है। ३०. सनेह बढ़ाइ

मानि मातु कर[1] नात बलि,
सुरति बिसरि जनि जाइ ॥५६॥[2]

चौपाई—देव पितर सब तुम्हहि गोसाईं[3]।
राखहुँ[4] पलक नयन की नाईं॥
अवधु अम्बु प्रिय परिजन मीना।
तुम्ह[5] करुनाकर धरम[6] धुरीना॥
अस बिचारि सोइ करहु उपाई।
सबहि जिअत जेंहि[7] भेंटहु आई॥
जाहु सुखेन बनहिं बलि जाऊँ।
करि अनाथ जन परिजन गाऊँ॥
सब कर आजु सुकृत फल बीता।
भयेउ करालु कालु[8] बिपरीता॥
बहु बिधि बिलपि चरन लपटानी।
परम अभागिनि आपुहि जानी॥
दारुन दुसह दाहु[9] उर ब्यापा।
बरनि न जाहिं[10] बिलाप कलापा॥
राम उठाइ मातु उर लाई[11]।
कहि मृदु बचन बहुरि समुझाई[12]॥

दोहा—समाचार तेहि समय सुन,
सीय उठी अकुलाइ।
जाइ सासु पद कमल जुग[13],
बंदि बैठि सिरु[14] नाइ ॥५७॥[15]

चौपाई—दीन्हि[16] असीस सासु मृदु बानी।
अति सुकुमारि देखि अकुलानी॥
बैठि नमित मुख सोचति सीता।
रूप रासि पति प्रेम पुनीता॥
चलन चहत बन जीवन नाथू[17]।
केहि सुकृती[18] सन होइहि साथू[19]॥

---

१ के २. ५५. ३. तुमहि गुसाई ४. राखहु ५. तुम ६. धर्म ७. जियत जेहि ८. भये कराल काल ९. दाह १०. जाइ ११. लाव। १२. बहुत समुझावा। १३ पद कमल युग १४. सिर १५. ५६. १६. दीन्ह १७. नाथा १८ कवन सुकृति १९. साथा

की तनु प्रान कि केवल प्राना।
बिधि करतबु[1] कछु जाइ[2] न जाना॥
चारु चरन नख लेखति धरनी।
नूपुर मुखर मधुर कवि बरनी॥
मनहुँ प्रेम बस बिनती करहीं।
हमहिं सीय पद जनि परिहरहीं॥
मञ्जु विलोचन मोचति बारी।
बोली देखि[3] राम महतारी॥
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी।
सासु ससुर परिजनहि पिआरी[4]॥

दोहा—पिता जनक भूपाल मनि
ससुर भानु कुल भानु।
पति रवि कुल कैरव बिपिन
बिधु गुन रूप निधान॥५८॥[5]

चौपाई—मैं पुनि पुत्र वधू प्रिय पाई।
रूप रासि गुन सील सुहाई॥
नयन पुतरि करि[6] प्रीति बढ़ाई[7]।
राखेउ प्रान जानकिहि लाई॥
कलप बेलि[8] जिमि बहुबिधि लाली।
सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली॥
फूलत फलत भयेउ[9] बिधि बामा।
जानि न जाइ कहा परिनामा॥
पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा।
सिय न दीन्ह[10] पगु अवनि कठोरा॥
जिअन मूरि[11] जिमि जोगवत[12] रहऊँ[13]।
दीप बाति नहि[14] टारन कहऊँ[15]॥
सोइ[16] सिय चलन चहति बन साथा।
आयेसु[17] काह[18] होइ रघुनाथा॥

---

१. करतब २. जात. ३. यहाँ ३१ पन्ना समाप्त होता है। ४. परिजनहि पियारी ५. ५७ ६. इव ७. बढ़ाई ८. कलप बेलि ९. भए १०. दीन ११. जिवन मूरि १२. जुगवति १३. रहेऊं १४ नहिं १५. कहेऊं १६. सो १७. आयसु १८. कहा

चंद[1] किरन रस रसिक चकोरी।
रबि रुख नयन सकै किमि जोरी॥

दोहा—करि केहरि निसिचर चरहिं
दुष्ट जंतु बन भूरि।
विख वाटिका कि सोह सुत
सुभग सँजीवनि[2] मूरि॥५९॥[3]

चौपाई—बन हित कोल किरात किसोरी।
रची बिरञ्चि बिखय सुख[4] भोरी॥
पाहन कृमि जिमि कठिन सुभाऊ।
तिनहि कलेसु[5] न कानन काऊ॥
कै तापस तिय कानन जोगू[6]।
जिन्ह[7] तप हेतु तजा सब भोगू॥
सिय बन बसिहि तात केहि भाती[8]।
चित्र लिखित कपि देखि डेराती॥
सुर सर सुभग बनज बन चारी।
डाबर जोगु[9] कि हंसकुमारी॥

किष्किंधा कांड[10] का अन्त (बनारस प्रति)

(ये दोनों अंश पुष्पिका के लिए दिए जा रहे हैं)।

छन्द[11]—(जो सुनत गावत कहत स) मुझत परम पद नर पावई।
रघुबीर पद पाथोज मधुकर दास तुलसी गावई॥

दोहा—भव भेखज रघुनाथ जसु,[12]
सुनहि जे नर अरु नारि।
तिन्हकर सकल मनोरथ,
सिद्ध करहिं त्रिसिरारि[13]॥

सोरठा—नीलोत्पल तन[14] स्याम,
काम कोटि सोभा अधिक।

---

१. चंद्र २. सजीवन ३. ५८ ४. रस ५. तिंनहिं कलेस ६. योगू ७. जिन ८. भाँती ९. योग १०. यह छपी प्रतियों में कांडों के नाम हैं। यह देखा जा सकता है कि तुलसीदास ने दूसरे नाम दिए थे। ११. छन्द छन्दों वाले अंश प्रायः अत्यधिक संस्कृतमय हैं, अतः छपी पोथियों में बहुत कम परिवर्तित हैं। १२. जस १३. त्रिपुरारी १४. तनु

सुनिअ[1] तासु गुन ग्राम,
जासु नाम अघ खग बधिक ॥३०॥[2]

इति श्री[3] रामचरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विसुद्ध संतोष संपादिनी[4] नाम चतुर्थस्सोपानः समाप्तः ॥ शुभम् अस्तु[5] ॥ संवत १७०४ समए, पौख शुदि द्वारसी[6] लिखितं रघु तिवारी कास्यां ।

लंका कांड का अन्त (बनारस प्रति)

छन्द—(मति मन्द तुलसी) दास सो प्रभु मोह बस बिसराइयो ॥
यह रावनारि चरित्र पावन रामपद रति प्रद सदा।
कामादि हर विग्यान कर सुर सिद्ध मुनि गावहिं मुदा ॥

दोहा—समर विजय रघु मनि चरित[7],
सुनहिं जे सदा सुजान[8] ।
विजय बिबेक विभूति नित,
तिन्हहिं[9] देहिं भगवान ॥
यह कलिकाल मलायतन
मन करि देखु बिचार।
श्री रघुनायक नामु[10] तजि,
नहि कछु आन अधार[11] ॥१२०॥[12]

इति श्री रामचरित मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने विमल विज्ञान संपादिनी[13] नाम षष्ठस्सोपानः समाप्तः[14] ॥ शुभम् अस्तु ॥ संवत १७०४ समए ॥ माघ सुदि प्रतिपद लिखितम् रघु तिवारी कास्यां (?) लोलार्क समीपे ॥ श्री रामो जयति ॥ श्री विश्वनाथाय नमः ॥ श्री विंदुमाधवे नमः ॥

२. अन्य राम कथाएँ

तुलसीदास की विभिन्न कविताओं के अतिरिक्त, बाद के लेखकों द्वारा उसी विषय पर बहुत से ग्रंथ लिखे गए हैं। नीचे उन ग्रंथों की सूची दी जा रही है, जिनसे मैं परिचित हूँ—

---

१. सुनिय २. छपी पुस्तकों से यहाँ भिन्न अंकन-प्रणाली है। छपे ग्रन्थ में यहाँ १ है ३, संस्कृत अवतरणों में मैं श को ० और गौडियन अवतरणों में sh से प्रत्यक्ष करता हूँ। ४. विमल वैराग्य संपादनो ५. शुभम् अस्तु। सिद्धि र अस्तु। ६. विचित्र रूप। छपे ग्रन्थों में यह तिथि नहीं दी जाती। ७. समर विजय रघुबीर के ८. चरित जे सुनहिं सुजान ९. तिनहिं १०. नाथ नाम ११. नाहि नन १२. ११८ १३. विमल ज्ञान संपादनो १४. छपे ग्रन्थों में इसके आगे का सब छोड़ दिया जाता है।

(१) एक रामायण चिंतामणि त्रिपाठी (१४३) द्वारा लिखी गई थी।

(२) मानदास (१७२) ने राम चरित्र लिखा जो बाल्मीकि रामायण और हनुमान नाटक पर आधृत है।

(३) भगवंतराय खीची (३३३) ने एक रामायण लिखी।

(४) शंभुनाथ (३५७) ने 'राम विलास' नामक एक रामायण लिखी।

(५) गुलाब सिंह (४८६) ने एक वेदांतिक रामायण लिखी (इसका जो भी अर्थ हो)।

(६) गजराज उपाध्या (५८५) ने एक रामायण लिखी।

(७) सहज राम (५९२) ने रघुवंश और हनुमान नाटक के आधार पर एक रामायण लिखी।

(८) शंकर त्रिपाठी (६१३) ने कवित्त छंदों में एक रामायण लिखी।

(९) ईश्वरीप्रसाद त्रिपाठी (७१२) ने बाल्मीकि रामायण का अनुवाद किया।

(१०) चंद्र झा (७०२) ने एक रामायण लिखी।

(११) जानकी प्रसाद (६९५) ने 'राम निवास रामायण' लिखी।

(१२) समर सिंह (७२५) ने एक रामायण लिखी।

(१३) पूरन चंद जूथ (८५८) ने राम रहस्य रामायण लिखी।

इस सूची में वे ग्रंथ नहीं आए हैं, जिनमें राम कथा का कोई विशेष अंग ही वर्णित हुआ है, और न तो इसमें वे ही ग्रंथ हैं, जो इधर पिछले वर्षों में गद्य और पद्य में लिखे गए हैं। इनमें भाषा और शैली की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ पंडित छोटूराम तिवारी (सं० ७०५) लिखित (१४) रामकथा है।

३. पंचायतनामा

[पंचायतनामे का प्रत्यक्षरीकरण और उसका अँगरेजी अनुवाद मूल ग्रंथ के प्रारंभ में ही भूमिका के अनंतर 'शुद्धिपत्र और परिशिष्ट' के मध्य में दिया गया है। इसे अ-स्थान समझकर अनुवाद में छठें अध्याय के तृतीय परिशिष्ट के रूप में दिया जा रहा है। पंचायतनामा का अंग्रेजी प्रत्यक्षरीकरण न देकर उसे देवनागरी लिपि में दिया जा रहा है और इसका जो अंग्रेजी अनुवाद मूल ग्रंथ में है, उसे यहाँ ज्यों का त्यों दिया जा रहा है, उसका हिंदी अनुवाद नहीं प्रस्तुत किया जा रहा है।

पंचायतनामे की केवल प्रथम छह पंक्तियाँ देवनागरी लिपि में हैं। यही तुलसीदास की लिखी मानी जाती हैं। शेष अंश फारसी लिपि में है और तुलसीकृत नहीं माना जाता। पंचायतनामे की प्रतिच्छवि डा० माताप्रसाद गुप्त के ग्रंथ 'तुलसीदास' में देखी जा सकती है।

—अनुवादक]

जैसा कि भूमिका में मैं प्रतिश्रुत था, संवत् १६६९ (१६१२ ई०) में तुलसीदास के हाथ के लिखे हुए पंचायतनामे का प्रत्यक्षरीकरण और अनुवाद दे रहा हूँ। अपने पुराने मित्र और अध्यापक मीर औलाद अली, प्रोफेसर अरबी, फारसी, हिंदुस्तानी, ट्रिनिटी कालेज डब्लिन के प्रति, इस पंचायतनामे के फारसी और अरबी वाले अंश को अनूदित और प्रतिलिपि करने में अत्यधिक सहायता देने के लिए कृतज्ञता ज्ञापन का यह अवसर मैं ले रहा हूँ।

प्रत्यक्षरीकरण

श्री जानकी वल्लभो विजयते

द्विश शरं नाभिसंधत्ते द्विस स्थापयति ना सृतान। द्विर ददाति न १
चार्थिभ्यो रामो द्विर नैव भाषते ॥१॥ तुलसी जान्यो दशरथहिं ध- २
रमु न सत्य समान ॥ राम तजो जेहि लागि बिनु राम
परिहरे प्रान ॥ १ ॥ ३
धर्मो जयति नाधर्मस् सत्यं जयति नानृतं। क्षमा जयति न क्रोधो ४
विष्णुर्जयति नासुराः ५

अल्लाहु अकबर

चूं अनंद राम बिन टोडर बिन देवराय व कन्हाए बिन राम भदर
बिन टोडर मज़्कूर ६
दर हुज़ूर आमदा करार दादंड कि दर मवानिए
मतरूँका कि ताफ़सीलि आँ दर हिंदवी मज़्कूर अस्त ७
बिल मुनासफ़ा बतराजिए जानिबैन क़रार दादेम।
व यक सद ओ पिंजाह (?) बीघा ज़मीन ज़ियादा (?) किस्मती ८
मुनसफ़ा खुद[1]
दर मौजाए भदैनी अनन्द राम मज़्कूर व कन्हाए बिन राम भदर
मज़्कूर तजवीज़ नमूदा। ९
बरीं मानी रज़ी गश्त इतिराफ़ सहीह शरई नमूदंद बनावरी आँ १०
मुह्र करद शुद ११

(मुहर) ? सैदुल्लाह बिन ×××

क़िस्मति अनन्द राम		क़िस्मति कन्हाए		
क़रिया	क़रिया	क़रिया	क़रिया	१२
भदैनी दो हिस्सा	लहरतारा बरोबस्त	भदैनी सिह हिस्सा	शिउपुर दरोबस्त	१३
क़रिया	क़रिया	क़रिया		
नैपुरा हिस्सा १	छित्तूपुर, हिस्सा १	नदेसर हिस्सा १	टोडर तमाम	१४
टोडर तमाम	टोडर तमाम	(?) इत्तला अलैह (अपाठ्य)		

---

१. या (?) अज़् हिस्सा क़िस्मती मुनस्फ़ा।

स्री परमेस्वर

संवत १६६९ समए कुआर सुदी तेरसि बार सुभ दिने लिखतिम् (sc)

पत्र अनंद १५

राम तथा कन्हइआ । अंस विभाग पूरबक आगें कै आग्ज्ञा दुनहु जने माँगा १६

जे आज्ञा भै से प्रमान माना । दुनहु जने विदित तफसीलु । अंस टोडरमल १७

के मह जे विभाग पदु होत रा (? हा) × × १८

अंस आनन्द राम । मौजे भदैनी मह अंस पाँच, तेहि मह अंस दुइ आनंद रामु तथा लहरतारा सगरे उ । तथा छितु पुरा अंस टोडर मल क । तथा नैपुरा अंस टोडर मलु क । हील हुजती नास्ति लिखितम् अनन्द राम जे ऊपर लिखा से सही

अंस कन्हई । मौजे भदैनी मह अंस पाँच, तेहि मह तीनि अंस कन्हई । तथा मौजे सिपुरो तथा नदेसरी अंस तोडर. मलु क । हील हुजती नास्ति

लिखितम् कन्हई जे उपर लिखा से सही १९–२४

(इसके आगे गवाहों के हस्ताक्षर हैं, जिनमें से अंतिम हैं)

शहद
बिमाफिही जलाल मक़बूली
बिदवत्तिहि

शहद २५
बिमाफिही ताहिर इब्नि ख्वाज २६
दौलती क़ानूनगोइ २७

अंग्रेजी अनुवाद

(Sanskrit) Victory to the lord of c, ri Janki.

Two arrows cannot be shot at one time. Twice one does not support refugees. Twice over benefits are not given to applicants. Rama does not speak in two ways.

(Old Baiswari) O Tulsi, Dasrath knew no virtue equal to the truth. He gave up Ram for it, and without Ram he gave up his life.

(Sanskrit) Virtue Conquers and not vice, truth and not falsehood. Mercy conquers and not anger. Vishnu conquers and not the Asuras.

(Persian) God is great.

Where as Anand Ram, son of Todar, son of

Deo Ray and Kanhae, son of Ram Bhadar son of Todar aforesaid, appeared before me and acknowledged that with their mutual consent the inheritance, viz, the villages as detailed in Hindui, have been equally divided, and the said Anand Ram has given to the said Kanhae, son of Ram Bhadar, 150 bighas of land in village Bhadaini more than his own half share; they are satisfied and have made correct acknowledgement according to laws. Their seals have been affixed hereto.

Share of Anand Ram	Share of Kanhae
Village Bhadaini, 2 share	Village Bhadaini, 3 shares.
Village Lahartara, whole	Village Shiupur, whole.
Village Naipura, the whole of todar's share	Village Nadesar, the whole of Todar's share
Village Chhitupura, the lesser, the whole of Todar's share	(?) I am informed of this? (illegible)

(Old Baiswari) To the Most High god.

In the Sambat year 1669, on the 13th of bright half of Kuar, on the auspicious day of the week, was this deed written by Anand Ram and Kanhaia. By way of partition of shares, we two formerly asked for a decision (translation doubtful) and the decision which has been passed, that we recognise as authoritative. Both parties admit the list. The divison of the share of Todar Mal, which have been made........

(The rest is unintelligible and partly illegible)

Share of Anand Ram—In village Bhadaini out of five shares, two to Anand Ram. Also the whole of

Lahartara. Also Todar Mal's share in Chhitupura and in Naipura. There is no evasion or reservation. Signed Anand Ram. What is written above is correct.

Share of Kanhai—In village Bhadaini out of five shares, three to Kanhai. Also the village of Siupura; also Todar Mal's share in Nadesri. There is no evasion or reservation. Signed Kanhai. What is written above is correct.

Witnesses (to Anand Ram's signature)
Raghab Ram, son of Ram Dat.
Ram seni, son of Udhab.
(U) Dai Karn, son of Jagat Ray.
Jamuni Bhan, son of Paramanand.
Janaki Ram, son of Sri Kant.
Kawala Ram, son of Basudeb.
Chand Bhan, son of Keshau Das.
Pande (पाँड़े) Hariballabh, son of Purushottam.
Bhawari, son of Keshau Das.
Jadu Ram, son of Narhari.
Ajodhya, son of Lachhi.
Sahal, son of Bhikham.
Ram chand, son of Basudiw (sic.)
Pitambar Daswathi (? दसौंधी), son of Puran.
Ram Rai and Garib Rai ? sons of Makutiri Karn (मकुटिरी करन ?)
(Arabic) Witness to whatsoever is in this.
Jatal Maqbuli, by his own hand.
Witnesses (to Kanhai's signature)
Ram singh, son of Uddhab.
Jadan Ray, son of Gahar Rai
Jagadish Rai, son of Mahodadhi.
Chakrapani, son of Siwa.
Mathura, son of Pitha.

Kasi Das, son of Basudewa (by the hand of मथुरा)

Khargman	son of	Gosain Das
Ram Deo	son of	Bisambhar
Sri Kant Pande (पाँड़े)	son of	Raj Baktras (?)
Bithal Das	son of	Harihar
Hira	son of	Dasarath
Lohag	son of	Kisana
Man Ray	son of	Sital
Krishna Datta	son of	Bhagawan
Binaraban	son of	Jai
Dhani Ram	son of	Madhu Rai

(Arabic) Witnesses to whatsoever is in this, Tahir, son of Khawaj Daulti, the Qanungo.

इस प्रसंग में यह अनुमान करना कि आनंद राम का पिता और कन्हई का पितामह यह टोडरमल कौन था बड़ा मनोरंजक है। क्या यह अकबर का महान अर्थ मंत्री टोडरमल (सं० १०५) हो सकता है ?' उन टोडरमल का देहावसान १५८९ ई० में हो गया था, १६१२ में उनके पुत्र जीवित रह सकते हैं। वह लहरपुर अवध में उत्पन्न हुए थे और इस पंचायतनामे में उल्लिखित एक गाँव लहरतारा का भी कुछ वैसा ही नाम है। भारत में पड़ोसी गाँवों के प्रायः एक से नाम होते हैं।

टि०—ग्रियर्सन को इन टोडर का ठीक पता न था। यह टोडर ऊपर वर्णित प्रसिद्ध टोडरमल से भिन्न हैं। यह काशी में ही असी के रहनेवाले, तुलसीदास के पड़ोसी और स्नेही जमींदार थे। इन्हीं की जमींदारी का बँटवारा तुलसी ने कराया था। इन्हीं की मृत्यु के अनंतर उन तुलसी ने भी नर-काव्य किया था, जिनके अनुसार—

कीन्हे प्राकृत जन गुन गाना
सिर धुनि गिरा लागि पछिताना

इसी से टोडर के प्रति तुलसी का स्नेह आँका जा सकता है। तुलसीदास लिखते हैं—

तीन गाँव को ठाकुरो, मन को महा महीप
तुलसी या कलि काल में, अथयो टोडर दीप

आज भी इस परिवार के लोग श्रावण श्यामा तीज को तुलसीदास के नाम पर ब्राह्मण को सीधा देते हैं।

अध्याय ७
रीति काव्य
(१५८०-१६९२ ई०)

सोलहवीं शती के अंतिम काल एवं संपूर्ण सत्रहवीं शती ने, जो मुगल साम्राज्य के आधिपत्य काल का प्रायः संगती है, काव्य प्रतिभा की एक असाधारण श्रेणी ही प्रस्तुत कर दी है। इस युग के अत्यंत प्रसिद्ध कवि जिनका विवरण पहले नहीं आया है, केशवदास, चिंतामणि त्रिपाठी और बिहारीलाल हैं। केशव और चिंतामणि काव्यशास्त्र लिखनेवाले उस कवि-संप्रदाय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतिनिधि हैं, जिसकी स्थापना केशव ने की और जो काव्य-कला के शास्त्रीय पक्ष का ही निरंतर विवेचन करता रहा। इस अध्याय में इसी वर्ग का विवेचन होगा। अगले अध्याय में सत्रहवीं शती के शेष कवियों का विवरण रहेगा।

१३४. केशवदास सनाढ्य मिसर—बुंदेलखंड वासी। १५८० ई० में उपस्थित।

काव्य निर्णय, सुन्दरी तिलक, सत्कविगिरा विलास, राग कल्पद्रुम। इनका असली घर टेहरी था, लेकिन यह उरछा के राजा मधुकर साह के यहाँ गए और अत्यधिक प्रशंसित हुए। बाद में मधुकर के पुत्र राजा इंद्रजीत (संख्या १३६) ने इन्हें २१ गाँव दिए, इस पर यह और इनका परिवार अंतिम रूप से उरछा में बस गया। यह पहले भाषा कवि हैं जिसने [कवि प्रिया (राग कल्पद्रुम) में, जिसका बाद के कवियों ने प्रायः अनुकरण किया है] दशांग काव्य का विवेचन किया। इनका प्रथम महत्वपूर्ण ग्रंथ विज्ञानगीता है, जिसको इन्होंने मधुकर साह के नाम पर लिखा। तब इन्होंने प्रवीनराय पातुरी (संख्या १३७) के लिए कवि प्रिया लिखी। तदनंतर राजा इंद्रजीत के नाम पर 'रामचंद्रिका' (राग कल्पद्रुम)। इन्होंने साहित्य संबंधी पांडित्य पूर्ण 'रसिक प्रिया' (राग कल्पद्रुम) और पिंगल संबंधी 'राम अलंकृत मंजरी' नामक ग्रंथ भी लिखे।

कवि प्रिया पर टीका लिखनेवाले हैं:—(१) सरदार (संख्या ५७१), (२) नारायण राय (संख्या ५७२), (३) फालका राव (संख्या ६७८) (४) हरि (संख्या ७६१)।

राम चंद्रिका पर टीका लिखनेवाले हैं:—(१) जानकी प्रसाद (संख्या ५७७), (२) धनीराम (संख्या ५७८)।

और रसिक प्रिया पर टीका लिखनेवाले हैं:—(१) सूरति मिसर (संख्या ३२६), (२) याकूब खाँ (संख्या ३९४), (३) ईसुफ़ खाँ (संख्या ४२१), (४) सरदार (संख्या ५७१), और (५) हरिजन (संख्या५७६)।

जब बादशाह अकबर ने प्रवीणराय पातुरी को अपने दरबार में न भेजने की अवज्ञा और विद्रोह के कारण इंद्रजीत पर एक करोड़ का जुरमाना किया, तब केशवदास छिपकर बादशाह के वजीर बीरबल (संख्या १०६) से मिले, और 'दियो करतार दुहूँ कर तारी' से समाप्त होने वाली प्रसिद्ध पंक्तियाँ पढ़ीं (शिवसिंह सरोज में पृष्ठ ३१–३२ पर उद्धृत)। राजा बीरबल उन पर परम प्रसन्न हुए और जुरमाना माफ करा दिया, पर प्रवीणराय पातुरी को दरबार में आना ही पड़ा।

पुनश्चः—

विज्ञान गीता सं० १६०० (१५४३ ई०) में लिखी गई और मधुकर शाह को समर्पित हुई। रसिकप्रिया की तिथि सं० १६४८ (१५९१ ई०) दी गई है।

टि०—टेहरी से अभिप्राय टेहरी गढ़वाल नहीं है। यह टेहरी ओरछा के ही पास एक लघु गाँव है। केशव को २१ गाँव मिले थे, २१ ही नहीं। कवि प्रिया में कवि ने २१ गाँवों का उल्लेख किया है। विज्ञान गीता इनका प्रथम महत्वपूर्ण ग्रंथ नहीं है। यह इनके अंतिम ग्रंथों में से है। इसकी रचना सं० १६६७ में, मधुकर शाह की मृत्यु सं० १६४९ के १८ वर्ष बाद, हुई। सं० १६०० में तो केशव उत्पन्न भी नहीं हुए थे। इनका जन्मकाल सं० १६१२ माना जाता है। मधुकरशाह का शासनकाल भी सं० १६११ से प्रारंभ होता है। कवि प्रिया और रामचंद्रिका दोनों की समाप्ति संवत १६५८ वि० में हुई। —सर्वेक्षण ६३.

१३५. बलिभद्र सनाढ्य मिसर—उरछा, बुंदेलखंड निवासी; १५८० ई० में उपस्थित।

यह केशवदास के भाई थे। इनका नखशिख सभी कवियों द्वारा प्रमाण माना जाता है। इन्होंने भागवत पुराण का भी एक तिलक किया था। इनके नखशिख की एक टीका प्रतापसाहि (सं० १४९) ने और दूसरी टीका उनियारा के अज्ञात नाम राजा (सं० ६६०) ने की है।

१३६. इंदरजीत सिंह—उरछा, बुंदेलखंड के बुंदेला राजा, १५८० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह धीरज नरिंद नाम से कविता लिखते थे। केशवदास सनाढ्य मिसर (संख्या १३४) और प्रवीणराय पातुरी (संख्या १३७) इनके दरबार में थे। इन्होंने अकबर बादशाह के साथ जो दुस्साहस दिखलाया था, उसके विवरण के लिए इन नामों को देखिए।

टि०—इंद्रजीत कहीं के राजा नहीं थे। मधुकरशाह के आठ पुत्रों में से यह तीसरे थे। मधुकरशाह के देहावसान के अनंतर सं० १६४९ में बड़े पुत्र रामसिंह राजा हुए और शेष को जागीरें मिलीं। इंद्रजीत सिंह को कछौआ की जागीर मिली थी। यह रामशाह के कृपापात्र होने के कारण प्रायः ओरछा में ही रहा करते थे।
—सर्वेक्षण ३८५

१३७. परवीन राइ पातुरी—उरछा, बुंदेल खंड की वार वधू, १५८० में उपस्थित।

केशवदास ने अपनी कवि प्रिया इसी मंगलामुखी के नाम पर लिखी और इसके समर्पण में उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है। इसने कई लघु कविताएँ रची हैं, जिनके लिए इसकी अच्छी प्रशंसा है। यह राजा इंद्रजीत (संख्या १३६) के दरबार में थी। इसकी प्रशंसा सुनकर बादशाह अकबर ने इसे अपने दरबार में बुला भेजा। इंद्रजीत ने इसे भेजने से इनकार किया, जिस पर विद्रोह के अभियोग में अकबर ने इनपर १ करोड़ रुपया जुरमाना ठोंक दिया। केशवदास अकबर के दरबार में गए और बीरबल (संख्या १०६) से मिलकर जुरमाना माफ़ कराया। परन्तु प्रवीण को दरबार में जाना पड़ा और अपनी काव्यकला, विद्या और प्रतिभा का प्रदर्शन करने पर वापस आने की आज्ञा उसे मिल गई। शिवसिंह ने इस संपूर्ण प्रसंग का काव्यमय वर्णन किया है।

१३८. बाल क्रिशन त्रिपाठी—१६०० ई० में उपस्थित।

यह बलिभद्र के पुत्र केशवदास के भतीजे और काशीनाथ के भाई थे। यह 'रस चंद्रिका' नामक एक अच्छे पिंगल ग्रंथ के रचयिता हैं।

बालकृष्ण नाम के एक और कवि हैं जिनका कोई विवरण मुझे विदित नहीं।

टि०—बालकृष्ण त्रिपाठी बलभद्र त्रिपाठी के पुत्र और काशीनाथ त्रिपाठी के भाई थे। सरोज में इन्हें सं० १७८८ में उ० कहा गया है। ग्रियर्सन का संवत अशुद्ध है। यह बलभद्र मिश्र के पुत्र और केशवदास मिश्र के भतीजे नहीं थे। केशव और बलभद्र स्वयं काशीनाथ मिश्र के पुत्र थे। इनके किसी पुत्र का नाम काशीनाथ संभव नहीं। 'रस चंद्रिका' उपलब्ध है। यह रस ग्रंथ है, न कि पिंगल ग्रंथ।
—सर्वेक्षण ५५५

दूसरे बालकृष्ण सरोज (सर्वेक्षण ५५६) के आधार पर उल्लिखित हैं।

१३९. कासीनाथ कवि—१६०० ई० में उपस्थित।

अच्छे कवि। यह बलभद्र के पुत्र, केशवदास के भतीजे और बालकृष्ण त्रिपाठी के भाई थे।

टि०—काशीनाथ त्रिपाठी बलभद्र त्रिपाठी के पुत्र और बालकृष्ण त्रिपाठी के भाई थे। यह बलभद्र मिश्र के पुत्र और महाकवि केशवदास मिश्र के भतीजे नहीं थे। सरोज में इनको संवत १७५२ में उ० कहा गया है। ग्रियर्सन का संवत अशुद्ध है। —सर्वेक्षण ९५

१४०. देवदत्त—उपनाम देव कवि, समानेगाँव, जिला मैनपुरी के ब्राह्मण, जन्म १६०४ ई०।

देशीय मत के अनुसार यह अपने युग के सर्वश्रेष्ठ कवि थे और वस्तुतः ये भारत के बड़े कवियों में से एक हैं। कहा जाता है कि इन्होंने ७० से कम पुस्तकें नहीं लिखी हैं। निम्नांकित ग्रंथ अधिक प्रसिद्ध हैं—(१) प्रेम तरंग, (२) भाव विलास, (३) रस विलास, (४) रसानंद लहरी, (५) सुजान विनोद, (६) काव्य रसायन (पिंगल और अलंकार का ग्रंथ), (७) अष्टजाम (राग कल्पद्रुम) (मुद्रित), (८) देवमाया प्रपंच (नाटक), (९) प्रेम दीपिका, (१०) सुमिल विनोद, (११) राधिका विलास। गार्सां द तासी (भाग १, पृष्ठ १५७) बार्ड (भाग २, पृष्ठ ४८०) का हवाला देता हुआ इन्हें देवराज कहता है और लिखता है कि यह नखशिख के रचयिता थे, जो कि ऊपर के गिनाए गए ग्रंथों में से संभवतः कोई है।

टि०—देव का जन्म सं० १७३० में हुआ था। १६ वर्ष की अवस्था में सं० १७४६ में इन्होंने भाव विलास की रचना की थी। अतः ग्रियर्सन में दिया इनका समय अशुद्ध है। यह समानेगाँव जिला मैनपुरी के रहनेवाले नहीं थे। इनका जन्म इटावा में द्योसरिहा कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में हुआ था। २९ वर्ष की वय में यह मैनपुरी जिले के कुसमड़ा नामक गाँव में आ बसे थे, जहाँ इनके वंशज आज तक हैं। देव माया प्रपंच किसी दूसरे देव की रचना है। तासी के देवराज के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता।

—सर्वेक्षण ३६०

१४१. हरीराम—जन्म १६२३ ई०

नखशिख के रचयिता। संभवतः पिंगल (राग कल्पद्रुम) के भी रचयिता यह वही हरीराम कवि हैं, जिनका उल्लेख करते हुए शिव सिंह ने इन्हें १६५१ ई० में उत्पन्न (? उपस्थित) कहा है।

टि०—सरोज में नखशिख के रचयिता हरीराम को प्राचीन कह कर इन्हें सं० १६८० में उ० कहा गया है।

—सर्वेक्षण संख्या ९९१

पिंगल वाले हरीराम का समय १७०८ दिया गया है। इनका छंद रत्नावली नामक पिंगल ग्रंथ सं० १७९५ में डोडवाना, जोधपुर में रचा गया था। इनका नाम हरीरामदास है। यह निरंजनी संप्रदाय के थे। हो सकता है इन्हीं हरीरामदास निरंजनी ने नखशिख भी लिखा रहा हो।

—सर्वेक्षण संख्या ९९२

१४२. सुंदरदास कवि—ग्वालियर के ब्राह्मण। १६३१ ई० में उपस्थित।

काव्य निर्णय, सुंदरी तिलक। यह बादशाह शाहजहाँ के दरबार में थे। पहले इन्हें 'कविराय' की तदनंतर 'महा कविराय' की उपाधि मिली थी। इनका प्रमुख ग्रंथ साहित्य संबंधी है, जिसका नाम 'सुंदर श्रृंगार' है और जिसमें नायिका भेद है। यह सिंहासन बत्तीसी (राग कल्पद्रुम) के एक ब्रज भाषा अनुवाद के भी कर्ता हैं। यही लल्लू जी लाल के उक्त ग्रंथ के हिंदुस्तानी अनुवाद का मूल आधार है। इन्होंने ज्ञान समुद्र नामक एक दार्शनिक ग्रंथ भी लिखा है। गार्सां द तासी (भाग १, पृष्ठ ४८२) के अनुसार यह 'सुन्दर विद्या' नामक एक और ग्रंथ के भी रचयिता हो सकते हैं।

पुनश्चः—

सुन्दर श्रृंगार की तिथि सं० १६८८ (१६३१ ई०) दी गई है।

टि०—सिंहासन बत्तीसी का वह ब्रजभाषानुवाद जिसका सहारा लल्लू जी लाल ने लिया, संभवतः इन्हीं सुन्दर दास का किया हुआ है। 'ज्ञान समुद्र' दादू के शिष्य संत सुंदरदास की रचना है। तासी द्वारा उल्लिखित 'सुंदर विद्या' के सम्बन्ध में कुछ कहना संभव नहीं।

—सर्वेक्षण ८७६.

१४३. चिंतामणि त्रिपाठी—टिकमापुर, जिला कान्हपुर के। १६५० ई० में उपस्थित।

काव्य निर्णय, सत्कविगिराविलास। यह भाषा साहित्य के बड़े आचार्यों में गिने जाते हैं। दोआब में यह दंत कथा है कि इनके पिता बराबर देवी के मंदिर में दर्शन-पूजनार्थ जाया करते थे। मंदिर अब भी टिकमापुर से एक मील की दूरी पर दिखाया जाता है। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर एक दिन देवी प्रकट हुई और चार नरमुण्ड उन्हें दिखाकर बोलीं कि ये चारों तेरे पुत्र

रूप में उत्पन्न होंगे। ऐसा ही हुआ और उनके चार पुत्र हुए—(१) चिंतामणि, (२) भूषण, (३) मतिराम, और (४) जटाशंकर उपनाम नीलकंठ। इनमें से अंतिम एक संत का आशीर्वाद पाकर कवि हुए, शेष तीन संस्कृत का अध्ययन कर इतने बड़े पंडित हुए कि कहा जाता है कि इनकी कीर्ति प्रलय काल तक रहेगी। सीतल और बिहारी लाल १८४८ ई० में जीवित थे तथा रामदीन मतिराम के वंशज थे। चिंतामणि दीर्घकाल तक नागपुर में सूर्यवंशी भोंसला मकरंद शाह के दरबार में रहे। इनके नाम पर इन्होंने पिंगल का एक बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रंथ 'छन्द विचार' नाम का लिखा। इन्होंने (२) काव्य विवेक, (३) कवि कुल कंठाभरण, (४) काव्य प्रकाश और (५) एक रामायण भी लिखा। रामायण कवित्त और अन्य छन्दों में रचित सुंदर ग्रंथ है। इनके आश्रय दाता थे—रुद्र साहि सुलंकी, बादशाह शाहजहाँ (१६२८-१६५८ ई०) और जैनदीन अहमद (संख्या १४४)। यह प्रायः मनिलाल छाप रखा करते थे। शिवसिंह ही द्वारा उल्लिखित एक दूसरे चिंतामणि भी संभवतः यही हैं।

टि०—नागपुर में चिंतामणि के समय में मकरंद शाह नामक कोई भोंसला राजा नहीं था और न तो यह उस समय मराठों के अधिकार ही में था। यह मकरन्दशाह संभवतः शिवाजी के पितामह हैं, जो मालो जी के नाम से प्रसिद्ध हैं और भूषण ने जिनका उल्लेख 'माल मकरन्द' नाम से किया है।

—सर्वेक्षण २२१.

चिंतामणि २ (सरोज सर्वेक्षण २२२) के इन प्रसिद्ध चिंतामणि से अभिन्न होने का कोई प्रमाण नहीं।

१४४. जैनदीन अहमद—जन्म १६७९ (?) ई०

यह स्वयं कवि और कवियों के आश्रयदाता थे। इनके आश्रित कवियों में चिंतामणि त्रिपाठी (संख्या १४३) टिकमापुर वाले का उल्लेख किया जा सकता है।

टि०—यदि जैनुद्दीन अहमद चिंतामणि के आश्रयदाता हैं, तो १६७९ ई० (सरोज सं० १७३६ वि०) इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। यह इनका उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण २६९

१४५. भूखन त्रिपाठी—टिकमापुर जिला कान्हपुर के। १६६० ई० में उपस्थित।

काव्य निर्णय, हजारा, राग कल्पद्रुम। यह चिंतामणि त्रिपाठी (संख्या १४३) के भाई थे; और रौद्र, वीर, भयानक रस में अत्यन्त सुन्दर लिखते थे।

प्रारम्भ में यह ६ महीने तक परना [पन्ना] के राजा छत्रसाल (संख्या १९७) के दरबार में रहे। तदनन्तर यह सितारा के शिवराज सुलंकी के यहाँ गए, जहाँ इनका बहुत सन्मान हुआ और अपनी कविताओं के लिए इन्हें अनेक बार अत्यधिक पुरस्कार मिले। एक बार तो इन्हें ५ हाथी और २५ हजार रुपए केवल एक छन्द पर मिले थे। अपने ढंग की कविताओं में इनकी शिवराज पर लिखी कविताएँ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इस राजा से पुरस्कृत हो यह घर लौटे। रास्ते में यह परना होते हुए आए। यह सोचकर कि शिवराज के इतना मैं कवि को दे नहीं सकता, छत्रसाल ने रुपया देने की अपेक्षा, इनकी पालकी में अपना कंधा लगा दिया। यह घटना कवि के मुख से सद्यः निःसृत कुछ बहुत ही प्रसिद्ध छन्दों का कारण है। कुछ दिनों घर पर रहने के अनन्तर, शिवराज की प्रशंसा करते हुए, यह सारे राजपूताना में घूमे। अंत में यह कुमाऊँ पहुँचे और वहाँ के राजा की प्रशंसा में एक कवित्त पढ़ा। राजा ने सोचा कि भूषण पुरस्कार पाने की लालच से आए हैं और शिवराज द्वारा प्रदत्त संपूर्ण वैभव की कहानी सारी की सारी कोरी गप है। अतः उन्होंने हाथी घोड़े और रुपये का एक अच्छा पुरस्कार दिया। इस पर भूषण ने जवाब दिया, "इसकी अब भूख[1] नहीं। मैं तो यह देखने आया था कि शिवराज की कीर्ति यहाँ तक पहुँची है अथवा नहीं।"

इनके प्रमुख ग्रंथ हैं—(१) शिवराज भूषण (२) भूषण हजारा (३) भूषण उल्लास, और (४) दूषण उल्लास। कालिदास के हजारा में इनकी सभी रसों में कुल ७० कविताएँ हैं।

पुनश्च :—

मतिराम त्रिपाठी (संख्या १४६) की एक लघु कविता से ज्ञात होता है कि कुमाऊँ के राजा का नाम उदोतचंद था।

१४६. मतिराम त्रिपाठी—टिकमापुर जिला कान्हपुर के। १६५०–१६८२ ई० के लगभग उपस्थित थे।

काव्य निर्णय, राग कल्पद्रुम, सुंदरी तिलक, सत्कविगिराविलास। यह चिंतामणि त्रिपाठी (संख्या १४३) के भाई थे। यह एक दरबार से दूसरे दरबार में जाते रहे और भ्रमणशील जीवन बिताते रहे।

इनके श्रेष्ठतम ग्रंथ हैं—(१) ललित ललाम—अलंकार संबंधी ग्रंथ, जिसको इन्होंने बूँदी के राव भावसिंह (१६५८–१६८२ ई०; देखिए, टाड, भाग २, पृष्ठ ४८१; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ५२७) के नाम पर लिखा।

---

१. यह कवि के नाम 'भूषण' पर श्लेष (Pun) है।

(२) छंदसार—श्री नगर के फतहसाहि बुँदेला के नाम पर पिंगल ग्रंथ। और

(३) रसराज (राग कल्पद्रुम)—नायिका भेद का ग्रंथ।

देखिए गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ ३३२.

टि०—छंदसार प्रसिद्ध भूषण के भाई, कश्यप गोत्रीय मतिराम की रचना नहीं है। यह बनपुर, जिला कानपुर के निवासी, वत्सगोत्रीय विश्वनाथ त्रिपाठी के पुत्र मतिराम की रचना है। इसका असल नाम 'वृत्त कौमुदी' है। इसकी रचना सं० १७५८ कार्तिक शुक्ल १३ को सरूप सिंह बुंदेला के लिए हुई थी, जो प्रसिद्ध मधुकरशाह बुंदेला के वंशज थे।

—सर्वेक्षण ६९५.

१४७. शंभुनाथ सिंह—सितारा के राजा शंभुनाथ सिंह सुलंकी, उर्फ शंभु कवि उर्फ नाथ कवि, उर्फ नृप शंभु। १६५० ई० के आसपास उपस्थित।

सुंदरी तिलक, सत्कविगिरा विलास। कवियों के आश्रयदाता ही नहीं, स्वयं एक प्रसिद्ध ग्रंथ के रचयिता। यह शृङ्गार रस में है और इसका नाम 'काव्य निराली' है। यह नायिका भेद के प्राप्त ग्रंथों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह मतिराम त्रिपाठी (संख्या १४६) के परम मित्र थे।

टि०—शंभुनाथ सोलंकी क्षत्रिय नहीं थे, मराठे थे। सरोज में इस कवि के संबंध में लिखा है:—

"शृङ्गार की इनकी काव्य निराली है। नायिका भेद का इनका ग्रंथ सर्वोपरि है।"

इसीका भ्रष्ट अंगरेजी अनुवाद ग्रियर्सन ने किया है और इनके काव्य ग्रंथ का नाम 'काव्य निराली' ढूँढ़ निकाला है। इनका नखशिख रत्नाकर जी द्वारा संपादित होकर भारत जीवन प्रेस, काशी से प्रकाशित हो चुका है।

१४८. नीलकंठ त्रिपाठी—उपनाम जटाशंकर, टिकमापुर जिला कान्हपुर के। १६५० ई० के आसपास उपस्थित।

काव्य निर्णय, सत्कविगिराविलास। चिंतामणि त्रिपाठी (सं० १४३) के भाई। इनके किसी भी पूर्ण काव्य ग्रंथ का पता नहीं।

१४९. परतापसाहि[1]—बुंदेलखंडी भाट, १६३३ (?) ई० में उपस्थित।

---

१. 'साहि' या 'शाहि' शब्द वही है, जो 'शाह' है, जो पुराना रूप है। इसके अंतिम 'इ' में उस पदांत 'य' का अवशेष है जो ज़ेंद क्षयथिय (Zend kshayathiya) में पाया जाता है और जो आधुनिक पारसी 'शाह' से अब उड़ गया है। देखिए 'जोरोस्ट्रियन

यह रतनेश (सं० १९९) कवि के पुत्र थे और परना के राजा छत्रसाल (सं० १९७) के दरबार में थे। इन्होंने भाषा साहित्य का एक ग्रंथ 'काव्य विलास' नाम का लिखा। विक्रम साहि के संकेत पर इन्होंने भाषा भूषण और बलिभद्र (सं० १३५) के नखशिख का तिलक किया। इनके एक अन्य ग्रंथ का नाम 'विशार्थ कौमुदी' है। मैं यहाँ उल्लिखित भाषा भूषण ग्रंथ को नहीं जानता। इस नाम का एक मात्र ग्रंथ, जिससे मेरा परिचय है, १८ वीं शती के अंत में जसवंत सिंह (सं० ३७७) द्वारा लिखा गया था, और जिसकी प्रायः टीकाएँ होती रही हैं। ऊपर निर्दिष्ट विक्रमसाहि कौन हैं, यह भी मुझे नहीं मालूम। यह चरखारी के प्रसिद्ध विक्रमसाहि (सं० ५१४) नहीं हो सकते, यदि उक्त विवरण, जो वही है जो शिव सिंह सरोज में दिया गया है, ठीक हो। चरखारी के विक्रम १८०४ ई० में उपस्थित थे। यदि इन्हीं की ओर संकेत किया गया है, तो कवि ने छत्रसाल (१६५० ई० में उपस्थित) का दरबार न किया होगा और ऊपर उल्लिखित भाषा भूषण तब जसवंत सिंह का होगा। विषय संदिग्ध है, अतः मैं फिलहाल प्रताप को अभी यहीं अस्थायी रूप से रख रहा हूँ।

पुनश्च—

मुझे रतन या रतनेश नाम से ज्ञात बुंदेलखंड के दो राजाओं का पता है। एक की प्रशंसा भिखारीदास (संख्या ३४४) ने 'प्रेम रत्नाकर' की भूमिका में, जो १६८५ ई० में लिखा गया, की है। दूसरा विक्रमसाहि (सं० ५१४) के बाद १८२९ ई० में चरखारी का राजा हुआ। यह १८१६ ई० में उत्पन्न हुआ और १८६० ई० में दिवंगत हुआ। इनका उल्लेख ५१९-५२२ और ५२४ संख्याओं में हुआ है। विक्रमसाहि १७८५ ई० में उत्पन्न हुए और १८२८ ई० में सुरलोक सिधारे। यदि प्रतापसाहि इस रतनेश के पुत्र थे, तो वे विक्रमसाहि के पौत्र होंगे, और उनके समसामयिक नहीं हो सकते, क्योंकि इनके पिता विक्रमसाहि की मृत्यु के समय केवल १२ वर्ष के थे। परंतु फिर भी चरखारी से सुनने में आता है कि एक प्रतापसाहि चरखारी में विक्रमसाहि के शासनकाल में रहते थे। (किस सूत्र से, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता)। भाषा भूषण सामान्यतया १८ वीं शती के अंत में लिखा हुआ माना जाता है। इसका मैंने बंबई-संस्करण देखा है, जिसमें इसके कर्ता जसवंत सिंह को मारवाड़ का जसवंत सिंह (१६३८-१६८१ ई०) माना गया है।

डीटीज इन इन्डो सीथिक क्वायन्स', लेखक ए० स्टीन, 'द ओरिएंटल एंड बेबीलोनियन रेकर्ड' अगस्त १८८७, पृष्ठ ६ से पुनर्मुद्रित।

ग्रंथ के भीतर दी हुई तिथि से इनका मेल खा जाता है। मैं शिवसिंह के इस कथन को अस्वीकार करने को तत्पर हूँ कि यह कवि छत्रसाल के दरबार में था और मैं इसे संख्या ५१८ के पश्चात् रक्खूँगा तथा १८३० ई० के आसपास उपस्थित मानूँगा। इनका सम्बन्ध ५१९ संख्या वाले रतनेश से एक खुली बात रहनी चाहिए। रतन नाम का एक कवि भी हुआ है। देखिए सं० १५५।

टि०—प्रताप साहि बन्दीजन थे। यह चरखारी के राजा विक्रम साहि और रतनसिंह के दरबार में थे। इनके पिता का नाम रतनेश था, जो कहीं के राजा महाराजा नहीं थे, सामान्य बन्दोजन कवि थे। इनका रचनाकाल सं० १८८२-९६ वि० है। भाषाभूषण, जिसकी टीका प्रतापसाहि ने की, जोधपुर नरेश महाराज जसवंत सिंह का ही है। 'विज्ञार्थ कौमुदी' का असल नाम 'व्यंगार्थ कौमुदी' है।

—सर्वेक्षण ४४८

१५०. स्रीपति कवि—पयागपुर, जिला बहराइच के। जन्म १६४३ ई०।

सूदन, सुंदरी तिलक। यह भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। इनके सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ हैं—(१) काव्य कल्पतरु, (२) काव्य सरोज, (३) श्रीपति सरोज।

टि०—श्रीपति कालपी के रहने वाले थे। श्रीपति सरोज और काव्य सरोज एक ही ग्रंथ के दो विभिन्न नाम हैं। इस ग्रन्थ का रचनाकाल सं० १७७७ वि० है, अतः ग्रियर्सन का दिया समय भ्रष्ट है। सरोज में इनके ग्रंथ का नाम 'काव्य कल्पद्रुम' दिया गया है, न कि 'काव्य कल्पतरु'।

—सर्वेक्षण ८६५

१५१. सरस्वती कवीन्द्र—बनारस के ब्राह्मण, १६५० ई० में उपस्थित।

यह संस्कृत साहित्य के पंडित थे और बादशाह शाहजहाँ (१६२८-१६५८ ई०) की प्रेरणा से यह भाषा में भी कविताएँ लिखने लगे थे। इनका इस प्रकार का प्रमुख ग्रन्थ है 'कवींद्र कल्प लता,' जिसमें दारा शुकोह और बेगम साहिबा की प्रशंसा में अनेक कविताएँ हैं।

१५२. सिवनाथ कवि—बुन्देलखंडी, १६६० ई० में उपस्थित।

यह परना (पन्ना) के राजा छत्रसाल (संख्या १९७) के पुत्र राजा जगतसिंह बुन्देला के दरबार में थे और इन्होंने रसरंजन नाम का एक काव्य ग्रंथ लिखा है। यह शिवसिंह द्वारा वर्णित विवरण है। लेकिन टाड के अनुसार छत्रसाल बुन्देला के जगत नाम का कोई पुत्र नहीं था। देखिए

टाड का राजस्थान, भाग २, पृष्ठ ४८१, कलकत्ता संस्करण, भाग २, पृष्ठ ५२७। हंटर कृत S. V. जैतपुर के गजेटियर में छत्रसाल के एक पुत्र जगत राज का उल्लेख है। रिपोर्ट आफ़ आर्केआलोजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया, भाग १७, पृष्ठ १०३ में शिव (शिउ) पति नाम के एक कवि की रचनाएँ उद्धृत हैं, जो कि उसी समय में हुआ था।

टि०—ग्रियर्सन में दिया कवि का समय अशुद्ध है। शिवनाथ पन्ना नरेश महाराज छत्रसाल के पुत्र जगतराज या जगतसेन (शासनकाल सं० १७८८–१८-१५) के आश्रित थे। टाड में यदि छत्रसाल बुंदेला के किसी पुत्र जगतराज का उल्लेख नहीं है, तो इससे जगतराज का अस्तित्व असिद्ध नहीं हो सकता।

—सर्वेक्षण ८४६

१५३. तुलसी कवि—जदुराय के पुत्र। १६५५ ई० में उपस्थित।

यह स्वयं साधारण कवि थे; किन्तु १६५५ ई० में इन्होंने 'कवि माला' नामक एक असाधारण काव्य संग्रह प्रस्तुत किया था। इसमें ७५ कवियों की रचनाएँ संकलित हैं, जो संवत् १५०० (१४४३ ई०) और सं० १७०० (१६४३ ई०) के बीच हुए हैं।

१५४. मंडन कवि—जैतपुर बुदेलखंड के। जन्म १६५९ ई०।

काव्य निर्णय, सुन्दरी तिलक। यह राजा मंगद सिंह के दरबार में थे। इन्होंने साहित्य सम्बन्धी तीन ग्रंथ (१) रसरत्नावली, (२) रस विलास, (३) नैन पचासा लिखे।

टि०—मंडन ने खानखाना की प्रशंसा की है, अतः यह संवत् १६८२ के आसपास उपस्थित थे। १६५९ ई० इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता।

—सर्वेक्षण ६९६

१५५. रतन कवि—जन्म १६८१ ई०।

यह परना (पन्ना) के राजा सभासाहि के दरबार में थे और इन्होंने 'रस-मंजरी' का भाषा में अनुवाद किया। सम्भवतः यह वही श्री नगर बुदेलखण्ड के रतन हैं, जो श्री नगर बुंदेलखंड के राजा फतह साहि बुन्देला के दरबार में थे। इस राजा के नाम पर इन्होंने भाषा साहित्य के दो ग्रंथ 'फ़तेशाह भूषण' और 'फ़ते प्रकाश' लिखे। हमीरपुर के डिप्टी कमिश्नर श्री ह्विश सूचित करते हैं कि फतहसाहि छत्रसाल (सं० १९७) के वंशज थे, पर कभी भी सिंहासनासीन नहीं हुए।

टि०—रतन बुन्देलखण्डी का समय एकदम अशुद्ध है। इनके आश्रय-दाता सभा साहि का शासन काल सं० १७९६–१८०९ वि० है। यह सभा साहि के पुत्र हिन्दूपत (शासनकाल सं० १८१३–३४ वि०) के भी आश्रित थे। इन्होंने सं० १८१७ में हिन्दूपत के लिए अलंकार दर्पण नामक ग्रंथ लिखा।

—सर्वेक्षण ७६७.

फतहसाह के दरबारी रतन कवि से यह भिन्न हैं। फतहसाह न तो बुन्देला थे और न बुन्देलखण्ड के किसी भूखण्ड के शासक ही। यह गढ़वाल के अन्तर्गत श्री नगर के शासक (सं० १७४१-७३ वि०) थे।

—सर्वेक्षण ७६६

१५६. मुरलीधर कवि—जन्म (? उपस्थिति) १६८३ ई०।

हजारा, सुंदरी तिलक। यही संभवतः राग कल्पद्रुम के मुरली कवि और शिवसिंह द्वारा बिना तिथि दिए हुए श्रीधर (सं० १५७) के साथ संयुक्त कवि विनोद नामक पिंगल ग्रंथ के सह-रचयिता के रूप में वर्णित 'मुरलीधर कवि' भी हैं।

टि०—यह मुरलीधर सरोज सर्वेक्षण के ६५८ संख्यक कवि हैं, जिनको वहाँ सं० १७४० में उ० कहा गया है। इनकी रचना हजारा में है, अतः सं० १७४० या १६८३ ई० इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। यह उपस्थिति काल है। यह मुरलीधर और श्रीधर दो भिन्न व्यक्ति नहीं हैं। कवि का नाम श्रीधर मुरलीधर (सरोज सर्वेक्षण ८६८) है। एक व्यक्ति के दो नाम हैं। श्रीधर मुरलीधर ने सं० १७६९ में 'जंगनाम' की रचना की थी। इन्हीं के कवित्त हजारा में थे। अतः यह सरोज के मुरलीधर (सर्वेक्षण ६५८) से अभिन्न हैं।

१५७. स्रीधर कवि—(?) १६८३ ई० में उपस्थित।

सुंदरी तिलक। कवि विनोद नामक पिंगल ग्रंथ को, मुरलीधर (संख्या १५६) के साथ मिलकर लिखने वाले।

टि०—१५७ संख्यक श्रीधर और १५६ संख्यक मुरलीधर एक ही कवि हैं, सह-श्रमी दो कवि नहीं। १६८३ ई० इनका उपस्थितिकाल है, इसमें संदेह नहीं।

—सर्वेक्षण ८६८

१५८. बारन कवि—भूपाल के। जन्म १६८३ ई०।

यह राजगढ़ के नवाब शुजाउलशाह के दरबार में थे। भाषा साहित्य का 'रसिक विलास' नामक एक बहुत ही बढ़िया ग्रंथ इन्होंने लिखा है।

टि०—बारन ने रसिक विलास की रचना सं० १७३७ में एवं एक अन्य ग्रंथ रत्नाकर की सं० १७१२ में की थी। अतः १६८३ ई० या सं० १७४० इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। यह उपस्थिति काल हो सकता है।

—सर्वेक्षण ५६५

१५९. कालिदास त्रिवेदी--बनपुरा, दोआब के। १७०० ई० के लगभग उपस्थित।

काव्य निर्णय, सत्कविगिराविलास। यह दोआब के एक अच्छे और प्रसिद्ध कवि थे। प्रारंभ में यह बादशाह औरंगजेब की हाजिरी में गोलकुंडा और दक्खिन के अन्य कई स्थानों पर कई वर्षों तक रहे। तदनंतर यह जंबू के राजा जोगाजीत सिंह रघुवंशी के यहाँ रहे, जहाँ इनके नाम पर 'वधू विनोद' नामक साहित्य का एक अच्छा ग्रंथ लिखा! इनका सबसे प्रख्यात ग्रंथ एक संग्रह है, जिसका नाम कालिदास हजारा है, (मूल ग्रंथ में Haj से संकेतित), जिसमें इन्होंने १४२३ और १७१८ ई० के बीच के २१२ कवियों की १००० कविताएँ संकलित की हैं। शिव सिंह लिखते हैं कि मैंने अपने सरोज के प्रणयन में इस ग्रंथ से अत्यधिक सहायता ली है (जो कि वास्तविकता प्रतीत होती है)। आगे वह और लिखते हैं कि इनके पुस्तकालय में इनका एक अन्य सुन्दर ग्रंथ 'जंजीराबंद' भी है।

इनके पुत्र उदयनाथ कवीन्द्र (सं० ३३४) और पौत्र दूलह (सं० ३५८) दोनों प्रसिद्ध कवि थे।

पुनश्च—

अपने वधू विनोद में, जिसका रचनाकाल इन्होंने संवत् १७४९ (१६९२ ई०) दिया है, वे लिखते हैं कि जोगाजीत के पिता वृत्रि सिंह थे।

१६०. सुखदेव मिसर—कविराज, कंपिला के। १७०० ई० के आसपास उपस्थित।

काव्य निर्णय, सत्कविगिराविलास, सुन्दरी तिलक। यह भाषा साहित्य के आचार्यों में परिगणित हैं। यह गौड़ के राजा अर्जुन सिंह के पुत्र राजा राजसिंह के दरबार में थे और उन्हीं से इन्होंने कविराज उपाधि पाई। यहाँ इन्होंने 'वृत्तविचार' नामक पिंगल ग्रंथ रचा, जो कि अपने ढंग के ग्रंथों में सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है। यहाँ से यह अमेठी के राजा हिम्मत सिंह के यहाँ गए, जहाँ इन्होंने 'छन्द विचार' नामक एक दूसरा पिंगल ग्रंथ लिखा। वहाँ से यह औरंगजेब के मन्त्री फाजिल अली खाँ के यहाँ गए, जहाँ भाषा साहित्य का अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'फाजिल अली प्रकाश' रचा। (गार्सा द तासी भाग १,

पृष्ठ ४७९ में बार्ड के 'ए व्यू' इत्यादि भाग २, पृष्ठ ४२१ का हवाला देते हुए बड़े संकोच के साथ इसका सम्बन्ध किसी सुकदेव से जोड़ा गया है)। यह 'अध्यात्म प्रकाश' और 'दशरथ राय' के भी कर्ता थे। इनके सबसे अधिक प्रसिद्ध शिष्य कंमिला के जैदेव (सं० १६१) हैं। देखिए ६६१

टि०—'गौड़ के राजा अर्जुन सिंह' नहीं, राजा अर्जुन सिंह गौड़।

—सर्वेक्षण ८३४

१६१. जैदेव कवि—कंपिला के। १७०० ई० के आसपास उपस्थित।

यह नवाब फाजिल अली खाँ के दरबार में थे और कंपिला के सुखदेव मिसर (सं० १६०) के शिष्य थे।

१६२. नाथ—१७०० ई० के आसपास उपस्थित।

सुन्दरी तिलक। फाजिल अली खाँ के दरबार में थे। यह संभवतः वही नाथ कवि हैं, जो भगवन्त राय खींची (सं० २३३), जो १७६० ई० में दिवंगत हुए, के यहाँ थे। (देखिए संख्या ६८, १४७, ४४०, ६३२, ८५०)।

टि०—यह नाथ (सरोज नाथ २, सर्वेक्षण ४३१) नवाब फजल अली के यहाँ थे, न कि फाजिल अली के यहाँ। अतः अन्य संभावनाएँ भी व्यर्थ।

—सर्वेक्षण ४३१

अध्याय ८

तुलसीदास के अन्य परवर्ती (१६००-१७०० ई०)

भाग १. धार्मिक कवि

[यथासम्भव कालक्रम से]

१६३. दादू—नरैना, अजमेर के धुनिया। १६०० ई० में उपस्थित।

दादूपंथ के प्रवर्तक। यह अहमदाबाद में पैदा हुए थे, किन्तु अपने बारहवें वर्ष में साँभर पहुँचा दिए गए। अन्त में, यह साँभर से चार कोस दूर नरैना में बस गए, जहाँ इन्हें प्रेरणा मिली। इनके प्रमुख ग्रन्थ हैं—दादू की बानी और दादूपंथी ग्रंथ। यह अंतिम, लेफ्टिनेंट जी० आर० सिडन्स द्वारा जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, भाग ६, पृष्ठ ४८० और ७५० में अनूदित होकर प्रकाशित हुआ है। देखिए विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज़, भाग १, पृष्ठ १०३ और गार्सां द तासी। इनके एक शिष्य 'सुंदर सांख्य' के रचयिता सुंदर थे। बानी में २०,००० चरण हैं। जनगोपाल लिखित दादू के जीवन चरित में ३००० पंक्तियाँ हैं। सारे राजपूताना और अजमेर में ५२ शिष्यों ने, इनकी शिक्षा का प्रसार किया। इस प्रकार गरीबदास की कविताएँ और भजन ३२,००० पंक्तियों में हैं। कहा जाता है कि जैसा (Jaisa) ने १,२४,००० चरण, प्रयागदास ने ४८,००० चरण, रज्जब जी ने ७२,००० चरण, बखना जी ने २०,००० चरण, शंकरदास ने ४,४०० चरण, बाबा बनवारीदास ने १२,००० चरण, सुंदरदास ने १,२०,००० चरण और माधवदास ने ६८,००० चरण लिखे। देखिए, जयपुर के जान ट्रेल द्वारा लिखित 'मेमोरैंडम आन भाषा लिटरेचर', १८८४ ई०।

टि०—दादू का जन्म सं० १६०१ में एवं देहावसान सं० १६६० में हुआ।

—हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ ८५.

१६४. सुंदरदास कवि—मेवाड़ के। १६२० ई० के आसपास उपस्थित।

यह दादू (सं० १६३) के शिष्य थे और इन्होंने 'सुंदर सांख्य' नामक शांत रस का ग्रंथ लिखा।

टि०—इनका संबंध जयपुर से है, न कि मेवाड़ से। जयपुर राज्य के अंतर्गत दयोसा नगरी में इनका जन्म चैत्र शुक्ल ९, सं० १६५३ को हुआ था। इनकी मृत्यु सं० १७४६ में कार्तिक सुदी ८ को हुई। 'सुंदर सांख्य' नाम का इनका कोई ग्रंथ नहीं।

—सर्वेक्षण ८७७.

१६५. सेनापति कवि—वृन्दावनी। जन्म १६२३ ई०

हजारा, सूदन। यह वृन्दावन में रहनेवाले भक्त थे और काव्य कल्पद्रुम नामक एक प्रामाणिक ग्रन्थ के रचयिता थे।

टि०—१६२३ ई० (सं० १६८०) सेनापति का उपस्थिति काल है, न कि उत्पत्ति काल। इनके उपलब्ध ग्रन्थ का नाम 'कवित्त रत्नाकर' है। संभवतः काव्य कल्पद्रुम भी इसीका एक अन्य नाम है। इसकी रचना सं० १७०६ में हुई थी।

--सर्वेक्षण ९३०

१६६. स्रीधर कवि—राजपूताना के। जन्म १६२३ ई०।

सूदन (?)। दुर्गा की प्रशस्ति में लिखित 'भवानी छन्द' नामक ग्रन्थ के रचयिता।

टि०—श्रीधर ने सं० १४५७ में 'रणमल्ल छन्द' की रचना की थी, सरोज और ग्रियर्सन दोनों के संवत अशुद्ध हैं। कवि दो सौ वर्ष और पुराना है।

—सर्वेक्षण ८६९

१६७. प्राननाथ—परना [पन्ना], बुन्देलखण्ड के क्षत्रिय। १६५० ई० में उपस्थित।

प्राणनाथी संप्रदाय के प्रवर्तक हैं, जो कि हिंदू और मुसलमानों को मिलाने का एक प्रयत्न है। यह परना के छत्रसाल (१६५० ई० में उपस्थित) (संख्या १९७) के दरबार में थे। देखिए, ग्राउस—जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, भाग ४८, पृष्ठ १७१, जहाँ इनका एक ग्रन्थ (क़ियामत नामा) दिया गया है, जिसका अनुवाद भी वहाँ है। इनको १८ वीं शती के प्रारम्भ में रखकर श्री ग्राउस ने गलती की है, क्योंकि छत्रसाल की मृत्यु १६५८ में हो गई थी। प्राणनाथ १४ ग्रंथों के रचयिता हैं, जिनकी सूची श्री ग्राउस द्वारा दी गई है। भाषा विचित्र है, व्याकरण तो शुद्ध हिंन्दी का है, पर पद समूह मुख्यतया अरबी फारसी का है।

टि०—छत्रसाल का जीवनकाल सं० १७०५-८८ वि० है। ऐसी स्थिति में ग्राउस का दिया समय ही ठीक है। ग्रियर्सन का समय अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण २४१

१६८. **बीरभान**—बिजहसीर के। १६५८ ई० में उपस्थित।

साध संप्रदाय के प्रवर्तक। किसी उदयदास से रहस्यमय ढंग से इन्होंने साध सम्प्रदाय के सिद्धान्त पाए, जिनका इन्होंने प्रचार किया। अन्यों के अनुसार यह जोगीदास के शिष्य थे। इनके अलौकिक गुरु ने जो उपदेश इन्हें दिए, वे कबीर के ढंग के फुटकर सबद और साखी रूप में थे। वे लघु ग्रंथ रूप में एकत्र कर लिए गए और धार्मिक समारोहों के अवसर पर पढ़े जाते हैं। देखिए, विलसन रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज, भाग १, पृष्ठ ३५४ और गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ १२५;

१६९. **गोविन्द सिंह**—श्री गुरु गोविन्द सिंह। जन्म १६६६ ई०।

सिक्खों के सैनिक धर्म के प्रवर्तक। यह सोढ़ी खत्री जाति के पंजाबी[1] थे और पटना शहर में, आनन्दपुर में पूस सुदी ७, सम्वत् १७२३ (१६६६ ई०) को पैदा हुए थे। इनके पिता गुरु तेग बहादुर थे जो औरंगजेब द्वारा दिल्ली बुलाए गए थे और इसलाम स्वीकार करने के लिए इन पर दबाव डाला गया था। तेग बहादुर की मृत्यु १६७५ ई० में (अगहन सुदी ५, सं० १७३२) हुई। कुछ लोग कहते हैं कि उन्होंने आत्महत्या कर ली, दूसरे लोग कहते हैं कि वह औरंगजेब द्वारा मार डाले गए। जब उक्त बादशाह ने हिन्दुओं पर अत्याचार करना प्रारम्भ किया, गोविन्द सिंह ने अनुभव किया कि वे परमात्मा द्वारा, इस पृथ्वी पर अत्याचारियों का दमन करने के लिए, भेजे गए हैं। १६९७ ई० के ग्रीष्म में (चैत सुदी १, सं० १७५४) उन्होंने कठिन तप प्रारम्भ किया और पंजाब के जिले होशियारपुर में स्थित नैना देवी की पहाड़ियों पर काली देवी को बलि देने लगे। एक साल की तपश्चर्या के अनन्तर, चैत सुदी ९, संवत् १७५५ (१६९८ ई०) को देवी प्रकट हुई और वर माँगने के लिए कहा। उन्होंने कहा, 'देवि, मुझे वर दो कि मैं सदैव सत्कर्म में लगा रहूँ, और जब मैं शत्रु से लड़ने जाऊँ, सदा विजयी होऊँ, कभी डरूँ नहीं।' देवी 'एवमस्तु' कह अन्तर्धान हो गई।

अपने शिष्यों को अपने लक्ष्य की सत्यता का विश्वास दिला देने के अनन्तर, उन्होंने न केवल अपनी बल्कि दूसरे कवियों की रचनाओं का भी एक संग्रह प्रस्तुत किया। यह ग्रन्थ साहिब (सं० २२) कहलाता है जो चार भागों में है, सभी छन्दोबद्ध :—

(१) सुनीति प्रकाश—नीति

(२) सर्व लोह प्रकाश—नानक (संख्या २२) की रचनाओं की टीका

---

१. पटना के सिक्ख मन्दिर के ट्रस्टी राय जयकृष्ण का मैं इन सूचनाओं के लिए कृतज्ञ हूँ।

(३) प्रेम सुमार्ग—सिक्ख धर्म से सम्बन्धित; यह गोविन्द के जीवन और लक्ष्य का संक्षिप्त विवरण है।

(४) बुद्ध सागर—भजन

गोविन्द सिंह व्रजभाषा, पंजाबी और फारसी में अच्छा लिखते थे और प्रसिद्ध कवि थे।

देखिए गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ १९१। विलसन के अनुसार, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज़, भाग १, पृष्ठ २७४।

सम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ 'दस पादशाह का ग्रन्थ' नाम से मशहूर है।

टि०—'ग्रन्थ साहब' की रचना पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने की थी। गुरु गोविन्द सिंह के प्रायः सम्पूर्ण ग्रंथों का संग्रह 'दशम ग्रंथ' कहलाता है।

—सर्वेक्षण १७६

१७०. खुमान—चरखारी, बुंदेलखंड के भाट। जन्म १६८३ ई०।

यह अंधे पैदा हुए थे और इन्हें कोई भी शिक्षा नहीं मिली थी। ऐसा हुआ कि एक महात्मा इनके घर आए और चार महीने ठहरने के बाद जब वह जाने लगे, चरखारी के अनेक प्रतिष्ठित और विद्वान व्यक्ति उन्हें पहुँचाने गए। सभी कुछ दूर पहुँचाकर लौट आए पर खुमान साथ ही लगे रहे, संत के अनेक बार कहने पर भी नहीं लौटे। खुमान का कहना था, 'मैं क्यों घर लौटूं? मैं अंधा हूँ, अनभिज्ञ हूँ, और घर के किसी काम का नहीं। जैसा कि लोकोक्ति है, धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।'[1] संत ने प्रसन्न होकर इनकी जिह्वा पर सरस्वती मंत्र लिख दिया और आज्ञा दी कि सर्व प्रथम मेरे कमंडल पर कविता रचो। खुमान ने तत्काल २५ छंद कह दिए और संत के चरण छू घर वापस आ गए और संस्कृत तथा भाषा में महाकाव्य (Epic) लिखने लगे।

एक बार यह ग्वालियर के राजा सेंधिया के दरबार में थे, जिसने इन्हें सारी रात जगकर संस्कृत में एक ग्रंथ लिखने को कहा। खुमान तत्पर हो गए, और एक रात में ७०० श्लोक लिखकर रख दिए।

यह दैवी-शक्ति-प्राप्त कवि समझे जाते हैं। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं—लछमन सतक और हनुमान नखशिख।

यही संभवतः वह [अज्ञातकालीन] खुमान कवि भी हैं, जिन्होंने अमरकोष (राग कल्पद्रुम) के एक भाग का छंदोबद्ध भाषानुवाद किया।

---

१. दोनों के बीच वह सदैव आता जाता रहता है।

टि०—खुमान का रचनाकाल सं० १८३०-१८८० वि० है। इनका जन्म सं० १८०० के आसपास हुआ रहा होगा। ग्रियर्सन में दिया समय अशुद्ध है। सरोज (सर्वेक्षण १३५) में इनको 'सं० १८४० में 'उ०' कहा गया है, ग्रियर्सन ने इसे १७४० समझ लिया है और उ० का अर्थ उत्पन्न करके इनका जन्मकाल सन् १६८३ ई० दिया है। सरोज के अनुसार घर लौटकर "संस्कृत और भाषा की सुंदर कविता करने लगे।" इसका अनुवाद ग्रियर्सन ने एपिक (Epic) रचना करने लगे, किया है। अमरकोष का भी भाषानुवाद इन्हीं खुमान ने किया है।

—सर्वेक्षण १३५

भाग २, अन्य कवि

[ये संबंधित आश्रयदाताओं अथवा रियासतों के अनुसार यथासंभव वर्गबद्ध हैं]

१७१. नज़ीर—आगरा के। १६०० ई० के पहले उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। पर्याप्त प्रसिद्धि-प्राप्त कवि। प्रमुख रूप से यूरोपीय पाठकों के सामने यह पहली बार श्री फ़ैलन द्वारा 'हिंदुस्तानी डिक्शनरी' की भूमिका में आए। श्री फ़ैलन का कहना है कि यह अकेले कवि हैं जिनकी रचनाएँ जनता तक पहुँची हैं और जो कुछ भी इन्होंने लिखा है, उसमें एक भी साधारण पंक्ति नहीं है। इन अत्यंत लंबे चौड़े कथनों से मैं सहमत नहीं। इनकी रचनाएँ (राग कल्पद्रुम में नज़ीर के शेर नाम से उल्लिखित) निश्चय ही कुछ लोगों में अत्यंत प्रिय हैं, परंतु यह सर्वप्रियता तुलसीदास, सूरदास, मलिक मुहम्मद जायसी और युग के अन्य महान कवियों की सर्वप्रियता के सामने कुछ नहीं है। मैं श्री फ़ैलन कृत उनकी कृतियों के साहित्यिक मूल्यांकन से भी सहमत नहीं हूँ, क्योंकि यद्यपि वे जनसाधारण की भाषा में हैं, फिर भी इतनी अश्लील एवं अ-सुरुचि पूर्ण हैं कि कोई भी यूरोपियन सुरुचि और शिक्षा का व्यक्ति उन्हें पसंद नहीं कर सकता।

टि०—नज़ीर हिंदी के कवि नहीं हैं। ये उर्दू के शायर हैं। इनका जन्म १७३५ ई० में आगरे में हुआ था। इनकी मृत्यु १६ अगस्त १८३० को हुई। ग्रियर्सन में दिया इनका समय अशुद्ध है।

—नज़ीर की बानी।

१७२. मानदास—व्रजवासी। जन्म १६२३ ई०।

राग कल्पद्रुम। यह प्रिय (Favourite) कवि थे। इनका मुख्य ग्रंथ

'रामचरित्र' नामक भाषा काव्य है जो बाल्मीकीय रामायण और हनुमान नाटक पर आधृत है।

टि०—मानदास व्रजवासी का रचनाकाल सं० १८१७-६३ है। इनके रामचरित संबंधी ग्रंथ का नाम 'राम कूट विस्तार' है, न कि राम चरित्र।

—सर्वेक्षण ६२८.

१७३. ठाकुर कवि—प्राचीन। १६४३ ई० में उपस्थित।

हजारा, सुंदरी तिलक। एक विवरण के अनुसार यह असनी फतहपुर के भाट थे और मुहम्मदशाह (१७१९-१७४८ ई०) के समय में थे। दूसरे कहते हैं कि यह बुंदेलखंड के कायस्थ थे। बुंदेलखंड में एक दंत कथा है कि एक बार छतरपुर में बुंदेले गोसाईं हिम्मत बहादुर (सं० ३७८) को मार डालने के लिए एकत्र हुए और ठाकुर ने उनके पास इन शब्दों से प्रारंभ होनेवाला एक सवैया लिख भेजा—कहिबे सुनिबे की कछू नहियाँ[1]। जिसको पाने पर, सब तितर बितर हो गए। हिम्मत बहादुर ने इस सेवा के लिए इन्हें रुपये पैसे से पुरस्कृत किया। किंतु हिम्मत बहादुर १८०० में हुए हैं, जब कि यह कविता कालिदास त्रिवेदी (सं० १५९) के हजारा में संकलित है जो कि १७०८ ई० के आसपास विरचित हुआ था। बहुत संभावना है कि इस नाम के दो कवि हुए जो एक दूसरे में घुल मिल गए हैं। साथ ही शिव सिंह का कहना है कि उनके पास उन ठाकुर कवि की सैकड़ों फुटकर कविताएँ हैं जो सं० १७०० (१६४३ ई०) में उपस्थित थे। इसीलिए प्रसंग प्राप्त कवि की उक्त तिथि निर्धारित की गई है।

टि०—वस्तुतः तीन ठाकुर हुए हैं—

(१) ठाकुर प्राचीन—यह सं० १७०० वि० में उपस्थित थे और इनकी कविता हजारा में थी।

(२) ठाकुर कायस्थ बुंदेलखंडी—इनका संबंध पन्ना दरबार से था। यह पद्माकर और हिम्मत बहादुर के समकालीन हैं, इनका जन्म ओरछा में सं० १८२३ में एवं देहावसान सं० १८८० में हुआ था।

(३) ठाकुर बंदीजन असनीवाले—यह ऋषिनाथ के पुत्र, धनीराम के पिता और सेवक के पितामह थे। यह काशीनरेश के भाई बाबू देवकीनंदन सिंह के यहाँ रहते थे। यहीं सं० १८६१ में इन्होंने बिहारी सतसई की 'सतसई बरनार्थ देवकीनंदन टीका' रची।

—सर्वेक्षण ३११

१. पूरी कविता शिव सिंह सरोज पृष्ठ १२४ पर दी गई है।

१७४. वेदांग राय—१६५० ई० के आस पास उपस्थित।

'पारसी प्रकाश' नामक ग्रंथ के रचयिता। इस ग्रंथ में हिंदुओं और मुसलमानों के महीने आदि गिनने की पद्धति अंकित है। यह बादशाह शाहजहाँ के आदेश से संकलित हुआ था। देखिए, गार्सा द तासी, भाग १, पृष्ठ ५१९.

१७५. कासीराम कवि—जन्म १६५८ ई०।

यह औरंगजेब (१६५८–१७०७ ई०) के सूबेदार निज़ामत खाँ के दरबार में थे। इनकी कविताएँ ललित कही जाती हैं।

टि०—१६५८ ई० (सं० १७१५) औरंगजेब का सिंहासनारोहण काल है। यह कवि का उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ९६

१७६. इंदरजीत त्रिपाठी—दोआब में बनपुरा के रहनेवाले। जन्म १६८२ ई०। औरंगजेब (१६५८–१७०७ ई०) के नौकर।

टि०—१६८२ ई० इनका उपस्थिति काल है, उत्पत्ति काल नहीं।

—सर्वेक्षण ५३

१७७. ईश्वर कवि—जन्म १६७३ ई०

औरंगजेब (१६५८–१७०७) के दरबार में थे। इनकी कविताएँ सरस कही गई हैं।

टि०—१६७३ ई० इनका उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ४९.

१७८. सामंत कवि—जन्म १६८१ ई०

हजारा। औरंगजेब (१६५८–१७०७ ई०) के दरबार में थे।

टि०—१६८१ ई० उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ९२१.

१७९. अबदुल जलील—बिलग्राम जिला हरदोई के। जन्म १६८२ ई०।

यह पहले अरबी फ़ारसी में लिखते थे और औरंगजेब (१६५८–१७०७ ई०) के दरबार में नौकर थे। बाद में इन्होंने बिलग्राम के हरिबंस मिसर (सं० २०९) से भाषा कविता सीखी और कुछ अच्छी भाषा कविताएँ लिखीं।

टि०—१६८२ ई० उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण २९७

१८०. किशन कवि—जन्म १६८३ ई०

यह बादशाह औरंगजेब (१६५८–१७०७ ई०) के दरबार में थे। संभवतः जयपुर वाले कृष्ण कवि (सं० ३२७) ही यह हैं।

टि०—१६८३ ई० उपस्थिति काल है। यह जयपुरी कृष्ण कवि से भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ७९

१८१. आलम कवि—जन्म १७०० ई०।

काव्य निर्णय, सुंदरी तिलक। पहले यह सनाढ्य ब्राह्मण थे, फिर एक मुसलमान रँगरेजिन के चक्कर में पड़े और मुसलमान हो गए और एक अरसे तक औरंगजेब (१६५८–१७०७) के पुत्र शहजादा मुअज़्ज़मशाह की खिदमत में रहे, जो बाद में बादशाह 'बहादुरशाह' (१७०७–१२ ई०) हुआ। इनकी कविताएँ बहुत ही अच्छी कही जाती हैं।

टि०—आलम अकबर कालीन हैं। इनका रचनाकाल सं० १६४०–८० है। इनका बहादुरशाह से कोई संबंध नहीं।

—सर्वेक्षण १६

१८२. अब्दुल रहिमान—दिल्ली वाले, जन्म १६८१ ई०।

यह मुअज़्ज़मशाह के दरबार में थे। जो बाद में बहादुरशाह (१७०७–१२ ई०) के नाम से बादशाह हुआ। इन्होंने 'जमक शतक' नामक एक अत्यंत विचित्र ग्रंथ लिखा है।

टि०—इनका रचनाकाल सं० १७६३–७६ वि० है।

—सर्वेक्षण ३२

१८३. परसाद कवि—जन्म १६२३ ई०।

यह उदयपुर (मेवाड़) के राज दरबार में थे और शिव सिंह कहते हैं कि 'इनकी कविता बहुत विख्यात है।'

टि०—परसाद का पूरा नाम बेनीप्रसाद है। इन्होंने उदयपुर नरेश जगत सिंह (शासनकाल सं० १७९१–१८०८) के लिए सं० १७९५ में नायिका भेद का ग्रंथ 'रस समुद्र' रचा था।

—सर्वेक्षण ४४५.

१८४. जगत सिंह—मेवाड़ के राना। १६२८–१६५८ ई० में उपस्थित।

मेवाड़ के अत्यंत प्रसिद्ध राजाओं में से एक, उदयपुर का पुनर्निर्माण कराने वाले। एक अज्ञात नाम चारण ने इनके नाम पर जगत विलास, इनके युग का इतिहास, लिखा है। (टाड का राजस्थान भाग १ पृष्ठ १४ भूमिका, कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १३ भूमिका)। ऊपर दिया हुआ सन इनका शासनकाल है। (टाड भाग १, पृष्ठ ३७२; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ३९४)।

१८५. राज सिङ्घ—उदयपुर मेवाड़ के राना। शासनकाल १६५४-१६८१ ई०।
औरंगजेब के प्रसिद्ध प्रतिद्वन्दी। (देखिए, टाड का राजस्थान, भाग १, पृष्ठ ३७४; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ३९६)। एक अज्ञात कवि ने इनके समय का इतिहास 'राज प्रकाश' नाम से लिखा है। (टाड, भाग १, पृष्ठ १४ भूमिका, कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १३ भूमिका।)

टि०—सरोज में 'राज प्रकाश' के स्थान पर 'राज विलास' नाम है जो मान कवीश्वर की रचना है, जिसका उल्लेख संख्या १८६ पर स्वयं ग्रियर्सन ने किया है।

—सर्वेक्षण ७९७.

१८६. मान कवीश्वर—राजपूताना के चारण और कवि, १६६० ई० में उपस्थित।

मेवाड़ के राना राजसिंह (सं० १८५) के आदेश से इन्होंने राजदेव विलास लिखा, जिसमें औरंगजेब और राज सिंह के युद्धों का वर्णन है। देखिए, टाड भाग १, पृष्ठ २१४, ३७४ और आगे, तथा ३९१; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ २३१, ३९६ और आगे, तथा ४१४।

१८७. सदासिव कवि—चारण और कवि—१६६० ई० में उपस्थित।

यह औरंगजेब के शत्रु मेवाड़ के राना राजसिंह (सं० १८५) के यहाँ थे और 'राज रत्नाकर' नाम से अपने आश्रयदाता का जीवन चरित इन्होंने लिखा है। देखिए, टाड भाग १, पृष्ठ २१४, ३७४ और आगे; कलकत्ता संस्करण, भाग १, पृष्ठ २३१, ३९६ और आगे।

१८८. जै सिङ्घ—उदयपुर मेवाड़ के राना। शासनकाल १६८१–१७०० ई०।

यह राना राजसिंह (सं० १८५) के पुत्र और कवियों के आश्रयदाता थे। इन्होंने एक ग्रंथ जैदेव विलास लिखा है, जो उन राजाओं का जीवन चरित है, जिन्हें इन्होंने जीता था। देखिए, टाड भाग १, पृष्ठ १४ भूमिका, २१४ और ३९१–३९४; कलकत्ता संस्करण, भाग १, पृष्ठ १३ भूमिका, २३१, ४१४–४१८।

टि०—सरोज के अनुसार इन्होंने जयदेव विलास नाम ग्रंथ बनवाया, स्वयं नहीं बनाया; इसमें इन्हीं के वंश के राजाओं के जीवन चरित हैं। इनके द्वारा पराजित राजाओं के नहीं।

—सर्वेक्षण २९६

१८९. रनछोर कवि—१६८० में उपस्थित।

इनकी तिथि संदिग्ध है। यह मेवाड़ के एक चारण ग्रंथ (Bardic

chronicle) 'राज पट्टन' के रचयिता थे। देखिए, टाड भाग १, पृष्ठ २८६, भाग २; पृष्ठ ५९; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ३०५, भाग २, पृष्ठ ६५।

टि०—सरोज में इन्हें 'सं० १७५० में उ०' कहा गया है।

—सर्वेक्षण ७७०

१९०. लीलाधर कवि—१६२० ई० में उपस्थित।

यह जोधपुर, मारवाड़ के महाराज गजसिंह (१६२०–१६३८ ई०) के दरबार में थे। देखिए, टाड, भाग २, पृष्ठ ४१; कलकत्ता संस्करण, भाग २, पृष्ठ ४६।

१९१. अमर सिङ्घ—जोधपुर मारवाड़ के। १६३४ ई० में उपस्थित।

जिन महाराज सूर सिंह ने एक दिन में ६ कवीश्वरों को ६ लाख रुपया दिया था, (देखिए, टाड, भाग २, पृष्ठ ३९; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ४३) उनके यह पौत्र थे और कवियों के बहुत बड़े आश्रयदाता, महाराज गजसिंह (देखिए, सं० १९०) के पुत्र थे। अमर सिंह की प्रशंसा कवि बनवारी लाल ने की है। यह १६३४ ई० में अपने पिता द्वारा निकाल दिए गए थे और बादशाह शाहजहाँ के दरबार में चले गए थे। बाद में अपमान का बदला लेने के लिए इन्होंने खुले दरबार में अपने अपमान करने वाले को मार डालने का प्रयास किया था। अनेक दरबारियों को मारने के अनन्तर यह स्वयं टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। देखिए टाड, भाग २, पृष्ठ ४५; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ४९। इनको मेवाड़ के उन अमर सिंह (१६०० ई० में उपस्थित, देखिए टाड, भाग १, पृष्ठ ३४६; कलकत्ता संस्करण, भाग १, पृष्ठ ३७१) से भिन्न समझना चाहिये, जिन्होंने कवि चंद (सं० ६) के ग्रन्थ को एकत्र कराया था। देखिए टाड भाग १, पृष्ठ १३ भूमिका; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १२।

टि०—अमर सिंह के प्रशंसक कवि का नाम 'बनवारी' है, बनवारी लाल नहीं। शाहजहाँ के साले सलावत खाँ ने इन पर जुर्माना कराया था और गँवार कह दिया था। उसकी उन्होंने भरे दरबार में हत्या कर दी थी और और स्वयं घोड़े से कूदकर आगरे के किले के बाहर निकल गए थे। यह मारे नहीं गए थे।

—सर्वेक्षण ३८

१९२. बनवारी लाल कवि—१६३४ में उपस्थित।

हजारा। जोधपुर के राजकुमार अमर सिंह (सं० १९१) के दरबार में विरुदावली बखानने वाले कवि।

टि०—बनवारी ने अमर सिंह के ऊपर वर्णित वीर कृत्य का वर्णन एक कवित्त में किया है। यह घटना ऐसी है, जिसका वर्णन कोई भी कवि कर सकता है। इसी एक कवित्त के सहारे बनवारी को अमर सिंह का दरबारी कवि नहीं कहा जा सकता। यह उनके समकालीन हो सकते हैं।

—सर्वेक्षण ५७०

१९३. रघुनाथराय कवि—१६३४ ई० में उपस्थित।

सुंदरी तिलक। यह जोधपुर के राजकुमार अमरसिंह (सं० १९१) के दरबार में थे। देखिए टाड, भाग २, पृष्ठ ४४; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ४९।

टि०—सुंदरी तिलक में इन रघुनाथ राय की रचनाएँ नहीं हैं, रघुनाथ वंदीजन बनारसी की रचनाएँ हैं।

१९४. सूजा—१६८१ ई० में उपस्थित।

मारवाड़ के जसवंतसिंह (१६३८–१६८१) के दरबार का एक चारण। देखिए, टाड भाग २, पृष्ठ ५९; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ६२।

१९५. अजीत सिङ्घ—जोधपुर, मारवाड़ के महाराज अजीत सिंह राठौर; १६८१–१७२४ में जीवित।

इस राजा ने 'राजरूपकाख्यात' नाम का ग्रंथ लिखा था। इसमें ४६९ ई० से, जब नयनपाल ने कन्नौज को जीता, और वहाँ के राजा अजयपाल को मारा, जयचंद के समय तक की घटनाओं का इतिहास है। दूसरे भाग में इतिहास महाराज जसवंत सिंह की मृत्यु, सं० १६८१ ई०, तक पहुँच गया है; पुनः तीसरे भाग में सूर्यवंश का इतिहास प्रारंभ से लेकर १७३४ ई० तक दिया गया है, देखिए टाड, भाग २, पृष्ठ २, ४, ५८ और आगे, ८९ टि० और १०७ टि०; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ २, ४, ६४ और आगे, ८९ टि० और ११७ टि०।

टि०—अजीत सिंह का जन्म सं० १७३५ में एवं देहावसान सं० १७८१ में हुआ।

—सर्वेक्षण ४७

१९६. बिहारीलाल चौबे—ब्रज के। १६५० ई० में उपस्थित।

सत्कविगिरा विलास, काव्य निर्णय, राग कल्पद्रुम। भारतवर्ष के अत्यंत प्रसिद्ध कवियों में से एक। इनकी कीर्ति इनकी सतसई (राग कल्पद्रुम) पर निर्भर करती है, जिसकी प्रति पंक्ति के लिए इन्होंने राजा जयसिंह से एक अशरफी पाई थी। इस कठिन ग्रंथ के लालित्य, सरसता और विचित्र

अभिव्यंजना प्रणाली तक, ऐसा समझा जाता है कि अभी तक कोई भी कवि नहीं पहुँच सका है। अनेक कवियों ने इनका अनुसरण किया, लेकिन इस शैली में यदि और किसी को महत्त्वपूर्ण सफलता मिली है तो वह तुलसीदास (सं० १२८) हैं, जो इनसे पहले ही एक सतसई (राम के सबंध में, जब कि बिहारीलाल ने कृष्ण के वर्णन में लिखा है।) १५८६ ई० में रच गए थे। अन्य अच्छी सतसइयाँ विक्रम और चंदन की हैं। बिहारी की कविता पर अनेक टीकाकारों ने विचार किया है। इसका काठिन्य और काव्य-कौशल इतना अधिक है कि 'अक्षर कामधेनु' इसके लिए पूर्णतया चरितार्थ होता है। सर्वश्रेष्ठ टीका सूरति मिसर (सं० ३२६) अगरवाला की है। जिस क्रम में आज सतसई मिलती है, वह क्रम शाहजादा आजमशाह के लिए लगाया गया था। अतः यह क्रम आजमशाही क्रम कहलाता है। इसका ललित संस्कृत पद्यानुवाद, बनारस के राजा चेतसिंह के आश्रय में पंडित हरिप्रसाद द्वारा हुआ था। इस महान कवि के जीवन के संबंध में बहुत कम ज्ञात है। इनके आश्रयदाता आमेर के राजा जयसिंह कछवाहा थे। १६०० ई०में राजा मान सिंह आमेर में शासन करते थे और उनके तथा १८१९ ई० के बीच तीन जयसिंह हुए हैं। विहारीलाल के आश्रयदाता जयसिंह मिरज़ा प्रतीत होते हैं, बहुत संभावना ऐसी ही है। यह मानसिंह के भाई जगतसिंह के पौत्र थे। इस तथ्य की सहायता से हम विहारीलाल की उपस्थिति १७ वीं शती के पूर्वार्द्ध में, तुलसीदास के परवर्ती रूप में मान सकते हैं। (देखिए टाड का राजस्थान, भाग २, पृष्ठ ३५५, कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ३९२) गार्सां द तासी (भाग १, पृष्ठ १२३) इन्हें कबीर का समसामयिक (लगभग १४०० ई०) बना देते हैं और कहते हैं कि अँगरेज इन्हें भारत का टामसन (Thompson) कहते हैं। वह यह भी कहते हैं कि यह सोलहवीं शती में थे, जो अपेक्षाकृत सत्य के कुछ अधिक निकट है। जिन लोगों ने सतसई पर टीकाएँ लिखी हैं, उनमें से निम्नलिखित लोगों का उल्लेख किया जा सकता है—चंद्र (सं० २०३), गोपालसरन (सं० २१५), सूरति मिसर (सं० ३२६), कृष्ण (सं० ३२७), करन (सं० ३४६), अनवर खाँ (सं० ३९७), ज़ुल्फ़क़ार (सं० ४०९), यूसुफ़ खाँ (सं० ४२१), रघुनाथ (सं० ५५९), लाल (सं० ५६१), सरदार (सं० ५७१), लल्लूजी लाल (सं० ६२९), गंगाधर (सं० ८११), और राय वख्श (सं० ९०७)।

टि०—विहारीलाल का जन्म सं० १६५२ में हुआ और इनकी मृत्यु सं० १७२१ में। यह जयपुर नरेश मिरजा राजा जयसिंह (शासन काल सं०

१६७८–१७२४) के दरबार में थे। इन्हें प्रत्येक दोहे पर एक एक अशर्फी मिली थी, न कि एक एक पंक्ति पर। सूरति मिश्र आगरे वाले थे, अगरवाले नहीं। आजमशाही क्रम हरजू कवि ने आजमगढ़ के आजम खाँ या आजमशाह के लिए सं० १७८१ में लगाया था। चेतसिंह के दरबारी कवि पंडित हरप्रसाद ने सतसई की आर्या गुंफ संस्कृत टीका सं० १८३७ में की थी। अनवर खाँ टीकाकार नहीं थे, आश्रयदाता थे। इनके नाम पर कमल नयन और शुभकरन कवियों ने टीका लिखी थी।

—सर्वेक्षण ५५१ और बिहारी सतसई संबंधी साहित्य-रत्नाकर

१९७. छत्रसाल—परना, बुंदेलखंड के राजा। इन्होंने लाल कवि को छत्र प्रकाश (राग कल्पद्रुम) लिखने की आज्ञा दी, जिसमें प्रारंभ से उनके समय तक का बुंदेलों का संपूर्ण इतिहास है। देखिए सं० २०२। यह १६५८ ई० में मारे गए। देखिए टाड, भाग २, पृष्ठ ४८१; कलकत्ता संस्करण, भाग २, पृष्ठ ५२६.

टि०—छत्रसाल का जन्मकाल सं० १७०५ एवं मृत्युकाल सं० १७८८ है। ग्रियर्सन में दिया इनका समय अशुद्ध है। छत्रसाल मारे नहीं गए थे, स्वतः मरे थे।

—सर्वेक्षण २४१

१९८. निवाज—दोआब के ब्राह्मण। १६५० ई० में उपस्थित।

सुंदरी तिलक। यह परना के राजा छत्रसाल बुंदेला के दरबार में थे। आजमशाह की आज्ञा से इन्होंने शकुंतला का अनुवाद किया था।

नामों का साम्य कुछ ऐसा है कि लोगों को इनके निवाज (सं० ४४८) मुसलमान जुलाहा होने का भ्रम हो जाता है, अतः ऐसी भी एक भ्रांत धारणा है कि यह मुसलमान हो गए थे।

टि०—शकुन्तला का भाषानुवाद फर्रुखसियर के सहायक मुसलेखान (आजम खान उपाधि से युक्त) के लिए हुई थी। यह अनुवाद सं० १७७०-७६ के आसपास कभी किया गया था। ग्रियर्सन में दिया समय १६५० ई० एक दम अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ४१३

१९९. रतनेस कवि—(?) १६२० ई० में उपस्थित।

यह कवि प्रतापसाहि (सं० १४९) के पिता थे। यह अनेक प्रसिद्ध शृङ्गारी कविताओं के रचयिता हैं। मिलाइए सं० १५५

टि०—रतनेस का समय सं० १८५०-८० के आसपास है। ग्रियर्सन में दिया संवत् एकान्त अशुद्ध है। १५५ संख्यक रतन इनसे भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ७६३

२००. पुरुषोत्तम कवि--बुन्देलखण्डी कवि और भाट। १६५० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम।

टि०—पुरुषोत्तम बुन्देलखण्डी छत्रसाल (शासनकाल सं० १७२२-८८) के यहाँ थे। अतः यह १६५० ई० में उपस्थित नहीं हो सकते। यह संवत अशुद्ध है। सरोज में इन्हें ठीक ही सं० १७३० में उ० कहा गया है।

—सर्वेक्षण ४६७

२०१. विजयाभिनन्दन—बुन्देलखण्डी। १६५० ई० में उपस्थित।

ये दोनों परना के राजा छत्रसाल बुन्देला (सं० १९७) के दरबार में थे।

टि०—विजयाभिनन्दन का भी समय अशुद्ध है। यह सं० १७२२-८८ के बीच किसी समय उपस्थित रहे होंगे। सरोज में इन्हें ठीक ही सं० १७४० में उ० कहा गया है।

२०२. लाल कवि—१६५८ ई० में उपस्थित।

यह राजा छत्रसाल बुंदेला (सं० १९७) के दरबार में थे। यह धौलपुर के युद्ध में उपस्थित थे, जो दारा शिकोह और औरंगजेब के बीच हुआ था और जिसमें छत्रसाल (१६५८ ई० में) मारे गए थे। इन्होंने विष्णु विलास नामक नायिका भेद का ग्रन्थ रचा था, लेकिन यह 'छत्र प्रकाश' के लिए अधिक प्रसिद्ध हैं। यह हिंदी अथवा ब्रजभाषा पद्य में है। गार्सां द तासी (भाग १, पृष्ठ ३०४) इस ग्रन्थ के सम्बन्ध में निम्नांकित विवरण देता है। ग्रन्थ को मैंने स्वयं नहीं देखा है।

"बुन्देलखण्ड के राजाओं के युद्ध, उनके सिंहासनारोहण का क्रम और बुन्देलों की वीर जाति का पराक्रम, इसमें वर्णित है। इसमें छत्रसाल और उनके पिता चंपतिराय[1] के जीवन के छोटे छोटे विवरण भी दिए गए हैं। × × × कैप्टन पागसन ने लाल के ग्रन्थ का अनुवाद 'ए हिस्ट्री आफ़ द बुन्देलाज़' नाम से किया है और मेजर प्राइस ने 'छत्र प्रकाश या छत्रसाल का जीवन चरित' नाम से उसके उस अंश का पाठ दिया है, जो छत्रसाल के जीवन से सम्बन्धित है।

टि०—ग्रियर्सन ने छत्रसाल बुन्देला और छत्रसाल हाड़ा दोनों को एक समझ लेने की भूल की है। इस भ्रम का उत्तरदायित्व सरोज पर है। लाल छत्रसाल बुंदेला के यहाँ थे। यह बूँदीवाले छत्रसाल हाड़ा (गोपीनाथ के पुत्र) के यहाँ नहीं थे। दारा और औरंगजेब के बीच हुए धौलपुर, फतुहा के युद्ध में यह लाल नहीं थे। इसी युद्ध में छत्रसाल हाड़ा मारे गए थे, छत्रसाल

१. टाड के अनुसार छत्रसाल के पिता का नाम गोपीनाथ था।

बुन्देला नहीं। लाल (गोरे लाल पुरोहित) का जन्म सं० १७१५ में हुआ था। इन्होंने सं० १७६४ में छत्रप्रकाश की रचना की थी। ग्रियर्सन में दिया समय सन् १६५८ ई० अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ८००

२०३. हरिकेस कवि—जहाँगीराबाद सेनुढ़ा, बुन्देलखण्ड के। १६५० ई० में उपस्थित। सुन्दरी तिलक।

टि०—हरिकेश का सम्बन्ध महाराज छत्रसाल (शासनकाल सं० १७२२-८८) और उनके दो पुत्रों, जगतराज (शासनकाल सं० १७८८-१८१५) और हृदय साहि (शासन काल सं० १७८८-९६) से था। इनका रचना काल सं० १७७६ के इधर उधर है। ग्रियर्सन में दिया समय १६५० ई० एक दम भ्रष्ट है।

—सर्वेक्षण ९६८

२०४. हरिचंद—चरखारी, बुन्देलखण्ड के भाट। १६५० ई० में उपस्थित।

टि०—हरिचंद छत्रसाल (शासनकाल सं० १७२२-८८) के आश्रय में थे। ग्रियर्सन में दिया हुआ समय १६५० ई० एकांत भ्रष्ट है।

—सर्वेक्षण १००२

२०५. पंचम कवि—प्राचीन, बुन्देलखण्डी। १६५० ई० में उपस्थित।

ये तीनों राजा छत्रसाल बुन्देला (सं० १९७) के दरबार में थे।

टि०—पंचम का भी समय १७२२-८८ वि० के बीच होना चाहिए। इनका भी समय अशुद्ध दिया गया है। सरोज में इस कवि के नाम पर जो छंद है, वह भूषण की रचना के रूप में भी प्रसिद्ध है। यदि यह तथ्य है, तो इस कवि का अस्तित्व सिद्ध नहीं होता।

—सर्वेक्षण ४६३

२०६. गंभीर राय—नूरपुर के। १६५० ई० में उपस्थित।

शाहजहाँ (१६२८-१६५८ ई०) के विरुद्ध, मऊ के जगतसिंह के विद्रोह का गुणगान करने वाले भाट। मूल और आंशिक अनुवाद श्री बीम्स द्वारा जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, भाग ४४, (१८७५ ई०) पृष्ठ २०१ पर दिया गया है। मनोरंजक और महत्वपूर्ण।

२०७. राव रतन—राठौर, १६५० ई० में उपस्थित।

यह रतलाम के राजा उदयसिंह के प्रपौत्र थे। इनके नाम पर किसी अज्ञात चारण ने 'रायसा राव रतन' लिखा है। देखिए, टाड, भाग २, पृष्ठ ४९, कलकत्ता संस्करण, भाग २, पृष्ठ ५५।

२०८. गोपाल कवि—प्राचीन, जन्म १६५८ ई० ।

मित्रजीत सिंह के दरबार में थे ।

टि०—गोपाल प्राचीन मित्रजीत सिंह के पुत्र कल्याण सिंह के यहाँ थे। सरोज में इन्हें 'सं० १७१५ में उ०' कहा गया है ।

—सर्वेक्षण १६४

२०९. हरिबंस मिसर—बिलग्राम, जिला हरदोई के। १६६२ ई० में उपस्थित।

इनके हाथ की लिखी पद्मावत की एक पोथी के अनुसार यह अमेठी के राजा हनुमंत सिंह के दरबार में थे। यह सुप्रसिद्ध कवि हैं और अब्दुल जलील बिलग्रामी (सं० १७९) के भाषा शिक्षक थे ।

टि०—सरोज के अनुसार इनकी लिखी पद्मावत की पोथी से इनका अब्दुल जलील का भाषा काव्य शिक्षक होना सिद्ध होता है, न कि इनका अमेठी नरेश हनुमंत सिंह का दरबारी कवि होना। सरोज में इन्हें सं० १७२९ में उ० कहा गया है ।

—सर्वेक्षण ९६९

२१०. सबल सिङ्ह चौहान—जन्म १६७० ई०

महाभारत के २४,००० श्लोकों का पद्यबद्ध अनुवाद बहुत संक्षेप में किया है। यह कौन थे, इस सम्बन्ध में अनेक कथन हैं। कुछ कहते हैं कि यह चन्दागढ़ के राजा थे, दूसरे कहते हैं कि सबलगढ़ के। शिव सिंह का ख्याल है कि यह इटावा जिले में किसी गाँव के जमींदार थे। शिव सिंह द्वारा उल्लिखित भाषा साहित्य के दो ग्रंथों षटऋतु और भाषा ऋतुसंहार के रचयिता सबलसिंह कवि भी संभवतः यही हैं ।

टि०—सबलसिंह का रचनाकाल सं० १७१२ से १७८१ तक है। अतः १६७० ई० (सं १७२७ वि०) इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता। यह इनका उपस्थितिकाल है। षटऋतु और भाषाऋतुसंहार दोनों एक ही ग्रन्थ हैं। ग्रियर्सन का दोनों सबल सिंहों के अभिन्न होने का अनुमान ठीक है ।

—सर्वेक्षण ९१२, ९१३

२११. स्री गोविन्द कवि—जन्म (?उपस्थिति, देखिए, सं० १४५) १६७३ ई०

यह सतारा के शिवराज सुलंकी के दरबार में थे ।

टि०—१६७३ ई० उपस्थिति काल है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण ८६३

२१२. देवीदास कवि—बुन्देलखण्डी। १६८५ ई० में उपस्थित ।

उक्त संवत् तक यह अनेक ग्रंथ बना चुके थे। इसी साल यह करौली के राजा रतनपाल सिंह के दरबार में गए, जहाँ यह आमरण बने रहे। यहाँ इन्होंने उक्त राजा के नाम से नीति संबंधी एक ग्रंथ 'प्रेमरत्नाकर' नाम का लिखा, जो बहुत ही बढ़िया कहा जाता है।

टि०—प्रेम रत्नाकर नीति सम्बन्धी ग्रन्थ नहीं है, इसमें प्रेम-निरूपण है। नीति की कविता करनेवाले देवीदास इनसे भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ३६३

२१३. चंद्र कवि—(२), जन्म १६९२ ई०।

यह राजगढ़ के नबाब सुलतान पठान के भाई भूपाल के बंदन बाबू के दरबार में थे। इन्होंने बिहारी (सं० १९६) की सतसई पर एक टीका कुंडलिया छन्द में सुलतान पठान के नाम से की।

इस नाम के एक साधारण कवि और हैं। पर शिवसिंह ने उनका कोई विवरण नहीं दिया है।

टि०—सरोज में इस कवि के विवरण में कहा गया है, "यह कवि सुलतान पठान नव्वाब राजगढ़ भाई बंधु भूपाल के यहाँ थे।" ग्रियर्सन ने इसका अत्यंत भ्रष्ट अँग्रेजी अनुवाद किया है, जो ऊपर दिए उसके हिंदी अनुवाद से स्पष्ट है। १६९२ ई० इस कवि का उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण २१८

२१४. मुहम्मद खान—राजगढ़, भूपाल के सुलतान मुहम्मद खान उपनाम सुलतान पठान। जन्म १७०४ ई०।

यह कवियों के आश्रयदाता थे और कवि चंद (२) (सं० २१३) ने इनके नाम पर बिहारी (सं० १९६) की सतसई पर कुंडलिया छंदों में एक टीका लिखी।

टि०—१७०४ ई० उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ८८७

२१५. गोपाल सरन—राजा गोपाल सरन। जन्म १६९१ ई०।

इनका प्रमुख ग्रंथ बिहारी (सं० १९६) की सतसई की 'प्रबंध घटना' नामक टीका है।

२१६. मोतीराम—जन्म १६८३ ई०

हजारा। माधोनल की आख्यायिका के व्रज भाषा में अनुवाद करने वाले। इसी अनुवाद का अनुवाद लल्लूजी लाल (सं० ६२९) और मज़हर अली खाँ विला ने हिंदुस्तानी में किया था। विशेष विवरण के लिए देखिए—गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ ३५१।

२१७. घाघ—दोआब में कन्नौज के रहनेवाले। जन्म १६९६ ई०।

यह किसानी के कवि थे। इनकी कहावतें संपूर्ण उत्तरी भारत में प्रमाण मानी जाती हैं। इनमें से कुछ 'विहार पीज़ैंट लाइफ़' में संकलित हैं। इसी ढंग के, पर स्थानीय (पूर्वी) महत्व के ही, कवि भड्डर और डाक हैं।

अध्याय ८ का परिशिष्ट

२१८. जगनंद कवि—वृन्दावनी। जन्म १६०१ ई०

हजारा।

२१९. जोयसी कवि—जन्म १६०१ ई०।

हजारा।

टि०—१६०१ ई० (सं० १६५८ वि०) इनका उपस्थितिकाल है।

—सर्वेक्षण २९०

२२०. खड्ग सेन—ग्वालियर के कायस्थ। जन्म १६०३ ई०

'दान लीला' और 'दीप मालिका चरित्र' नामक दो प्रसिद्ध ग्रन्थों के रचयिता।

टि०—१६०३ ई० (सं० १६६० वि०) कवि का उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण १३९

२२१. गोकुल बिहारी—जन्म १६०३ ई०

टि०—इस कवि का अस्तित्व संदिग्ध है।

—सर्वेक्षण १९१

२२२. परमेस—प्राचीन, जन्म १६११ ई०।

हजारा, सुन्दरीतिलक। (! देखिए सं० ६१६)

२२३. गोविन्द अटल कवि—जन्म १६१३ ई०

हजारा

टि०—इस कवि का अस्तित्व संदिग्ध है। —सर्वेक्षण १७७

२२४. अहमद कवि—जन्म १६१३ ई०

यह सूफी थे और वेदांत विचार धारा के थे। (ऐसा शिवसिंह का कथन है, लेकिन इनकी रचनाओं के देखने से ये वैष्णव प्रतीत होते हैं।) इनकी दोहा और सोरठा छंदों में लिखी रचनाएँ अत्यन्त वासनापूर्ण हैं।

टि०—अहमद उपनाम ताहिर आगरे के रहने वाले थे। इनका उपस्थिति-काल सं१६१८-७८ वि० है। स० १६७८ में इन्होंने सामुद्रिक और काकसार नामक ग्रंथ लिखे थे। १६१३ ई० इनका रचनाकाल है न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण १४

२२५. गोपनाथ कवि—जन्म १६१३ ई० ।

२२६. बिहारी कवि—व्रजवासी । जन्म १६१३ ई० ।

राग कल्पद्रुम ।

टि०—१६१३ ई० इनका रचनाकाल है ।

—सर्वेक्षण ५५४

२२७. बिंद्राबनदास—व्रजवासी । जन्म १६१३ ई० ।

राग कल्पद्रुम । मैंने मिथिला में एक वृन्दावन की कविताएँ संकलित की हैं, (जो कबीर पंथी प्रतीत होते हैं) । मैं नहीं जानता कि यह वही कवि हैं या दूसरे, जिनका उल्लेख राग कल्पद्रुम में हुआ है ।

२२८. कलानिधि कवि—प्राचीन । जन्म १६१५ ई० ।

२२९. अभिमन्य कवि—जन्म १६२३ ई० ।

इनकी कविता 'शृङ्गार रस में चोखी' कही जाती है ।

टि०—१६२३ ई० कवि का उपस्थितिकाल है । —सर्वेक्षण २३

२३०. घासीराम कवि—जन्म १६२३ ई० ।

हजारा । इनकी लिखी एक कविता 'रिपोर्ट आफ़ आर्केआलोजिकल सर्वे आफ़ इंडिया', भाग १७, पृष्ठ १०७ पर दी गई है ।

२३१. तत्ववेत्ता कवि—जन्म १६२३ ई० ।

हज़ारा ।

टि०—तत्ववेत्ता राजस्थान के रहने वाले निंबार्क संप्रदाय के ब्राह्मण थे । इनका समय सं० १५५० के लगभग है । ग्रियर्सन का संवत अशुद्ध है ।

—सर्वेक्षण ३२३

२३२. व्रजपति कवि—जन्म १६२३ ई० ।

रागकल्पद्रुम ।

२३३. राजाराम कवि—जन्म १६२३ ई० ।

हजारा । देखिए सं० ३९६ ।

२३४. सदानंद कवि—जन्म १६२३ ई० ।

हजारा, दिग्विजय भूषण ।

२३५. संतदास—व्रजवासी । १६२३ ई० में उपस्थित ।

राग कल्पद्रुम । जो हो, इनके नाम पर दी हुई सारी कविताएँ सूरदास (सं० ३७) की कविताओं से शब्दशः मेल खाती हैं ।

२३६. सेख कवि—जन्म १६२३ ई० ।

हजारा, सूदन ।

टि०—१६२३ ई० उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ८८२

२३७. हीरामनि कवि—जन्म १६२३ ई०।

हजारा।

टि०—१६२३ ई० उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ९८८

२३८. जदुनाथ कवि—जन्म १६२४ ई०।

कविमाला।

२३९. वल्लभ रसिक—जन्म १६२४ ई०।

हजारा, राग कल्पद्रुम। यह संभवतः वही हैं, जिनको शिवसिंह ने सुप्रसिद्ध दोहों के रचयिता वल्लभ कवि के नाम से उद्धृत किया है।

टि०—१६२४ ई० वल्लभ रसिक जी के जीवन का अंतिम काल है।

—सर्वेक्षण ५१६

वल्लभ कवि इन वल्लभ रसिक से भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ५१७

२४०. भीखम कवि—जन्म १६२४ ई०।

हजारा। संभवतः यही हजारा में उपलब्ध भीषम हैं; शिवसिंह ने इनको १६५१ ई० में उत्पन्न कहा है। यही संभवतः राग कल्पद्रुम के भी भीषमदास हैं।

टि०—भीषम रीतिकालीन श्रृङ्गारी कवि हैं; भीषमदास वल्लभ संप्रदाय के वैष्णव हैं। अतः दोनों भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ६१२, ६१३

२४१. मधुसूदन कवि—जन्म १६२४ ई०।

हजारा।

टि०—अस्तित्वहीन कवि।

—सर्वेक्षण ६७१

२४२. व्यास जी कवि—जन्म १६२८ ई०।

राग कल्पद्रुम। नीति संबंधी प्रसिद्ध दोहों के रचयिता। इनमें से अनेक हजारा में हैं।

टि०—१६२८ ई० अशुद्ध है। यह व्यासजी कवि, प्रसिद्ध हरीराम व्यास हैं, (ग्रियर्सन ५४)।

—सर्वेक्षण ५१४, ५१५

२४३. मलूकदास—कड़ा मानिकपुर के ब्राह्मण। जन्म १६२८ ई०।

राग कल्पद्रुम।

टि०—मलूकदास ब्राह्मण नहीं थे, खत्री थे। १६२८ ई० इनका उपस्थिति काल है, जन्म काल नहीं। इनका जन्म सं० १६३१ में वैशाख बदी ५ को एवं देहावसान सं० १७३९ में १०८ वर्ष की वय में हुआ।

—सर्वेक्षण ६५९

२४४. गोबरधन कवि—जन्म १६३१ ई०।

टि०—१६३१ ई० उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण २०२

२४५. भगवती दास—जन्म १६३१ ई०।

ब्राह्मण। इन्होंने नामकेतोपाख्यान नाम ग्रन्थ रचा।

टि०—ग्रन्थ का नाम नासिकेतोपाख्यान है। इस ग्रन्थ की रचना सं० १६८८ (सन् १६३१ ई०) में हुई; अतः यही सन् इनका जन्मकाल नहीं हो सकता।

—सर्वेक्षण ६०२

२४६. घनराय कवि—जन्म १६३३ ई०।

२४७. बेनी कवि—प्राचीन। असनी जिला फतहपुर के। जन्म १६३३ ई०।

(१) सुन्दरी तिलक। नायिका भेद पर एक ग्रन्थ के रचयिता।

टि०—यह वेनी श्री कान्यकुब्ज वाजपेयी ब्राह्मण थे। इन्होंने सं० १८१७ में 'रसमय' नाम नायिकाभेद का ग्रंथ रचा था। १६३३ ई० अशुद्ध है, यह न जन्म काल है, न उपस्थिति काल।

—सर्वेक्षण ५०७

२४८. सकल कवि—जन्म १६३३ ई०।

हजारा।

२४९. हरिजन कवि—जन्म १६३३ ई०।

हजारा।

२५०. अनंत कवि—जन्म १६३५ ई०।

सुन्दरी तिलक। अनन्तानन्द नामक ग्रन्थ के रचयिता। यह नायिका भेद है।

२५१. परबीन कविराय—जन्म १६३५ ई०।

हजारा। नीति एवं शांत रस की कविताओं के रचयिता।

२५२. रामजी कवि—जन्म १६३५ ई०।

हजारा।

२५३. मदनमोहन—जन्म १६३५ ई० ।

राग कल्पद्रुम ।

टि०—यह सम्भवतः सूरदास मदनमोहन हैं। ऐसी स्थिति में १६३५ ई० इनका जन्मकाल नहीं हैं, यह अधिक से अधिक इनका अन्तिम जीवनकाल हो सकता है ।

—सर्वेक्षण ६८५

२५४. निधान कवि—प्राचीन । जन्म १६४१ ई० ।

हजारा ।

टि०—इन्होंने सं० १६७४ में चैत्र शुक्ल १३ को जसवन्त विलास नामक रस और अलंकार का सम्मिलित ग्रंथ लिखा था । अतः १६४१ ई० इनका जन्मकाल कदापि नहीं हो सकता । इस समय तक कवि जीवित रहा हो, तो हो।

—संवत् ४१०

२५५. ससिसेखर कवि—जन्म १६४२ ई० ।

हजारा ।

२५६. भूधर कवि—बनारसी । जन्म १६४३ ई० ।

हजारा ।

२५७. चतुर सिङ्घ राना—राजा चतुर सिंह । जन्म १६४४ ई० ।

यह सीधी भाषा में रचना करते थे ।

२५८. पतिराम कवि—जन्म १६४४ ई० ।

हजारा ।

टि०—१६४४ उपस्थिति काल है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण ४७०

२५९. पहलाद—जन्म १६४४ ई० ।

हजारा ।

टि०—१६४४ ई० न तो जन्मकाल है, न उपस्थिति काल है । इन्होंने सं० १६६१ के आसपास बैताल पचीसी नाम ग्रंथ अकबर के राज्यकाल (सं० १६१३-६२) में लिखा था ।

—सर्वेक्षण ४६८

२६०. ब्रजलाल—जन्म १६४५ ई० ।

हजारा ।

२६१. देवदत्त—कुसमड़ा, जिला कन्नौज के ब्राह्मण । जन्म १६४६ ई०

कोई विवरण नहीं । शिवसिंह द्वारा उल्लिखित 'देवदत्त कवि' जो १६४८ ई० में उत्पन्न हुए और उन्हीं के द्वारा उल्लिखित 'देवदत्त' जो १६९५ ई० में

उत्पन्न (१ उपस्थित) थे और जोगतत्व नामक ग्रंथ के रचयिता थे, ये दोनों भी संभवतः यही है।

टि०—ग्रियर्सन के १४० संख्यक महाकवि देव ही, सं० १७५९ में २९ वर्ष की वय में इटावा छोड़ कुसमड़ा में आ बसे थे। कुसमड़ा मैनपुरी जिले में है, न कि कन्नौज में। कन्नौज कोई जिला नहीं, यह स्वयं फर्रुखाबाद जिले में है। समय भी अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ३४१, ३६०

अन्य देवदत्तों (सर्वेक्षण ३६२, ३६५) से इनके अभिन्न होने के संबंध में कुछ नहीं कहा जा सकता।

२६२. सिरोमनि कवि—जन्म १६४६ ई०।

हजारा। देखिए संख्या २६७

टि०—शिरोमणि ने सं० १६८० में 'उर्वशी' नामक कोश ग्रंथ बनाया था। अतः १६४६ ई० से बहुत पहले इनका जन्म हुआ रहा होगा। यह उनका उपस्थिति काल है। यह शाहजहाँ (शासन काल सं० १६८५–१७१५) के आश्रित थे।

—सर्वेक्षण ८९९

२६३. बलदेव कवि—प्राचीन। जन्म १६४७ ई०।

हजारा, सुंदरी तिलक।

२६४. जगजीवन कवि—जन्म १६४८ ई०।

हजारा।

२६५. तोख कवि—जन्म १६४८ ई०।

कवि माला, हजारा, सुंदरी तिलक।

टि०—तोष ने सुधानिधि की रचना सं० १६९१ में की थी, अतः स्पष्ट है कि १६४८ ई० इनका उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ३३०

२६६. मुकुंद कवि—प्राचीन। जन्म १६४८ ई०।

हजारा।

टि०—मुकुंद ने रहीम की प्रशस्ति लिखी है, अतः यह सं० १६८४ के आस पास उपस्थित थे। १६४८ ई० इनका जन्मकाल नहीं हो सकता, यह इनका वृद्ध-काल हो सकता है।

—सर्वेक्षण ६३६

२६७. रसिक सिरोमनि कवि—जन्म १६४८ ई०।

हजारा। देखिए सं० २६२।

टि०—गोस्वामी हरिराय का नाम रसिक शिरोमनि भी है। इनका जन्म सं० १६४७ में एवं देहावसान सं० १७७२ में हुआ। अतः १६४८ ई० इनका उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ७४

२६८. रूप नारायण कवि—जन्म १६४८ ई०।

हजारा। शिवसिंह द्वारा बिना किसी विवरण के 'रूपकवि' नाम से उल्लिखित कवि भी संभवतः यही हैं।

टि०—रूपनारायण ने बीरबल की प्रशस्ति की है, अतः यह सं० १६४२ के आसपास उपस्थित रहे होंगे। १६४८ ई० न इनका जन्मकाल है, न उपस्थिति काल। यह एकान्त भ्रष्ट है।

—सर्वेक्षण ७७२

यह रूपनारायण, सरोज सर्वेक्षण के ७७१ संख्यक रूप कवि से भिन्न हैं।

२६९. स्याम लाल कवि—जन्म १६४८ ई०।

सूदन। (!) संभवतः हजारा के 'श्याम कवि' भी यही हैं। देखिए सं० ३४१।

टि०—सरोज में (सर्वेक्षण ८९४) इन्हें 'सं० १७७५ में उ०' कहा गया है, न कि सं० १७०५ में। सं० १७०५ में श्याम कवि (सरोज सर्वेक्षण ८९६) को 'उ०' कहा गया है। दोनों की अभिन्नता के कोई प्रमाण सुलभ नहीं।

२७०. हरजू कवि—जन्म १६४८ ई०।

हजारा।

२७१. तेग पानि कवि—जन्म १६५१ ई०।

हजारा।

२७२. वाजीदा कवि—१६५१ ई० में उपस्थित।

हजारा।

टि०—वाजीद दादू के शिष्य थे। दादू की मृत्यु सं० १६६० में हुई। अतः यह १६६० के पहले शिष्य हुए होंगे। १६५१ ई० (सं० १७०८) तक यह जीवित रह सकते हैं।

—सर्वेक्षण ५६७

२७३. भरमी कवि—जन्म १६५१ ई०।

हजारा।

२७४. भ्रिग कवि—जन्म १६५१ ई०।

हजारा।

टि०—भृंग नामक कोई कवि नहीं हुआ।

—सर्वेक्षण ६२२

२७५. सहीराम कवि—जन्म १६५१ ई०।

हजारा।

२७६. हुसेन कवि—जन्म १६५१ ई०।

हजारा।

२७७. अच्छर अनन्य कवि—जन्म १६५३ ई०।

शांत रस की कविताएँ लिखी हैं।

टि०—अच्छर अनन्य का समय सं० १७१०-९० वि० है। ग्रियर्सन के ५ और ४१८ संख्यक अनन्यदास और अनन्य भी यही हैं।

—सर्वेक्षण ३०

२७८. कमंच कवि—राजपूताना के। १६५३ के पहले उपस्थित।

शिवसिंह का कथन है कि उन्होंने इनकी कुछ कविताएँ संवत १७१० (१६५३ ई०) के लिखे हुए मारवाड़ देश के किसी काव्य संग्रह में पाई थीं।

टि०—कवि का नाम 'कमच' है, कमंच नहीं।

—सर्वेक्षण ११४

२७९. रघुनाथ—प्राचीन। जन्म १६५३ ई०।

हजारा।

२८०. उदयनाथ वंदीजन—बनारसी। जन्म १६५४ ई०।

२८१. अमरदास कवि—जन्म १६५५ ई०।

शिवसिंह का कहना है कि इन्होंने कुछ साधारण कविताएँ लिखी हैं और उन्होंने इनका कोई पूर्ण ग्रंथ न तो सुना है, न देखा ही।

टि०—१६५५ ई० जन्मकाल ही है।

—सर्वेक्षण ३३

२८२. कुलपति मिसर—जन्म १६५७ ई०।

हजारा, राग कल्पद्रुम।

टि०—कुलपति ने सं० १७२७ में 'रस रहस्य' की रचना की थी। अतः १६५७ ई० (सं० १७१४) इनका उपस्थिति काल ही है, जन्मकाल नहीं।

—सर्वेक्षण १०५

२८३. ग्वाल—प्राचीन। जन्म १८५८ ई०।

हजारा।

टि०—प्रमाद से १६५८ ई० के स्थान पर १८५८ छप गया है,

२८४. मोहन कवि—जन्म १६५८ ई० ।

हजारा, राग कल्पद्रुम । देखिए संख्या ३२९

२८५. रसरास कवि—१६५८ ई० में उपस्थित ।

हजारा । श्रृंगारी कवि ।

टि०—ग्रियर्सन में 'रसराम' छपा है, जो अशुद्ध है । रसरास, रामनारायण का उपनाम है । इन्होंने सं० १८२७ में कवित्त रत्न मालिका की रचना की थी । अतः १६५८ ई० अशुद्ध है ।

—सर्वेक्षण ७५०

२८६. बनमालीदास गोसाईं—जन्म १६५९ ई० ।

यह अरबी, फ़ारसी, संस्कृत के विद्वान थे । इनके वेदांत संबंधी दोहे प्रसिद्ध हैं ।

टि०—१६५९ ई० (सं० १७१६) इनका उपस्थिति काल है, न कि जन्म काल । यह दारा के मुंशी थे । दारा और औरंगजेब में उत्तराधिकार के लिए सं० १७१५ में युद्ध हुआ था ।

—सर्वेक्षण ५८१

२८७. अनाथदास कवि—जन्म १६५९ ई० ।

शांत रस की फुटकर रचनाओं तथा विचार माला नामक ग्रंथ के रचयिता ।

टि०—विचार माला की रचना सं० १७२६ में हुई थी । सं० १७२० में इन्होंने प्रवोध चद्रोदय का भी अनुवाद किया था । अतः १६५९ ई० (सं० १७१६) इनका रचनाकाल है, न कि जन्मकाल ।

—सर्वेक्षण २९

२८८. जनार्दन कवि—जन्म १६६१ ई० ।

श्रृंगारी कवि ।

टि०—जनार्दन पद्माकर के पितामह और मोहनलाल के पिता थे । सं० १७४३ में यह उपस्थित थे । इसी वर्ष मोहनलाल का जन्म हुआ था । १६६१ ई० इनका प्रारंभिक रचनाकाल है, न कि जन्मकाल ।

— सर्वेक्षण २७८

२८९. बलिजू—१६६५ ई० में उपस्थित ।

हजारा ।

२९०. बुधराम कवि—१६६५ ई० में उपस्थित ।

हजारा ।

२९१. कल्यान कवि—जन्म १६६९ ई० ।

हजारा, राग कल्पद्रुम ।

टि०—कल्याण कवि केशवदास के भाई थे। इनका कविताकाल सं० १६६० के आस पास माना जा सकता है। इनका जन्म १६६९ ई० में कहा गया है, यह एकांत अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण १०१

२९२. विद्यानाथ कवि—दोआब के, जन्म १६७३ ई० ।

२९३. लाल बिहारी कवि—जन्म १६७३ ई० ।

२९४. मीर रुस्तम कवि—जन्म १६७८ ई० ।

हजारा ।

टि०—१६७८ ई० (सं० १७३५) रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण ६६०

२९५. मीरीमाधव कवि—जन्म १६७८ ई० ।

हजारा ।

टि०—१६७८ ई० (सं० १७३५) रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण ६६२

२९६. मुहम्मद कवि—जन्म १६७८ ई० ।

हजारा ।

टि०—१६७८ ई० (सं० १७३५) रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण ६६१

२९७. गोपालदास—ब्रजवासी, जन्म १६७९ ई० ।

राग कल्पद्रुम ।

टि०—गोपालदास ब्रजवासी ने सं० १७५५ में रास पंचाध्यायी की रचना की थी। अतः १६७९ ई० (सं० १७३६) इनका उपस्थिति काल है ।

—सर्वेक्षण १७७

२९८. विहारी कवि—जन्म १६८१ ई० ।

हजारा ।

टि०—१६८१ ई० (सं० १७३८) विहारी कवि का उपस्थिति काल है ।

—सर्वेक्षण ५५२

२९९. आसिफ खाँ कवि—जन्म १६८१ ई० ।

३००. केसवराय बाबू—बुंदेलखंडी। जन्म १६८२ ई० ।

सत्कविगिराविलास । नायिका भेद का एक अच्छा ग्रंथ इन्होंने लिखा है ।

टि०—केशवराय ने सं० १७५३ में जैमुन की कथा लिखी थी। १६८२ ई० (सं० १७३९) इनका उपस्थिति काल है, जन्मकाल नहीं।

—सर्वेक्षण ६५

३०१. कनक कवि—जन्म १६८३ ई०।

श्रृंगारी कवि।

३०२. मनसुख कवि—जन्म १६८३ ई०।

हजारा।

टि०—१६८३ ई० (सं० १७४०) रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं।

—सर्वेक्षण ६५६

३०३. मिसर कवि—जन्म १६८३ ई०।

हजारा।

टि०—१६८३ ई० (सं० १७४०) रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं।

—सर्वेक्षण ६५७

३०४. रविदत्त कवि—उपनाम बाबू सवितादत्त, जन्म १६८५ ई०।

सत्कविगिरा विलास।

टि०—कवि का असल नाम सवितादत्त ही है, रविदत्त उपनाम है। सं० १७३५ में इन्होंने कृष्ण विलास की रचना की थी। अतः १६८५ ई० (सं० १७४२) इनका रचनाकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ९०३

३०५. गोविंदजी कवि—१६९३ ई०।

हजारा।

टि०—१६९३ ई० रचनाकाल है। सरोज में इन्हें सं० १७५७ में उ० कहा गया है।

—सर्वेक्षण १७८

३०६. देवी वंदीजन—जन्म १६९३ ई०।

इन्होंने हास्यरस का एक ग्रंथ सूरसागर लिखा है।

टि०—ग्रंथ का नाम सूमसागर है। इसकी रचना सं० १७९४ में हुई। १६९३ ई० (सं० १७५०) कवि का जन्मकाल हो सकता है।

—सर्वेक्षण ३६८

३०७. देवीराम कवि—जन्म १६९३ ई०।

शांत रस के साधारण कवि।

३०८. कुंदन कवि—बुंदेलखंडी। १६९५ ई० में उपस्थित।

हजारा। इन्होंने नायिका भेद का एक अच्छा ग्रंथ लिखा है।

टि०—१६९७ ई० (सं० १७५२) कुंदन का उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ८४

३०९. स्याम सरन कवि—जन्म १६९६ ई०।

स्वरोदय (राग कल्पद्रुम) नामक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—श्यामशरण जी चरणदास (सं० १७६०–१८३८) के शिष्य थे। इनका रचनाकाल सं० १८०० के आसपास होना चाहिए। ग्रियर्सन में दिया संवत अशुद्ध है। इनका जन्म सं० १७६० के पश्चात होना चाहिए।

—सर्वेक्षण ८९३

३१०. गोध कवि—जन्म १६९८ ई०।

टि०—सरोज में इनका नाम 'गोधू' है।

—सर्वेक्षण २०३

३११. छेम कवि—जन्म १६९८ ई०।

कोई विवरण नहीं। यह शिवसिंह द्वारा उल्लिखित संभवतः दोआब के छेम करन भी हैं। देखिए सं० ८७, १०३।

टि०—छेम या क्षेमनिधि पद्माकर के चाचा थे। १६९८ ई० (सं० १७५५) इनका रचनाकाल है।

—सर्वेक्षण २४७

यह अंतर्वेदी छेमकरन, 'छेम' से भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण २४४

३१२. छैल कवि—जन्म १६९८ ई०।

हजारा।

टि०—१६९८ ई० (सं० १७५५) कवि का रचनाकाल है।

—सर्वेक्षण २४९

३१३. जुगुल कवि—जन्म १६९८ ई०।

राग कल्पद्रुम। कहा जाता है कि इन्होंने कुछ बहुत ही विचित्र छंद रचे हैं। बिना तिथि दिए हुए 'जुगुलदास कवि' नाम से शिवसिंह द्वारा उल्लिखित कवि भी संभवतः यही हैं।

टि०—ग्रियर्सन की कल्पना ठीक है। दोनों कवि एक ही हैं। सं० १७५५ कवि का जन्मकाल हो सकता है। इन्होंने सं० १८२१ में हित चौरासी की टीका की थी।

—सर्वेक्षण २६०, ३०३

३१४. द्विजचंद कवि—जन्म १६९८ ई० ।

३१५. व्रजदास—प्राचीन । जन्म १६९८ ई० ।

हजारा, (?) राग कल्पद्रुम ।

टि०—१६९८ ई० (सं० १७५५) इनका रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण ५३५

३१६. स्यामदास कवि—जन्म १६९८ ई० ।

राग कल्पद्रुम ।

३१७. कारेबेग फकीर—जन्म १६९९ ई० ।

हजारा ।

टि०—कारेबेग का रचनाकाल सं० १७१७ है । १६९९ ई० (सं० १७५६) अशुद्ध है । अधिक से अधिक यह इनका अंतिम जीवनकाल हो सकता है ।

—सर्वेक्षण १०६

३१८. संत कवि—जन्म १७०२ ई० ।

श्रृंगारी कवि ।

टि०—संत ने रहीम की प्रशंसा की है, अतः यह सं० १६८३ के आस-पास उपस्थित थे और १७०२ ई० अधिक से अधिक इनके जीवन का अंतिम समय हो सकता है ।

—सर्वेक्षण ८७५

अध्याय ९

अठारहवीं शताब्दी

प्रारम्भिक टिप्पणी—इस अध्याय में वर्णित युग भारतीय इतिहास की दो महत्वपूर्ण घटनावलियों को घेरे हुए है—मुगल साम्राज्य का ह्रास और पतन तथा मराठा शक्ति का उत्थान और पतन। बहादुरशाह १७०७ ई० में औरंगजेब के सिंहासन पर बैठा और मराठों के चंगुल से शाह आलम १८०३ ई० में लार्ड लेक द्वारा छुड़ाया गया। वह १८०६ ई० में मरा। उसका बेटा अकबर द्वितीय नाम मात्र के बादशाही गौरव का उत्तराधिकारी हुआ। दूसरी ओर बाला जी विश्वनाथ, प्रथम पेशवा, साहू की गद्दी पर बैठने के साथ-साथ १७०७ ई० में प्रभुत्वशील हो गया और अन्तिम पेशवा द्वितीय मराठा युद्ध में, १८०३–४ ई० में गद्दी से उतार फेंका गया।

ऐसा समय न तो नए सम्प्रदायों की स्थापना के लिए उपयोगी था, न कला-सृष्टि के लिए। यह सत्य है कि कुछ धार्मिक सुधारक उत्पन्न हुए और उनके प्रयत्न यद्यपि थोड़ी देर के लिए कुछ मात्रा में सफल हुए, पर उनका हिन्दुस्तान पर वह स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा, जो रामानन्द और वल्लभाचार्य का पड़ा था। चारणों का देश राजपूताना अब मुगलों के विरुद्ध संघटित शक्ति और जाति नहीं था; वह कौटुम्बिक झगड़ों में पड़कर उखड़-पुखड़ गया था, विश्रृङ्खल हो गया था, जैसा कि दो राजाओं द्वारा काव्य सुनाने के आमंत्रण पर इन चारणों में से एक ने कहा था—

> जोधपूर आमेर ये, दोनों थाप अथाप।
> कूरम मारा बैकरा, कामध्वज मारा बाप ॥[1]

कुरसी के झगड़े में कोई सम्बन्ध, कोई मित्रता नहीं देखी जाती थी। राजपूताना के बड़े से बड़े, अच्छे से अच्छे राजाओं पर भी अवनत होते हुए साम्राज्य को लूट खसोट करने की शीघ्रता ने आक्रमण किया। जयपुर के जयसिंह भी, जो इतिहास लिखने वाले राजा और ज्योतिषी थे, भारत द्वारा

---

१. मूल ग्रन्थ में दोहे का अंगरेजी अनुवाद किया गया है। यह दोहा करन कवि (सर्वेक्षण ७१) का है। सरोज से यहाँ उद्धृत किया गया है।

—अनुवादक

उत्पन्न बड़े-बड़े विद्वानों और वैज्ञानिकों में से एक थे, अपने बहनोई, अपनी सगी बहिन के पति, बूँदी के राजा [राव बुद्ध सिंह] से उसका राज्य झपट लेने से नहीं चूके। चारण लोग ऐसे काम कभी नहीं पसन्द करते थे, अतः वे चुप बने रहे। अठारवीं शती में चारणों द्वारा केवल दो इतिहास लिखे गए प्रतीत होते हैं और इनमें से एक में, विजय विलास में, जोधपुर के विजयसिंह और रामसिंह दोनों के भातृघाती युद्ध का वर्णन है।

साहित्य के अन्य विभागों में भी एक भी प्रथम कोटि का नाम नहीं दिखाई देता। सत्रहवीं शती के काव्य शास्त्र पर लिखने वाले कुछ बड़े कवियों ने अपने शिष्य छोड़ दिए थे, जो उनकी शैली पर सफलतापूर्वक चलते रहे; लेकिन यह शती प्रमुख रूप से टीकाकारों के रूप में ही टिमटिमाती रही है। पिछली शती के प्रायः प्रत्येक बड़े कवि ने इस शताब्दी में अच्छे टीकाकार पाए। शायद यह भी स्वाभाविक परिणाम ही था। केशवदास और उनके अनुयायियों ने भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांतों का प्रतिपादन और सुदृढ़ स्थापना कर दी थी, दूसरी पीढ़ी ने इस पथ को अपनाया और पहली के लिखे सर्वमान्य श्रेष्ठ ग्रंथों पर उनका प्रयोग किया।

भाग १, धार्मिक कवि,

[यथासंभव कालक्रमानुसार]

३१९. प्रियादास—स्वामी प्रियादास, बृंदावन वासी, दोआब में। १७१२ ई० में उपस्थित।

इसी साल इन्होंने नाभादास (संख्या ५१) कृत भक्तमाल की अपनी सुप्रसिद्ध टीका लिखी। वार्ड ने (व्यू आफ़ द हिस्ट्री आफ़ द हिंदूज़ भाग २, पृष्ठ ४८१) बुंदेलखंडी भाषा में भागवत के कर्ता जिस प्रियादास का उल्लेख किया है, संभवतः यह वही हैं। देखिए, गार्सां द तासी भाग १, पृष्ठ ४०५।

टि०—प्रियादास वृंदावन वासी थे। पर वृंदावन दोआब में नहीं है।

३२०. गंगापति—१७१९ ई० में उपस्थित।

सं० १७७५ में लिखित विज्ञान विलास नामक ग्रंथ के रचयिता। यह हिंदुओं के विभिन्न दर्शन शास्त्रों से संबंध रखने वाला ग्रंथ है। यह वेदांत दर्शन और रहस्यवादी जीवन की अभिशंसा करता है।

३२१. शिव नारायन—गाजीपुर के निकट चंदावन के नेरीवान जाति के राजपूत। १७३५ ई० के आसपास उपस्थित।

शिवनारायणी संप्रदाय के प्रवर्तक। यह मुहम्मदशाह के शासनकाल (१७१९-१७४८ ई०) में उपस्थित थे। अपने सिद्धांतों के प्रतिपादनार्थ इन्होंने प्रचुर परिमाण में रचना की है। हिंदी पद्य की ११ पुस्तकें इनकी कही जाती है। ये हैं—(१) लव ग्रंथ, (२) संत विलास, (३) भजन ग्रंथ, (४) सांत सुंदर, (५) गुरुन्यास, (६) सांताचारी, (७) सांतोपदेस, (८) सब्दावली, (९) सांत परवान, (१०) सांत महिमा, (११) सांत सागर। एक बारहवीं पुस्तक अभी और है जो संप्रदाय के प्रमुख के एकांत अधिकार में पड़ी हुई है और अभी तक निकल नहीं सकी है। देखिए, विलसन रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज, भाग १, पृष्ठ ३५९; गार्सां द तासी द्वारा उद्धृत भाग १, पृष्ठ ४७५।

३२२. लाल जी—काँधला, जिला मुजफ्फर नगर के कायस्थ। १७५१ ई० में उपस्थित।

इस साल इन्होंने भक्तमाल (सं० ५१) की 'भक्त उरबसी' नामक टीका लिखी।

३२३. जगजीवनदास—कोटवा जिला बारावंकी के चंदेल। १७६१ ई० में उपस्थित।

यह सतनामी संप्रदाय के प्रवर्तक थे और भाषा में कविताएँ भी लिखते थे। इनके उत्तराधिकारियों और शिष्यों में जलालीदास, दूलमदास और देवीदास (सं० ४८७) का नाम लिया जा सकता है। ये सभी कवि थे। यह और ये शातरस की कविता में बढ़े चढ़े थे। इनके ग्रंथों में ज्ञान प्रकाश, महा परलै और प्रथम ग्रंथ का उल्लेख किया जा सकता है। देखिए, विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज, पृष्ठ ३५७; गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ २५६।

टि०—जगजीवनदास का जन्मकाल सं० १७२७ माघ सुदी ७ और मृत्युकाल सं० १८१७ वैशाख बदी ७ है। ज्ञान प्रकाश और महा प्रलय का रचनाकाल सं० १८१३ है। जिसे ग्रियर्सन ने प्रथम ग्रन्थ समझा है, वह 'परम ग्रंथ' है। इसका रचना काल १८१२ है।

—सर्वेक्षण ३०४

३२४. दुल्हा राम—१७७६ ई० में उपस्थित।

यह १७७६ ई० में राम सनेही हुए और १८२४ ई० में दिवंगत हुए। यह संप्रदाय के तीसरे आध्यात्मिक गुरु थे। इन्होंने प्रायः १०,००० सबद और ४,००० साखियाँ छोड़ी हैं। देखिए, गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ १६१।

भाग २, अन्य कवि

[यथा संभव संबंधित आश्रयदाता और राज्य के क्रम से]

३२५. जै सिङ्घ सवाई—आमेर के कछवाहा राजा। शासनकाल १६९९-१७४३ ई०।

यह कवियों के आश्रयदाता ही नहीं थे, बल्कि इन्होंने 'जैसिंह कल्पद्रुम' नाम से अपना जीवन चरित भी लिखा है, जो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ है। यह अपने युग के असाधारण लोगों में से थे। देखिए, टाड का राजस्थान, भाग २, पृष्ठ ३५६–६८; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ३९३–४०७।

३२६. सूरति मिसर—आगरा के। १७२० ई० में उपस्थित।

सूदन। विहारीलाल (सं० १९६) की सतसई की एक प्रख्यात टीका, सरस रस (राग कल्पद्रुम), नखशिख, रसिक प्रिया की टीका (देखिए संख्या १३४) और अलंकार माला नामक अलंकार ग्रन्थ के रचयिता। मुहम्मदशाह के शासनकाल (१७१९–१७४८ ई०) में बैताल पचीसी (राग कल्पद्रुम) का ब्रजभाषा में, जैसिंह सवाई (सं० ३२५, १६९९–१७४३ ई०) की आज्ञा से, अनुवाद किया। यह ब्रजभाषानुवाद ही बैताल पचीसी के लल्लू जी लाल (देखिए, सं० ६२९) वाले सुप्रसिद्ध हिन्दुस्तानी रूपान्तर का मूलाधार है। देखिए गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ ३०६–४८४ और अन्तिम कथित ग्रन्थ की भूमिका भी।

पुनश्च—अलंकार माला की तिथि सं०१७६६ (१७०८ ई०) दी गई है।

टि०—सूरति मिश्र का रचनाकाल सं० १७६६–१८०० है।

—सर्वेक्षण ९३१

३२७. क्रिशन कवि—जैपुर के। १७२० ई० में उपस्थित।

यह कवि बिहारी लाल (सं० १९६) के शिष्य थे। राजा जैसिंह सवाई (सं० ३२५) की नौकरी में थे। इन्होंने बिहारी की सतसई पर टीका लिखी थी। देखिए संख्या १८०।

टि०—बिहारी सतसई पर कवित्त-बंध टीका रचने वाले जयपुरी कृष्ण कवि बिहारी के शिष्य नहीं थे। इन्होंने यह टीका सं० १७८२ में पूर्ण की, जब कि बिहारी की मृत्यु सं० १७२१ में ही हो गई थी। —सर्वेक्षण ८१

३२८. क्रिपाराम कवि—जयपुर के। १७२० ई० में उपस्थित।

यह राजा जयसिंह सवाई (सं० ३२५) के ज्योतिषियों में से थे। इन्होंने ज्योतिष सम्बन्धी एक ग्रन्थ 'समय बोध' (? समय ओघ) भाषा में लिखा।

टि०—ग्रंथ का नाम 'समय बोध' ही है। इसकी रचना सं० १७७२ में हुई थी। —सर्वेक्षण ११२

३२९. मोहन कवि—१७२० ई० में उपस्थित।

यह राजा जयसिंह सवाई (सं० ३२५) के दरबार में थे। देखिए सं० २८४।

३३०. बुद्ध राव—हाड़ा। १७१०–१७४० ई० में उपस्थित।

यह बूँदी के राजा थे और आमेर के राजा जयसिंह सवाई (सं० ३२५) की बहन से व्याहे गये थे। बादशाह बहादुरशाह ने (१७०७-१७१२ ई०) अपने भाई आलम की प्रतिद्वंदिता के समय इनसे बड़ी सहायता पाई थी। सिंहासन प्राप्ति के लिए यह इनका परम कृतज्ञ था। बुद्ध ने सैयद बुरहाना के विद्रोह में भी १७२४ ई० में बादशाह को बचाया था और पुनः शक्तिशाली बनाया था। शाही सिंहासन प्राप्ति के इस संघर्ष में इनकी विशेष सेवाओं के लिए इन्हें रावराजा की उपाधि मिली थी। यह १७४० ई० के आस-पास अपने साले जयसिंह द्वारा हराए गए और गद्दी से उतार दिए गए। यह स्वयं कवि और कवियों के आश्रयदाता थे। देखिये, टाड भाग २, पृष्ठ ४८२ और आगे; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ५२८ और आगे।

टि०—राव बुद्धसिंह का जन्म सं० १७४२ में एवं देहावसान सं० १७९६ में हुआ। यह अपने बहनोई द्वारा सं० १७८७ में गद्दी से उतार दिये गए थे। राव राजा इनकी पुश्तैनी उपाधि थी। बहादुरशाह ने इन्हें महा राव राजा की उपाधि दी थी।

—सर्वेक्षण ४९८

३३१. भोज मिसर कवि—प्राचीन। १७२० ई० में उपस्थित।

यह बुद्ध राव (सं० ३३०) के दरबार में थे और 'मिसर शृङ्गार' नामक ग्रंथ के रचयिता थे।

३३२. गुरदत्त सिङ्घ—अमेठी (अवध) के राजा, उपनाम भूपति कवि, १७२० ई० के आसपास उपस्थित।

सत्कविगिराविलास, सुन्दरी तिलक। यह स्वयं तो कवि थे ही, कवियों के बड़े आश्रयदाता भी थे। सुन्दरी तिलक में यह छितिपाल कहे गए हैं। गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ १२१ एक भूपति या भूदेव का उल्लेख करता है, पर वे कायस्थ हैं और हिंदी पद्य में लिखित श्री भागवत नामक ग्रन्थ के रचयिता हैं। देखिए सं० ६०४।

टि०—अमेठी नरेश गुरुदत्त सिंह, 'भूपति' का रचनाकाल सं० १७८८-९९ है। सुंदरी तिलक में छितिपाल की रचना है। छितिपाल इन गुरुदत्त से भिन्न हैं। भारतेन्दु कालीन अमेठी नरेश राजा माधवसिंह (रचनाकाल सं०

१९१३) अपनी छाप छितिपाल रखते थे। भागवत के अनुवादक भूपति कायस्थ भी निश्चय ही इनसे भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ६२१,२४२

३३३. भगवंत राय खीची—असोथर जिला फतहपुर के। १७५० ई० में उपस्थित।

१ सुन्दरी तिलक। यह असोथर कुटुम्ब के संस्थापक अरारू के पुत्र थे। इन्होंने कई वर्षों तक अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा की और सफलतापूर्वक सम्राट् की सेना का सामना किया, किन्तु अंत में १७६० ई० में यह धोखे से मारे गए और इनका पुत्र रूपराम गद्दी पर बैठा। देखिए ग्राउस, सप्लीमेंट टू फतेहपुर गज़ेटियर, पृष्ठ ५, ८, जहाँ १७६० के स्थान पर १८६० अशुद्ध छपा है। यह एक 'रामायण' के लेखक और कामता प्रसाद (सं० ६४४) के पूर्वज थे। सम्भवतः यह शिवसिंह द्वारा उल्लिखित भगवन्त कवि और भगवान कवि भी हैं। भगवन्त कवि के रूप में सुन्दरी तिलक में उद्धृत।

टि०—भगवन्त राय खींची और भगवन्त कवि (सरोज सर्वेक्षण ६००) एक ही कवि हैं। भगवन्त कवि (सरोज सर्वेक्षण ६०१) इनसे भिन्न हैं।

३३४. उदयनाथ त्रिवेदी कवींद्र—बनपुरा दोआब के रहने वाले। १७२० ई० के आसपास उपस्थित।

सत्कविगिराविलास। यह हजारा के रचयिता कालिदास त्रिवेदी (सं० १५९) के पुत्र थे और उतने ही प्रसिद्ध कवि थे, जितने इनके पिता। पहले यह अमेठी के राजा हिम्मत सिंह के यहाँ रहते थे और कविता में उदैनाथ ही छाप रखते थे। कुछ दिनों के अनन्तर राजा ने इन्हें कवीन्द्र की उपाधि दी, तब यह यही छाप रखने लगे। यह उपाधि इन्हें रस चन्द्रोदय या रति विनोद या चन्द्रोदय या रसचन्द्रिका लिखने पर मिली थी। यह भाषा साहित्य का ग्रंथ है और संवत् १८०४ (१७४७ ई०) में लिखा गया था। तदनन्तर यह थोड़ी-थोड़ी देर अमेठी के गुरुदत्त सिंह (सं० ३३२), असोथर के भगवन्तराय खींची (सं० ३३३) (मृत्यु १७६० ई०) अजमेर[१] के राजा गजसिंह, और बूँदी के राजा बुद्धराव हाड़ा (१७१०–१७४० ई०) (सं० ३३०) के यहाँ ठहरे। इन सभी के द्वारा यह भली-भाँति सम्मानित हुए। यहाँ, यह कहा जा सकता है कि एक और भी कवींद्र, बेंती जिला रायबरेली के थे। वह भी प्रसिद्धि-प्राप्त कवि थे।

---

१. मुझे टाड में इस राजा का उल्लेख कहीं भी नहीं मिला।

टि०—गजसिंह आमेर के राजा थे। सरोज में उल्लिखित आमेर को ग्रियर्सन ने अजमेर पढ़ लिया, फलतः टाड में ढूँढ़ने पर भी अजमेर के राजवंश में इस नाम का कोई राजा उन्हें नहीं मिला।

—सर्वेक्षण ७४

३३५. सुखदेव कवि—दोआब के। १७५० ई० में उपस्थित।

यही संभवतः दौलतपुर के सुखदेव मिसर (सं० ३५६) अथवा इसी नाम के कम्पिला के दूसरे कवि (सं० १६०) भी है। यह असोथर, (फतहपुर) के भगवन्त राय खींची (सं० ३३३) (मृत्यु १७६० ई०) के दरबार में थे।

टि०—१६०, ३३५, ३५६ संख्यक सुखदेव एक ही हैं।

—सर्वेक्षण ८३४

३३६. भूधर कवि—असोथर जिला फतहपुर के। १७५० ई० के आस-पास उपस्थित।

यह असोथर, फतहपुर के भगवन्त राय खींची (सं० ३३०) (मृत्यु १७६०) में दरबार में थे।

३३७. मल्ल कवि—१७५० ई० के आस-पास उपस्थित।

यह असोथर, फतहपुर के भगवन्त राय खींची (संख्या ३३०) (मृत्यु १७६० ई०) के दरबार में थे।

३३८. संभुनाथ मिसर कवि—असोथर, जिला फतहपुर के। १७५० ई० के आस-पास उपस्थित।

सत्कविगिराविलास। यह असोथर, फतहपुर, के भगवन्त राय खींची (सं० ३३०) (मृत्यु १७६० ई०) के दरबार में थे। यह (१) रसकल्लोल, (२) रसतरंगिणी, और (३) अलंकार दीपक के रचयिता थे। यह शिव अरसेला (सं० ३३९) और अन्य अनेक कवियों के गुरु थे।

३३९. सिव अरसेला कवि—देउतहाँ जिला गोंडा के भाँट और कवि। १७७० ई० के आस-पास उपस्थित।

यह असोथर, फतहपुर के संभुनाथ मिसर (सं० ३३८) के शिष्य और जगत सिंह बिसेन के (सं० ३४०) के गुरु थे। यह रसिकविलास नामक साहित्य ग्रंथ के रचयिता थे। इन्होंने (२) अलंकार भूषण, (३) और एक पिङ्गल भी लिखा।

टि०—इनके पिंगल का नाम 'पिंगल छंदोबोध' है।

—सर्वेक्षण ८४३

३४०. जगत सिंह—बिसेन। १७७० ई० के आसपास उपस्थित।

यह गोंड़ा और भिनगा के राजवंश के थे। यह देउतहाँ के ताल्लुकेदार थे। इसी गाँव में शिव अरसेला वंदीजन रहते थे। काव्यकला में यह उनके शिष्य हो गए और 'छंद श्रृंगार' नामक पिंगल ग्रंथ लिखा। इन्होंने 'साहित्य-सुधानिधि' नामक अलंकार ग्रंथ भी लिखा। देखिए सं० ६०५।

टि०—साहित्य सुधानिधि की रचना सं० १८५८ वि० में हुई।

—सर्वेक्षण २५५

३४१. स्यामलाल कवि—जहानाबाद के। १७५० ई० के आसपास उपस्थित।

सूदन। (१) यह असोथर, फतहपुर के भगवंतराय खींची (सं० ३३३) (मृत्यु १७६० ई०) के दरबार में थे।

३४२. निवाज—बुंदेलखंडी ब्राह्मण। १७५० के आसपास उपस्थित।

यह असोथर, फतहपुर के भगवंतराय खींची (मृत्यु १७६० ई०) के यहाँ थे। संभवतः वही जो सं० ४४८ वाले।

टि०—३४२, ४४८ संख्यक दोनों निवाज भिन्न भिन्न हैं। प्रथम ब्राह्मण हैं, दूसरे मुसलमान।

३४३. सारंग कवि—असोथर, जिला फतहपुर के। १७५० ई० के आसपास उपस्थित।

यह असोथर, फतहपुर के भगवंतराय खींची (सं० ३३३) (मृत्यु १७६० ई०) के भतीजे भवानीसिंह खींची के दरबार में थे।

३४४. भिखारीदास—अरवल, बुंदेलखंड के कायस्थ। जन्म १७२३ ई०।

यह भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। इनके ग्रंथों में (१) छंदार्णव—पिंगल ग्रंथ, (२) रस सारांश, (३) काव्य निर्णय, (४) श्रृंगार-निधि, (५) बाग बहार, (६) प्रेम रत्नाकर का उल्लेख किया जा सकता है। संख्या ३ [काव्य निर्णय] में कुछ कवियों का नाम आया है। यह मूल ग्रंथ में 'Nir' से संकेतित है।

पुनश्चः—

प्रेम रत्नाकर की तिथि सं० १७४२ (१६८५ ई०) दी गई है और छंदार्णव की सं० १७९९ (१७४२ ई०)। पहले ग्रंथ में यह राजा रतनेश की प्रशंसा करते हैं। देखिए सं० ५१९, और संख्या १४९ का 'पुनश्च'।

टि०—महेशदत्त के अनुसार भिखारीदास का जन्मकाल सं० १७४५ और मृत्युकाल सं० १८२५ है; शुक्ल जी के अनुसार इनका रचनाकाल सं० १७८०-१८०७ है। अतः १७२३ ई० (सं० १७८०) इनका रचनाकाल है। बाग

बहार नाम का कोई ग्रंथ इन्होंने नहीं लिखा। प्रेम रत्नाकर देवीदास बुंदेलखंडी (सर्वेक्षण ३६३) का ग्रन्थ है। देवीदास ने इसे सं० १७४२ में रतनपाल, करौली नरेश, के लिए लिखा था। सरोज में प्रमाद से उदाहरण देते समय यह ग्रन्थ दास का हो गया है। यह प्रेस के भूतों की कृपा है। पंक्तियाँ ऊपर नीचे जो एक बार हुईं, तो सप्तम संस्करण तक बराबर रह गईं, यद्यपि इसका संशोधन भी किया गया। यह बुंदेलखंडी नहीं, प्रतापगढ़ी थे और प्रतापगढ़ के राजा के अनुज हिंदूपति के यहाँ थे। सरोजकार ने हिंदूपति को प्रसिद्ध छत्रसाल का पौत्र पन्नानरेश हिंदूपति समझ लिया और तदनुकूल इन्हें बुंदेलखंडी बना दिया है।

—सर्वेक्षण ३४३

३४५. गिरिधर कविराय—दोआब के। जन्म १७१३ ई०।

राग कल्पद्रुम। यह कुंडलिया छंद में नीति और सामयिक काव्य के प्रसिद्ध रचयिता हैं। यह इस छंद के प्रयोक्ता सबसे बड़े कवि माने जाते हैं। देखिए, केलाग का हिंदी ग्रामर, प्रोसोडी, पृष्ठ २५। संभवतः वही जो ४८३ संख्यक कवि।

टि०—सरोज में (सर्वेक्षण १६३) इन्हें 'सं० १७७० में उ० कहा गया है'। यह ४८३ संख्यक होलपुर वाले गिरिधर से निश्चय ही भिन्न हैं।

३४६. करन भट्ट—परना, बुंदेलखंड के भाट, जन्म १७३७ ई०।

इन्होंने बिहारी (सं० १९६) की सतसई की एक टीका साहित्य चंद्रिका नाम से परना के बुंदेला राजा सभासिंह (सं० १५५) और हिरदैसाहि के आश्रय में रहकर लिखी। यह आशु कविता और समस्यापूर्ति में परम प्रवीण थे, जो इनकी प्रतिभा की परीक्षा के लिए दी जाती थी। फलतः इन्हें अनेक प्रकार के उपहार और सम्मान मिले थे। तिथि शिवसिंह से ली गई है; पर मुझे परना के किसी सभासिंह नामक राजा का कोई पता नहीं लगा। रिपोर्ट आफ़ द आर्केआलोजिकल सर्वे आफ़ इंडिया, भाग ३१ में पृष्ठ ११२ पर हिरदे साहि का उल्लेख मिलता है, जो अपने पिता छत्रसाल की मृत्यु के पश्चात् १७१८ ई० (? संवत) में सिंहासनासीन हुए। देखिए, सं० ५०४।

पुनश्च :—

इनके साहित्य चंद्रिका की तिथि सं० १७९४ (१७३७ ई०) दी गई है, जिसको शिव सिंह इनके जन्मसंवत के रूप में देते हैं। हृदयसाहि के संबंध में संख्या ५०३ भी देखिए।

टि०—हृदयसाहि महाराज छत्रसाल के पुत्र थे। इन्होंने सं० १७८८ से १७९६ तक राज्य किया। सभासिंह, छत्रसाल के पौत्र और हृदय साहि के

पुत्र थे। इन्होंने सं० १७९६ से १८०९ वि० तक राज्य किया। क्षत्रसाल की मृत्यु न १७१८ ई० में हुई, न संवत १७१८ में। इनका मृत्युकाल सं० १७८८ है। शिव सिंह ने करनभट्ट को 'सं० १७९४ में उ०' कहा है। ग्रियर्सन ने 'उ०' का गलत अर्थ 'उत्पन्न' कर लिया है, और गल्ती सरोजकार के मत्थे ठोंक रहे हैं। सरोजकार का 'उ०' से अभिप्राय 'उपस्थित' से है।

—सर्वेक्षण ६९

३४७. आनंदघन कवि—दिल्ली वाले। सं० १७२० ई० में उपस्थित। मृत्यु १७३९ ई०।

राग कल्पद्रुम, सुंदरी तिलक। शिवसिंह का कहना है कि इनकी कविता सूर्य के समान देदीप्यमान है और उन्होंने यद्यपि इनका कोई पूर्ण ग्रंथ नहीं देखा, पर ५०० के लगभग इनकी फुटकर कविताएँ देखी हैं। महादेव परसाद के साहित्य भूषण के अनुसार यह जाति के कायस्थ और मुहम्मदशाह (१७१९-१७४८ ई०) के मुंशी थे। मृत्यु के पहले यह वृंदावन चले गए थे, जहाँ यह नादिरशाह के मथुरा वाले घेरे में मारे गए। इनका सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ सुजान सागर है। शिवसिंह द्वारा उल्लिखित, १६५४ ई० में उत्पन्न, कोकसार (राग कल्पद्रुम) नामक ग्रन्थ के रचयिता 'आनन्द कवि' भी सम्भवतः यही है। कभी-कभी यह घन आनन्द छाप भी रखते थे।

टि०—शुक्ल जी के अनुसार घनानन्द का जन्म काल (सं० १७४६) है। यह नादिरशाही में नहीं मारे गए, बल्कि अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण में सं० १८१७ में मारे गए। 'कोकसार के रचयिता आनन्द (सर्वक्षण ३९) इन घनानन्द या आनन्दघन से भिन्न हैं।

— सर्वेक्षण २२

३४८. जुगल किशोर भट्ट—कैथल, जिला करनाल, पंजाब के रहने वाले। १७४० ई० में उपस्थित।

बादशाह मुहम्मदशाह (१७१९–१७४८ ई०) के दरबारियों में यह प्रमुख थे। संवत् १८०३ (१७४६ ई०) में इन्होंने अलंकार निधि नाम का अलंकारों की प्रथम श्रेणी का एक ग्रन्थ लिखा, जिसमें इन्होंने सोदाहरण ९६ अलंकारों का वर्णन किया है। इस ग्रंथ में यह लिखते हैं कि रुद्रमणि मिसर (सं० ३५२), सुखलाल (सं० ३५४), सन्तजीव (सं० ३५३) और गुमान जी मिसर (सं० ३४९) नामक चार प्रमुख कवि स्वयं इनके दरबार में थे। 'किशोर संग्रह' नामक संकलन ग्रंथ में इनकी बहुत सी फुटकर रचनाएँ हैं। शिवसिंह द्वारा बिना तिथि दिए हुए श्रृङ्गारी कवि के रूप में उल्लिखित 'जुगल किशोर कवि' भी सम्भवतः यही हैं।

टि०—अलंकार निधि की रचना सं० १८०५ में हुई थी। (सर्वेक्षण २५६) जुगल किशोर (सर्वेक्षण २५७) से यह भिन्न हैं या अभिन्न, यह निर्णय करने के लिए कोई भी सूत्र सुलभ नहीं है।

३४९. गुमान जी मिसर—सौंड़ी जिला हरदोई के। १७४० ई० में उपस्थित।

यह संस्कृत और साहित्य में दक्ष थे। यह जुगुल किशोर भट्ट (सं० ३४८) के संरक्षण में, दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह (१७१९–१७४८ ई०) के दरबार में थे। तदनन्तर यह अली अकबर खाँ मुहम्मदी के यहाँ चले गए, जो स्वयं अच्छे कवि थे और जिनके यहाँ निघान (सं० ३५०) प्रेमनाथ (सं० ३५१) और अन्य बड़े कवि नौकर थे। गुमान जी ने 'कलानिधि' लिखा, जो श्री हर्ष के नैषध का विविध छंदों में पंक्ति प्रति पंक्ति टीका है। इन्होंने नैषध के कठिनतम अंश पंचनलीय पर सलिल[1] नामक एक विशेष टीका भी लिखी। शिवसिंह द्वारा उल्लिखित, १७३१ ई० में उत्पन्न, कृष्ण चन्द्रिका नामक ग्रंथ के रचयिता, दूसरे गुमान कवि भी सम्भवतः यही हैं।

पुनश्च :—

कलानिधि की तिथि सं० १८०५ (१७४८ ई०) दी गई है। ग्रन्थ टीका न होकर अनुवाद है।

टि०—गुमान मिश्र ने 'काव्य कलानिधि' नाम से नैषध का हिन्दी में अनुवाद किया था। इन्होंने पंचनलीय पर कोई विशेष टीका नहीं लिखी। सरोजकार का अर्थ वही है, जो ग्रियर्सन ने पाद टिप्पणी में दिया है।

कृष्ण चन्द्रिका वाले गुमान (तिवारी) से यह नैषध वाले गुमान मिश्र भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण १८५, १८६

३५०. निधान—ब्राह्मण। १७५१ ई० में उपस्थित।

यह अली अकबर खाँ मुहम्मदी के दरबार में थे, जहाँ इनका अच्छा सम्मान था। इन्होंने भाषा में पशु-चिकित्सा पर, एक अच्छा काव्यमय, शालिहोत्र लिखा था। गुमान जी मिसर (सं० ३४९) और प्रेमनाथ (संख्या ३५१) भी इनके साथ उक्त दरबार में थे।

टि०—शालिहोत्र की रचना सं० १८१२ में हुई थी।

—सर्वेक्षण ४११

३५१. प्रेम नाथ—कलुआ, जिला खीरी, अवध के ब्राह्मण। १७७० ई० में उपस्थित।

---

१. अथवा शिव सिंह (जिनसे मैंने यह लिया है) का यह अभिप्राय है कि उन्होंने पंचनलीय को पानी की तरह बिलकुल स्पष्ट कर दिया।

सुन्दरी तिलक। अली अकबर खाँ मुहम्मदी के दरबार में थे। इन्होंने ब्रह्मोत्तर खण्ड का भाषा में अनुवाद किया। गुमान जी मिसर (सं० ३४९) और निधान (सं० ३५०) भी इनके साथ उक्त दरबार में थे। शिव सिंह द्वारा उल्लिखित 'प्रेम कवि' भी संभवतः यही हैं।

टि०—सं० १८३९ में प्रेम नाथ जी ने महाभारत आदि पर्व का अनुवाद किया। यह 'प्रेम कवि' से भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ४८७, ४८०

३५२. **रुद्रमनि मिसर**—ब्राह्मण। १७४० ई० में उपस्थित।

यह दिल्ली में जुगुल किशोर भट्ट (सं० ३४८) के दरबार में थे।

३५३. **संतजीव कवि**—१७४० ई० में उपस्थित।

यह जुगुल किशोर भट्ट (सं० ३४८) के दरबार में थे।

३५४. **सुखलाल कवि**—१७४० ई० में उपस्थित।

सूदन। जुगल किशोर भट्ट (सं० २४८) के दरबार में थे।

३५५. **हरिनाथ**—गुजराती, बनारस वाले। जन्म १७६९ ई०।

अलंकार दर्पण नामक अलंकार ग्रंथ के रचयिता। गार्सां द तासी ने (भाग १, पृष्ठ २१८) एक हरिनाथ का उल्लेख किया है, जो 'पोथी शाह मुहम्मद शाही अर्थात् मुहम्मद शाह (१७१९–१७४८ ई०) के इतिहास के रचयिता हैं, जिसकी एक हस्तलिखित प्रति ब्रिटिश म्यूज़ियम (संख्या ६६५१) की अतिरिक्त पाण्डु लिपियों में है। संभवतः यह हरिनाथ भी यही थे।

पुनश्च :—

अलंकार दर्पण की तिथि सं० १८२६ (१७६६ ई०) दी गई है, जिसे शिव सिंह ने कवि का जन्म संवत् मान लिया है।

टि०—हरिनाथ गुजराती, तासी वाले हरिनाथ से भिन्न प्रतीत होते हैं। सरोज में (सर्वेक्षण ९९८) इन्हें 'सं० १८२६ में उ०' कहा गया है। ग्रियर्सन ने इसे उत्पत्तिकाल समझने की भूल की है, सरोजकार ने तो उपस्थितिकाल ही दिया है।

३५६. **सुखदेव मिसर कवि**—दौलतपुर जिला रायबरेली के। १७४० ई० में उपस्थित।

यह डौंड़िया खेरा, अवध के राव मरदान सिंह बैस के यहाँ थे और उनके नाम पर नायिका भेद का एक ग्रंथ 'रसार्णव' (राग कल्पद्रुम) नाम का लिखा। शंभुनाथ बंदीजन (सं० ३५७) इनके शिष्य थे। देखिए गार्सां द तासी, भाग १, पृ० ४७९। देखिए सं० ३३५।

टि०—ग्रियर्सन के १६०, ३३५ और ३५६ संख्यक तीनों सुखदेव एक ही हैं।

—सर्वेक्षण ८३४

३५७. संभुनाथ कवि—कवि और वंदीजन। १७५० ई० में उपस्थित।

यह दौलतपुर वाले सुखदेव मिसर (सं० ३५६) के शिष्य और रामविलास नामक रामायण के रचयिता थे। देखिए सं० ३६६.

पुनश्च :—

रामविलास की तिथि सं० १७९८ (१७४१ ई०) दी गई है।

३५८. दूलह त्रिवेदी—बनपुरा, दोआब के। १७४६ ई० में उपस्थित।

सत्कवि गिराविलास। यह उदयनाथ त्रिवेदी (सं० ३३४) के पुत्र और प्रसिद्ध हजारा के संकलयिता कालिदास त्रिवेदी (सं० १५९) के पौत्र थे। इन्होंने कवि कुल कंठाभरण नामक भाषा साहित्य का बहुत प्रामाणिक ग्रंथ लिखा।

३५९. बलदेव कवि—बघेलखंडी। १७४६ ई० में उपस्थित।

यह देवरा बाजार के राजा विक्रम साह[1] बघेल के दरबार में थे। इस साल इन्होंने, इस राजा की इच्छा से, सत्कवि गिराविलास नामक काव्य संग्रह तैयार किया, (जो मूल ग्रन्थ में sat से संकेतित है), जिसमें १७ विभिन्न कवियों की रचनाएँ हैं :—

१. केशवदास (सं० १३४)
२. चिन्तामणि (सं० १४३)
३. मतिराम (सं० १४६)
४. शम्भुनाथ सुलंकी (सं० १४७)
५. नीलकंठ (सं० १४८)
६. कालिदास त्रिवेदी (सं० १५९)
७. सुखदेव मिसर कंपिला के (सं० १६०)
८. बिहारी लाल (सं० १९६)
९. केशवराय (सं० ३००)
१०. रविदत्त (सं० ३०४)
११. गुरुदत्तसिंह अमेठी के (सं० ३३२)
१२. उदयनाथ त्रिवेदी (सं० ३३४)
१३. शंभुनाथ मिसर (सं० ३३८)

---

१. चरखारी के प्रसिद्ध विक्रमसाहि (सं० ५१४) से, जो १७४५ ई० में उत्पन्न हुए थे, इन्हें भिन्न होना चाहिए। विचित्र है कि इनके दरबार में भी एक बलदेव कवि थे।

१४. दूलह (सं० ३५८)
१५. हिम्मत बहादुर (सं० ३७७)[1]
१६. विश्वनाथ अताई (सं० ४२१)
१७. मुकुंद लाल (सं० ५६०)

यह स्वयं भी कविता लिखते थे।

३६०. मनबोध झा—उपनाम भोलन झा, जयसम जिला दरभंगा के। १७५० ई० में उपस्थित।

मिथिला के बहुत प्रसिद्ध कवियों में से एक। इनके संबंध में निम्नलिखित तथ्य के अतिरिक्त बहुत कम ज्ञात है। इन्होंने किसी भिखारीदास की कन्या से विवाह किया था और इनके एक ही संतान, एक लड़की, हुई, जो वर्तमान दरभंगा महाराज की पूर्वजा थी। इन्होंने हरिवंश का मैथिली भाषा में अनुवाद किया था। इसके केवल १० अध्याय मिलते हैं, जो परम प्रसिद्ध हैं। देखिए जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, १८८२, पृष्ठ १२९ और १८८४ विशेषांक।

३६१. केसव—१७७५ ई० में उपस्थित।

यह मैथिल कवि थे, जो राजा परतापसिंह के दरबार में थे, जो स्वयं मोद नारायण उपनाम से (सं० ३६२) कविता करते थे।

३६२. मोद नारायण—उपनाम राजा परतापसिंह। १७७५ ई० के आसपास उपस्थित।

मिथिला के राजा, जो स्वयं भी कवि थे। यह दरभंगा के नरेंद्र सिंह के पुत्र थे, जिन्होंने कनरपीघाट जीता था (देखिए लाल झा सं० ३६३) और वर्तमान महाराज से पाँच पीढ़ी पहले थे। देखिए जर्नल आफ़ द एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, भाग ५३, पृष्ठ ८२। कवि केशव (सं० ३६१) इनके दरबारी थे।

३६३. लाल झा—मँगरौली, जिला दरभंगा के लाल झा या कवि लाल। १७८० ई० में उपस्थित।

मिथिला के परम प्रसिद्ध कवियों में से एक। 'कनरपी घाट लड़ाई' नामक ग्रंथ के रचयिता। देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, भाग ५४, पृष्ठ १६। इनके आश्रयदाता नरेंद्र सिंह थे, जिन्होंने उक्त ग्रंथ के लिए इन्हें करनौल नामक गाँव पुरस्कार में दिया था। यह गाँव अब इनके वंशजों के अधिकार में है।

---

१. हिम्मत बहादुर १८०० ई० में थे, लेकिन उस समय तक यह बहुत बुड्ढे हो गए रहे होंगे।

३६४. तीरथराज—बैसवाड़ा के ब्राह्मण। जन्म १७४३ ई०।

यह डौंड़ियाखेरा, अवध के राजा अचलसिंह बैस के दरबार में थे। उनकी आज्ञा से इन्होंने १७५० ई० में समर सार का भाषानुवाद किया।

टि०—तीर्थराज ने १७५० ई० (सं० १८०७) में समर सार की रचना की। अतः इसके सात ही वर्ष पूर्व १७४३ ई० में इनका जन्म नहीं हो सकता। यह कवि का रचना काल या उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ३२७

३६५. दयानिधि कवि—बैसवाड़ा के। जन्म १७५४ ई०।

डौंड़ियाखेरा, अवध के राजा अचलसिंह बैस के कहने पर इन्होंने अश्व चिकित्सा का 'शालिहोत्र' नामक ग्रन्थ लिखा। देखिए सं० ७८७।

टि०—१७५४ ई० (सं० १८११) दयानिधि का उपस्थिति काल है। यह जन्म काल नहीं हो सकता, क्योंकि १७५० ई० इनके आश्रयदाता अचल सिंह (यही ग्रंथ, संख्या ३६४) का उपस्थिति काल है। —सर्वेक्षण ३३८

३६६. संभुनाथ कवि त्रिपाठी—१७५२ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह संभवतः राम विलास के रचयिता शंभुनाथ (सं० ३५७) ही हैं। यह डौंडियाखेरा, अवध के राजा अचलसिंह बैस के दरबार में थे। राव रघुनाथसिंह के नाम पर, इन्होंने इस साल शिवदास कृत संस्कृत 'बैताल पंचविंशतिका' का भाषानुवाद 'बैताल पचीसी' (राग कल्पद्रुम) नाम से किया। इन्होंने ज्योतिष संबंधी ग्रंथ 'मुहूर्त चिंतामणि' का भी विभिन्न छंदों में भाषानुवाद किया था।

टि०—१७५२ ई० (सं० १८०९) बैताल पचीसी ही का रचनाकाल है।

—सर्वेक्षण ८४०

३६७. सूदन कवि—जन्म १७५३ ई०।

यह बदन सिंह के पुत्र सुजान सिंह के दरबार में थे। दस छंदों की एक कविता में इन्होंने अनेक कवियों की प्रशस्ति की है। इसका उल्लेख शिव सिंह ने किया है। इनमें से नौ छंद खो गए। शिव सिंह के पास केवल अंतिम छंद बच रहा, जिसे उन्होंने सरोज में दिया भी है, जिसमें निम्नांकित कवियों के नाम हैं—सनेही, सबलसिंह, सरबसुख, शिवदास, शिवराम, सुखलाल, सुनाम (?) सुमेरु, सूरज, सूरति, सेनापति, सेख, सोमनाथ, श्यामलाल, श्रीधर, श्रीपति, हरि, हरिदास, हरिवंश, हरिहर, हीरस (?) हितराम और हुसेन। (मूल ग्रंथ में Sud से संकेतित)।

टि०—यहाँ सूदन के सुजान चरित्र के प्रारंभिक १० छंद अभीष्ट हैं, जिनमें से ६ में उन्होंने अपने पूर्ववर्ती या समसामयिक सैकड़ों कवियों को प्रणाम किया है। 'सुनाम' किसी कवि का नाम नहीं है; यह 'प्रख्यात नाम वाले' के अर्थ में प्रयुक्त है। 'होरस' भी कवि नहीं है। कवि का नाम 'हीरा' है। सूदन ने सुजान चरित की रचना सं० १८१० के आसपास की थी, अतः यही इनका जन्म काल नहीं है।

—सर्वेक्षण ९२९

३६८. रंगलाल कवि—जन्म १७५० ई० के लगभग।

यह बदन सिंह के पुत्र सुजान सिंह के दरबार में थे।

टि०—भरतपुर नरेश बदन सिंह के पुत्र सुजान सिंह या सूरजमल का राज्य काल सं १८१२-२० है; अतः १७५० ई० इनका रचनाकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ७८१

३६९. ब्रजवासीदास—वृंदावन, दोआब के। १७७० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम, सुंदरी तिलक, ? श्रृंगार संग्रह। शिव सिंह का कहना है कि यह १७५३ ई० में उत्पन्न हुए थे। इन्होंने ब्रजविलास (राग कल्पद्रुम) नामक ग्रंथ १७७० ई० में लिखा था, जिसमें कृष्ण का वृंदावन-कालीन जीवन चित्रित है। देखिए विलसन, रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिंदूज, पृष्ठ १३२ और गार्सां द तासी भाग १, पृष्ठ १३१। बिना तिथि दिए हुए, शिवसिंह द्वारा उल्लिखित, प्रबोध चंद्रोदय नाटक (राग कल्पद्रुम) का भाषानुवाद करनेवाले, 'ब्रजवासीदास' उपनाम 'दास ब्रजवासी' भी संभवतः यही हैं।

टि०—वृंदावन का दोआब से कोई संबंध नहीं। शिवसिंह ने इन्हें 'सं० १८१० में उ०' लिखा है। उत्पन्न नहीं लिखा है। सं० १८१० भी इनका उपस्थिति काल ही है। प्रबोध चंद्रोदय के कर्ता ब्रजवासीदास या दास ब्रजवासी भी यही हैं।

—सर्वेक्षण ५२७, ५३४, ३७५

३७०. करन बंदीजन—जोधपुर, मारवाड़ के कवि और भाट। १७३० ई० के आसपास उपस्थित।

राठौर महाराजों के कवि। अजित सिंह (सं० १९५) के पुत्र महाराज अभय सिंह राठौर (१७२४–१७५० ई०) के आश्रय में रहकर इन्होंने 'सूर्य प्रकाश' नामक ग्रंथ लिखा। यह ७,५०० श्लोकों के बराबर है और इसमें महाराज जसवंतसिंह (१६३८–१६८१) से लेकर अभयसिंह (१७३१ ई०) तक का इतिहास हैं। देखिए, टाड भाग १, पृष्ठ १४ भूमिका, भाग २, पृष्ठ

४, ९१, १०७; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १३ भूमिका, भाग २, पृष्ठ ४, ९९, ११७। टाड ने इस कवि के संबंध में एक कथा दी है और इसकी कविता का एक उद्धरण भी दिया है—भाग २, पृष्ठ १२०; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ१३१।

टि०—'सूर्य प्रकाश' की रचना सं० १७८७ में हुई। इस कवि के संबंध में दी गई कथा और इसकी कविता का उद्धरण टाड से सरोज में भी दिया गया है।

—सर्वेक्षण ७१

३७१. बिजै सिङ्घ—जोधपुर, मारवाड़ के महाराज। शासनकाल १७५३-१७८४ ई०।

यह स्वयं भी कवि थे। इन्होंने 'बिजै विलास' नामक ग्रंथ लिखाया। यह इतिहास ग्रंथ है। इसमें १ लाख दोहे हैं। इसमें अभय सिंह के पुत्र और इनके चचेरे भाई राम सिंह तथा इनके बीच हुए युद्ध का वर्णन है। यह इसी का परिणाम था कि मराठों को इस राज्य में प्रवेश करने का अवसर मिला। शिव सिंह ने गलत लिखा है कि यह उदयपुर मेवाड़ के राजा थे। देखिए टाड का राजस्थान, भाग १, पृष्ठ १४ भूमिका, भाग २, पृष्ठ ४, १२१ और आगे; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ १३ भूमिका, भाग २, पृष्ठ ४, १३४ और आगे।

३७२. मान कवि—बैसवाड़ा के ब्राह्मण। १७६१ ई० में उपस्थित।

इन्होंने इस वर्ष कृष्णखंड का भाषानुवाद 'कृष्ण कल्लोल' नाम से किया। इस ग्रंथ के प्रारंभ में शालिवाहन से लेकर चपंतिराय (? छत्रसाल सं० १९७ के पिता) तक वंशावली दी गई है।

३७३. छेमकरन कवि—धनौली, जिला बाराबंकी के ब्राह्मण; जन्म १७७१ ई०।

यह (१) राम रत्नाकर, (२) रामास्पद (३) गुरु कथा, (४) आह्निक, (५) राम गीत माला, (६) कृष्ण-चरितामृत, (७) पद विलास, (८) रघुराज घनाक्षरी, (९) वृत्त भास्कर और अन्य सुंदर ग्रंथों के रचयिता हैं। यह ९० वर्ष की वय में १८६१ ई० में दिवगंत हुए।

३७४. चंदन राय कवि—नाहिल (? माहिल) पुवावाँ, जिला शाहजहाँपुर के वंदीजन और कवि। १७७३ ई० में उपस्थित।

यह गौर के राजा केसरीसिंह के दरबार में थे। उनके नाम पर इन्होंने केसरी प्रकाश लिखा। इनके अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं—शृंगार सार, कल्लोल तरंगिणी (१७८९ ई० में लिखित), काव्याभरण, चंदन सतसई और पथिक बोध। यह सभी परम प्रसिद्ध हैं। इनके १२ शिष्य थे, जो सभी सफल कवि थे।

सबसे प्रसिद्ध मनभावन (सं० ३७५) थे। इनके एक वंशज मकरंद राय (सं० ६१०) थे।

टि०—चंदन राय नाहिल पुवावाँ के रहनेवाले थे। यह केशरी सिंह गौड़ के दरबार में थे। गौड़ किसी जगह का नाम नहीं है, जाति का नाम है। इनका रचनाकाल सं० १८१०-६५ है।

—सर्वेक्षण २२४

३७५. मनभावन—मुड़िया जिला शाहजहाँपुर के ब्राह्मण। १७८० ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह चंदन राय (सं० ३७४) के १२ शिष्यों में सर्वाधिक सफल थे। इनका श्रेष्ठतम ग्रंथ श्रृङ्गार-रत्नावली है।

३७६. रतन कुँअरि—बनारसी, जन्म १७७७ ई० के आसपास।

कृष्ण भक्तों के विवरण संबंधी 'प्रेम रत्न' नामक ग्रंथ की रचयित्री। यह राजा शिव प्रसाद सी. एस. आई. (सं० ६९९) की पितामही थीं। इनके संबंध में यह महोदय मुझे लिखते हैं—"मेरी दादी रतन कुँअरि करीब ४५ वर्ष पहले मरीं, जब मैं १९ वर्ष का ही था और स्वर्गीय महाराज भरतपुर के वकील की हैसियत से गवर्नर जेनरल के अजमेर स्थित एजेंट, कर्नल सदरलैंड की कचहरी में था। उनकी अवस्था, जब उन्होंने दुनिया छोड़ी, ६० और ७० के बीच थी; मुझे दुःख है कि मैं आपको ठीक ठीक तिथियाँ नहीं दे सकता। प्रेम रत्न के अतिरिक्त उन्होंने अनेक पद भी रचे थे। मेरे पास एक हस्त-लिखित ग्रंथ 'पद की पोथी' है, जिसमें उन्होंने यत्र तत्र अपने ही हाथों अपने पद लिखे हैं। वह अच्छा गाती थीं और बहुत सुंदर लिखती थीं। वह संस्कृत अच्छा जानती थीं, फ़ारसी की भी कुछ जानकारी थी। वह औषधियाँ भी जानती थीं। और जो कुछ मैं जानता हूँ, उसका अधिकांश मैंने उनसे ही सीखा।" (१८८७ ई० में लिखित)।

टि०—'प्रेम रत्न' में कृष्ण भक्तों का विवरण नहीं है; इसमें कृष्ण और गोपियों का कुरुक्षेत्र में पुनर्मिलन वर्णित है।

३७७. जसवंतसिंह—तिरवा, कन्नौज के बघेल राजा। १७९७ ई० में उपस्थित।

यह संस्कृत और फारसी के अच्छे जानकार थे। इन्होंने अन्य ग्रंथों से श्रृंगार शिरोमणि नामक नायिकाभेद का एक साहित्य ग्रंथ संकलित किया था। इन्होंने अलंकार पर भी, संस्कृत के चंद्रालोक के आधार पर, भाषा भूषण (राग कल्पद्रुम) नामक एक अत्यंत प्रसिद्ध ग्रंथ और अश्व चिकित्सा संबंधी शालिहोत्र नामक ग्रंथ लिखा था। ये सभी सुंदर ग्रंथ हैं। यह १८१४ ई० में

दिवंगत हुए। भाषा भूषण के अनेक टीकाकार हुए हैं, जिनमें से निम्नांकित का उल्लेख किया जा सकता है—परताप साहि (!) (सं० १४९), नारायणराय (सं० ५७२), गिरिधर बनारसी (सं० ५८०) दलपतिराय (सं० ६३५), वंशीधर (सं० ६३६), उनियारा के अज्ञात नाम कवि (६६०), हरि (सं० ७६१)। यह बनारस में अम्बिकाचरण चट्टोपाध्याय द्वारा संवत् १९४३ (१८८६ ई०) में प्रकाशित हुआ है। इसका एक बम्बई संस्करण ग्रंथ-कर्ता को मारवाड़ का जसवन्त सिंह (१६३८–१६८१ ई०) मानता है, लेकिन यह अत्यन्त संदिग्ध है। देखिए सं० १४९ और सं० १४९ का पुनश्च।

टि०—भाषा-भूषण मारवाड़ नरेश जसवन्त सिंह ही की रचना है, इनकी नहीं।

—सर्वेक्षण २६५, २६६

३७८. **हिम्मति बहादुर**—गोसाईं, नवाब हिम्मत बहादुर। १८०० ई० में उपस्थित।

सत्कविगिराविलास। इनके दरबार में अनेक कवि थे, जिनमें ठाकुर (जिन्होने इनका जीवन बचाया था, सं० १७३) और राम सरन भी थे। अस्कन्दगिरि (सं० ५२७) इनके वंशज थे।

यह सैनिक-सन्त या फौजी गुरु थे, जिनके अधीन सेंधिया की सेना में गोसाँइयों की एक टुकड़ी थी। इन्होंने अली बहादुर को बुन्देल खण्ड विजय के लिए उकसाया था, लेकिन अन्त में दूसरे मराठा युद्ध के समय (१८०३–१८०६) यह अँगरेजों की ओर हो गए। उस समय यह काफ़ी बुड्ढे हो गए रहे होंगे, क्योंकि इनकी कविताएँ सत्कविगिराविलास में संकलित हैं, जो १७४६ ई० में लिखा गया था।

टि०—हिम्मत बहादुर की मृत्यु सं० १८६१ में हुई थी।

—सर्वेक्षण ९९९

३७९. **राम सरन कवि**—हमीरपुर जिला इटावा के। १८०० ई० में उपस्थित।

३८०. **राम सिङ्घ कवि**—बुन्देलखण्डी। १८०० ई० में उपस्थित।

ये दोनों हिम्मत बहादुर के दरबार में थे।

अध्याय ६ का परिशिष्ट

३८१. **आदिल कवि**—जन्म १७०३ ई०।

शिव सिंह ने इनकी फुटकर कविताएँ देखी हैं, कोई पूर्ण ग्रंथ नहीं।

३८२. **व्रजचन्द कवि**—जन्म १७०३ ई०।

३८३. **भौन कवि**—प्राचीन। बुन्देलखण्डी। जन्म १७०३ ई०।

श्रृंगारी कवि।

३८४. महबूब कवि—जन्म १७०५ ई० ।

३८५. किशोर सूर कवि—जन्म १७०४ ई० ।

श्रृंगार संग्रह, सुन्दरी तिलक। इन्होंने छप्पय छन्द में बहुत-सी कविताएँ लिखी हैं।

टि०—१७०४ ई० (सं० १७६१) किशोर सूर का अन्तिम जीवनकाल हो सकता है, जन्मकाल तो यह है ही नहीं।

—सर्वेक्षण ११५

३८६. मदन किशोर कवि—१७१० ई० में उपस्थित ।

बहादुर शाह (१७०७–१७१२) के दरबार में थे। देखिए सं० ४५०

३८७. दयाराम कवि त्रिपाठी—जन्म १७१२ ई० ।

शान्त रस के कवि। यह संभवतः वही हैं जिन्हें शिव सिंह ने (बिना तिथि दिए हुए) अनेकार्थ नामक कोष ग्रंथ का रचयिता दयाराम कहा है।

टि०—दयाराम त्रिपाठी (सर्वेक्षण ३३५) और अनेकार्थ वाले दयाराम (सर्वेक्षण ३३४) दो भिन्न व्यक्ति हैं।

३८८. पुंडरीक कवि—जन्म १७१२ ई० ।

३८९. गड्डु कवि—राजपूताना के। जन्म १७१३ ई० ।

छप्पय छंदों में रचित नीति सम्बन्धी इनके छंद और कूट प्रसिद्ध हैं।

टि०—गाडूराम का समय सं० १८८२ है। ग्रियर्सन में दिया समय अशुद्ध है। इनका जन्म काल सं० १८५० के लगभग होना चाहिए।

—सर्वेक्षण १९९

३९०. नंदलाल—जन्म १७१७ ई० ।

३९१. लाल मुकुंद कवि—जन्म १७१७ ई० ।

श्रृङ्गारी कवि। सम्भवतः यही मुकुंद लाल (सं० ५६०) भी हैं।

टि०—ग्रियर्सन की सम्भावना ठीक है। १७१७ ई० (सं० १७७४) इनका उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ८०६, ६३४

३९२. इंदु कवि—जन्म १७१९ ई० ।

साधारण कवि।

टि०—सरोज में इन्हें 'सं० १७६६ में उ०' कहा गया है।

—सर्वेक्षण ५०

३९३. ब्रजराज कवि—बुंदेलखंडी, जन्म १७१८ ई० ।

३९४. याकूब खाँ कवि—जन्म १७१८ ई० ।

इन्होंने रसिक-प्रिया की टीका की। देखिए सं० १३४।

टि०—इसी वर्ष इन्होंने 'रस-भूषण' नाम ग्रंथ लिखा (विनोद ६७३)। अतः यह जन्म काल नहीं है।

—सर्वेक्षण ४२

३९५. बीरबल—उपनाम बीरवर, दिल्ली के कायस्थ। १७२२ ई० में उपस्थित। उक्त वर्ष लिखित 'कृष्ण चन्द्रिका' नामक साहित्य ग्रंथ के रचयिता।

३९६. राजाराम कवि—जन्म १७२१ ई०।

श्रृङ्गारी कवि। देखिए सं० २३३।

३९७. अनवर खाँ कवि—जन्म १७२३ ई०।

इन्होंने बिहारी सतसई (सं० १९६) पर एक टीका और अनवर चन्द्रिका नाम एक और ग्रन्थ लिखा; अथवा सम्भवतः अनवर चन्द्रिका ही उक्त टीका का नाम है।

टि०—बिहारी सतसई की प्रसंग-प्राप्त टीका का ही नाम अनवर चन्द्रिका है। अनवर चन्द्रिका कोई अन्य ग्रन्थ नहीं। इसकी रचना अनवर खाँ ने नहीं की थी; अनवर खाँ के लिए इसकी रचना कमल नयन और शुभकरन नामक कवियों ने सं० १७७१ में की थी। अतः १७२३ ई० अनवर खाँ का जन्म काल न होकर उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ४३

३९८. गुलाल सिङ्घ—जन्म १७२३ ई०।

टि०—गुलाल सिंह ने सं० १७५२ में दफ्तर नामा ग्रंथ रचा था। अतः १७२३ ई० (सं० १७८०) इनका उपस्थिति काल है, न कि जन्म काल।

—सर्वेक्षण २०५

३९९. बेचू कवि—जन्म १७२३ ई०।

४००. ब्रजनाथ कवि—जन्म १७२३ ई०।

राग माला (राग कल्पद्रुम) नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ के रचयिता। देखिए सं० ९०४।

४०१. मधुनाथ कवि—जन्म १७२३ ई०।

४०२. मनोहर कवि—जन्म १७२३ ई०।

टि०—मनोहरदास प्रियादास के गुरु थे। इन्होंने सं० १७५७ में 'राधा रमण रस सागर लीला' नाम ग्रंथ रचा था। अतः १७२३ ई० (सं० १७८०) इनके जीवन का सांध्यकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ६८२

४०३. महाकवि—(? बड़ा कवि)—१७२३ ई० में उपस्थित।

सुंदरी तिलक।

टि०—महाकवि कालिदास त्रिपाठी का उपनाम है।

—सर्वेक्षण ६८८, ७३

४०४. रसराज कवि—जन्म १७२३ ई०।

एक अच्छे नखशिख के रचयिता।

४०५. रसिक बिहारी—जन्म १७२३ ई०।

राग कल्पद्रुम।

टि०—महाराज नागरीदास की उपपत्नी बनीठनी जी रसिक बिहारी नाम से लिखती थीं। १७२३ ई० इनका उपस्थिति काल है। इनका देहावसान सं० १८२२ में आषाढ़ पूर्णिमा को हुआ।

—सर्वेक्षण ७९५

४०६. रुद्रमणि—चौहान, जन्म १७२३ ई०।

४०७. दल सिङ्घ—राजा, बुंदेलखंडी। जन्म १७२४ ई०।

राधाकृष्ण की लीला से संबंध रखनेवाले 'प्रेम पयोनिधि' नामक ग्रंथ के रचयिता।

४०८. प्राननाथ—कोटा के। जन्म १७२४ ई०।

यह कोटा दरबार में थे।

टि०—१७२४ ई० (सं० १७८१) उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ४५८

४०९. जुलफेकार कवि—जन्म १७२५ ई०।

इन्होंने बिहारी (सं० १९६) की सतसई पर एक अच्छा तिलक रचा।

टि०—समय एकदम गलत है। प्रसंग-प्राप्त ग्रन्थ की रचना सं० १९०३ में हुई थी।

—सर्वेक्षण ३०५

४१०. कमल नयन कवि—बुंदेलखंडी। जन्म १७२७ ई०।

श्रृंगार रस पर इन्होंने बहुत लिखा है, पर इनका कोई पूर्ण ग्रंथ नहीं ज्ञात है। इनकी कविता सरस कही जाती है।

टि०—१७२७ ई० (सं० १७८४) उपस्थिति काल है, जन्म काल नहीं।

—सर्वेक्षण ८९

४११. बिस्वनाथ अताई—बुंदेलखंडी; जन्म १७२७ ई०।

सत्कविगिराविलास।

टि०—१७२७ ई० (सं० १७८४) इनका जन्मकाल न होकर उपस्थिति काल है, क्योंकि इसके १९ ही वर्ष बाद संकलित सत्कविगिराविलास में इनकी रचना है।

४१२. मंचित कवि—जन्म १७२८ ई० ।

टि०—१७२८ ई० (सं० १७८५) इनका उपस्थिति काल है ।

—सर्वेक्षण ६४५

४१३. बिहारी कवि—बुंदेलखंडी । जन्म १७२९ ई० ।

टि०—१७२९ ई० (सं० १७८६) उपस्थिति काल है ।

—सर्वेक्षण ५५३

४१४. नरिंद कवि—जन्म १७३१ ई० ।

४१५. रस रूप कवि—जन्म १७३१ ई०

टि०—१७३१ ई० (सं० १७८८) उपस्थिति काल है । सं० १८११ में इन्होंने तुलसी भूषण नाम ग्रंथ रचा था, जिसमें तुलसीदास के अलंकारों पर विचार है ।

—सर्वेक्षण ७९२

४१६. सिवराम कवि—जन्म १७३१ ई० ।

सूदन । श्रृंगारी कवि ।

टि०—१७३१ ई० (सं० १७८८) कवि का प्रारंभिक रचनाकाल है ।

—सर्वेक्षण ८४७

४१७. सिव सिंह—जन्म १७३१ ई० ।

टि०—शिव सिंह का रचनाकाल सं० १८५०-७५ है । १७३१ ई० (सं० १७८८) के बाद, संभवतः १८२५ के आसपास इनका जन्म हुआ रहा होगा ।

—सर्वेक्षण ८५३

४१८. अनन्य कवि—जन्म १७३३ ई० ।

वेदांत, धर्म और नीति संबंधी इनकी कविताएँ उपलब्ध हैं । यह चेतावनी और सामयिक कविताएँ भी लिखते थे । अज्ञात तिथि वाले, दुर्गा की प्रशस्ति में ग्रंथ रचने वाले, शिवसिंह द्वारा उल्लिखित 'अनन्य कवि' भी संभवतः यही हैं ।

टि०—ग्रियर्सन के ५,२७७,४१८ तीनों कवि एक ही हैं । देखिए यही ग्रन्थ, संख्या २७७ । १७३३ ई० इस कवि के जीवन का सांध्यकाल है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण ३०

४१९. तारापति कवि—जन्म १७३३ ई० ।

श्रृङ्गार संग्रह । किसी नखशिख के रचयिता । शिव सिंह द्वारा उल्लिखित १७७९ ई० में उत्पन्न (? उपस्थित) 'तारा कवि' भी संभवतः यही हैं ।

टि०—दोनों कवियों की अभिन्नता स्थापित करनेवाले सूत्र सुलभ नहीं ।

४२०. रघुराय कवि—बुंदेलखण्डी भाट और कवि । जन्म १७३३ ई० ।

इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'जमुना शतक' है। शिव सिंह द्वारा उल्लिखित १७७३ ई० में उत्पन्न (? उपस्थित) 'रघुराय कवि' भी संभवतः यही हैं।

टि०—दोनों कवियों के एक होने की सम्भावना ठीक प्रतीत होती है।

४२१. ईसुफ खाँ कवि—जन्म १७३४ ई०।

इन्होंने बिहारी (सं० १९६) की सतसई और केशवदास (सं० १३४) की रसिक प्रिया पर टीकाएँ लिखी हैं।

टि०—ईसुफ खाँ और उनकी टीकाओं का कोई सूत्र आज तक नहीं उपलब्ध हो सका है।

४२२. धन सिङ्घ कवि—मौरावाँ जिला उन्नाव के भाट और कवि। जन्म १७३४ ई०।

४२३. प्रेम सखी—जन्म १७३४ ई०।

टि०—इनका रचनाकाल सं० १८८० वि० है।

—सर्वेक्षण ४५१

४२४. सरबसुख लाल—जन्म १७३४ ई०

सूदन।

४२५. रविनाथ कवि—बुन्देलखण्डी। जन्म १७३४ ई०।

शृङ्गारी कवि।

४२६. नवखान कवि—बुन्देलखण्डी। जन्म १७३५ ई०।

४२७. जगदेव कवि—जन्म १७३५ ई०।

४२८. रस लाल कवि—बुन्देलखण्डी, जन्म १७३६ ई०।

शृङ्गारी कवि।

४२९. हरिहर कवि—जन्म १७३७ ई०।

सूदन।

४३०. ईस कवि—जन्म १७३९ ई०।

इनकी शृङ्गार और शांत रस की कविताएँ बहुत मनोहर कही जाती हैं।

४३१. सिव कवि—बिलग्राम, जिला हरदोई के कवि और भाट। जन्म १७३९ ई०।

सुंदरी तिलक। रसनिधि नामक शृङ्गारी ग्रंथ के रचयिता।

४३२. तोखनिधि—कंपिला नगर के ब्राह्मण। जन्म १७४१ ई०।

तीन ग्रंथों के रचयिता—(१) सुधानिधि, (२) व्यंग्य शतक, (३) नखशिख।

टि०—सुधानिधि तोष की रचना है। १७४१ ई० रचनाकाल है, न कि

जन्मकाल। इन्होंने सं० १७९४ में रतिमंजरी की रचना की थी।

—सर्वेक्षण ३३१

४३३. प्रेमी यमन—दिल्ली के मुसलमान। जन्म १७४१ ई०।

राग कल्पद्रुम। इन्होंने शब्द कोश सम्बन्धी एक अच्छा ग्रंथ दो भागों में लिखा, जिनका क्रमशः नाम है अनेकार्थ (रागकल्द्रुम) और 'नाममाला' (राग कल्पद्रुम)।

टि०—सरोज में इस कवि का यह विवरण दिया गया है—"अनेकार्थ माला कोष बहुत सुन्दर ग्रंथ रचा है।" इसके दो भागों की कल्पना ग्रियर्सन ने न जाने कहाँ से कर ली है। यह असल में दिल्ली वाले अब्दुर्रहिमान कवि हैं। सं० १७९८ इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ४५५, ३२

४३४. ठाकुर कवि—१७४३ ई० में उपस्थित।

देखें ठाकुर कवि, जो १६४३ ई० में उपस्थित थे (सं० १७३)।

टि०—१७४३ ई० या सं० १८०० में तीन ठाकुरों में से कोई भी नहीं उपस्थित था।

—यही ग्रंथ, संख्या १७३; सर्वेक्षण ३११

४३५. मीर अहमद—बिलग्राम, जिला हरदोई के। जन्म १७४३ ई०।

४३६. अनूपदास कवि—जन्म १७४४ ई०।

शान्त रस के इनके अनेक कवित्त दोहे उपलब्ध हैं।

४३७. कुमार मनि भट्ट—गोकुल, व्रज के भाँट, जन्म १७४६ ई०।

कुशल कवि। रसिक रसाल नामक भाषा साहित्य का अच्छा ग्रंथ लिखा है।

टि०—रसिक-रसाल का रचनाकाल सं० १७७६ (१७१९ ई०) है; अतः १७४६ ई० इनका जन्मकाल नहीं हो सकता। अधिक से अधिक इस समय तक कवि जीवित रहा हो, तो रहा हो। यह दाक्षिणात्य भट्ट ब्राह्मण थे, भाँट नहीं।

—सर्वेक्षण ६७

४३८. जीवन कवि—जन्म १७४६ ई०।

मुहम्मद अली के दरबार में थे।

टि०—लखनऊ के नवाब मुहम्मद अली का शासनकाल सं० १८९४-९९ (१८३७-१८४२ ई०) है। यही जीवन का रचनाकाल है। इन्होंने सं० १८७३ में बरिबण्ड विनोद नामक ग्रंथ लिखा था। सं० १८१० (१७५३ ई०) से इनके पिता चन्दन का रचनाकाल प्रारम्भ होता है, जो

सं० १८६५ तक चलता है। ऐसी स्थिति में ग्रियर्सन का संवत् अशुद्ध है। १७४६ ई० (सं० १८०३) के बहुत बाद इनका जन्म हुआ रहा होगा।

—सर्वेक्षण २८२

४३९. तालिब अली—उपनाम रसनायक। बिलग्राम, जिला हरदोई के। जन्म (? उपस्थिति)—१७४६ ई०।

शृंगारी कवि। शिव सिंह द्वारा उल्लिखित, १७११ ई० में उत्पन्न, तालिब अली भी संभवतः यही हैं।

टि०—रसनायक बिलग्रामी का असल नाम तालिब अली है। यह सरोज (सर्वेक्षण ३२६) के तालिब से भिन्न हैं। सरोज के इन दूसरे कवि का नाम तालिब शाह है, न कि तालिब अली।

४४०. नाथ—जन्म १७४६ ई०।

? सुंदरी तिलक। यह मानिकचंद के दरबार में थे, जिनके पुत्र इच्छन प्रतीत होते हैं। देखिए १६२।

४४१. पद्मेस कवि—जन्म १७४६ ई०।

४४२. पूखी कवि—मैनपुरी, दोआब के ब्राह्मण। जन्म १७४६ ई०। शृङ्गार संग्रह।

४४३. ब्राह्मन नाथ—भोग सौंड़ी, जिला हरदोई के। जन्म (? उपस्थिति) १७४६ ई०।

सोमनाथ (सं० ४४७) के प्रसंग में शिव सिंह द्वारा उल्लिखित।

टि०—इस नाम का कोई कवि नहीं हुआ।

—यही ग्रंथ ४४७, सर्वेक्षण ९४२

४४४. राम परसाद—बिलग्राम, जिला हरदोई के बंदीजन। जन्म (? उपस्थिति)—१७४६ ई०।

राग कल्पद्रुम। देखिए सं० ६३९।

टि०—राम प्रसाद लखनऊ के नवाब मोहम्मद अली (सं० १८९४-९९ वि०) के समय में अत्यंत वृद्ध रूप में जीवित थे। १७४३ ई० (सं० १८०३) इनका न तो जन्मकाल हो सकता है, न उपस्थिति काल। इनका जन्म सं० १८२५ के आसपास हुआ रहा होगा।

—सर्वेक्षण ७८६

४४५. राम भट्ट—फर्रुखाबाद के। जन्म १७४६ ई०।

यह नवाब क्रियाम खाँ के दरबार में थे और (१) शृङ्गार सौरभ तथा (२) बरवै नायिकाभेद के रचयिता हैं।

टि०—फर्रुखाबाद के दूसरे नवाब कायम खाँ का शासनकाल सं० १८००-१८०६ है। अतः १७४६ ई० (सं १८०३) रामभट्ट का उपस्थिति काल है, न कि जन्म काल।

—सर्वेक्षण ७८३

४४६. सुखानंद कवि—चचेरी के कवि और भाट। जन्म १७४६ ई०।

४४७. सोमनाथ—भोग साँड़ी, जिला हरदोई के। जन्म (? उपस्थिति) १७४६ ई०।

सूदन। शिवसिंह द्वारा ब्राह्मननाथ (सं० ४४३) के प्रसंग में उल्लिखित।

टि०—इनका विवरण निम्नांकित शब्दों में सरोज में दिया गया है—

"सोमनाथ ब्राह्मण, नाथ उपनाम, साँड़ी वाले। सं० १८०३ में उ०" इस एक कवि सोमनाथ से ही ग्रियर्सन ने एक और कवि ब्राह्मण नाथ की कल्पना कर ली है। ब्राह्मण के बाद अर्द्ध विराम है। सोमनाथ जाति के ब्राह्मण हैं और इनका उपनाम नाथ है। ब्राह्मण नाथ (ग्रियर्सन ४४३) नाम का कोई कवि नहीं हुआ। यह साँड़ी के रहनेवाले थे। साँड़ी के पहले भोग न जाने कहाँ से लग गया। संभवतः 'उपनाम' का अर्थ किसी पंडित ने 'भोग' बता दिया होगा अथवा सरोज के दूसरे संस्करण में उपनाम के स्थान पर 'भोग' ही छपा रहा होगा और इसे ग्रियर्सन ने साँड़ी के साथ जोड़ लिया। विनोद के अनुसार (८३६) सं० १८०९ इनका रचनाकाल है। अतः सं० १८०३ इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ९४२

४४८. निवाज कवि—बिलग्राम, जिला हरदोई के मुसलमान जुलाहे। जन्म १७४७ ई०।

शृङ्गारी कवि। सम्भवतः वही जो सं० ३४२ के। १९८ संख्या से अलग समझे जाने चाहिए।

टि०—यह मुसलमान बिलग्रामी निवाज, ३४२ संख्यक ब्राह्मण बुन्देलखंडी निवाज से निश्चय ही भिन्न हैं। १९८ संख्यक से अलग तो यह हैं ही।

४४९. बोधा कवि—जन्म १७४७ ई०।

शृङ्गार संग्रह, सुन्दरी तिलक। देखिए सं० ५००।

टि०—बोधा पन्ना नरेश खेत सिंह (शासन काल सं० १८०९-१५) के यहाँ थे। अतः १७४७ ई० (सं० १८०४) इनका उपस्थिति काल है, न कि जन्म काल।

—सर्वेक्षण ५४३

४५०. मदन किशोर कवि—१७५० ई० में उपस्थित।
देखिए सं० ३८६।

टि०—यह मदन किशोर ३८६ संख्यक मदन किशोर हैं। १७५० ई० अशुद्ध है। इनका उपस्थिति काल १७०७-१२ ई० है।

—सर्वेक्षण ६६३, ७०१

४५१. लाल गिरिधर—बैसवाड़ा के। जन्म १७५० ई०।
नायिका भेद के एक विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ के रचयिता। सम्भवतः गिरिधर (सं० ३४५) भी यही हैं।

टि०—लाल गिरिधर निश्चय ही ३४५ संख्यक गिरिधर कविराय से भिन्न हैं।

४५२. कलानिधि कवि—द्वितीय। जन्म १७५० ई०।
इनका नखशिख अच्छा कहा जाता है।

टि०—कवि का नाम श्री कृष्ण भट्ट है, कवि-कलानिधि उपाधि है, लाल उपनाम है। इनका जन्म काल सं० १७२९ और मृत्युकाल सं० १८०९ है। अतः १७५० ई० (सं० १८०७) इनका उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण १०४

४५३. सखी सुख—नरवर, बुंदेलखंड के ब्राह्मण। जन्म १७५० ई०।
यह कवींद्र (सं० ४९६) के पिता थे और स्वयं भी लिखते थे।

टि०—कवींद्र ने सं० १७९९ में रसदीप की रचना की थी। अतः १७५० ई० (सं० १८०७) इनके बाप का उपस्थिति काल ही हो सकता है, जन्म काल नहीं।

—सर्वेक्षण ८७८

४५४. नारायन—काकूपुर, जिला कान्हपुर के भाट, जन्म १७५२ ई०।
शिवराजपुर के चन्देल राजाओं के छन्दोबद्ध इतिहास के रचयिता।

टि०—ग्रियर्सन में भी सरोज की ही भाँति यह कवि भूपनारायण के नाम से सं० ६४५ पर दुहरा उठा है।

४५५. किंकर गोविन्द—बुंदेलखंडी। जन्म १७५३ ई०।
शांतरस की इनकी कविताएँ अच्छी कही जाती हैं।

४५६. क्रिशन लाल कवि—जन्म १७५७ ई०।
शृङ्गार संग्रह। इन्होंने कुछ प्रसिद्ध प्रेम गीत लिखे हैं।

टि०—कृष्ण लाल गोस्वामी का रचनाकाल सं० १८७४ है। ग्रियर्सन में

दिया सम्वत् १८१४ (१७५७ ई०) इनका जन्मकाल नहीं हो सकता और अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ८०

४५७. मकरन्द कवि—जन्म १७५७ ई०।

श्रृङ्गार संग्रह, सुंदरी तिलक। श्रृङ्गारी कवि।

टि०—हित मकरंद ने संवत १८१८ में मकरंद बानी नाम ग्रन्थ लिखा था, अतः १७५७ ई० (सं० १८१४) इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

४५८. उदेस भाट—बुन्देलखण्डी। जन्म १७५८ ई०।

सामयिक कविता करने वाले।

४५९. जैदेव कवि—जन्म १७५८ ई०।

४६०. निहाल—निगोहाँ, जिला लखनऊ के ब्राह्मण। जन्म १७६३ ई०।

४६१. धीर कवि—१७६५ ई० में उपस्थित।

श्रृङ्गार संग्रह। बादशाह शाह आलम (१७६१ -१८०६ ई०) के दरबार में थे।

टि०—सं० १८७२ में इन्होंने कवि प्रिया की टीका की थी। अतः १७६५ ई० (सं० १८२२) इनका अत्यंत प्रारंभिक जीवन काल होना चाहिए।

—सर्वेक्षण ३८३

४६२. रसधाम कवि—जन्म १७६८ ई०।

अलंकार चन्द्रिका नामक ग्रंथ के रचयिता।

४६३. सिरताज कवि—बरधाना के। जन्म १७६८ ई०।

टि०—यह बरसाना के थे, न कि बरधाना के।

—सर्वेक्षण ९०६

४६४. कालीराम कवि—बुन्देलखण्डी। जन्म १७६९ ई०।

इनकी कविताएँ अच्छी कही जाती हैं।

टि०—कालीराम जी मथुरा निवासी माथुर चतुर्वेदी थे, न कि बुंदेलखण्डी। इन्होंने सं० १७३१ में सुदामा चरित की रचना की थी। ग्रियर्सन में दिया इनका जन्मकाल १७६९ ई० (सं० १८२६) एक दम अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण १००

४६५. जसोदानन्द कवि—जन्म १७७१ ई०।

इन्होंने बरवै नायिकाभेद नामक ग्रन्थ लिखा था। यह नायिकाभेद का ग्रंथ है। यह बरवै छन्दों में है। इसकी रचना-तिथि सं० १८२२ (१७६५ ई०) है, यदि मैं संबद्ध अंश को ठीक पढ़ रहा हूँ 'विविकरि ब्रह्म'। इस दशा में

सम्बत १८२८ (१७७१ ई०), जिसको शिवसिंह कवि की जन्म तिथि के रूप में देते हैं, गलत है।

टि०—उक्त ग्रंथ की रचना सं० १८२७ में हुई। सरोज में इन्हें 'सं० १८२८ में उ०' अर्थात उपस्थित कहा गया है। यह ठीक है, गलत नहीं। ग्रियर्सन ने ही इन्हें १७७१ ई० में उत्पन्न कहा है, जो गलत है।

—सर्वेक्षण २८८

४६६. लच्छू कवि—जन्म १७७१ ई०।

४६७. बाजेस कवि—बुंदेलखण्डी। जन्म १७७४ ई०।

अनूपगिरि का गुणानुवाद करने वाले कवि।

टि०—बाजेस अनूप गिरि का गुणानुवाद करने वाले हैं, अतः १७७४ ई० (सं० १८३१) इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल। अनूप गिरि या हिम्मत बहादुर का शौर्यकाल सं० १८२०-६१ है।

—सर्वेक्षण ५७६

४६८. भंजन कवि—जन्म १७७४ ई०।

श्रृङ्गार संग्रह।

४६९. लाला पाठक कवि—रुकुम नगर वाले। जन्म १७७४ ई०।

शालिहोत्र (रागकल्पद्रुम) के रचयिता।

४७०. लतीफ कवि—जन्म १७७७ ई०।

श्रृंगारी कवि।

४७१. सम्मन कवि—मलौंवा, जिला हरदोई के ब्राह्मण। जन्म १७७७ ई०

नीति सम्बन्धी प्रसिद्ध दोहों के रचयिता।

टि०—सम्मन का रचनाकाल सं० १७२० है। अतः १७७७ ई० (सं० १८३४) इनका जन्मकाल नहीं हो सकता और अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ९०२

४७२. सन्तन कवि—बिन्दकी, जिला फतहपुर के ब्राह्मण। जन्म १७७७ ई०।

श्रृङ्गार संग्रह।

टि०—१७७७ ई० अशुद्ध है। इनका रचनाकाल सं० १७६० के आस-पास है। —सर्वेक्षण ८७०

४७३. सन्तन कवि—जाजमऊ, जिला उन्नाव के ब्राह्मण। जन्म १७७७ ई०।

टि०—१७७७ ई० अशुद्ध है। इनका भी रचनाकाल सं० १७६० है। दोनों सन्तन समकालीन हैं। —सर्वेक्षण ८७१

४७४. सिद्ध कवि—जन्म १७७८ ई०।

श्रृङ्गार संग्रह। यह 'सिंह' नामान्त संभवतः कोई अन्य कवि हैं।

टि०—कवि का पूरा नाम महा सिंह है। इन्होंने सं० १८५३ में छन्द शृङ्गार नाम पिङ्गल ग्रंथ लिखा था। अतः १७७८ ई० (सं० १८३५) इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ९००

४७५. कवि दत्त—जन्म १७७९ ई०।

शृङ्गार संग्रह। यह संभवतः देवदत्त (सं० ५०८) हैं।

टि०—जैसा कि ग्रिसर्सन का अनुमान है, यह कविदत्त और सादि वाले देवदत्त एक ही हैं। इन देवदत्त या कविदत्त ने सं० १७९१ में लालित्य लता की रचना की थी, सज्जन विलास का रचनाकाल सं० १८०४ है। अतः १७७९ ई० (सं० १८३६) इनका जन्मकाल नहीं है। यह उपस्थितिकाल हो सकता है।

—सर्वेक्षण ९४, ३४२

४७६. मधुसूदन दास—इष्टका पुरी के माथुर ब्राह्मण। जन्म १७८२ ई०। इन्होंने रामाश्वमेध का भाषानुवाद किया।

टि०—१७८२ ई० जन्मकाल नहीं है, उपस्थितिकाल है, क्योंकि इसके ७ वर्ष पहले ही सं० १८३२ में कवि ने रामाश्वमेध की रचना प्रारम्भ की थी। यह ग्रंथ अनुवाद नहीं है।

—सर्वेक्षण ६७२

४७७. मनिराम कवि मिसर—कन्नौज के। जन्म १७८२ ई०।

शृङ्गार संग्रह। पिंगल के सर्वोत्तम ग्रन्थों में से एक 'छंद छप्पनी' के रचयिता।

टि०—छंद छप्पनी का रचना काल सं० १८५३ है, अतः १७८२ ई० जन्म काल न होकर उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ६७३

४७८. रामदास कवि—जन्म १७८२ ई०।

४७९. सिवलाल दूबे—डौंड़ियाखेरा, जिला उन्नाव के। जन्म १७८२ ई०।

अनेक ग्रन्थों के रचयिता हैं, जिनमें नखशिख और षटऋतु (राग कल्पद्रुम) नीति और हास्य सम्बन्धी कविताओं का उल्लेख किया जा सकता है।

४८०. संगम कवि—जन्म १७८३ ई०।

शृङ्गार संग्रह। यह किसी सिंहराज के दरबार में थे।

टि०—संगम का रचनाकाल सं० १९०० वि० के आसपास है।

—सर्वेक्षण ९०१

४८१. गंगापति कवि—जन्म १७८७ ई० ।

सरस कवि कहे जाते हैं ।

४८२. सागर कवि—ब्राह्मण । जन्म १७८६ ई० ।

'वामा मनरंजन' नामक श्रृंगारी ग्रंथ के रचयिता । यह टिकैतराय के दरबार में थे । देखिए ४८४ ।

टि०—नवाब आसफुद्दौला का शासनकाल सं० १८३२–५४ है । इन्हीं के मंत्री ठिकैतराय थे । यही समय सागर का भी हुआ । अतः १७८६ ई० (सं० १८४३) इनका जन्मकाल नहीं है, उपस्थिति काल है ।

—सर्वेक्षण ९०१

४८३. गिरिधर कवि—होलपुर, जिला बाराबंकी के कवि और भाट । जन्म (? उपस्थिति) १७८७ ई० ।

संभवतः वही, जो सं० ३४५ । देखिए ४८४ ।

टि० – होलपुर वाले गिरिधर ३४५ संख्यक प्रसिद्ध कुंडालियाकार गिरिधर कविराय से भिन्न हैं ।

आसुफुद्दौला (शासनकाल सं० १८३२–५४) के दीवान टिकैतराय के यहाँ यह थे । अतः १७८७ ई० (सं० १८४४) इनका असंदिग्ध रूप से उपस्थिति काल है, यह जन्मकाल नहीं हो सकता ।

—सर्वेक्षण १६१

४८४. बेनी कवि— बेनी जिला रायबरेली के कवि और भाँट, द्वितीय । जन्म (? उपस्थिति) १८७७ ई० ।

ये तीनों लखनऊ के नवाब आसफुद्दौला (१७७५–१७९७ में उपस्थित) के दीवान टिकैत राय के दरबार में थे । बेनी (? सुंदरी तिलक) लंबी उम्र पाकर १८३५ ई० में या उसके आसपास मरे ।

टि०—१८७७ ई० अशुद्ध है । प्रमाद से अंकों में व्यत्यय हो गया है । ग्रियर्सन सं० १७८७ ई० देना चाहते थे । यह १७८७ ई० कवि का उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल, जो कि आसफुद्दौला के शासनकाल को ध्यान में रखते हुए अत्यंत स्पष्ट है । इन्होंने सं० १८४९-५१ में अलंकार प्रकाश एवं सं० १८७४ में रसविलास की रचना की । १८७४ ही में इन्होंने यश लहरी ग्रन्थ भी लिखा ।

—सर्वेक्षण ५०८

४८५. जवाहिर कवि—बिलग्राम, जिला हरदोई के कवि और भाट । जन्म १७८८ ई० ।

इन्होंने जवाहिर रत्नाकर नाम ग्रंथ लिखा था ।

टि०—जवाहिर रत्नाकर की रचना सं० १८२६ में हुई थी। अतः १७८८ ई० (सं० १८४५) कवि का उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण २६७

४८६. गुलाब सिङ्घ—पंजाबी, जन्म १७८९ ई०।

इन्होंने कई वेदांत ग्रंथ लिखे जैसे रामायन, चंद्र प्रबोध नाटक, मोच्छ पंथ, भाँवर सौंवर।

टि०—१७८९ ई० (सं० १८४६) जन्म काल न होकर, उपस्थिति काल है। गुलाबसिंह पंजाबी ने मोक्ष पंथ प्रकाश की रचना सं० १८३५ में और भाव रसामृत की सं० १८३४ में की थो। यह भाव रसामृत ही भाँवर सौंवर प्रतीत होता है।

—सर्वेक्षण २०१

४८७. देवीदास—१७९० ई० के आसपास उपस्थित।

जगजीवनदास (सं० ३२३) के शिष्य; शांत रस के कवि।

टि०—जगजीवनदास का जीवनकाल सं० १७२७-१८१७ है। अतः १७९० ई० (सं० १८४७) जगजीवनदास के शिष्य का जन्म काल तो हो नहीं सकता। यह इनका उपस्थिति काल है।

४८८. बालनदास कवि—१७९३ ई० में उपस्थित।

इन्होंने उक्त वर्ष रमल भाषा नामक ग्रंथ लिखा। यह अपने विषय का प्रामाणिक ग्रंथ है।

टि०—१७९३ ई० (सं० १८५०) रमलसार का ही रचनाकाल है।

४८९. स्त्री लाल—गुजराती, बौंडेर राजपूताना के। जन्म १७९३ ई०।

भाषा चंद्रोदय और अन्य ग्रंथों के रचयिता।

टि०—सरोज में भांडेर दिया गया है, न कि बांडेर।

—सर्वेक्षण ९५२

४९०. प्राननाथ कवि—बैसवाड़ा के ब्राह्मण। १७९३ ई० में उपस्थित।

उक्त वर्ष इन्होंने चकाव्यूह नामक इतिहास लिखा।

४९१. कान्ह कवि—प्राचीन। जन्म १७९५ ई०।

नायिका भेद के एक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—इनके नायिका भेद वाले ग्रथ का नाम 'रसरंग' है। इसका रचना काल सं० १८०४ है। अतः १७९५ ई० (सं० १८५२) अशुद्ध है। यह न जन्म काल है, न उपस्थिति काल।

—सर्वेक्षण ८६

४९२. गुनदेव—बुंदेलखंडी। जन्म १७९५ ई०।

कहा जाता है कि इन्होंने कुछ अच्छी कविताएँ लिखी हैं।

४९३. गोपाल लाल कवि—जन्म १७९५ ई०।

कहा जाता है कि इन्होंने शांत रस की कुछ अच्छी कविताएँ लिखी हैं।

टि०—गोपाल लाल ने बोध प्रकाश की रचना सं० १८३१ में एवं सुदामा चरित की सं० १८५३ में की; अतः १७९५ ई० (सं० १८५२) इनका उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल। **—सर्वेक्षण १६७**

४९४. उमेद कवि—जन्म १७९६ ई०।

इनका नखशिख परम प्रसिद्ध है। यह शाहजहाँपुर के पास अथवा दोआब के किसी गाँव के रहनेवाले थे, ऐसा प्रतीत होता है।

४९५. ऊधो कवि—जन्म १७९६ ई०।

शृङ्गार संग्रह, (?) राग कल्पद्रुम। देखिए सं० ७९.

४९६. कवींद्र—नरवर, बुंदेलखंड के ब्राह्मण। जन्म १७९७ ई०।

सखीसुख (सं० ४५३) के पुत्र और रसदीप नामक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—'रस दीपक' की रचना सं० १७९९ में हुई। अतः १७९७ ई० न इनका जन्मकाल है और न उपस्थिति काल ही। यह अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ७५

४९७. इच्छाराम अवस्थी—पचरुवा, जिला बाराबंकी के। १७९८ ई० में उपस्थित।

अत्यंत पवित्र भावना वाले कवि। इन्होंने उक्त वर्ष वेदांत दर्शन सम्बन्धी ब्रह्म-विलास नामक ग्रंथ रचा।

टि०—'ब्रह्म-विलास' वेदांत का ग्रन्थ नहीं है। यह सुदामा चरित है।

—सर्वेक्षण ४८

४९८. साधर कवि—जन्म १७९८ ई०।

४९९. सुकवि कवि—जन्म १७९८ ई०।

शृङ्गारी कवि।

५००. बोध कवि—जन्म १७९८ ई०।

देखिए संख्या ४४९।

टि०—बोध ४४९ संख्यक बोधा ही हैं। १७९८ ई० (सं० १८५५) इनका जन्म काल नहीं है। यह इनके जीवन का अन्तिम काल है।

—सर्वेक्षण ५४४, ५४३

५०१. नरोत्तम—बुन्देलखण्डी। जन्म १७९९ ई०।

अध्याय १०

कंपनी के शासन में हिंदुस्तान

[१८००-१८५७]

मराठा शक्ति के ह्रास से प्रारंभ होनेवाले और गदर से समाप्त होनेवाले वर्ष, हिंदुस्तान का साहित्यिक इतिहास लिखते समय, सहज ही एक अलग युग बन जाते हैं। यह पुनर्जागर्ति का, उत्तरी भारत में मुद्रण यंत्रों के वास्तविक प्रारभ का, और अब इतना प्रशंसनीय कार्य करनेवाली आधुनिक ढंग की पाठशालाओं के श्री गणेश का युग था। साथ ही, यह यूरोपीय लोगों को हिंदी नाम से ज्ञात और उन्हीं द्वारा आविष्कृत, अद्भुत संकीर्ण भाषा के प्रादुर्भाव का भी युग था। १८०३ ई० में, गिलक्राइस्ट की देख रेख में लल्लू जी लाल ने अपना प्रेमसागर मिली जुली उस उर्दू ज़बान में लिखा, जो अकबर के खेमे के लोगों और बाज़ार के लोगों के मेल जोल से बनी थी, जहाँ प्रायः प्रत्येक जाति और देश के लोग एकत्र हुआ करते थे। हाँ, उन्होंने अरबी फ़ारसी के बदले, केवल भारतीय मूल की संज्ञाओं और शब्दांशों के प्रयोग की विशेषता अवश्य रखी। इसका परिणाम एक पूर्णतया नवाविष्कृत भाषा हुई, क्योंकि यद्यपि इसका व्याकरण इसकी पूर्ववर्तिनी भाषा का ही था, किंतु सारा शब्दकोष पूर्णतया बदल गया था। नई भाषा यूरोपीय लोगों के द्वारा हिंदी कही गई और संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदुओं की राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार कर ली गई, क्योंकि इसका अभाव था और इसने उस पूरा कर दिया। यह संपूर्ण उत्तरी भारत में गद्य की सर्व स्वीकृत भाषा हो गई; किंतु यह कहीं की देश भाषा नहीं थी, अतः इसका काव्य के क्षेत्र में कहीं भी सफल प्रयोग नहीं हो सका है। बड़े बड़े प्रतिभा संपन्न लोगों ने प्रयोग किया, पर सभी असफल रहे। अतः इस समय उत्तरी हिंदुस्तान में साहित्य की निम्नलिखित ढंग की विचित्र स्थिति है—इसका पद्य तो सर्वत्र स्थानीय भाषा में विशेषकर व्रज, बैसवाड़ी और बिहारी में है और इसका गद्य प्रायः सर्वत्र एक सी कृत्रिम बोली में, जो किसी भी देशी भारतीय की मातृ भाषा नहीं है और जिसने अपने आविष्कारकों की प्रतिष्ठा के कारण, प्रारंभ में जो पुस्तकें इसमें छपीं, उनकी

अत्यधिक जनप्रियता के कारण और प्रयुक्त क्षेत्र में अपनी अत्यधिक उपयोगिता के कारण, अपने को बलपूर्वक स्वीकार करा लिया था।[1]

प्रसंग-प्राप्त इस अर्द्ध शताब्दी में साहित्य का नक्षत्र सबसे उज्ज्वलतम रूप में बुंदेलखंड में, बनारस में तथा अवध में चमका; किंतु स्पष्ट ही अपने प्रकाश के विभिन्न रूपों में। बुंदेलखंड और बघेलखंड में कवि लोग अठारहवीं शती की परंपराओं का पूर्ण रूप से अनुसरण करनेवाले हुए। बीर छत्रसाल की राजधानी पन्ना, विक्रमसाहि के मृदुल आश्रय में सुप्रसिद्ध हुआ चरखारी, नेजाराम[2] के समय से लेकर विश्वनाथ सिंह के समय तक साहित्य और कला के संरक्षकों के द्वारा प्रख्यात रींवा— ये सभी ऐसे कलाकेंद्र से हो गए थे, जहाँ से प्रसिद्ध और प्रामाणिक काव्यकला सम्बन्धी कृतियाँ प्रकाश में आया करती थीं। इन्हीं लेखकों ने, केशव एवं चिंतामणि त्रिपाठी का परिधान धारण किया। इनमें पद्माकर ही सम्भवतः सर्वाधिक प्रख्यात हुए। ये लोग विद्वानों द्वारा, और विद्वानों के लिए, लिखित विद्वत्तापूर्ण कृतियों के अन्तिम रचयिता थे। इस सम्पूर्ण अर्द्धशती में बुंदेलखंड उन अर्द्ध-स्वतन्त्र राजाओं का प्रदेश बना रहा, जो परस्पर युद्ध-रत रहा करते थे और जिनके यहाँ मुद्रण-यंत्रों का विशेष प्रचार नहीं हुआ था।

बनारस की स्थिति कहीं दूसरी थी। अठारहवीं शती के अन्त में यहाँ अँगरेजी आधिपत्य हो गया, और विशाल अँगरेजी राज्य के साथ-साथ मुद्रित ग्रंथों का भी प्रवेश हुआ। इसका स्वाभाविक प्रभाव पड़ा। मुद्रण-कला ने जो

---

१. अ. उर्दू की उत्पत्ति के संबंध की धारणा भ्रांत है। यह मुगल किले में उत्पन्न हुई, न कि बाजार में।

ब. लल्लू जी लाल ने अरबी फारसी के शब्दों को उर्दू में से निकालकर हिंदी की नई सृष्टि नहीं की, उन्होंने विशुद्ध (खड़ी) हिंदी में विदेशी अशुद्ध शब्दों को नहीं आने दिया।

स. प्रेमसागर की भाषा न तो नवाविष्कृत भाषा थी और न यह अँगरेजों की कृपा से उत्पन्न हुई और न नए सिरे से यह किसी अभाव की पूर्ति के लिए हिंदुओं द्वारा राष्ट्र भाषा के रूप में गृहीत ही हुई। यदि ऐसा था तो इस एक दम नई भाषा का प्रचलन अँगरेजी राज्य और उसकी प्रतिष्ठा के साथ साथ संपूर्ण भारत के हिंदुओं में हो जाना चाहिए था, जब कि वस्तुस्थिति यह है कि जहाँ यह उत्पन्न की गई—वहीं कलकत्ते में, बंगाल में इसका प्रचार नहीं हुआ। इसका प्रचार वहीं हुआ, जहाँ की यह सामान्य भाषा थी। ग्रियर्सन का यह कहना भी ठीक नहीं कि खड़ी बोली हिंदी कहीं की मातृ भाषा नहीं। यह दिल्ली मेरठ की बोली है, जाने क्यों वे यह तथ्य भूल गए? यह कोई कृत्रिम भाषा नहीं। यही असली भाषा है, उर्दू ही नकली जबान है।

—अनुवादक

२. नेजाराम नहीं, राजाराम। —अनुवादक

एक प्रति की शीघ्रता से असंख्य प्रतियाँ करने का कौशल दिखलाया, उमसे विद्वानों के लिए एक नया पाठक-समुदाय मिल गया, एक ऐसा समुदाय जो अभी तक अमसृण ग्राम गीतों से ही संतुष्ट होता आया था और जो भारतीय वीरता के प्रारम्भिक दिनों में राजपूत चारणों द्वारा सफलतापूर्वक संबोधित हुआ करता था। किसी राष्ट्र के चरित्र बनाने अथवा बिगाड़ने का यह कैसा अचूक अवसर है ! यहाँ एक बार फिर तुलसीदास की पवित्रात्मा अपने देश-वासियों की रक्षा के लिए आगे आ खड़ी होती है। बंगाल[1] के विपरीत हिन्दुस्तान[2] के पास, सौभाग्य से आदर्श की यह प्रतिमा थी, जहाँ वे पीछे मुड़कर जा सकते थे। तुलसी को सर्वप्रियता ने तुलसी साहित्य की माँग की और बनारस के पंडितों ने अपनी चारित्रिक क्षिप्रता के साथ उसे पूरा भी किया। रामायण के साथी महाभारत नामक महाकाव्य का गोकुलनाथ कृत महान भाषानुवाद महाराज बनारस के लिए १८२९ ई० में पूर्ण होकर प्रकाशित हुआ। एक मात्र यह कृति इस युग को महत्वपूर्ण बनाने के लिए पर्याप्त है; लेकिन इस पवित्र पुरी से आगे प्रकाशित होने वाली अन्य अनेक महान कृतियों का यह एक प्रारम्भिक उदाहरण मात्र है। बाद की पीढ़ी के अन्य लेखक, जिनमें से सबसे बड़ों में से सौभाग्य से एक आज भी जीवित है[3], जो अधिक विस्तृत और उदार दृष्टिकोण वाले थे तथा पौराणिक सृष्टि-विज्ञान के क्षितिज के भीतर ही बन्द नहीं थे, आगे आए; और राजा शिव प्रसाद तथा हरिश्चन्द जैसे लोगों ने हिन्दुस्तान के शिक्षित समाज का जो कल्याण किया है, उसकी नाप जोख नहीं की जा सकती।

अवध के तालुकेदारों ने भी काव्य को प्रोत्साहन देने की अपनी प्रतिष्ठा को पूर्ववत बनाए रखा। विद्वन्मोद तरंगिणी के रूप में अवध एक सुन्दर काव्य संग्रह प्रस्तुत करने का गर्व कर सकता है, यद्यपि इस क्षेत्र में भी बनारस ने इसको पूर्णरूपेण आच्छादित कर लिया है, (क्योंकि क्या सुन्दरी तिलक अपने ढंग का सर्वाधिक प्रिय ग्रन्थ नहीं है ?—जो कि उचित ही है।) ये काव्य संग्रह, जिनमें से सत्रहवीं शती के अन्त में संकलित कालिदास हजारा सबसे पुराना महत्वपूर्ण संग्रह है, उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में प्रचुर संख्या में

१. यह कहना अनावश्यक है कि मैं बाद में ईश्वरचंद विद्यासागर द्वारा प्रारम्भ किए गए बँगला साहित्य के पुनरुत्थान की ओर संकेत नहीं कर रहा हूँ, बल्कि भारतचंद्र और उनके अनुयायियों की अश्लीलता की ओर, जो उस समय तक इतनी अधिक सर्वप्रिय थी।

—अनुवादक

२. हिन्दी-भाषा-भाषी प्रदेश।

—अनुवादक

३. राजा शिव प्रसाद।

निकले और इन्होंने पिछली पीढ़ियों द्वारा प्रस्तुत मूल्यवान भाषा साहित्य की जानकारी प्रसारित करने में बहुत सहायता की। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, सर्व प्रियों में से एक, और सर्वश्रेष्ठों में से एक, सुन्दरी तिलक था; किन्तु आकार और प्रकार दोनों दृष्टियों से सबसे महत्त्वपूर्ण संग्रह 'रागसागरोद्भव राग कल्पद्रुम' है, जो १८४३ ई० में प्रकाशित हुआ।

वर्गीकरण की सुविधा की दृष्टि से, मैं इस अध्याय को क्रमशः बुन्देलखंड और बघेलखंड, बनारस, औध, तथा अन्य दूसरे स्थानों को ध्यान में रखकर चार भागों में विभक्त कर रहा हूँ। सामान्यतया इस अध्याय में वे ही कवि दिए गए हैं, जो १८०० और १८५७ के बीच पैदा हुए और उपस्थित हैं, किंतु कुछ ऐसे भी हैं, जो इससे पिछले युग के हैं और यहाँ सन्निविष्ट होने के लिए छोड़ दिए गए थे; अथवा कुछ आनेवाले युग के कवि हैं, जिन्हें सम्मिलित करके आगे आनेवाले इतिहास का आभास दिया गया है। ऐसा विभिन्न वर्गों को पूर्ण करने की दृष्टि से ही किया गया है।

प्रथम भाग : बुन्देलखंड और बघेलखंड

५०२. मोहन भट्ट—बाँदावासी। १८०० ई० के आसपास उपस्थित।

यह प्रसिद्ध कवि हैं। यह पहले परना के बुन्देला महाराज हिन्दूपति के दरबारी कवि थे, फिर जयपुर के परताप सिंह सवाई (१७७८–१८०३ ई०) और जगत सिंह सवाई (१८०३–१८१८ ई०) के। (टाड का राजस्थान, भाग २, पृष्ठ ३७५; कलकत्ता संस्करण, भाग २, पृष्ठ ४१४)। इनके पुत्र प्रसिद्ध पद्माकर (सं० ५०६) थे, जिनके पौत्र गदाधर (सं० ५१२) हुए। यह किसी सुजान सिंह की भी प्रशंसा करते हैं। देखिए सं० ३६७, ३६८। हिन्दूपति के संबन्ध में देखिए सं० ५०३।

टि०—मोहन लाल भट्ट का जन्म सं० १७४३ में हुआ था। यह सं० १८४० के आसपास जयपुर गए थे। इसके शीघ्र ही बाद इनका देहान्त हुआ होगा। १८०० ई० (स० १८५७) तक इनका जीवित रहना बहुत सम्भव नहीं दिखाई देता।

—सर्वेक्षण ६३१

५०३. रूपसाहि—परना, बुन्देलखंड के निकट बागमहल के कायस्थ। १८०० ई० के आसपास उपस्थित।

यह परना के बुन्देला महाराजा हिन्दूपति (मिलाइए सं० ५०२) के दरबारी कवि थे। यह रूप विलास (१७५६ ई० में लिखित) नामक ग्रन्थ के

रचयिता हैं, जिसमें यह लिखते हैं कि छत्रसाल (सं० १९७) के पुत्र हिरदैसिंह या हिरदेस (मिलाइए सं० १५५ और ३४६), और उनके भी पुत्र हिंदूपति (मिलाइए सं० ५०२) थे।

टि०—रूप विलास की रचना सं० १८१२ में हुई थी। हिंदूपति का शासन काल सं० १८१३–३४ है। १८०० ई० (सं० १८५७) में इनका उपस्थित रहना बहुत समीचीन नहीं प्रतीत होता।

—सर्वेक्षण ७७३

५०४. करन बाह्मन—बुन्देलखण्डी। १८०० ई० के आसपास उपस्थित।

यह परना के बुन्देला महाराजा हिंदूपति (मिलाइए सं० ५०२) के दरबारी कवि थे। इन्होंने दो महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे—'रस कल्लोल' और 'साहित्य रस'।

टि०—३४६ संख्यक करन भट्ट और ५०४ संख्यक करन बाह्मन एक ही व्यक्ति हैं। यहाँ दिया समय १८०० ई० (सं० १८५७) अशुद्ध है। सं० १७९४ में इन्होंने बिहारी सतसई की टीका प्रस्तुत की थी।

—सर्वेक्षण ६९, ७०

५०५. हरदेव कवि—१८०० ई० में उपस्थित।

यह नागपुर के रघुनाथ राव (१८१६-१८१८) के दरबारी कवि थे।

५०६. पद्माकर भट्ट—बाँदा वाले। १८१५ ई० में उपस्थित।

राग कल्पद्रुम, सुन्दरी तिलक, श्रृङ्गार संग्रह। यह बाँदा वाले मोहन भट्ट (सं० ५०२) क पुत्र थे। पद्माकर पहले नागपुर के रघुनाथ राव, सामान्यतया अप्पा साहिब के नाम से प्रसिद्ध (शासन काल १८१६–१८१८), के दरबार में गए, जहाँ अपनी कविता के लिए इन्हें बहुत पुरस्कार मिला। तदनन्तर यह जयपुर गए, जहाँ जगत सिंह सवाई (१८०३–१८१८) के नाम पर जगद्विनोद (राग कल्पद्रुम) नामक ग्रंथ रचा। इनके पौत्रों में से गदाधर भट्ट (सं० ५१२) का उल्लेख किया जा सकता है।

टि०—पद्माकर का जन्म काल सं० १८१० और गंगा लाभ काल सं० १८९० है।

—सर्वेक्षण ४४६

५०७. ग्वाल कवि—मथुरा के बन्दीजन और कवि। १८१५ ई० में उपस्थित।

सुन्दरी तिलक। यह साहित्य में परम प्रवीण थे। इनके प्रमुख ग्रंथ हैं—(१) साहित्य दूषण, (२) साहित्य दर्पण, (३) भक्ति भाव, (४) श्रृङ्गार दोहा, (५) श्रृङ्गार कवित्त। इन्होंने छोटे ग्रन्थ भी लिखे, जैसे नखशिख, गोपी पचीसी,

जमुना लहरी (१८२२ ई० में लिखित) इत्यादि। यह देवदत्त (सं० ५०८) और पद्माकर (सं० ५०६) के प्रतिद्वन्दी थे।

टि०—ग्वाल कवि का जन्मकाल सं० १८४८ और मृत्यु काल सं० १९२८ है। साहित्य दर्पण और साहित्य दूषण सम्भवतः एक ही ग्रथ हैं। इसी के नाम कवि दर्पण या दूषण दर्पण भी हैं। भक्ति भाव का नाम भक्ति भावना भी है। शृङ्गार दोहा और शृङ्गार कवित्त फुटकर संग्रह हैं। पद्माकर, ग्वाल और दत्त तीनों कभी एक साथ नहीं रहे।

—सर्वेक्षण १८८

५०८. देवदत्त—साढ़ि जिला कानपुर के ब्राह्मण। १८१५ ई० में उपस्थित।

यह चरखारी के बुन्देला राजा खुमान सिंह के दरबारी कवि थे। यह पद्माकर (सं० ५०६) और ग्वाल (सं० ५०७) के समसामयिक और प्रतिद्वन्दी थे। यह सम्भवतः वही हैं जिनका उल्लेख कवि दत्त नाम से दिग्विजय भूषण में हुआ है।

टि०—कवि दत्त (४७५) और यह देवदत्त (५०८) एक ही कवि हैं। इनका रचनाकाल सं० १७९१–१८३९ है। अतः १८१५ ई० (सं० १८७२) तक इनका जीवित रहना समीचीन नहीं प्रतीत होता। उक्त संवत अशुद्ध है।

—देखिए यही ग्रन्थ, संख्या ४७५

५०९. भानदास कवि—बुन्देलखण्डी, चरखारी के भाँट और कवि। १८१५ ई० में उपस्थित।

यह चरखारी के राजा खुमान सिंह के दरबारी कवि थे। इन्होंने रूप विलास नाम पिंगल ग्रंथ लिखा था।

टि०—खुमान सिंह का शासनकाल सं० १८३९ तक है। यही इन भानदास का भी समय होना चाहिए। १८१५ ई० (सं० १८७२) तक इनका जीवित रहना संभव नहीं प्रतीत होता। उक्त संवत् अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ६१७

५१०. पजनेस कवि—बुन्देलखण्डी। जन्म १८१६ ई०।

शृङ्गार संग्रह। यह परना में रहते थे। इन्होंने भाषा साहित्य का एक बहुत अच्छा ग्रंथ मधुप्रिया नाम का लिखा। इनकी कविताएँ अलंकार (Conceit) और साहित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। इनका श्रेष्ठतम नमूना नखशिख है। यह फ़ारसी के अच्छे ज्ञाता थे।

५११. बलभद्र—कायस्थ। बुन्देलखण्डी, परना के। जन्म १८४४ ई०।

यह परना के बुन्देला राजा नरपति सिंह के दरबारी कवि थे। संभवतः

गार्सां द तासी भाग १, पृष्ठ १०४ पर, वार्ड भाग २ पृष्ठ ४८० के सहारे उल्लिखित बलभद्र चरित्र के रचयिता।

टि०—नृपति सिंह का शासनकाल सं० १९०६–२७ है। अतः १८४४ ई० (सं० १९०१) कवि का उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ५४५

५१२. गदाधर भट्ट—बाँदा वाले। जन्म १८५५ ई०।

रागकल्पद्रुम। इनके प्रपितामह प्रसिद्ध मोहन भट्ट (सं० ५०२) थे, जिनके पुत्र पद्माकर (सं० ५०६) थे, जिनके दो पुत्र मिही लाल (१, सं० ६२३) और अम्बा प्रसाद हुए। पहले के पुत्र हैं—वंशीधर, गदाधर, चन्द्रधर और लक्ष्मीधर। अन्तिम (अम्बा प्रसाद) के एक पुत्र था—विद्याधर। ये सभी कवि थे; लेकिन गदाधर इनमें सर्वोत्तम थे। यह दतिया नरेश विजय सिंह के पुत्र राजा भवानी सिंह के दरबारी कवि थे।

टि०—गदाधर भट्ट का जन्म सं० १८६० के लगभग हुआ था। १८५५ ई० (सं० १९१२) इनका उपस्थितिकाल है। इनकी मृत्यु सं० १९५५ के आस-पास हुई।

—सर्वेक्षण १५५

५१३. पहलाद—बुन्देलखण्डी, चरखारी के भाँट। १८१० ई० में उपस्थित।

यह चरखारी के राजा जगत सिंह के दरबारी कवि थे।

टि०—जगत सिंह का शासनकाल सं० १७८८–१८१५ है। यही पहलाद का रचनाकाल है। १८१० ई० (सं० १८६७) में पहलाद का जीवित भी रहना संभव नहीं। यह समय अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ४८५

५१४. विक्रम साहि—चरखारी, बुंदेल खंड के राजा विक्रम साहि, उपनाम विजय बहादुर बुंदेला। जन्म १७८५ ई०; मृत्यु १८२८ ई०।

राग कल्पद्रुम। (१) विक्रम विरदावली, (२) विक्रम सतसई नामक दो प्रशंसित ग्रंथों के रचयिता। शिव सिंह टेहरी के एक और राजा विजय बहादुर बुंदेला का उल्लेख करते हैं, जिनका वे कोई विवरण नहीं देते; केवल जन्म तिथि १८२३ देते हैं, जो वही है, जिसको वे गलती से चरखारी के विजय को देते हैं। टेहरी और चरखारी दोनों बुंदेलखंड में हैं।

टि०—दोनों एक ही कवि हैं। विक्रमसाहि सं० १८३९ (१७८२ ई०) में गद्दीपर बैठे थे। अतः १७८५ ई० इनका जन्मकाल नहीं हो सकता।

५१५. बैताल कवि—बंदीजन और कवि। १८२० ई० में उपस्थित।

यह विक्रम साहि (सं० ५१४) के दरबारी कवि थे और नीति संबंधी तथा सामयिक कविताएँ लिखा करते थे। साहिब प्रसाद सिंह के 'भाषा सार' में इनकी रचनाओं का संग्रह मिलेगा। गार्सां द तासी के अनुसार, भाग १, पृष्ठ ११८, इनका पूरा नाम संतोषराय बेताल था और यह उर्दू में लिखा करते थे, यह मुहम्मद कियाम के समसामयिक और शिष्य प्रतीत होते हैं।

टि०—हिंदी और उर्दू के ये दोनों कवि एक ही नहीं हैं।

५१६. वीर कवि—वीर वाजपेयी उपनाम दाऊ दादा, मंडिला वाले। १८२० ई० में उपस्थित।

अपने भाई बिक्रमसाहि (सं० ५१४) की ललकार के उत्तर में लिखे गए 'प्रेम दीपिका' नामक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—वीर कवि के भाई ५१४ संख्यक विक्रमसाहि से भिन्न हैं। मंडला जबलपुर जिले में है। प्रेम दीपिका की रचना सं० १८१८ में हुई थी। अतः १८२० ई० (सं० १८७७) में इनका जीवित रहना संभव नहीं। उक्त सन् अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ५११

५१७. मान कवि—बुंदेलखंडी, चरखारी के बंदीजन और कवि। १८२० ई० में उपस्थित।

यह विक्रम साहि (सं० ५१४) के दरबारी कवि थे। यह संभवतः वही मान कवि हैं, जिनका शांत रस के कवि के रूप में शिव सिंह ने उल्लेख किया है।

टि०—यह मान कवि १७० संख्यक खुमान हैं। सरोज (सर्वेक्षण ६२९) के शांत रस वाले मान भी यही हैं।

—सर्वेक्षण १३५, ७०२, ६२९

५१८. बलदेव कवि—बुंदेलखंडी, चरखारी के, १८२० ई० में उपस्थित।

यह विक्रम साहि (सं० ५१४) के दरबारी कवि थे। मिलाइए सं० ५४३।

टि०—चरखारी वाले बलदेव जयसिंह (शासनकाल १९१७-३७) के दरबारी कवि थे। यह खुमान के पौत्र हैं। १८२० ई० (सं० १८७७) में यह उपस्थित नहीं रह सकते। यह इनका जन्मकाल भी नहीं हो सकता।

—सर्वेक्षण ५००

५१९. बिहारीलाल—बुंदेलखंडी भाट, उपनाम भोज कवि, चरखारी के रहने-वाले, १८४० ई० में उपस्थित।

यह चरखारी के राजा रतन सिंह बुंदेला उपनाम रतनेस (मिलाइए सं० १४९ का पुनश्च और सं० ३४४ का पुनश्च) के दरबारी कवि थे। इनके

दो प्रमुख ग्रंथ भोज-भूषण और रस-विलास परम प्रशंसित हुए हैं। शग्फो नामक वारांगना के प्रति इनका प्रेम था, जिसपर लिखी हुई इनकी कुछ कविताएँ बहुत प्रसिद्ध हुई थीं।

टि०—इन्होंने रसिक-विलास की रचना सं० १८८४ में की थी। रतन सिंह का शासनकाल सं० १८८९-१९१७ है, अतः १८४० ई० (सं० १८९७) इनका उपस्थिति काल ठीक है।

—सर्वेक्षण ६०८

५२०. अवधेश—बुंदेलखंडी, चरखारी के ब्राह्मण, १८४० ई० में उपस्थित।

यह चरखारी के रतन सिंह बुंदेला के पुराने दरबारी कवि थे। इनकी कविताएँ सरस कही गई हैं, पर शिव सिंह कहते हैं कि उन्हें इनकी कोई पूर्ण पुस्तक नहीं मिली। मिलाइए सं० ५४२।

५२१. रावराना कवि—बुंदेलखंडी। चरखारी के वंदीजन और कवि। १८४० ई० में उपस्थित।

यह पुराने बुंदेला कवियों के वंश से थे और राजा रतनसिंह के दरबारी कवि थे, जहाँ इनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी।

५२२. गोपाल वंदीजन—बुंदेलखंडी, १८४० ई० में उपस्थित।

यह चरखारी नरेश रतनसिंह के दरबारी कवि थे।

५२३. बिहारीलाल त्रिपाठी—टिकमापुर, जिला कान्हपुर के, १८४० ई० में उपस्थित।

मतिराम त्रिपाठी (सं० १४६) के वंशजों में यह सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। यह रामदीन (सं० ५२४) अथवा शीतल (सं० ५२५) से बड़े कवि थे।

टि०—बिहारीलाल त्रिपाठी ने सं० १८७२ में विक्रम सतसई की टीका की थी।

—सर्वेक्षण ८०२

५२४. रामदीन त्रिपाठी—टिकमापुर, जिला कान्हपुर के। १८४० ई० में उपस्थित।

यह मतिराम (सं० १४६) के वंशज थे और चरखारी नरेश महाराज रतनसिंह के दरबारी कवि थे।

टि०—रामदीन चरखारी नरेश रतनसिंह (शासनकाल सं० १८८६-१९१७) के आश्रित थे।

—सर्वेक्षण ७२१

५२५. सीतल त्रिपाठी—टिकमापुर, जिला कान्हपुर के। १८४० ई० में उपस्थित।

यह मतिराम (सं० १४६) के वंशज और कवि लाल (सं० (?) ५६१, ९१९) के पिता थे। यह चरखारी और बुंदेलखंड के अन्य दरबारों में भी जाया करते थे।

५२६. नवल सिङ्घ—झाँसी के कायस्थ। जन्म १८४१ ई०।

शृंगार संग्रह। यह राजा समथर के नौकर थे। इनकी अच्छी प्रसिद्धि थी। यह (१) नाम रामायण और (२) हरि नामावली के रचयिता थे।

टि०—नवल सिंह का रचनाकाल सं० १८७३–१९२६ है। २१ वर्ष की वय में इन्होंने काव्य रचना प्रारंभ की थी। अतः इनका जन्मकाल सं० १८५२ है। ग्रियर्सन में दिया समय १८४१ ई० (सं० १८९८) इनका उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ४३९

५२७. अस्कन्द गिरि—बाँदा के। जन्म (? उपस्थिति) १८५९ ई०।

यह कवि हिम्मत बहादुर (सं० ३७८) के वंश के थे। यह नायिका भेद के अच्छे कवि थे। इनका इसी विषय का श्रेष्ठ ग्रंथ 'अस्कन्द विनोद' है।

टि०—स्कन्द गिरि ने सं० १९०५ में 'रसमोदक' की रचना की थी। स्पष्ट है कि १८५९ ई० (सं० १९१६) इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण १७

५२८. समनेस कवि—बघेलखण्डी, बाँधो के कायस्थ। १८१० ई० में उपस्थित।

यह रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह के पिता महाराज जय सिंह (सिंहासनारोहणकाल १८०९ ई०, सिंहासन परित्यागकाल १८१३ ई०) के दरबारी कवि थे। यह काव्य भूषण नामक ग्रंथ के रचयिता थे।

टि०—बख्शी समन सिंह उपनाम समनेश ने सं० १८४७ में रसिक-विलास और सं० १८७९ में पिंगल काव्य विभूषण की रचना की थी। महाराज जय सिंह ने सं० १८९२ (१८३५ ई०) में सिंहासन त्याग किया था, न कि सं० १८७० (१८१३ ई०) में।

—सर्वेक्षण ९४४, ५४८

५२९. बिस्वनाथ सिङ्घ—बघेलखण्डान्तर्गत बाँधो के महाराज, शासनकाल १८१३–१८३४ ई०।

राग कल्पद्रुम। कवियों को आश्रय प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध राजवंश के वंशज। इनके पूर्वज नेजा रामसिंह अकबर के सम-सामयिक थे। इन्होंने

कवि हरिनाथ (सं० ११४) को केवल एक दोहे पर एक लाख रुपये दिए थे। इस राजा ने न केवल वंशगत उदारता और दानशीलता की रक्षा की, बल्कि सर्व संग्रह नामक संस्कृत की रचना भी की। इन्होंने कबीर के बीजक (सं० १३, १५) और तुलसीदास (सं० १२८) की विनय पत्रिका पर टीकाएँ लिखीं। इनका एक और सुन्दर भाषा काव्य 'रामचन्द्र की सवारी' है।

टि०—विश्वनाथ सिंह का शासनकाल सं० १८९२–१९११ है, न कि सं० १८७०–१८९१ (१८१३–१८३४ ई०)। अकबर के सम सामयिक इनके पूर्वज का नाम राजा रामचन्द्र सिंह बघेला था, न कि नेजाराम सिंह।

—सर्वेक्षण ५४८

५३०. अजबेश नवीन भाट—१८३० ई० के आसपास उपस्थित।

सुंदरी तिलक। यह बाँधो के महाराज विश्वनाथ सिंह (सं० ५२९) (१८१३–१८३४ ई०) के दरबारी कवि थे। देखिए अजबेश संख्या २४। मुझे इस पुराने कवि पर सन्देह है। असंभव नहीं कि संख्या २४ में जिस कविता का हवाला दिया गया है, वह इसी, कवि की हो, जिस पर इस समय विचार किया जा रहा है।

टि०—ग्रियर्सन का सन्देह ठीक है। अजबेस प्राचीन नाम का कवि कोरी कल्पना है। इन अजबेस ने सं० १८६८ में बिहारी सतसई की टीका की थी। यह विश्वनाथ सिंह के पिता जयसिंह के भी दरबारी कवि थे।

—सर्वेक्षण ३

५३१. गोपाल कवि—बघेलखण्डी, बाँधो के कायस्थ। १८३० ई० के आसपास उपस्थित।

यह बाँधो-नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह (सं० ५२९) (१८१३–१८३४ ई०) के मंत्री थे। इनका प्रमुख ग्रंथ 'गोपाल पचीसी' है।

टि०—गोपाल पचीसी या शृङ्गार पचीसी का रचनाकाल सं० १८८५ है।

—सर्वेक्षण १६५

विश्वनाथ सिंह का शासन काल १८१३–१८३४ ई० अशुद्ध है।

५३२. रघुराज सिंह—बाँधो, बघेलखण्ड के बघेल महाराजा। जन्म १८२४ ई०, सिंहासनारोहण काल १८३४ ई०, १८८३ ई० में जीवित।

सुन्दरी तिलक। भागवत पुराण के आनन्दाम्बुनिधि नामक अत्यन्त प्रसिद्ध अनुवाद के रचयिता। सुन्दर शतक (१८४७ ई० में लिखित) नामक हनुमान के इतिहास और अन्य ग्रन्थों के रचयिता।

टि०—रघुराज सिंह का जन्म काल सं० १८८०, सिंहासनारोहण काल सं० १९११ (न कि १८३४ ई०, सं० १८९१) और मृत्युकाल सं १९३६ है। यह १८८३ ई० (सं० १९४०) में जीवित नहीं थे।

—सर्वेक्षण ७३७

अध्याय १०, भाग १ का परिशिष्ट

५३३. परम कवि—बुन्देलखण्डी, महोबा के। जन्म १८१४ ई०।
नखशिख के रचयिता।

५३४. रसिक लाल कवि—बाँदा के। जन्म १८२३ ई०।
श्रृङ्गारी कवि।

५३५. गुनसिंधु कवि—बुन्देलखण्डी। जन्म १८२५ ई०।
कुशल श्रृङ्गारी कवि।

५३६. खंडन कवि—बुन्देलखण्डी। जन्म १८२७ ई०।

इन्होंने नायिकाभेद का एक अच्छा ग्रन्थ लिखा है। शिव सिंह के अनुसार उक्त ग्रंथ की प्रतियाँ झाँसी में हैं। इन्होंने ग्रन्थ-स्वामियों का नाम भी लिखा है।

टि०—खंडन का रचनाकाल सं० १७८१-१८१९ है। अतः १८२७ ई० (सं० १८८४) अशुद्ध है। यह न जन्मकाल है, न उपस्थिति काल है। इनके नायिका भेद के ग्रंथ का नाम सरोज के अनुसार भूषणदाम है, जो वस्तुतः अलंकार-ग्रंथ है। इसका रचना काल सं० १७८७ है। इन्होंने नायिका भेद का कोई ग्रंथ नहीं लिखा।

—सर्वेक्षण १४२

५३७. मदनमोहन कवि—बुन्देलखण्डी, चरखारी के। जन्म १८२३ ई०।
राग कल्पद्रुम। चरखारी के राजा के मंत्री। श्रृङ्गारी कवि।

५३८. राम किशुन चौबे—कालिंजर, जिला बाँदा के। जन्म १८२९ ई०।

विनय पचीसी नामक शांतरस के ग्रंथ के रचयिता। यह सम्भवतः वह 'रामकिशुन कवि' भी हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने बिना कोई विवरण दिए ही किया है।

टि०—कालिंजर बुन्देलखण्ड में है, पर बाँदा जिले में नहीं है। इनका रचना काल सं० १८१७-६० है, अतः १८२९ ई० (सं० १८८६) न तो इनका जन्म काल है, न उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ७२७

इनके सरोज (सर्वेक्षण) के ७२९ संख्यक रामकृष्ण कवि से अभिन्न होने की कोई सम्भावना नहीं।

५३९. हरिदास कवि—बुन्देलखण्डी। जन्म १८३४ ई०।

यह नोने कवि (सं० ५४५) के पिता थे। इन्होंने राधा भूषण नाम शृङ्गारी काव्य लिखा।

टि०—इन हरिदास ने सं० १८११ में ज्ञान सतसई और सं० १८१३ में भाषा भागवत एकादश स्कंध की रचना की। अतः १८३४ ई० (सं० १८९१) न तो इनका जन्म काल है और न उपस्थिति काल ही। यह अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ९६१

५४०. गंगाराम कवि—बुंदेलखंडी, जन्म १८३७ ई०।

साधारण कवि।

टि०—गंगाराम का कविताकाल सं० १८४६–१८९४ है, अतः १८३७ ई० (सं० १८९४) इनका जन्मकाल नहीं हो सकता।

—सर्वेक्षण १५४

५४१. परमानंद लल्ला पुरानीक—बुंदेलखंडी, अजयगढ़ के। जन्म १८३७ ई०।

नखशिख के रचयिता।

५४२. अवधेस—बुंदेलखंडी, भूपा के ब्राह्मण। जन्म १८३८ ई०।

यह कवि सुंदर कविताओं की रचना में कुशल कहे गए हैं, पर शिव सिंह कहते हैं कि उन्हें इनके एक भी पूर्ण ग्रंथ की उपलब्धि नहीं हुई है। मिलाइए सं० ५२०।

टि०—५४० और ५२० संख्यक दोनों अवधेश एक ही हैं। इनका रचनाकाल सं० १८८६–१९१७ है। अतः १८३८ ई० (सं० १८९१) इनका जन्मकाल नहीं है।

—सर्वेक्षण ५, ६

५४३. बलदेव कवि—बुंदेलखंडी, चरखारी के। जन्म १८३९ ई०।

संभवतः ५१८ संख्यक कवि ही।

वि०—यह कवि दुहरा उठा है। १८३९ ई० (सं० १८९६) इसका जन्मकाल हो सकता है। इसका रचनाकाल सं० १९१७–३७ है।

—सर्वेक्षण ५००

५४४. भोलासिंह कवि—परना, बुन्देल खंड के। जन्म १८३९ ई०।

५४५. नोने कवि—बाँदा, बुन्देलखंड के बंदीजन और कवि। जन्म १८४४ ई०।

यह कवि हरिदास (सं० ५३९) के पुत्र थे। यह भाषा साहित्य में परम प्रवीण थे।

टि०—इनके पिता हरिदास का रचनाकाल सं० १८११ है, अतः १८४४ ई० (सं० १९०१) इनका जन्मकाल नहीं हो सकता। अधिक से अधिक यह इनके जीवन का सांध्यकाल हो सकता है।

—सर्वेक्षण ४४७

५४६. हरिदास कवि—परना, बुंदेलखंड के कायस्थ। जन्म १८४४ ई०।

भाषा साहित्य के रस कौमुदी नामक ग्रंथ के रचयिता। इन्होंने इसी ढंग के और भी १२ ग्रंथ लिखे हैं।

टि०—हरिदास (मूल नाम हरिप्रसाद) का जन्म सं० १८७६ में एवं देहांत २४ वर्ष की अल्प आयु में सं० १९०० में हुआ। अतः १८४४ ई० (सं० १९०१) इनका न तो जन्मकाल है, न उपस्थिति काल ही। यह अशुद्ध है। रस कौमुदी की रचना सं० १८९७ में हुई थी।

—सर्वेक्षण ९६०

५४७. हिरदेस कवि—बुंदेलखंडी, झाँसी के भाट। जन्म १८४४ ई०।

श्रृङ्गार संग्रह। 'श्रृङ्गार नवरस' नामक ग्रंथ के रचयिता।

५४८. नीलसखी—जैतपुर, बुंदेलखंड के। जन्म १८४५ ई०।

टि०—नीलसखी का रचनाकाल सं० १८४० है। १८४५ ई० (सं० १९०२) इनका जन्मकाल नहीं, यह इनके जीवन का सांध्यकाल भी नहीं हो सकता।

—सर्वेक्षण ४२०

५४९. बंसगोपाल—जालौन, बुंदेलखंड के वंदीजन। जन्म १८४५ ई०।

कोई विवरण नहीं। यह संभवतः वही हैं, जिनका उल्लेख शिव सिंह ने 'वंशगोपाल' नाम से बिना तिथि दिए वंदीजन कह कर किया है।

टि०—ग्रियर्सन की संभावना ठीक प्रतीत होती है।

—सर्वेक्षण ५४२, ५८५

५५०. नैसुक कवि—बुंदेलखंडी। जन्म १८४७ ई०।

श्रृंगारी कवि।

५५१. अंबर भाट—बुंदेलखंडी, चौजीतपुर के। जन्म १८५३ ई०।

टि०—१८५३ ई० (सं० १९१०) इनका उपस्थितिकाल है।

—सर्वेक्षण ४०

५५२. दीनानाथ—बुंदेलखंडी। जन्म १८५४ ई०।

टि०—दीनानाथ का अस्तित्व संदिग्ध है। यदि इनका अस्तित्व है भी, तो १८५४ ई० (सं० १९११) जन्मकाल न होकर उपस्थिति काल होना चाहिए।

—सर्वेक्षण ३५७

५५३. पंचम कवि—बुंदेलखंडी वंदीजन, नवीन, जन्म १८५४ ई०।

यह अजयगढ़ के राजा गुमान सिंह के दरबारी कवि थे।

टि०—गुमान सिंह का शासनकाल सं० १८२२-३५ है। अतः १८५४ ई० (सं० १९११) न तो कवि का जन्मकाल है और न उपस्थिति काल ही। यह पूर्णरूपेण अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ४६५

५५४. राधेलाल—बुंदेलखंडी। राजगढ़ के कायस्थ। जन्म १८५४ ई०।

टि०—१८५४ ई० (सं० १९११) उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ७९३

५५५. कुंजलाल कवि—मऊ रानीपुरा, जिला झाँसी, बुंदेलखंड के वंदीजन और कवि, जन्म १८५५ ई०।

इनकी कुछ फुटकर कविताएँ मिलती हैं।

टि०—१८५५ ई० (सं० १९१२) उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ८३

५५६. जनकेस—मऊ रानीपुरा, जिला झाँसी, बुंदेलखंड के वंदीजन। जन्म १८५५ ई०।

यह छतरपुर के राजा के नौकरों में से हैं। इनकी कविताएँ मधुर कही जाती हैं।

टि०—१८५५ ई० (सं० १९१२) उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण २६४

५५७. कान्ह कवि—द्वितीय, उपनाम कन्हई लाल, राजनगर, बुंदेलखंड के कायस्थ। जन्म १८५७ ई०।

इन्होंने कुछ अच्छी कविताएँ लिखी हैं। इनका नखशिख देखने योग्य कहा जाता है।

टि०—इनका नखशिख सं० १८९८ में रचा गया। अतः १८५७ ई० (सं० १९१४) इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ८७

५५८. जवाहिर कवि—श्रीनगर, बुंदेलखंड के बंदीजन और कवि। जन्म १८५७ ई०।

टि०—१८५७ ई० (सं० १९१४) उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण २६८

भाग २, बनारस

५५९. रघुनाथ कवि—वन्दीजन, बनारसी। १७४५ ई० में उपस्थित।

शृङ्गार संग्रह। यह मुकुन्द लाल (सं० ५६०) के सहपाठी और महाभारत के अनुवादक गोकुल नाथ (सं० ५६४) के पिता थे। यह बनारस के महाराज बरिबण्ड सिंह[1] के दरबारी कवि थे। पञ्चकोशी के भीतर स्थित चौरा-गाँव में रहते थे। यह भाषा साहित्य के आचार्यों में गिने जाते हैं। यह (१) रसिक मोहन, (२) जगमोहन, (३) काव्य कलाधर (१७४५ ई० में विरचित), (४) इश्क महोत्सव, और (५) बिहारी लाल (सं० १९६) की सतसई पर एक भाष्य के रचयिता हैं। ये सभी विशेष रूप से प्रशंसित ग्रंथ हैं।

टि०—मुकुन्द लाल रघुनाथ के काव्य-गुरु थे, सहपाठी नहीं। बरिबण्ड सिंह और पाद टिप्पणी में उल्लिखित बलवन्त सिंह एक ही व्यक्ति हैं।

५६०. मुकुन्द लाल कवि—बनारसी। जन्म (! उपस्थिति) १७४६ ई०।

सत्कविगिराविलास। यह रघुनाथ कवि (सं० ५५९) के सहपाठी थे। संभवतः यही लाल मुकुन्द (सं० ३९१) भी हैं।

टि०—जैसा कि ऊपर कहा गया है मुकुन्द लाल रघुनाथ के सहपाठी नहीं, गुरु थे। अतः १७४६ ई० इनका जन्मकाल नहीं है, उपस्थितिकाल है। यह ठीक है कि ५६० संख्यक मुकुन्द लाल और ३९१ संख्यक लाल मुकुन्द एक ही व्यक्ति हैं।

—सर्वेक्षण ६३४, ८०६

५६१. लाल कवि—बनारसी। १७७५ ई० के आसपास उपस्थित।

सुन्दरी तिलक। यह बनारस के राजा चेतसिंह (१७७०–१७८१) के दरबारी कवि थे। इन्होंने आनन्द रस नामक नायिका भेद का एक ग्रंथ और बिहारी लाल (सं० १९६) की सतसई पर लाल चन्द्रिका नाम्नी टीका रची। मिलाइए सं० ६२९।

---

१. शिवसिंह का ऐसा कथन है, पर मुझे तो बनारस के राजाओं की सूची में यह नाम कहीं नहीं मिला। संभवतः बलवन्त सिंह (शासनकाल १७४०-१७७०) से अभिप्राय है।

टि०—लाल चन्द्रिका लाल बनारसी की कृति नहीं है। ६२९ संख्यक लल्लू जी लाल की कृति है।

—सर्वेक्षण ८०१

५६२. हरि परसाद—बनारसी। १७७५ ई० के आसपास उपस्थित।

बनारस के राजा चेतसिंह (१७७०-१७८१) के कहने पर इन्होंने बिहारी (सं० १९६) की सतसई का अत्यन्त ललित संस्कृत पद्यानुवाद किया था।

टि०—यह संस्कृत टीका सं० १८३७ में रची गई थी।—

यही ग्रंथ, सं० १९६ टिप्पणी।

५६३. बलवान सिंह—बनारस के राजकुमार। १८०० ई० के आसपास उपस्थित।

यह राजा चेतसिंह (मृत्यु १८१०) के पुत्र थे। शिवसिंह सरोज में इनका उल्लेख ग्रंथकार रूप में हुआ है, पर उसमें यह नहीं लिखा है कि इन्होंने क्या लिखा।

टि०—शिवसिंह सरोज में इन्हें 'सं० १८८९ में उ०' कहा गया है और इनके ग्रंथ का नाम 'चित्र चन्द्रिका' दिया गया है। उक्त संवत् १८८९ इसी चित्र चन्द्रिका का रचना काल है। पर न जाने कैसे ग्रियर्सन का ध्यान इस तथ्य पर नहीं गया।

५६४. गोकुलनाथ वंदीजन—बनारसी। १८२० ई० के आसपास उपस्थित।

राग कल्पद्रुम, सुंदरी तिलक। यह कवि रघुनाथ (सं० ५५९) बनारसी के पुत्र थे। इनका घर चौरा गाँव में था, जो पंचकोशी के भीतर है। इनकी चेत चन्द्रिका कवियों में प्रमाण मानी जाती है। इसमें इन्होंने अपने आश्रयदाता बनारस के राजा चेत सिंह (१७७६ ई० में उपस्थित, १८१० ई० में मृत) के कौटुम्बिक इतिहास का वर्णन किया है। इनका एक दूसरा सुन्दर ग्रंथ 'गोविन्द सुखद विहार' है। महाभारत (राग कल्पद्रुम) का भाषानुवाद बनारस के राजा उदित नारायण (१७९५-१८३५ ई०) के कहने पर हुआ था। इस अनुवाद कार्य में इनका प्रमुख हाथ था। इसको इन्होंने अपने पुत्र गोपीनाथ (सं० ५६५) और गोपीनाथ के शिष्य मणिदेव (सं० ५६६) के साथ पूरा किया था। इस अनुवाद का पूर्ण नाम 'महाभारत दर्पण' है, और इसके उपसंहार का 'हरिवंश दर्पण', जो १८२९ ई० में कलकत्ते में छपा। गार्सां द तासी लिखता है—"महाभारत के और भी हिंदुस्तानी अनुवाद हैं। जिनसे मैं परिचित हूँ, ये हैं:—

(१) किताबे महाभारत—जिसका एक अंश फरज़ाद कुली संग्रह में है।

(२) प्रति जिसका एक अंश सर ई० कुज़ले के पास है।

(३) सर डब्लू० ऊज़ले (Sir W. Ouseley) के हस्तलेखों में भी एक ग्रंथ है, जिसका एक अंश संस्कृत और हिंदुस्तानी महाभारत का है।

(४) बोर्जिया के प्रिंस के बहुत से हिंदुस्तानी हस्तलिखित ग्रंथों में महाभारत का एक अंश, बालक पुराण अर्थात् बालक (कृष्ण) की दंत कथाएँ नाम से है। संत बारथलमी के पालिन ने इस संग्रह का वर्णन किया है। मूल हस्तलेख पी० मारकस ए टोंबा रचित इटालियन अनुवाद के सहित है।

अकबर के मंत्री अबुल फजल द्वारा लिखित कहे गए महाभारत के फ़ारसी अनुवाद के अतिरिक्त, एक और नया अनुवाद नजीब ख़ाँ बिन अब्दुल लतीफ़ द्वारा, नवाब महालदार नज़ा के कहने पर, उन्हीं के महल में, १७९८–८३ ई० में हुआ। अनुवादक कहता है कि बहुत से ब्राह्मण मूल संस्कृत की मौखिक व्याख्या हिन्दुस्तानी में करते जाते थे और उसने उसी व्याख्या के आधार पर अपना फ़ारसी अनुवाद प्रस्तुत किया।

एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल के फ़ारसी हस्त-लेखों में, हिंदू बयास द्वारा किया गया महाभारत का एक तीसरा फ़ारसी अनुवाद भी है।"

इस सूची में आगे यह और जोड़ा जा सकता है—

(१) छत्र कवि (सं० ७५) कृत विजय मुक्तावली—यह महाभारत का अत्यंत संक्षिप्त सार मात्र है।

(२) सबल सिंह चौहान (सं० २१०)—इन्होंने उक्त ग्रंथ के २४,००० छंद अनूदित किए।

(३) चिरंजीव (सं० ६०७)—इनके लिए कहा जाता है कि इन्होंने सारा अनुवाद किया।

टि०—चेत चंद्रिका अलंकार का ग्रंथ है। इसकी पद्यबद्ध भूमिका में महाराज बनारस की बंशावली भी दी गई है। सारा ग्रंथ ही इतिहास नहीं है। मणिदेव गोकुल नाथ के ही शिष्य थे, इनके पुत्र गोपीनाथ के नहीं।

५६५. गोपीनाथ बंदीजन—बनारसी। १८२० ई० के लगभग उपस्थित।

बनारस के राजा उदित नारायण की आज्ञा से संपूर्ण महाभारत का भाषानुवाद हुआ था। गोपीनाथ, [जो गोकुलनाथ (सं० ५६४) के पुत्र हैं], और उनके शिष्य मणिदेव (सं० ५६६) ने इस कार्य में अत्यंत महत्वपूर्ण भाग लिया। गोपीनाथ के जीवन का अधिकांश भाग इसी कार्य में लगा था।

उनका शेष जीवन विभिन्न प्रकार की लघु रचनाओं में लगा। जो हो, इनकी अधिक प्रसिद्धि अनुवाद के ही कारण है।

टि७—मणिदेव गोकुलनाथ के शिष्य थे, न कि गोपीनाथ के।

५६६. मनिदेव—बंदीजन बनारसी। १८२० ई० के आसपास उपस्थित।

सुंदरी तिलक। यह गोपीनाथ (सं० ५६५) के शिष्य थे। उनके और गोकुलनाथ (सं० ५६४) के साथ इन्होंने महाभारत के प्रसिद्ध अनुवाद में प्रमुख भाग लिया।

टि०—मणिदेव गोकुलनाथ के शिष्य थे, न कि गोपीनाथ के।

५६७. पराग कवि—बनारसी। १८२० ई० के आसपास उपस्थित।

यह बनारस के राजा उदित नारायण सिंह (१७९५-१८३५) के दरबारी कवि थे। इन्होंने अमरकोष का भाषानुवाद किया। (? राग कल्पद्रुम, मिलाइए सं० १७०, ५८९, ७६१)।

५६८. राम सहाय—कायस्थ, बनारसी। १८२० ई० के आसपास उपस्थित।

राग कल्पद्रुम। यह बनारस के राजा उदित नारायण सिंह (१७९५-१८३५) के दरबारी कवि थे। इन्होंने पिंगल का एक ग्रंथ वृत्त तरंगिणी सतसई लिखा।

टि०—वृत्त तरंगिणी एक ग्रंथ है, सतसई दूसरा।

५६९. देव कवि—बनारसी, उपनाम काष्ठ जिह्वा स्वामी। १८५० ई० के आसपास उपस्थित।

सुंदरी तिलक; शृङ्गार संग्रह। इन्होंने काशी में संस्कृत पढ़ी। एक अवसर पर यह अपने गुरु से लड़ पड़े, और बाद में अपना अनुताप प्रकट करने के लिए, अपनी जिह्वा काट डाली और बदले में काठ की एक नकली जीभ लगा ली। दूसरे से यह पट्टी पर लिखकर वार्ता किया करते थे। यह बनारस के महाराज ईश्वरी नारायण सिंह (१८३५ ई० में सिंहासनासीन हुए; १८८३ ई० में जीवित थे) के गुरु थे। उक्त काशी नरेश ने इन्हें रामनगर में बसा दिया था, जहाँ इन्होंने विनयामृत (भजनों का संग्रह), रामायण परिचर्या और अन्य ग्रंथ लिखे। (देखिए हरिश्चन्द्र, प्रसिद्ध महात्माओं का जीवन चरित्र, भाग २, पृष्ठ ३०)। इनके भजन अब भी बनारस दरबार में गाए जाते हैं।

टि०—इन देव स्वामी की रचनाएँ सुंदरी तिलक एवं शृंगार संग्रह में नहीं हैं, शृंगारी देव की हैं। इन्होंने अपनी जिह्वा काट नहीं ली थी, उसपर काठ की खोल चढ़ा ली थी।

५७०. ठाकुर परसाद त्रिपाठी—किशुनदासपुर, जिला रायबरेली वाले। जन्म १८२५ ई०; १८६३ ई० में उपस्थित।

यह संस्कृत साहित्य के बड़े विद्वान थे। १८६३ ई० में इन्होंने बड़े परिश्रम से रस चंद्रोदय नामक काव्य संग्रह पूर्ण किया। इसमें २४२ कवियों की रचनाएँ हैं। इन्हें इन्होंने बुंदेलखंड में प्रायः घर घर घूमकर एकत्र की थीं। तदनंतर यह बनारस चले आए; जहाँ यह गनेश (सं० ५७३) और सरदार (सं० ५७१) आदि कवियों के मित्र हो गए। अवध के रईसों से इन्हें बड़ी प्रतिष्ठा मिलती थी। यह १८९७ ई० में दिवंगत हुए और अपने पीछे बहुत बड़ा और बहुमूल्य पुस्तकालय छोड़ गए, जिसको इनके पुत्रों ने बेंच खाया।

टि०—ठाकुर प्रसाद जी की मृत्यु १८९७ ई० में नहीं, १८६७ ई० (सं० १९२४) में हुई थी।

—सर्वेक्षण ३१२

५७१. सरदार—बनारसी, वंदीजन और कवि। १८८३ ई० में जीवित।

सुंदरी तिलक, श्रृङ्गार संग्रह। यह काशी नरेश महाराज ईश्वरीनारायण सिंह के दरबारी कवि थे और हरिजन कवि (सं० ५७५) के पुत्र थे। इनका बड़ा नाम है। यह ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी (सं० ५७०) के मित्र और नारायण राय (सं० ५७२) के गुरु थे। यह (१) साहित्य सरसी, (२) हनुमत भूषण, (३) तुलसी भूषण, (४) मानस भूषण, (५) कवि प्रिया का तिलक (सं० १३४), (६) रसिक प्रिया का तिलक (सं० १३४), (७) बिहारी सतसई का तिलक (सं० १९६), (८) श्रृङ्गार संग्रह, और (९) सूरदास के ३८० दृष्टकूटों का तिलक आदि ग्रन्थों के रचयिता हैं। इनमें से आठवाँ ग्रंथ (नवल किशोर प्रेस लखनऊ से प्रकाशित) अलंकार शास्त्र का अत्यन्त प्रिय ग्रंथ है। इसकी यह सर्वप्रियता उचित ही है। काव्यकला के प्रायः सभी अंगों का विवेचन इसमें है। यह १८४८ ई० में लिखा गया है। इसका उल्लेख मूल ग्रंथ में 'Sring' से हुआ है। इसमें निम्नलिखित कवियों की रचनाएँ हैं :—

चतुर्भुज (संख्या ४०)
नारायण दास (सं० ५१)
परशु राम (सं० ५५)
रसखान (सं० ६७)
केहरी (सं० ७०)
परबत (सं० ७४)
कृष्ण जीवन (! सं० ७७, ४३८)
शिव (! सं० ८८)
अमरेश (सं० ९०)
अकबर (सं० १०४)

ब्रह्म (सं० १०६)
रहीम (सं० १०८)
खानखाना (सं० १०८)
गंग (सं० १३१)
केशवदास (सं० १३४)
बलभद्र (सं० १३५)
प्रवीनराय (सं० १३७)
सुन्दर (सं० १४२)
चिन्तामणि (सं० १४३)
भूषण (सं० १४५)
मतिराम (सं० १४६)
नृपशंभु (सं० १४७)
नीलकण्ठ (सं० १४८)
परताप (सं० १४९)
श्रीपति (सं० १५०)
शिवनाथ (सं० १५२)
मंडन (सं० १५४)
रतन (सं० १५५)
मुरली (सं० १५६)
श्रीधर (सं० १५७)
कालिदास (सं० १५९)
कविराज (सं० १६०)
सेनापति (सं० १६५)
ठाकुर (सं० १७३)
काशी राम (सं० १७५)
ईश्वर (सं० १७७)
आलम (सं० १८१)
परसाद (सं० १८३)
निवाज (? सं० १९८, ४४८)
हरिकेश (सं० २०३)
श्री गोविन्द (सं० २११)
मोती राम (सं० २१६)
परमेश (? सं० २२२, ६१६)
अभिमन्य (सं० २२९)
घासी राम (सं० २३०)
सेख (सं० २३६)
बल्लभ (सं० २३९)
बेनी (? सं० २४७, ४८४)
हरिजन (सं० २४९)
रामजू (? सं० २५२)
भूधर (? सं० २५६, २३६)
शिरोमणि (सं० २६२)
वलदेव (? सं० २६३, ३५९)
तोष (सं० २६५)
मुकुन्द (सं० २६६)
रूपनारायण (सं० २६८)
भरमी (सं० २७३)
कुलपति (सं० २८८)
सूरति (सं० ३२६)
कृपा राम (? सं० ३२८, ७९७)
भगवन्त (सं० ३३३)
उदयनाथ (सं० ३३४)
कवीन्द्र (सं० ३३४)
गिरिधरदास (सं० ३४५)
घनआनन्द (सं० ३४७)
दूलह (सं० ३५८)
दास (सं० ३६९)
किशोर (सं० ३८५)
तारा (सं० ४१९)
पुखी (सं० ४४२)
बोधा (सं० ४४९)
कृष्णलाल (सं० ४५६)
मकरंद (सं० ४५७)
धीर (सं० ४६१)

भंजन (सं० ४६८)
संतन (सं० ४७२)
सिंह (? सं० ४७८)
दत्त (सं० ४७५)
मनिराम (सं० ४७७)
संगम (सं० ४८०)
ऊधो (सं० ४९९)
पदमाकर (सं० ५०६)
पजनेस (सं० ५१०)
नवल (सं० ५२६)
हिरदेस (सं० ५४७)
रघुनाथ (सं० ५५९)
देव (सं० ५६९)
सरदार (सं० ५७१)
शिवदत्त (सं० ५८८)
गिरिधारी (सं० ६२५)
चैनराय (सं० ६२७)
देवकीनन्दन (सं० ६३०)
गुरुदत्त (सं० ६३१)
दिनेश (सं० ६३३)
गुलाल (सं० ६५७)
बलिराम (सं० ७६८)
धुरंधर (सं० ७८२)
नायक (सं० ७८३)
महराज (सं० ७९३)
ऋषिनाथ (सं० ७९४)
दयालदेव (सं० ८३६)
देवी सिंह (सं० ८४३)
नबी (सं० ८४८)
नाथ (सं० ८५०)
मनसाराम (सं० ८८५)
मीरन (सं० ८९२)
रज्जब (सं० ८९८)
रमापति (सं० ९००)
ससिनाथ (सं० ९३१)
शिवराज (सं० ९३२)
हरिलाल (सं० ९४६)
हेम (सं० ९५०)
भीम (सं० ?)
छत्त (सं० ?)
देवन (सं० ?)
धनेश (सं० ?)
धर्म (सं० ?)
मकसूदन (सं० ?)
मनराज (सं० ?)
मिथिलेश (सं० ?)
रतिनाथ (सं० ?)
साहबराम (सं० ?)
समाधान (सं० ?)
तुलाराय (सं० ?)

टि०—१८८३ ई० (सं० १९४०) ही सरदार का मृत्युकाल है। आठवाँ ग्रंथ अर्थात् शृङ्गार संग्रह अलंकार का ग्रन्थ नहीं है। यह काव्य-संग्रह है। इसमें नायिका भेद आदि के क्रम से इनकी एवं अन्य अनेक पुराने नए कवियों की कविताएँ संकलित हैं।

—सर्वेक्षण ९२७

५७२. नारायनराय—वंदीजन बनारसी। १८८३ ई० में जीवित।

यह कवि सरदार (सं० ५७३) के शिष्य थे। इन्होंने भाषा-भूषण

(सं० ३७७) का छंदात्मक भाष्य और कवि प्रिया (सं० १३४) का तिलक किया। यह अनेक श्रृंगारी छंदों के भी रचयिता हैं।

५७३. गनेस कवि—बंदीजन बनारसी। १८८३ ई० में जीवित।

यह महाराज ईश्वरी नारायण सिंह के दरबारी कवि थे। यह रसचंद्रोदय के कर्ता ठाकुर प्रसाद (सं० ५७०) के मित्र थे।

५७४. बंसीधर—बनारसी। जन्म १८४४ ई०।

यह गनेस वंदीजन (सं० ५७३) के जो १८८३ ई० में जीवित थे, पुत्र थे। यह भाषा साहित्य के 'साहित्य बंशीधर' नामक ग्रंथ और चाणक्य राजनीति के भाषा राजनीति (? राग कल्पद्रुम। देखिए सं० ८४०, ९१९) नामक अनुवाद-ग्रंथ के रचयिता हैं। यह नीति संबंधी दो अन्य ग्रंथों 'विदुर प्रजागर' और 'मित्र मनोहर' के भी रचयिता हैं। संभवतः यही शिवसिंह द्वारा बिना तिथि के ही उल्लिखित 'वंशीधर' और 'वंशीधर कवि' भी हैं।

टि०—१८४४ ई० (सं० १९०१) जन्मकाल नहीं है, उपस्थिति काल है, क्योंकि इसके ६ ही वर्ष बाद सं० १९०७ में बंशीधर बनारसी ने साहित्य तरंगिणी नाम ग्रंथ लिखा था। साहित्य बंशीधर का ही नाम बिदुर प्रजागर है। इसी प्रकार भाषा राजनीति का ही नाम मित्र मनोहर है। भाषा राजनीति या मित्र मनोहर बंशीधर बनारसी की रचना नहीं है। यह बंशीधर प्रधान की कृति है। इसकी रचना सं० १७७४ में हुई थी।

—सर्वेक्षण ५८५

सरोज (सर्वेक्षण ५२४) के 'वंशीधर' वल्लभ संप्रदाय के कवि हैं, और (सर्वेक्षण ५२८) 'वंशीधर कवि' संभवतः दलपतिराय के साथ वाले वंशीधर हैं। अतः ये वंशीधर बनारसी से भिन्न हैं।

५७५. हरिजन कवि—ललितपुर के। जन्म (? उपस्थिति) १८५१ ई०।

इन्होंने रसिक प्रिया (सं० १३४) की टीका बनारस के महाराज ईश्वरी नारायण सिंह के नाम पर की है। यह कवि सरदार (सं० ५७१) के पिता थे।

टि०—१८५१ ई० (सं० १९०८) इनका उपस्थिति काल है, क्योंकि इसके तीन वर्ष पूर्व सं० १९०५ में इनके पुत्र सरदार ने श्रृङ्गार संग्रह नामक काव्य संग्रह संकलित किया था। रसिकप्रिया की टीका सरदार की बनाई हुई है, न कि इनके बाप हरिजन की। सरोज में यह उल्लेख प्रमाद से ही हो गया है।

—सर्वेक्षण १००१

५७६. बंदन पाठक—बनारसी। १८८३ ई० में जीवित।

इन्होंने बनारस के महाराज ईश्वरी नारायण सिंह के आदेश से तुलसीदास (सं० १२८) कृत रामायण की सर्व श्रेष्ठ उपलब्ध टीकाओं में से एक लिखी है। इसका नाम है 'मानस शंकावली'।

५७७. जानकी परसाद कवि—बनारसी। १८१४ ई० में उपस्थित।

१८१४ ई० में इन्होंने केशवदास (सं० १३४) कृत रामचन्द्रिका की टीका लिखी। इन्होंने 'जुक्ति रामायण' नामक एक और ग्रन्थ भी लिखा। इसकी टीका कवि धनीराम (सं० ५७८) ने की है। यह या दूसरे जानकी प्रसाद (सं० ६९५) ही सम्भवत: यह तीसरे जानकी प्रसाद भी हैं, जिनका उल्लेख, बिना तिथि दिए हुए, शिवसिंह ने किया है।

टि०—तीसरे जानकी प्रसाद (सर्वेक्षण २६२) मँगते कवि हैं और निश्चय ही इनसे (सर्वेक्षण २६३) एवं जानकी प्रसाद पँवार (सर्वेक्षण २६१) से भिन्न हैं।

५७८. धनीराम कवि—बनारसी। जन्म १८३१ ई०।

महाराज बनारस के भाई बाबू देवकीनंदन की प्रार्थना पर इन्होंने काव्य प्रकाश का संस्कृत से भाषा में अनुवाद किया और केशवदास (सं० १३४) कृत रामचन्द्रिका की टीका लिखी। इन्होंने कवि जानकी प्रसाद (सं० ५७७) कृत जुक्ति रामायण की भी टीका लिखी।

टि०—धनीराम ने देवकीनंदन के पुत्र रतन सिंह के आदेशानुसार सं० १८८० में काव्य प्रकाश का भाषानुवाद किया। अतः १८३१ ई० (सं० १८८८) इनका जन्म काल न होकर उपस्थिति काल है। राम चन्द्रिका की टीका इनके आश्रयदाता जानकी प्रसाद जी ने की थी। हो सकता है इसमें इनका भी कुछ प्रच्छन्न हाथ रहा हो।

—सर्वेक्षण ३८२

५७९. सेवक कवि—वंदीजन बनारसी। १८८३ ई० में जीवित।

सुन्दरी तिलक। शृङ्गारी कवि। यह महाराज बनारस के भाई देवकीनंदन जी के दरबारी कवि थे। सम्भवतः यही सं० ६७७ वाले कवि भी हैं।

टि०—सेवक १८८३ ई० (सं० १९४०) में जीवित नहीं थे। इनकी मृत्यु दो साल पहले सं० १९३८ में ही हो गई थी। दोनों सेवक एक ही हैं, इसमें सन्देह नहीं। सेवक देवकीनन्दन सिंह के यहाँ नहीं थे, उनके पौत्र (जानकी प्रसाद के पुत्र) हरिशंकर सिंह के यहाँ थे।

—सर्वेक्षण ८८३, ८८४

५८०. गोपाल चंद्र साहू—उपनाम गिरिधर बनारसी उर्फ गिरिधर दास। जन्म १८३२ ई०।

सुन्दरी तिलक। यह काले हर्षचंद्र के पुत्र और बनारस के प्रसिद्ध हरिश्चंद्र (सं० ५८१) के पिता थे। इनके प्रमुख ग्रंथ 'दशावतार' और 'भारती भूषण' हैं। भारती भूषण, भाषा-भूषण की टीका है। हरिश्चंद्र अभी १८८५ ई० में मरे हैं। देखिए गार्सा द तासी, भाग १, पृष्ठ १९१।

टि०—दशावतार का नाम 'दशावतार कथामृत' है। इनका जन्म पौष कृष्ण १५, संवत् १८९० को हुआ था। इनकी मृत्यु वैशाख सुदी ७, सं० १९१७ को हुई।

—सर्वेक्षण १६३

५८१. हरिश्चन्द्र—बाबू हरिश्चन्द्र बनारसी। जन्म ९ सितम्बर १८५० ई०।

सुन्दरी तिलक। आज के देशी कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध। इन्होंने भाषा साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए किसी भी जीवित भारतीय की अपेक्षा अधिक कार्य किया है। इन्होंने अनेक शैलियों में स्वयं प्रचुर परिमाण में लिखा है और हर एक शैली में यह बढ़े-चढ़े हैं। यह अनेक वर्षों तक भाषा की एक अत्यन्त सुन्दर पत्रिका 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' चलाते रहे थे। यह गोपाल चन्द्र साहू, उपनाम गिरिधर बनारसी (सं० ५८०) के पुत्र थे, जिन्होंने स्वयं बहुत अधिक लिखा है और जो २७ ही वर्ष की वय में १८५९ ई० में परलोक सिधारे थे, जब कि हरिश्चन्द्र केवल ९ वर्ष के बालक थे। इस बालक को क्वींस कालेज बनारस में शिक्षा मिली और इसने बहुत ही कम उम्र में रचना प्रारम्भ कर दी थी। १८८० ई० में इनका यश इतना फैल गया था कि सभी पत्रों ने एक स्वर से इन्हें भारतेन्दु की उपाधि प्रदान की थी। यह १८८५ ई० में दिवंगत हुए। इनके लिए सर्वसाधारण ने समान रूप से शोक मनाया, क्योंकि सभी की राय में यह 'अजात शत्रु' थे। अपने सुन्दरी तिलक (इस ग्रंथ में Sun से संकेतित) नामक काव्य संग्रह के लिए, जो १८६९ ई० (सं० १९२६) में प्रकाशित हुआ और जिसमें ६९ कवियों के सवैया छन्दों का संकलन हुआ है, यह सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। (सं० ७०६ भी देखिए)। कुछ लोगों के अनुसार यह संग्रह इनके निर्देशानुसार पुरुषोत्तम सुकल द्वारा संकलित हुआ। इसके अनेक संस्करण हुए हैं। इनके नवीनतम ग्रंथों में 'प्रसिद्ध महात्माओं का जीवन चरित्र' है, जिसमें यूरोपीय और भारतीय अनेक बड़े लोगों के सुन्दर जीवन चरित्र हैं। यह निःसन्देह सबसे बड़े आलोचक थे, जिसे उत्त भारत ने अब तक उत्पन्न किया है। इनके जीवन का संक्षिप्त

परिचय व्यास रामशंकर शर्मा द्वारा रचित, हरि प्रकाश प्रेस बनारस से इनकी मृत्यु के शीघ्र अनन्तर १८८५ में प्रकाशित, 'चन्द्रास्त' में दिया गया है। हरिश्चन्द्र कृत 'काश्मीर कुसुम[1]' (काश्मीर का इतिहास) ग्रंथ के अन्त में भी इनके जीवन का संक्षिप्त विवरण और इनके द्वारा रचित प्राय: १०० ग्रंथों की सूची दी गई है। एक ग्रंथ, जिसका उल्लेख इस सूची में नहीं हुआ है, 'काशी का छाया चित्र' है, जिसमें बनारसी बोली में अनेक विचित्र प्रयोग हैं। इनका एक और अत्यन्त प्रसिद्ध ग्रंथ 'कविवचनसुधा' है, जो पावस सम्बन्धी कविताओं का संग्रह है। इनके संपूर्ण ग्रंथों का संग्रह आजकल खड्गविलास प्रेस बाँकी पुर के स्वामी रामदीन सिंह द्वारा हरिश्चन्द्र कला नाम से प्रकाशनाधीन है।

सुन्दरी तिलक में आए हुए कवियों की सूची नीचे दी जा रही है —

अजबेस (सं० २४, ५३०)
आलम (सं० १८१)
अलीमन (सं० ७८४)
अनंत (सं० २५०)
बलदेव (सं० २६३)
बेनी (सं० २४७, ४८४, ६७१)
बेनीप्रवीन (सं० ६०८)
भगवंत (सं० ३३३)
बोधा (सं० ४४९)
ब्रह्म (सं० १०६)
चंद (सं० ६, ! सं० ९३)
छितिपाल (सं० ३३२)
दास (सं० ३६९)
दयानिधि (! सं० ३६५, ७४३)
देव (सं० ५६९)
देवकीनंदन (सं० ६३०)
गंग (सं० ११९)
घन आनंद (सं० ३४७)
घनश्याम (सं० ९२)
गोकुलनाथ (सं० ५६४)
गोपालचंद्र उर्फ गिरिधर बनारसी (सं० ५८०)
ग्वाल (सं० ५०७)
हनुमान (सं० ७९६)
हरिकेस (सं० २०३)
हरिश्चन्द्र (सं० ५८१)
कविराज (सं० ६६१)
कालिका (सं० ७८०)
किशोर (सं० ३८५)
लाल (सं० ५६१)
महा (सं० ४०३)
महराज (सं० ७९३)
मकरंद (सं० ४५७)
मंडन (सं० १५४)
मणिदेव (सं० ५६६)
मन्नालाल उपनाम द्विज (सुंदरी तिलक नामावली में मुन्नालाल है)। (सं० ५८३)
मान सिंह उपनाम द्विजदेव (सं० ५९१)

१. बनारस—मल्लिक चन्द्र ऐण्ड कम्पनी, १८८४।

मतिराम (सं० १४६)
मुबारक (सं० ९४)
मुरलीधर (सं० १५६)
नवीन (सं० ७९०)
नवनिधि (सं० ७८९)
नजीब खाँ उपनाम रसिया (सं० ७८८)
नरेन्द्र सिंह (सं० ६९०)
नरेश (सं० ७९१)
नाथ (! सं० ६८, १४७, १६८, ४४०, ६३२, ८५०)
नेवाज (सं० १९८)
पदमाकर (सं० ५०६)
पारस (सं० ७९२)
परमेस (! सं० २२२, ६१६)
प्रेम (सं० ३५१)
रघुनाथ जोधपुर के (सं० १९३)
रघुराज (सं० ५३२)
रामनाथ (सं० ७८५)
रसखान (सं० ६७)
ऋषिनाथ (सं० ७९४)
शंभु (! सं० १४७)
सरदार (सं० ५७१)
सेवक (सं० ५७९, ६७७)
सेखर (सं० ७९५)
शिव (सं० ८८)
श्रीधर (सं० १५७)
श्रीपति (सं० १५०)
सुखदेव मिसर (सं० १६०)
सुमेरु सिंह (सं० ७५९)
सुंदर दास (सं० १४२)
ठाकुर (सं० १७३)
तोष (सं० २६५)
तुलसी, श्री ओझा (सं० ७८६)

टि०—सुंदरी तिलक का प्रथम संस्करण सं० १९२५ में हुआ था। तब इसमें केवल ४५ कवि थे। यह सूची तासी द्वारा दी गई है। तासी ने मन्नालाल द्विज को इसका संकलयिता स्वीकार किया है। 'प्रसिद्ध महात्माओं का जीवन चरित्र' अब 'चरितावली' नाम से उपलब्ध है। कविवचनसुधा नाम का इनका कोई ग्रंथ नहीं। कविवचनसुधा पत्रिका है। इसी पत्रिका के किसी अंक में पावस संबंधी कवित्त सवैये छपे थे, जो बाद में अलग पुस्तकाकार भी छपे।

५८२. दीन दयाल गिरि—बनारसी। १८५५ ई० में उपस्थित।

यह संस्कृत के विद्वान थे। इन्होंने उक्त सन् में 'अन्योक्ति कल्पद्रुम' नाम का भाषा साहित्य का ग्रंथ लिखा। यह अनुराग बाग और बाग बहार नामक दो अन्य ग्रंथों के भी रचयिता हैं।

टि०—दीन दयाल गिरि ने 'बाग बहार' नामक कोई ग्रंथ नहीं लिखा।

५८३. मन्नालाल—पंडित मन्नालाल बनारसी, उपनाम द्विज कवि। १८८३ ई० में जीवित।

सुंदरी तिलक। यह संभवतः मान सिंह शाकद्वीपी (सं० ५९९) ही

हैं। कम से कम दोनों का कवि-नाम 'द्विज' है। दूसरी ओर, जो बात हो, यह गोवर्द्धननाथ के सुंदरी तिलक की नामावली में 'मुन्नालाल' कहे गए हैं।

टि०—मन्नालाल बनारसी का उपनाम 'द्विज' है; मान सिंह शाकद्वीपी का नाम 'द्विजदेव' है। दोनों भिन्न भिन्न व्यक्ति हैं।

अध्याय १०, भाग २ का परिशिष्ट

५८४. मनियार सिंह—क्षत्रिय, बनारसी, जन्म १८०४ ई०।

इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं हनुमत् छब्बीसी और भाषा सौंदर्य लहरी।

टि०—मनियार सिंह चेत सिंह के समकालीन हैं। इन्होंने सं० १८४९ (१७९२ ई०) में महिम्न कवित्त की रचना की थी, अतः १८०४ इनक उपस्थिति काल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ६७०

५८५. गजराज उपाध्या—बनारसी। जन्म १८१७ ई०।

इन्होंने बृत्तहार नामक पिंगल ग्रंथ और एक रामायण की रचना की है।

टि०—बृत्तहार की रचना सं० १९०३ में हुई। १८१७ ई० (सं० १८७४) जन्मकाल हो सकता है।

—सर्वेक्षण १९२

५८६. बंस रूप कवि—बनारसी। जन्म १८४४ ई०।

महाराज बनारस के प्रशस्ति गायक।

५८७. माधवानंद भारती—बनारसी। जन्म १८४५ ई०।

शंकर दिग्विजय के अनुवादक।

टि०—इन्होंने सं० १९२६ में कैलाश मार्गं की रचना की। १८४५ ई० (सं० १९०२) उपस्थिति काल है, जन्मकाल नहीं।

—सर्वेक्षण ६८३

५८८. सिवदत्त—ब्राह्मण, बनारसी। जन्म १८५४ ई०।

श्रृंगार संग्रह। संभवतः वह भी, जिनका उल्लेख शिव सिंह ने बिना विवरण दिए 'शिवदत्त कवि' नाम से किया है।

टि०—१८५४ ई० (सं० १९११) इनका जन्मकाल न होकर, उपस्थिति काल है। इन्होंने सं० १९२६ में उत्पकारण्य माहात्म्य और १९२३ में ज्ञान प्राप्ति बारहमासी की रचना की थी।

—सर्वेक्षण ९४६

सरोज (सर्वेक्षण ८४९) के दूसरे शिवदत्त इनसे भिन्न हैं। यह प्रयाग के थे।

भाग ३, औध

५८९. सुवंस सुकल—बिगहपुर, जिले उन्नाव के। जन्म १७७७ ई०।

राग कल्पद्रुम, विद्वन्मोद तरंगिणी। पहले यह, अमेठी जिला फर्रूखाबाद के बंधलगोती राजा उमरावसिंह के दरबारी कवि थे, जहाँ इन्होंने संस्कृत से अमरकोश (? राग कल्पद्रुम। देखिए सं० १७०, ५६७, ७६१), रस तरंगिणी और रसमंजरी का भाषानुवाद किया। तब यह ओयल के राजा सुब्बा सिंह (सं० ५९०) के यहाँ गए और विद्वन्मोद तरंगिणी के संकलन में उनकी सहायता की।

टि०—सुबंश शुक्ल का रचनाकाल सं० १८६१-८४ है। १७७७ ई० (सं० १८३४) इनका जन्मकाल हो सकता है। रसतरंगिणी का रचनाकाल सं० १८६१, अमर कोश का सं० १८६२ और रस मंजरी का स० १८६५ है। अमेठी सुलतानपुर जिले में है, न कि फर्रूखाबाद जिले में। साथ ही उमराव सिंह अमेठी के नहीं थे, यह बिलवाँ जिला सीतापुर के कायस्थ थे।

—सर्वेक्षण ९२६

५९०. सुब्बा सिङ्घ—ओयल, जिला खीरी के राजा सुब्बासिंह चौहान, उपनाम श्रीधर कवि। १८१७ ई० में उपस्थित।

यह भाषा साहित्य के एक महत्वपूर्ण ग्रंथ विद्वन्मोद तरंगिणी (१८१७ ई० में लिखित; इस ग्रन्थ में Bid से संकेतित) के रचयिता हैं। इसमें नायक नायिका भेद, सखा सखी, दूती, ऋतु वर्णन और विभिन्न रस इत्यादि की सभी सामग्रियाँ हैं। किन्तु ग्रन्थ का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि इसमें इनके गुरु सुवंश सुकल और ४४ अन्य कवियों की चुनी रचनाओं का संग्रह है।

टि०—श्रीधर जी ओयल के राजा नहीं थे, ओयल के राजा बख्त सिंह के छोटे पुत्र थे।

—सर्वेक्षण ८६७

५९१. धौंकल सिङ्घ—न्यावाँ, जिला रायबरेली के बैस। जन्म १८०३ ई०।

इन्होंने कई छोटे छोटे ग्रंथ लिखे, जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध रमल प्रश्न है, जिसमें उमा शंभु संवाद रूप में शकुन विचार है।

टि०—१८०३ ई० (सं० १८६०) उपस्थिति काल है। सं० १८६४ में 'रमल प्रश्न' की रचना हुई थी।

—सर्वेक्षण ३८७

५९२. सहजराम—पैंतेपुर जिला सीतापुर के बनिया। जन्म १८०४ ई०।

इन्होंने एक रामायण लिखी है, जो रघुवंश और हनुमन्नाटक का अनुवाद है (? राग कल्पद्रुम)।

टि०—सहजराम की रामायण का नाम 'रघुवंश दीपक' है। इसका रचनाकाल सं० १७८९ है। अतः १८०४ ई० (सं० १८६१) इनका जन्मकाल नहीं। यह पूर्णतया अशुद्ध है। इस समय तक कवि के जीवित रहने की भी संभावना नहीं प्रतीत होती।

—सर्वेक्षण ८८९

५९३. रिखिराम मिसर—पट्टी के। जन्म (? उपस्थिति) १८४४ ई०।

यह अवध के दीवान बालकृष्ण के दरबारी कवि और 'वंशी कल्पलता' नामक ग्रन्थ के रचयिता थे।

टि०—अवध के नबाब आसफुद्दौला के दीवान बालकृष्ण थे। उक्त नबाब का शासनकाल सं० १८३२-५४ है। अतः १८४४ ई० (सं० १९०१) अशुद्ध है। यह न जन्म काल है, न उपस्थिति काल। इस समय तक इनका जीवित रहना भी संभव नहीं प्रतीत होता।

—सर्वेक्षण ७५९

५९४. जीवनाथ—नवल गंज, जिला उन्नाव के भाट। जन्म १८१५ ई०।

यह अवध के दीवान बालकृष्ण के कुटुंब के पुराने कवि थे। इन्होंने 'बसंत पचीसी' नामक एक अच्छा ग्रंथ रचा था।

टि०—बालकृष्ण का समय सं० १८३२-५४ है, अतः १८१५ ई० (सं० १८७२) इस कवि का जन्म काल न होकर उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण २८१

५९५. सिव सिङ्घ—शिव सिंह सेंगर, काँथा जिला उन्नाव के। जन्म १८२१ ई०।

यह 'शिव सिंह सरोज' के रचयिता हैं। मुख्यतया इसी ग्रंथ पर मेरा यह ग्रंथ निर्भर है। इन्होंने वृहच्छिव पुराण का भाषा और उर्दू दोनों में तथा ब्रह्मोत्तर खंड का केवल भाषा में अनुवाद किया था। इनके पास अरबी, फ़ारसी, संस्कृत और भाषा के हस्तलिखित ग्रंथों का विशाल संग्रह है, जिसकी सूची बनाने में इन्हें सुख मिलता है। यह काँथा के तालुकेदार महाराजकुमार ठाकुर रणजीत सिंह सेंगर के पुत्र हैं और स्वयं पुलिस इंसपेक्टर हैं।

टि०—सरोज में इन्होंने अपने को 'सं० १८७८ में उ०' लिखा है। यह १८७८ ईस्वी सन है। इसी वर्ष इनका देहांत भी हो गया था। यह ४५ वर्ष पूर्व १८३३ ई० में पैदा हुए थे। वृहच्छिव पुराण का भाषानुवाद इन्होंने

नहीं किया था। अनुवाद करनेवाले महानंद वाजपेयी थे। शिव सिंह को संपादक कहा जा सकता है।

—सर्वेक्षण ८५४

५९६. मदन गोपाल सुकल—फतूहाबादी। जन्म १८१९ ई०।

यह कई वर्षों तक बलिरामपुर (जिला गोंडा) के राजा अर्जुन सिंह के दरबारी कवि रहे। उनके अनुरोध पर इन्होंने दो ग्रंथ लिखे—अर्जुन विलास और वैद्यक संबंधी एक सरल ग्रंथ 'वैद्यरत्न'। शिव सिंह ने दो और कवियों का उल्लेख किया है (१) मदनगोपाल, चरखारी बुंदेलखंड के, और (२) मदन गोपाल, बिना किसी विवरण के। इन दोनों में से किसी की तिथि उन्होंने नहीं दी है।

टि०—१८१९ ई० कवि का जन्मकाल नहीं है, यह अर्जुन विलास का रचनाकाल है। सरोज (सर्वेक्षण ६७७) के तिथि और स्थान हीन मदनगोपाल यही हैं।

—सर्वेक्षण ६७६

५९७. गंगा परसाद—सामान्यतया गंग कवि के नाम से प्रसिद्ध, सपौली जिला सीतापुर के ब्राह्मण। जन्म १८३३ ई०।

अपनी कविताओं के कारण इन्हें गाँव सपौली माफी में मिला था। इनके पुत्र भी कवि हैं और अब 'तिहरना' में रहते हैं। गंगा प्रसाद ने दूती विलास नाम ग्रंथ लिखा है, इसमें श्लेषपूर्ण छंदों में विभिन्न प्रकार की दूतियों का कथन है।

टि०—१८३३ ई० (सं० १८९०) रचनाकाल है, जन्मकाल नहीं। इनके पुत्र तिहरना में नहीं रहते, बल्कि उन्हीं का नाम तीहर है। यह भ्रष्ट अनुवाद सरोज के निम्नांकित वाक्य का है—"इनके पुत्र तीहर नाम कवि विद्यमान हैं।"

—सर्वेक्षण १४९

५९८. जै कवि—लखनऊ के भाट और कवि। १८४५ ई० में उपस्थित।

इन्हें लखनऊ के नवाब वाजिद अली (१८४७-१८५६) से पेंशन मिलती थी। इन्होंने अनेक कविताएँ उर्दू और भाषा में लिखीं। यह अपनी सामयिक तथा नीति और चेतावनी सम्बन्धी कविताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। मुसलमानों से इनके अनेक धार्मिक विवाद हुए थे।

५९९. मान सिङ्घ—अवध के महाराज शाकद्वीपी, उपनाम द्विजदेव; १८५० ई० में उपस्थित।

सुंदरी तिलक। यह संस्कृत, भाषा, फारसी और अँगरेजी में प्रवीण थे। १८५० ई० के आसपास इन्होंने श्रृङ्गार लतिका नाम का एक काव्य ग्रंथ रचा था और उसकी टीका भी की थी। अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में इन्होंने कविता करना छोड़ दिया था और अँगरेजी कानून का अध्ययन कर रहे थे। यह १८७३ ई० में दिवंगत हुए। अनेक कवियों के अतिरिक्त ठाकुर प्रसाद (सं० ६००), जगन्नाथ (सं० ६०१), बलदेव सिंह (सं० ६०२) इनके दरबारी कवि थे। इनका कवि-नाम द्विजदेव था। यही सम्भवतः मन्ना लाल (सं० ५८३) भी हैं। वह भी अपना उपनाम 'द्विज' रखते हैं। ठाकुर प्रसाद के अनुसार इनके एक पुत्र दरसन सिंह नाम का था।

टि०—मन्ना लाल 'द्विज' बनारसी इनसे भिन्न व्यक्ति हैं।

६००. ठाकुर परसाद पयासी मिसर—उपनाम पंडित प्रवीन, अवध के। १८५० ई० में उपस्थित।

यह पंडित प्रवीन नाम से लिखते थे। यह महाराज मान सिंह (सं० ५९९) के दरबारी कवि थे और पलिया शाहगंज के पास रहते थे।

६०१. जगन्नाथ कवि अवस्थी—सुमेरपुर, जिला उन्नाव के। १८८३ ई० में जीवित।

यह पहले अवध के महाराज मान सिंह (सं० ५९९) के दरबारी कवि थे। तदनन्तर इन्होंने अलवर के महराज शिवदीन सिंह का आश्रय पा लिया। संस्कृत साहित्य की जानकारी के लिए इनका बड़ा नाम था। इन्होंने भाषा में फुटकर रचनाएँ की हैं।

६०२. बलदेव सिंह—क्षत्रिय, औध के। १८५० ई० में उपस्थित।

यह महाराज मानसिंह (सं० ५९९) के दरबारी कवि और राजा माधव सिंह (सं० ६०४) के साहित्य गुरु थे।

६०३. चंडीदत्त कवि—जन्म १८४१ ई०।

यह अवध के महाराज मानसिंह के दरबारी कवि थे।

टि०—१८४१ ई० (सं० १८९८) उपस्थिति काल है।

६०४. माधव सिंह—गोची अमेठी, जिला सुलतानपुर के राजा माधव सिंह, १८८३ ई० में जीवित।

यह एक ऐसे वंश के थे, जो सदैव विद्या का बड़ा संरक्षक था। यह भी वैसे ही हैं। इनके पूर्वजों में हिम्मत सिंह (देखिए सं० १६० और ३३४) गुरुदत्त सिंह (सं० ३३२), उमराव सिंह (देखिए सं० ५८९) आदि का

नाम लिया जा सकता है। यह मनोज लतिका, देवी चरित्र सरोज और त्रिदीप (भरथरी शतक का भाषानुवाद) आदि के रचयिता हैं। यह मानसिंह (सं० ५९९) के पुत्र प्रतीत होते हैं। देखिए सं० ६०२।

टि०—माधव सिंह अमेठी के राजा थे। छितिपाल इनका उपनाम था। अमेठी के पहले 'गोची' लगा हुआ है। यह ग्रियर्सन के प्रमाद का प्रमाण है। वे लिखना चाहते थे 'बन्धल गोत्री'; बन्धल लिखने से या छपने से छूट गया और 'गोत्री' का 'गोची' हो गया। ५८९ संख्यक उमराव सिंह इनके पूर्वज नहीं थे; यह तो बिसवाँ जिला सीतापुर के कायस्थ थे। बलदेव सिंह (सं० ६०२) राजा मानसिंह 'द्विजदेव' अयोध्या नरेश और माधव सिंह, छितिपाल, अमेठी नरेश, इन दोनों के साहित्य गुरु थे। ए दोनों पिता-पुत्र नहीं हैं। यह कल्पना ही उपहासास्पद है, दोनों समकालीन हैं, दो जगहों के राजा हैं और दो विभिन्न वर्णों के हैं।

६०५. क्रिशनदत्त सिङ्घ—भिनगा जिला बहराइच के बिसेन राजपूत राजा।

जन्म १८५२ ई०।

यह राजा न केवल स्वयं कुशल कवि थे, बल्कि अपने राज्य में कवियों के सदैव संरक्षक भी थे। इनके पूर्वजों में प्रसिद्ध कवि जगत सिंह (सं० ३४०) हुए हैं। शिवदीन (सं० ६०६) तथा अन्य अनेक अप्रसिद्ध कवि इन्हीं के दरबार में रहे। इस समय भी इनके परिवार के लोग कवियों के बड़े आश्रय-दाता हैं।

टि०—इनके आश्रित कवि शिवदीन ने इनके और अवध के नवाब के नाजिम महमूदअली खाँ के बीच हुए सं० १९०१ के युद्ध का वर्णन 'कृष्ण-दत्त रासा' नाम ग्रंथ में किया है। अतः १८५२ ई० (सं० १९०९) इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण १०८

६०६. सिवदीन कवि—भिनगा जिला बहराइच के। जन्म १८५८ ई०।

यह भिनगा के राजा कृष्णदत्त सिंह के दरबारी कवि थे और उनके नाम पर एक ग्रंथ 'कृष्णदत्त भूषण' नामक लिखा है।

टि०—१८५८ ई० (सं० १९१५) शिवदीन का उपस्थितिकाल है, जन्मकाल नहीं। यह बिलग्रामी थे। इनका लिखा 'कृष्णदत्त रासा' सं० १९०१ के एक युद्ध का वर्णन करता है।

अध्याय १०, भाग ३ का परिशिष्ट

६०७. चिरंजीव—बैसवाड़ा के ब्राह्मण। जन्म १८१३ ई०।

१ रागकल्पद्रुम। कहा जाता है कि इन्होंने महाभारत का भाषानुवाद किया है।

६०८. बेनी परवीन—वाजपेयी, लखनऊ के। जन्म १८१९ ई०।

सुन्दरी तिलक। अनेक ग्रंथों के रचयिता। इनका सर्वप्रसिद्ध ग्रंथ नायिका भेद पर है।

टि०—बेनी प्रवीण के नायिका भेद के ग्रंथ 'नवरस तरङ्ग' का रचनाकाल सं० १८७४ है। अतः १८१९ ई० (सं० १८७६) इनका उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल।

—सर्वेक्षण ५०९

६०९. अंगन लाल—वंदीजन, उपनाम रसाल कवि, बिलग्राम जिला हरदोई के, जन्म १८२३ ई०।

बरवै अलंकार नामक अलंकार ग्रंथ के रचयिता।

टि०—अंगने लाल ने सं० १८८६ में बारहमासा की रचना की थी। अतः १८२३ ई० (सं० १८८०) इनका जन्मकाल न होकर रचनाकाल है।

—सर्वेक्षण ७४६

६१०. मकरंद राय—पुवायाँ जिला शाहजहाँपुर के भाट। जन्म १८२३ ई०।

चंदन राय (सं० ३७४) के वंशज! हास्यरस नामक एक अच्छे ग्रंथ के रचयिता।

टि०—मकरंद राय चन्दन राय के वंशज नहीं थे, उन्हीं के वंश के थे और उनके समसामयिक थे। इन्होंने हंसाभरण नामक ग्रंथ सं० १८२१ में रचा था। यही 'हास रस' नामक ग्रन्थ भी है। स्पष्ट है १८२३ ई० (सं० १८८०) अशुद्ध है। यह न जन्मकाल है और न उपस्थितिकाल ही। कवि इस समय तक शायद ही जीवित रहा हो। **—सर्वेक्षण ६४४**

६११. भौन कवि—बैंती जिला रायबरेली के भाट और कवि। जन्म १८२४ ई०

प्रसिद्ध श्रृङ्गारी कवि। यह श्रृङ्गार रत्नाकर नामक अलंकार ग्रंथ के रचयिता थे। इनके पुत्र दयाल (सं० ७२०) १८८३ में जीवित थे।

टि०—श्रृङ्गार रत्नाकर अलंकार का ग्रन्थ नहीं है, रस का है। इसका नाम रस रत्नाकर भी है। इसकी प्राचीनतम प्राप्त प्रति सं० १८९१ की लिखी है, अतः १८२४ ई० (सं० १८८१) इनका जन्मकाल नहीं हो सकता, रचनाकाल हो सकता है।

—सर्वेक्षण ६१०

६१२. बादेराय कवि—डलमऊ जिला रायबरेली के भाट और कवि। जन्म १८२५ ई०।

यह लखनऊ के दीवान दयाकृष्ण के दरबार में थे।

टि०—बादे राय कायस्थ थे, न कि भाट। इन्होंने सं० १९१४ में एक रामायण की रचना की थी। १८२५ ई० (सं० १८८२) इनका प्रारम्भिक रचनाकाल हो सकता है।

—सर्वेक्षण ५९६

६१३. संकर कवि त्रिपाठी—बिसवाँ जिला सीतापुर के। जन्म १८३४ ई०।

अपने पुत्र कवि सालिक के साथ मिलकर इन्होंने कवित्त छंदों में एक रामायण लिखी थी। यह संभवतः वही श्रृङ्गारी शंकर हैं, जिनका उल्लेख शिव सिंह ने बिना तिथि दिए हुए किया है।

टि०—संभावना को प्रमाणित करनेवाले कोई सूत्र सुलभ नहीं हैं।

६१४. लोने सिङ्घ—बाछल तितौली जिला खीरी के। जन्म १८३५ ई०।

इन्होंने भागवत पुराण के दशम स्कंध का भाषानुवाद (राग कल्पद्रुम) किया था।

टि०—इनके गाँव का नाम बाछल मितौली है। १८३५ ई० (सं० १८९२) में इन्होंने 'राम स्वर्गारोहण' नाम ग्रन्थ लिखा था। अतः यही संवत् इनका जन्म काल नहीं हो सकता।

—सर्वेक्षण ८११

६१५. सीतल राय—बौंड़ी, जिला बहराइच के भाट। जन्म १८३७ ई०।

यह एकौना जिला बहराइच के राजा गुमान सिंह जनवार के दरबार में थे।

६१६. परमेस—सतावाँ जिला रायबरेली के भाट। जन्म १८३९ ई०।

सुन्दरी तिलक। ! देखिए, सं० २२२।

६१७. बंसीधर बाजपेयी—चिंताखेरा, जिला रायबरेली के। जन्म १८४४ ई०।

खूब लिखने वाले। कई ग्रथों के लेखक। इनक वेदान्त सम्बन्धी दोहे प्रसिद्ध हैं।

६१८. भवानी परसाद पाठक—उपनाम भावन कवि; मौरावाँ, जिला उन्नाव के। जन्म १८४४ ई०।

यह 'काव्य शिरोमणि' या 'काव्य कल्पद्रुम' नामक प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ के रचयिता हैं। इसमें काव्य, अलंकार, नायक-नायिका, दूती, भाव और षटऋतु आदि सभी का वर्णन है।

टि०—इन्होंने सं० १८५१ में 'शक्ति चिंतामणि' नाम ग्रंथ रचा था। यह नायिका भेद और रस का ग्रंथ है। १८४४ ई० (सं० १९०१) तक इनका जीवित रहना संभव नहीं। यह सन अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण ६११

६१९. महानंद बाजपेयी—बैसवाड़ा के। जन्म १८४४ ई०।

राग कल्पद्रुम। यह शिवजी के भक्त थे। इन्होंने वृहच्छिव पुराण का भाषानुवाद किया है।

टि०—१८४४ ई० (सं० १९०१) रचना काल है, जन्मकाल नहीं। सरोजकार के हाथ इनका वृहच्छिव पुराण सं० १९२६ में लगा था। इनकी मृत्यु इसके १० वर्ष पहले सं० १९१६ में ही हो गई थी।

—सर्वेक्षण ६९९

६२०. रसरंग कवि—लखनऊ के। जन्म १८४४ ई०।

श्रृंगारी कवि।

६२१. संभुनाथ मिसर कवि—बैसवाड़ा के। जन्म १८४४ ई०।

यह खजूर गाँव के राजा जदुनाथ सिंह बैस के यहाँ थे। जब यह अभी लड़के ही थे, तभी इन्होंने बैस बंशावली लिखी थी और शिवपुराण के चतुर्थ खंड का भाषानुवाद किया था।

टि०—१८४४ ई० (सं० १९०१) में इन्होंने शिवपुराण चतुर्थ खंड का अनुवाद किया था। अतः यही सन इनका जन्मकाल भी नहीं हो सकता। यह उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ८४१

६२२. अजोध्या परसाद सुकल—गोला गोकरननाथ, जिला खीरी के। जन्म १८४५ ई०।

कोई बहुत बड़े कवि नहीं; लेकिन बहुत लिखने वाले थे। यह जोधी नाम से लिखते थे। यह एक राजा बूड़ के दरबार में बहुत पसंद किए जाते थे।

टि०—राजा का नाम बूड़ नहीं है; राजा बूड़ नामक भू-खंड का राजा था।

६२३. मिहीलाल—डलमऊ, जिला रायबरेली के भाट, उपनाम मलिंद। जन्म १८४५ ई०।

देखिए सं० ५१२। इन्होंने किसी भूपाल सिंह की प्रशंसा की है।

६२४. रामनाथ परधान—औध के। जन्म १८४५ ई०।

राम कलेवा और अन्य ग्रंथों के रचयिता।

टि०—रामनाथ प्रधान वैश्य थे। इनका जन्म सं० १८५७ में हुआ था। अतः १८४५ ई० (सं० १९०२) इनका उपस्थिति काल है। इनकी मृत्यु सं० १९२५ में हुई।

—सर्वेक्षण ७२४

६२५. गिरिधारी—ब्राह्मण, सातनपुर के एक बैसवाड़ा। जन्म १८४७ ई०।

श्रृंगार संग्रह। इनकी कविताएँ या तो कृष्ण लीला संबंधी है अथवा शांत रस की हैं। यह कोई बहुत पढ़े लिखे नहीं थे, पर अच्छा लिखते थे।

टि०—यह बैसवाड़ा के अंतर्गत सातनपुरवा के रहनेवाले थे। १८४७ ई० (सं० १९०४) इनका उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण १५९

६२६. हिमाचलराम कवि—भटौली जिला फैजाबाद के ब्राह्मण। जन्म १८४७ ई०।

सीधी सादी कविता है।

टि०—१८४७ ई० (सं० १९०४) उपस्थिति काल है। इनकी मृत्यु सं० १९१५ में हुई।

—सर्वेक्षण ९९२

६२७. चैन सिङ्घ—उपनाम हरचरन, खत्री, लखनऊ के। जन्म १८५३ ई०।

श्रृङ्गार संग्रह। इन्होंने 'भारत दीपिका' और 'श्रृङ्गार सारावली' लिखी हैं। यही संभवतः वह दूसरे चैन कवि भी हैं, जिनका उल्लेख शिव सिंह ने किया है।

टि०—चैन सिंह चैन से भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण २३३, २३२

भाग ४, विविध

६२८. जैचन्द—जयपुर के। १८०६ ई० में उपस्थित।

स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा नामक, जैन संप्रदाय के सिद्धान्तों का विवेचन करनेवाले, सं० १८६३ वि० (१८०६ ई०) में विरचित, संस्कृत एवं भाषा ग्रन्थ के कर्ता।

६२९. लल्लू जी लाल—गुजराती, आगरावाले। १८०३ ई० में उपस्थित। निम्नलिखित ग्रन्थों के सुप्रसिद्ध रचयिता :—

(१) प्रेम सागर (राग कल्पद्रुम)—यह ऊपर वाले साल में मारक्विस आफ् वेलेजली की सरकार की अधीनता और डाक्टर जान गिलक्रिष्ट के निर्देशन

में लिखा गया। भूमिका में यह लिखते हैं कि यह भागवत पुराण के दशम स्कन्ध का ब्रजभाषा से हिन्दी में अनुवाद है। ब्रज वाला संस्करण चतुरभुज मिसर (१ सं० ४०) का था। प्रेमसागर, लार्ड मिंटो की सरकार में अब्राहम लाकिट के निर्देशन में, १८०९ ई० तक नहीं छपा था। इसके बाद तो यह बहुत छपा है। सबसे अच्छा संस्करण ईस्टविक का (हर्टफोर्ड १८५१ ई०) है; इसके अन्त में एक अच्छी शब्द सूची भी है।

(२) लतायफ़-ए-हिंदी—१०० कहानियों का उर्दू, हिंदी और ब्रजभाषा में संकलन। गार्सां द तासी के अनुसार (भाग १, पृष्ठ ३०६) यह कलकत्ता में 'द न्यू साइक्लोपीडिया हिन्दुस्तानिका, एटसेटरा' नाम से छपा था, और कारमाइकेल स्मिथ ने इसके एक बड़े अंश का पुनर्मुद्रण लंदन में इसके असल नाम से किया था।

(३) राजनीति या वार्तिक राजनीति—हितोपदेश का ब्रजभाषा में अनुवाद। यह ग्रंथ संवत् १८६९ (१८१२ ई०) में लिखा गया और चाणक्य राजनीति के अनुवादों से इसे भिन्न समझना चाहिए। (देखिए सं० ५७४, ८४०, ९१९)।

(४) सभा विलास (राग कल्पद्रुम)—ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवियों की चुनी कविताओं का संकलन।

(५) माधव विलास (१ राग कल्पद्रुम)—देखिए सं० ८९६।

(६) लाल चन्द्रिका—बिहारी लाल की सतसई की अच्छी टीका, जो प्रायः प्रकाशित होती रहती है। फिर भी देखिए, सं० ५६१।

(७) मसादिर-ए-भाषा—गद्य एवं नागरी लिपि में लिखित हिंदी भाषा का व्याकरण। गार्सां द तासी कहता है कि इसकी एक प्रति एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल के पुस्तकालय में है।

(८) सिंहासन बत्तीसी (राग कल्पद्रुम)—सुंदरदास (सं० १४२) कृत इसके ब्रजभाषा पद्यानुवाद के सहारे १८०४ ई० में मिरज़ा क़ाज़िम अली और इनके द्वारा अनूदित।

(९) बैताल पचीसी (राग कल्पद्रुम)—गार्सां द तासी इस ग्रंथ के संबंध में नीचे लिखा विवरण देता है, जिसकी जाँच मैं नहीं कर सका हूँ, क्योंकि बाजारों में अब इसकी जो प्रतियाँ उपलब्ध हैं, उनमें भूमिका नहीं छपती। यह ग्रन्थ भी सूरति मिश्र (सं० ३२६) द्वारा संस्कृत से ब्रजभाषा में अनूदित था। लल्लू ने इसी अनुवाद को पुनः मज़हर अली खाँ विला की सहायता से हिंदुस्तानी में अनूदित किया। अथवा लल्लू ने ही विला की

सहायता की थी। फोर्ट विलियम कालेज के उस समय के हिंदुस्तानी के प्रोफ़ेसर श्री जेम्स मोआट ने तारिणीचरण मित्र को यह ग्रन्थ देखकर व्रजभाषा के उन सब शब्दों को, जो सामान्य हिंदुस्तानी में नहीं व्यवहृत होते थे, छाँट देने का काम सौंपा था।

इसके सिवा मैं इतना और कह सकता हूँ कि इसी ग्रन्थ के इसी नाम से अन्य अनुवाद भी शंभुनाथ (सं० ३६६) और भोलानाथ (सं० ८८६) द्वारा किए गए थे।

(१०) माधोनल या माधवानल की आख्यायिका (देखिए सं० ८७२)— इसके भी संपादन में इन्हें मज़हर अली ख़ाँ विला की सहायता लेनी पड़ी थी (गार्सा द तासी)। यह मोतीराम (सं० २१६) कृत इसी नाम के अनुवाद ग्रन्थ का अनुवाद है। माधवानल और कामकंदला की कथा बहुत पुरानी है। बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तकालय में मूल संस्कृत ग्रन्थ की एक प्रति है, जिसका प्रतिलिपि काल सं० १५८७ या १५३० ई० है। (राजेंद्र लाल मित्र—'नोटिसेज़ आफ़ संस्कृत मैनुस्क्रप्ट्स, भाग २, पृष्ठ १३७)। कहानी यह हैः—

पुष्पावती नगरी (मध्यप्रदेश के बिलहरी का पुराना नाम) में ९१९ संवत् या ८६२ ई० में राजा गोविंद राव शासन करता था। उसके यहाँ एक अत्यंत सुंदर ब्राह्मण नौकर था, जिसका नाम माधवानल था, जो नाचने गाने में विशेष रूप से प्रवीण था, साथ ही अन्य सभी कलाओं और विज्ञान में भी दक्ष था। इसलिए सभी रमणियाँ उसके प्रेम में पड़ जाती थीं। उनके पतियों ने राजा से शिकायत की और माधवानल पुष्पावती से निर्वासित हो गया। वह राजा कामसेन की राजधानी कामवती चला गया। राजा वाद्य और संगीत का प्रेमी था। उसने इस ब्राह्मण को अपने दरबार में स्थान दे दिया। राजा के पास एक बहुत ही खूबसूरत वेश्या कामकंदला नाम की थी। माधवानल इसके प्रेम में पड़ गया। इसके लिए यह कामवती से भी निकाला गया। तब यह उज्जैन गया। वहाँ का राजा विक्रमादित्य याचकों की प्रत्येक प्रार्थना स्वीकार कर लेने के लिए प्रसिद्ध था। इस राजा से माधवानल ने याचना की। राजा ने प्रार्थना पूरी करने का वचन दिया। तब ब्राह्मण ने कामकंदला उसे दिलवा देने की प्रार्थना की। तदनुसार विक्रमादित्य ने कामवती को घेर लिया। कामकन्दला पकड़ी गई और तत्काल माधवानल को दे दी गई। कुछ दिनों के अनन्तर, विक्रम की आज्ञा से, यह सुखी दम्पति, पुष्पावती को लौट आया जहाँ माधवानल ने कामकन्दला के लिए एक महल बनवाया, जिसके खड़हर अब भी दिखाए

जाते हैं। (देखिए रिपोर्ट आफ़ आर्केआलोजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया, भाग ९, पृष्ठ ३७)।

(११) शकुन्तला का उपाख्यान—इसका सम्पादन लल्लूजी और काज़िम अली जवाँ ने संयुक्त रूप में किया। (देखिए, गार्सां द तासी।)

प्रेम सागर के सम्बन्ध में भागवत पुराण के हिन्दी अनुवादों पर निम्नांकित टिप्पणी कुछ काम की हो सकती है। कहा जाता है कि सूरदास (सं० ३७) ने संपूर्ण भागवत का पूर्ण अनुवाद किया था, पर उनका अनुवाद हम तक नहीं पहुँच पाया है। वार्ड के अनुसार (व्यूज़ एटसेटरा, भाग १, पृष्ठ ४८१) प्रियादास ने (देखिए सं० ३१९) बुन्देलखण्डी बोली में एक भागवत की रचना की थी। (देखिए, गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ ४०५)। यह अन्तिम ग्रंथकार [तासी] (भाग १, पृष्ठ १२१) एक भूपति (सं० ३३२) कायस्थ का उल्लेख करता है जो "श्री भागवत नामक हिन्दी छन्दों में रचित ग्रंथ का रचयिता था। इसकी एक प्रति एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल के पुस्तकालय में है और वार्ड ने इससे उद्धरण लिया है। मैं नहीं जानता कि यह वही प्रति है अथवा नहीं, जो ब्रिटिश म्यूज़ियम के हालहेड विभाग में २५२० संख्या पर है। यह अन्तिम नौ-नौ पंक्तियों के छन्दों में रचित फ़ारसी लिपि में लिखित है। बोली समझ में नहीं आती। इण्डिया आफ़िस लाइब्रेरी में भी 'पोथी भागवत' नामक एक छन्दोबद्ध हिन्दी ग्रंथ है, लेकिन ग्रंथ-सूची के अनुसार यह भागवत पुराण के केवल एक अंश का अनुवाद है।" बाँधो के महाराज रघुराज सिंह (सं० ५३२) भागवत पुराण के आनन्दांबुनिधि नामक अनुवाद के अत्यन्त प्रसिद्ध कर्ता हैं। कृपाराम (सं० ७९७) का भी नाम अत्यन्त सरल भाषा और दोहा चौपाई में संपूर्ण भागवत का अनुवाद करने के लिए लिया जा सकता है।

इस पुराण का दशम स्कन्ध कृष्ण जीवन से सम्बन्धित है और बहुत ही प्रिय है, अतः इसके अनुवाद प्रायः होते रहते हैं। प्रेमसागर इसका सबसे अच्छा रूपान्तर है। चतुरभुज मिसर (सं० ४०) और नन्ददास (सं० ४२) के अनुवादों का भी यहाँ उल्लेख किया जा सकता है। नन्ददास का अनुवाद 'दसम स्कन्ध' नाम से प्रख्यात है। कवि मान (सं० ३७२) का 'कृष्ण कल्लोल' भी इसी कोटि का ग्रंथ प्रतीत होता है। एक अन्य अनुवाद लोने सिंह (सं० ६१४) का है। गार्सां द तासी (भाग १, पृष्ठ १२१) कहता है—"पोथी दसम स्कन्ध नाम से एक ग्रंथ फरज़ाद कुली नामक व्यक्ति के पुस्तकालय की ग्रंथ सूची में दर्ज है, जिसकी एक प्रति फोर्ट विलियम कालेज लाइब्रेरी में है।

उसी पुस्तकालय में एक तीसरी प्रति भी है, जिसका नाम है 'श्री भागवत दसम स्कंध' और एक चौथी प्रति, भाषा में, इंडिया आफिस लाइब्रेरी में उसी नाम से है।" इसी ग्रन्थकार के अनुसार (भाग १, पृष्ठ ४०४) प्रेम केशवरदास (सं० ८५९) ने पुराण के बारहवें स्कंध का अनुवाद किया था, जिसकी एक प्रति इंडिया आफिस के पुस्तकालय में है, इस पुराण की एक टीका बलिभद्र (सं० १३५) द्वारा की गई थी।

६३०. देओकी नंदन सुकल—मकरंदपुर, जिला कान्हपुर के। जन्म १८१३ ई०।

सुंदरी तिलक, शृङ्गार संग्रह। यह गुरुदत्त सुकल (सं० ६३१) और शिवनाथ (सं० ६३२) के भाई थे। गुरुदत्त पच्छी विलास के, देवकी नखशिख और दो तीन सौ तक मिलने वाले फुटकर छंदों के रचयिता हैं। शिवनाथ की कोई भी कविता अभी तक पहिचानी नहीं जा सकी है।

टि०—मकरंदपुर कानपुर जिले में नहीं है। यह कन्नौज के निकट है और फर्रुखाबाद जिले में है। गुरुदत्त और देवकीनंदन भाई भाई थे। शिवनाथ इन दोनों के पिता थे। १८१३ ई० (सं० १८७०) इनका जन्म काल नहीं है, उपस्थिति काल है। इनका ज्ञात रचना-काल सं० १८४०–५६ है।

—सर्वेक्षण ३६४

६३१. गुरदत्त सुकल—मकरंदपुर, जिला कान्हपुर के। जन्म १८०७ ई०।

शृङ्गार संग्रह। यह देवकीनंदन (सं० ६३०) और शिवनाथ (सं० ६३२) के भाई थे। तीनों अच्छे कवि थे। इनका प्रमुख ग्रन्थ पच्छी विलास है।

टि०—मकरंदपुर फर्रुखाबाद जिले में है। गुरुदत्त देवकीनंदन के भाई और शिवनाथ के पुत्र थे। १८०७ ई० (सं० १८६४) कवि का उपस्थिति काल है, न कि जन्म काल।

—देखिए यही ग्रंथ सं० ६३० और सर्वेक्षण १८४

६३२. सिवनाथ सुकल—उपनाम संभोग नाथ, मकरंदपुर जिला कान्हपुर के। जन्म १८१३ ई०।

१ सुन्दरी तिलक। यह गुरुदत्त (सं० ६३१) और देवकीनंदन (सं० ६३०) के भाई थे और अच्छे कवि थे। अपनी कविताओं में केवल 'नाथ' छाप रखने के कारण इनकी कविताओं को पहचान कर अलग कर लेना अत्यंत कठिन है।

टि०—शिवनाथ का उपनाम 'नाथ' था, न कि 'संभोग नाथ'। मकरंदपुर फर्रुखाबाद जिले में है। यह गुरुदत्त और देवकीनंदन के पिता थे। १८१३ ई० (सं० १८७०) न तो इनका जन्म काल है और न इस संवत

तक इनके जीवित रहने की ही सम्भावना है। इनका रचना काल सं० १८४० के पूर्व होना चाहिए। अतः ग्रियर्सन का समय पूर्णतः भ्रांत है।

—सर्वेक्षण ८५५

६३३. दिनेस कवि—टिकारी जिला गया के। १८०७ ई० में उपस्थित।

श्रृङ्गार संग्रह। ऊपर वाले साल में इन्होंने प्रख्यात और परम प्रशंसित एक नखशिख 'रस रहस्य' नाम का लिखा। (रामदीन सिंह, खड्गविलास प्रेस, बाँकीपुर द्वारा प्रकाशित)।

टि०—'रस रहस्य' का रचना काल सं० १८८३ है। काव्य कदंब की रचना सं० १८९१ में हुई। १८०७ ई० (सं० १८६४) कवि का जन्म काल प्रतीत होता है।

—सर्वेक्षण ३५५

६३४. बखतावर—हाथरस, जिला अलीगढ़ के। १८१७ ई० में उपस्थित।

एक धार्मिक साधु। हिंदी छन्दों में सूनि सार (शून्य सार) नामक नास्तिक दर्शन सम्बन्धी एक ग्रंथ के रचयिता हैं। इसका सारांश यह है कि मनुष्य और ईश्वर सम्बन्धी सभी धारणाएँ भ्रान्त हैं और संसार में कुछ नहीं है। जिस समय हेस्टिंग्स ने हाथरस के किले को ढहाया, वहाँ के राजा बखतावर के आश्रयदाता दयाराम थे। देखिए, विलसन—'रेलिजस सेक्ट्स आफ़ द हिन्दूज़,' भाग १, पृष्ठ ३६० और गार्सां द तासी भाग १, पृष्ठ १०२.

६३५. दलपतिराय—अहमदाबाद के। जन्म (? उपस्थिति) १८२८ ई०।

एक दूसरे ब्राह्मण वंशीधर श्री माली (सं० ६३६) के साथ इन्होंने भाषाभूषण (सं० ३७७) की अत्यंत सुन्दर टीका की।

६३६. बंसीधर स्त्रीमाली—अहमदाबाद के। जन्म (? उपस्थिति) १८२८ ई०।

एक दूसरे ब्राह्मण दलपतराय (सं० ६३५) के साथ इन्होंने भाषा भूषण (सं० ३७७) की अत्यन्त सुन्दर टीका की।

टि०—दलपतिराय श्री माल महाजन (तेली) थे, बंशीधर मेदपाट ब्राह्मण थे। दोनों ने मिलकर भाषाभूषण की 'अलंकार रत्नाकर' नाम टीका लिखी। यह टीका सं० १७९८ में लिखी गई। अतः १८२८ ई० (सं० १८८५) इन अहमदाबाद वासी कवियों का न तो उपस्थिति काल है, न जन्म काल ही।

—सर्वेक्षण ३३३.

६३७. गुरदीन पाँड़े कवि—जन्म (? उपस्थिति)—१८३४ ई०।

इन्होंने एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ 'वाक् मनोहर पिंगल' (१८०३ ई० में लिखित) की रचना की है। इसमें पिंगल ही नहीं है, अलंकार, षट ऋतु वर्णन, नखशिख आदि सभी हैं।

टि०—जब वाकू मनोहर पिंगल का रचनाकाल १८०३ ई० (सं० १८६०) है, तब १८३४ ई० (सं० १८९१) इनका जन्मकाल कैसे हो सकता है। यह कवि का रचनाकाल है।

—सर्वेक्षण १८१

६३८. क्रिशनानंद व्यासदेव—१८४२ ई० में उपस्थित।

यह अपने राग सागरोद्भव राग कल्पद्रुम (इस ग्रंथ में Rag से संकेतित) के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं, यह लगभग २०० कृष्ण भक्त कवियों की रचनाओं के चयन का संग्रह है। यह सं० १९०० (१८४३ ई०)[1] में पूर्ण हुआ और राजा सर राधाकांतदेव के सुप्रसिद्ध संस्कृत कोश 'शब्द कल्पद्रुम' के स्पर्धा रूप में बना था। कुछ दिनों पहले यह ग्रंथ, जो कि कलकत्ता में छपा था, १००) प्रति पुस्तक बिकता था, पर अब अप्राप्य है।

डाक्टर राजेंद्र लाल मित्र अपनी बाल्यावस्था में इनसे व्यक्तिगत रूप से परिचित हुए थे। वे इस ग्रन्थकार के सम्बन्ध में मुझे निम्नलिखित सूचना देते हैं :—

"ग्रंथ तीन भागों में था। मुझे स्मरण है कि लेखक ने मुझसे कहा था कि मैं ग्रंथ को सात भागों में पूर्ण करूँगा, जैसा कि राजा राधा कांत देव का शब्द कल्पद्रुम सात भागों में है। परंतु मैं नहीं समझता कि उनके पास एतदर्थ पर्याप्त सामग्री थी। वह अपने साथ हस्तलेखों का विशाल गट्ठर लिए हुए चला करते थे, लेकिन उनकी परीक्षा का मुझे कभी अवकाश नहीं मिला। मैं उस समय उनका महत्त्व जानने के लिए बहुत बच्चा था। ग्रंथकार ब्राह्मण था और उसका बहुत बड़ा दावा था कि वह तीन आक्टेवों[2] से गा सकता था, जब कि सामान्यतया मानव स्वर की परिधि केवल ढाई 'आक्टेव' की है। उसका दावा यह भी था कि वह सभी राग रागिनियों को शुद्ध रूप में, बिना एक दूसरे को मिलाए हुए, गा सकता था। लेकिन मैंने कभी भी संगीत का ज्ञान नहीं प्राप्त किया; लड़कपन में इस संबंध में कभी चिंता ही नहीं की; अतः इस व्यक्ति के दावों का कोई प्रमाण मैं नही पा सका। वह सदैव गाया करते थे, पर वे पेशेवर गायक नहीं थे अर्थात वह पारिश्रमिक पर कहीं नहीं गाते थे। वह नगर के

१. प्रथम अध्याय पर तिथि १६ मार्च १८४२ और द्वितीय पर १८४३ दी हुई है।
२. Octave—Note produced by twice or half the vibration rate of given note and eight diatonic degrees above or below it.
—The Concise Oxford Dictionary.
—संपादक

धनी लोगों से प्रायः उपहार पाया करते थे, पर कभी भी गाने के बदले में मजदूरी या पारिश्रमिक नहीं लेते थे।"

जिन कवियों की रचनाएँ इस विशालकाय ग्रंथ में संकलित हैं, उन सबका नाम एकत्र करना स्वयं बड़े परिश्रम का काम है। जो हो, लेखक ने भूमिका में उन सभी कवियों और ग्रंथों (हिंदी, करनाटी, मराठी, तेलगू, गुजराती, बंगाली, उडिया. अँगरेजी, अरबी, पेगुअन, फ़ारसी और संस्कृत) का नाम दे दिया है, जिनसे वह परिचित था। मैंने इस भूमिका से हिंदी कवियों और हिंदी ग्रंथों का नाम ले लिया है। कइयों को तो मैं पहचानने में असमर्थ रहा और कई ग्रंथ जो इस सूची में हैं, मेरे इस ग्रंथ में अन्यत्र कहीं नहीं उल्लिखित हुए हैं।

(अ) हिंदुस्तानी लेखक

चंद संख्या ६
पृथ्वीराज, देखिए सं० ६,७३
रामानद सं० १०
कबीर सं० १३
कमाल सं० १६
विद्यापति सं० १७
मीराबाई सं० २०
राजा करन ? सं० २१
नानक सं० २२
नामदेव सं० २२
चरणदास सं० २३
गदाधर मिसर सं० २५
माधवदास सं० २६
भगवानदास सं० २९
वल्लभाचारज सं० ३४
मध्वाचारज सं० ३४
कृष्णदास सं० ३६
सूरदास सं० ३७
परमानंददास सं० ३८
कुंभनदास सं० ३९
चतुरभुजदास सं० ४०
छीतस्वामी सं० ४१
नंददास सं० ४२
गोविंददास सं० ४३
अग्रदास सं० ४४
केवलराम सं० ४५
कल्यानदास सं० ४८
कान्हरदास सं० ५२
श्री भट्ट सं० ५३
व्यासस्वामी सं० ५४
नीमादित्य सं० ५४
हित हरिवंश सं० ५६
ध्रुवदास सं० ५८
हरिदास सं० ५९
तानसेन सं० ६०
अभयराम सं० ६४
चतुर विहारी सं० ६५
मानिकचंद सं० ७८
ऊधोदास सं० ७६,४९५
दामोदरदास सं० ८४
चंदसखी सं० ९३
नागरीदास (?) सं० ९५

रामदास सं० ११२
नरहरिदास (?) सं० ११३
गो० तुलसीदास सं० १२८
व्रजनिधि ? सं० १३१
धीरज ? सं० १३६
भूषण सं० १४५
मतिराम सं० १४६
गो० पुरुषोत्तम सं० २००
बिहारी सं० २२६
वल्लभदास ? सं० २३९
मलूकदास सं० २४३
मदनमोहन सं० २५३
कुलपति मिसर सं० २८२
गोपालदास सं० २९७
जुगुलदास सं० ३१३
व्रजजीवनदास ? सं० ३१५
श्यामदास सं० ३१६
गिरिधर सं० ३४५
आनंदघन सं० ३४७
मनभावन सं० ३७५
रसिक बिहारी सं० ४०५
रामप्रसाद सं० ४४४
पद्माकर सं० ५०६
गदाधर भट्ट सं० ५१२
विक्रम सं० ५१४
राजा विश्वनाथ सिंह सं० ५२९
गोकुलनाथ सं० ५६४
रामसहाय सं० ५६८
जानकीदास सं० ५७७
मन्नूलाल सं० ५८३, ५९९
सुबंस सं० ५८९
जगन्नाथ ? सं० ६०१, ७६४
चिरजू ? सं० ६०७
महानंद ? सं० ६१९
ज्ञानदास ? सं० ६५१
बृंद्रावन जीवन ? सं० ७२२
लछिराम ? सं० ७२३
लोकनाथ सं० ७५३
जुगराजदास ? सं० ७६५
घोंघे सं० ७६६
बलिरामदास ? ७६८
विष्णुदास सं० ७६९
लच्छनदास ? सं० ७७५
बकसू ? सं० ८६१
गो० व्रजाधीश ? सं० ८७८
हितआनंद ? सं० ९४७
आशुतोष
बैजू बावरे
भरथरी
दयासखी
देव
आलम
गो० गिरिधर
गोपाल नायक
जितऊ
काली मिरजा
कमलाकर (? पद्माकर सं० ५०६)
करतालिया
करुनानिधान
कृष्णजीवन
मोहनदास
नरसी महता
नरसिंह दयाल
नसीराम

नीलमनि
नीलरतन
रघु महाशय
रामगुलाम
रामजस
रँगीला प्रीतम
रँगीली सखी
रसिक गोविंद
रसिक राय
राममोहन
रूप सनातन
सहजो बाई
सामा सखी
सौदा
साँवरी सखी
शिवचंद्र
सोना दासी
श्यामसुंदर
ठंढीदास

ब. हिन्दुस्तानी ग्रंथ[1]

पृथ्वीराज रायसा सं० ६
कबीर का बीजक सं० १३
सिक्खों का ग्रंथ सं० २२
पद्मिनी कथा ? सं० ३१
पद्मावत सं० ३१
सुदामा चरित्र सं० ३३
द्वादश स्कन्ध भागवत पुराण, सं० ३७, ४०,५३२,६१४,६२९,७९७,८५९
सूरसागर सं० ३७
रुक्मिणी मंगल सं० ४२
रास पञ्चाध्यायी ? सं० ४२
भक्तमाल सं० ५१
तानसेन का संगतीसार सं० ६०
तुलसी कृत रामायण सं० १२८
" गीतावली "
" कवित्त रामायण "
" दोहावली "
" राम सतसई "
तुलसी कृत पञ्च रतन सं० १२८
" बरवै रामायण "
" विनय पत्रिका "
" हनुमान बाहुक "
" रामसलाका "
" श्री कृष्णावली "
कवि प्रिया सं० १३४
रसिक प्रिया "
रामचन्द्रिका "
अष्टजाम सं० १४०, मिलाइए ६९४
भाषा पिंगल सं० १४१
सिंहासन पचीसी सं० १४२, ६२९
भाषा अमर कोष सं० १७०, ५६७, ५८९, ७६१
नजीर के शेर सं० १७१
बिहारी सतसई सं० १९६
छत्र प्रकाश सं० २०२
षट ऋतु (अनेक कवियों के) सं० २१०, ४७९, ६४८

१. इस अमूल्य ग्रंथ की भूमिका में निर्दिष्ट संस्कृत ग्रंथों की ओर मैं विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ।

शिव स्वरोदय ! सं० ३०९
सरस रस सं० ३२६
बैताल पचीसी सं० ३२६, ३६६, ६२९, ८८३
कोकसार सं० ३४७
रसार्णव सं० ३५६
प्रबोध चन्द्रोदय (नाटक) सं० ३६९
व्रजविलास सं० ३६९
भाषा भूषण सं० ३७७
शालिहोत्र सं० ३६५, ३७६, ४६९, ६५७, ८५४, ९४९
रागमाला सं० ४००, ९०४
अनेकार्थ नाममाला सं० ४३३
जगत विनोद सं० ५०६
आनन्द रस सं० ५६१, ६६८
व्रज भाषा में महाभारत सं० ५६४
राजनीति सं० ५७४,६२९,८४०,९१९
मन्नूलाल के शेर सं० ५८३, ५९९
हनुमन्नाटक ! सं० ५९२
प्रेमसागर सं० ६२९
सभा विलास ”
हितोपदेश ”
माधो विलास ”
रागसागरोद्भव रागकल्पद्रुम सं० ६३८
लीलावती (अनुवाद) सं० ९१२
आभाम रामायण (!)
अवतार चरित्र
अवध विलास
वैद्य मनोत्सव
भगवद्गीता (अनुवाद)
बेदरदी कथा
भाषा वैदक

भाषा छन्द
” इन्द्रजाल
” कामदा
” कोष
” साबर
भूगोल वृत्तान्त
विद्याभ्यास का फल
विष परीक्षा
व्रज जात्रा
वृन्दावन सत
चार दरवेश
डाक्टरी (अर्थात् औषध की कला)
दया विलास
ध्यान मञ्जरी
गणितांक
गर्भावली रामायण
सौदा की गजलें
गोपीचन्द गान
गोरख मछेन्द्र संमाज
ज्ञान उपदेश
नरसी कृत हारमाला
हातिमताई
हीर राँझा
काशी खंड
कौतुक रत्नावली
कृष्ण गीतावली
लूना चमारी का मंत्र
मान मंजरी
मनोरंजन इतिहास
नैन सुख
नीति कथा
फरमाकोपिया (!)

राजा भरथरी गान	संगीत पचीसी
राम विनोद	सर्पादि जंतुन की पोथी
राम चरण चिह्न	सिसु बोध
रसराज	श्लोकावली रामायण (? तुलसीदास कृत)
रोगान्तक सार	स्नेह सागर
सामुद्रिक (अनुवाद)	स्त्री शिक्षा विधायक
संगीत दर्पण (अनुवाद)	सुगा बहत्तरी
संगीत रत्नाकर (अनुवाद)	उपदेश कथा

टि०—कृष्णानंद व्यासदेव के ग्रंथ का नाम 'राग कल्पद्रुम' है। इसके तीन ही नहीं, चार भाग छपे थे। इसका तीसरा भाग बँगला में छपा था और इसमें अधिकांश बँगला कविताएँ एवं गीत हैं। इनको रागसागर की उपाधि मिली थी। अतः इनके ग्रंथ को रागसागरोद्भव राग कल्पद्रुम भी कहते हैं। राग कल्पद्रुम शब्द कल्पद्रुम की स्पर्धा में नहीं लिखा गया। यह धारणा भ्रामक है। राजा की ओर सहज ही आकर्षण है। इसे दीन ब्राह्मण की सहज उपेक्षा ही कहा जायगा। राग सागर ने अपना संग्रह कार्य १५ वर्ष की ही वय में १८१० ई० के आसपास प्रारम्भ किया और १८४२ ई० से उसका खंडशः प्रकाशन प्रारम्भ किया, जो १८४९ ई० में पूर्ण हुआ। राजा राधाकांत ने १२ वर्ष बाद १८२२ ई० में अपना कार्य प्रारम्भ किया और १८५८ ई० में उसे पूरा किया। अतः राग सागर के संग्रह कार्य की प्रेरणा मौलिक है। हो सकता है, इसके सात भागों में विभाजन की प्रेरणा इन्हें शब्द कल्पद्रुम से मिली रही हो।

—शिबली नेशनल कालेज आजमगढ़, मेगजीन, १९५७ ई०

६३९. राम परसाद—मीरापुर के अगरवाला। जन्म (? उपस्थिति) १८४४ ई०।

राग कल्पद्रुम। तुलसीराम (सं० ६४०) के पिता और शांतरस की कुछ कविताओं के रचयिता। (देखिए सं० ४४४)। गार्सां द तासी (भाग १, पृष्ठ ४२०) इस नाम के एक व्यक्ति का उल्लेख करता है, जिसने अहमदाबाद में 'धर्म तत्त्व सार' नामक वैष्णव ग्रंथ लिखा था।

टि०—१८४४ ई० (सं० १९०१) राम प्रसाद जी का उपस्थिति काल है, न कि जन्म काल, क्योंकि इसके १० ही बर्ष बाद इनके पुत्र तुलसी राम ने सं० १९११ में भक्तमाल का उर्दू अनुवाद किया था।

—सर्वेक्षण ७९९

६४०. **तुलसी राम**—मीरापुर के अगरवाला। १८५४ ई० में उपस्थित।

उक्त वर्ष में इन्होंने नाभादास (सं० ५१) के भक्तमाल का उर्दू में अनुवाद किया। यह सं० ६३९ के पुत्र थे।

६४१. **भानुनाथ झा**—१८५० ई० में उपस्थित।

यह दरभङ्गा के महाराज महेश्वर सिंह के दरबार में थे। यह मैथिली में लिखते थे। देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ५३, पृष्ठ ८६। इनका श्रेष्ठतम ग्रंथ प्रभावती हरण नाटक है, जो संस्कृत, प्राकृत और मैथिली में है।

६४२. **हरखनाथ झा**—दरभंगा के सोती ब्राह्मण। जन्म १८४७ ई०।

प्रथम कोटि के मैथिल कवि। महाराज दरभंगा के दरबार के बड़े पण्डित। यह अनेक मैथिली गीतों और एकाधिक नाटकों के रचयिता हैं, जो संस्कृत, प्राकृत और मैथिली में हैं। नाटकों में सबसे प्रसिद्ध 'उषा हरण' है। देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ५३, पृ० ९३।

यह कई संस्कृत ग्रंथों के भी रचयिता हैं। यह मोदनाथ झा और गोपाल ठाकुर के शिष्य थे। बाद में बनारस कालेज में अध्ययन किया था। यह दरभंगा जिले के उजैन नामक स्थान पर पैदा हुए थे।

६४३. **सिव परकास सिङ्घ**—डुमराँव। जिला शाहाबाद के बाबू; जन्म १८४४ ई०।

तुलसी कृत विनयपत्रिका की 'राम तत्व बोधिनी' नाम टीका के रचयिता।

६४४. **कामता परसाद**—असोथर, लखपुरा जिला फतहपुर के। जन्म १८५४ ई०।

रस चन्द्रोदय। यह असोथर के भगवन्त राय खींची (सं० ३३३) के वंश के थे। यह भाषा साहित्य के पण्डित कहे जाते हैं। यह संस्कृत, प्राकृत, भाषा और फारसी में लिखते थे। शिव सिंह ने अपने सरोज में (पृष्ठ ५७) इनकी प्रतिभा का एक उदाहरण दिया है—यह चार चरणों का एक छन्द है, जिसका प्रथम चरण संस्कृत में, द्वितीय प्राकृत में, तृतीय भाषा में और चतुर्थ फ़ारसी में है। शिव सिंह ने इसी नाम के एक कवि के एक अच्छे नखशिख का उल्लेख किया है। संभवतः वह कवि भी यही हैं।

टि०—सरोज सर्वेक्षण के १३३ संख्यक लखपुरा वाले कामता प्रसाद ब्राह्मण थे और असोथर वाले ९७ संख्यक उन कामता प्रसाद से भिन्न थे जो खींची क्षत्रिय थे और भगवन्त राय के वंशज थे। ब्राह्मण क्षत्रिय की अभिन्नता संभव नहीं। १८५४ ई० (सं० १९११) उपस्थितिकाल है।

अध्याय १०, भाग ४ का परिशिष्ट

६४५. भूप नारायन—काकूपुर, बिला कानपुर के भाँट। जन्म १८०१ ई०।
इन्होंने शिवराजपुर के चन्देल क्षत्रिय राजाओं की पद्यवद्ध वंशावली लिखी है।

टि०—यह कवि दुहरा उठा है। देखिए यही ग्रंथ, संख्या ४४४

६४६. दुरगा कवि—जन्म १८०३ ई०।

टि०—१८०३ ई० (सं० १८६०) रचनाकाल है। इन्होंने सं० १८५३ के युद्ध का वर्णन किया है।

—सर्वेक्षण ३५८

६४७. चूड़ामनि कवि—जन्म १८०४ ई०

इस कवि ने अपने काव्य में गुमान सिंह और अजित सिंह नामक दो आश्रयदाताओं की प्रशस्ति की है।

६४८. आजम कवि—जन्म १८०९ ई०।

यह मुसलमान कवि स्वयं अच्छी रचना करते थे और अन्य अच्छे कवियों के मित्र थे। इनके प्रसिद्ध ग्रंथ नखशिख और षट् ऋतु (रागकल्पद्रुम) हैं।

टि०—आजम मुहम्मद शाह रँगीले के दरबारी थे। इन्होंने सं० १७८६ में श्रृङ्गार दर्पण की रचना की थी। अतः १८०९ ई० (सं० १८६६) इनका जन्मकाल नहीं। यह उपस्थिति काल भी नहीं है और अशुद्ध है।

—सर्वेक्षण १३

६४९. मेधा कवि—१८१० ई० में उपस्थित।

उक्त वर्ष में लिखित चित्रभूषण नामक ग्रंथ के रचयिता।

६५०. कमलेस कवि—जन्म १८१३ ई०।

इन्होंने नायिका भेद का एक अच्छा ग्रंथ लिखा है।

६५१. ग्यानचंद्र जती—राजपूताना वाले। जन्म १८१३ ई०।

१ राग कल्पद्रुम। यह कर्नल टाड के गुरु थे।

टि०—१८१३ ई० (सं० १८७०) इनका उपस्थिति काल है, क्योंकि इसके १० ही वर्ष बाद टाड ने राजस्थान का इतिहास लिखा।

—सर्वेक्षण २०७

६५२. संपति कवि—जन्म १८१३ ई०।

६५३. भोज कवि—(१)। जन्म १८१५ ई०।

६५४. रिखि जू कवि—जन्म १८१५ ई०।

श्रृङ्गारी कवि।

६५५. अंबुज कवि—जन्म १८१८ ई० ।

इनकी नीति संबंधी रचनाएँ और नखशिख सरस कहे जाते हैं ।

टि०—अंबुज महाकवि पद्माकर (सं० १८१०-९० वि०) के पुत्र थे । १८१८ ई० (सं० १८७५) इनका रचनाकाल ही है, जन्मकाल नहीं ।

—सर्वेक्षण १२

६५६. कविराय कवि—जन्म १८१८ ई० ।

इन्होंने नीति संबंधी कुछ अच्छे छंद रचे हैं ।

टि०—यह जाजमऊ वाले संतन कवि (सर्वेक्षण ८७१) हैं । इनका उपस्थिति काल सं० १७६० है ।

६५७. गुलाल कवि—जन्म १८१८ ई० ।

श्रृंगार संग्रह । इनका प्रमुख ग्रंथ शालिहोत्र (राग कल्पद्रुम) है । यह अश्व विज्ञान संबंधी रचना है ।

६५८. दीनानाथ अध्वर्य—माहोर जिला फतहपुर के । जन्म १८१९ ई० ।

इन्होंने ब्रह्मोत्तर खंड का भाषा तिलक किया है ।

टि०—अध्वर्य नहीं, अध्वर्यु ।

—सर्वेक्षण ३७७

६५९. बेनी परगट—नरवल के ब्राह्मण । जन्म १८२३ ई० ।

टि०—१८२३ ई० (सं० १८८०) उपस्थिति काल है ।

—सर्वेक्षण ५१०

६६०. अज्ञात—उनियारा के राजा । १८२३ ई० में उपस्थित ।

शिव सिंह के अनुसार यह भाषा भूषण (सं० ३७७) और बलिभद्र (सं० १३५) के नखशिख के बहुत अच्छे तिलक रचनेवाले थे । सरोजकार की प्रति से नाम खो गया है । उनियारा जैपुर का एक भाग है ।

टि०—उनियारा के राजा महा सिंह के यहाँ मनिराम नाम कवि थे, जिन्होंने सं० १८४२ में बलभद्र के नखशिख की टीका की थी । स्वयं राजा टीकाकार नहीं थे ।

—सर्वेक्षण ६२

६६१. कविराज कवि—कविराज भाँट और कवि । जन्म १८२४ ई० ।

सुन्दरी तिलक । साधारण कवि । कम्पिला के सुखदेव मिसर (सं० १६०) भी कभी-कभी कविराज छाप रखते थे । उनसे इस कवि को गड़बड़ न करना चाहिए ।

टि०—सुन्दरी तिलक में सुखदेव मिश्र उपनाम कविराज की ही रचनाएँ हैं।

६६२. मोग जी कवि—राजपूताना के। १८२९ ई० में उपस्थित।

खींची वंश के चौहान राजाओं के एक इतिहास और वंशावली के रचयिता। देखिए टाड का राजस्थान, भाग १, पृष्ठ ८१ और भाग २, पृष्ठ ४५४; कलकत्ता संस्करण भाग १, पृष्ठ ८७ और भाग २ पृष्ठ ४९९।

टि०—कवि का नाम मोग जी नहीं है, मूक जी है।

६६३. गुरदत्त कवि—प्राचीन। जन्म १८३० ई०।

यह जयसिंह के पुत्र शिव सिंह के दरबार में थे। मैं नहीं जानता कि ये राजा लोग कौन-कौन हैं।

टि०—सरोज में उद्धृत छन्द के अनुसार गुरुदत्त शिव सिंह के आश्रित थे, जो कि राव सिंह जी के नन्द या पुत्र थे।

यह गुरुदत्त मकरन्दपुर वाले गुरुदत्त शुक्ल से अभिन्न प्रतीत होते हैं।

—सर्वेक्षण १८३

६६४. हठी कवि—व्रजवासी। जन्म १८३० ई०।

राधा शतक नामक ग्रंथ के रचयिता।

पुनश्च :—

शिव सिंह द्वारा दी गई इनकी जन्म तिथि (१८३० ई०) निश्चय ही अशुद्ध है, क्योंकि राधा शतक की तिथि सं० १८४७ (१७९० ई०) दी गई है।

६६५. टेर कवि—जिला मैनपुरी के। जन्म १८३१ ई०।

६६६. क्रिसन कवि—जन्म १८३१ ई०।

इन्होंने नीति सम्बन्धी कुछ फुटकर छन्द रचे हैं।

६६७. आछेलाल भाट—कन्नौज के। जन्म १८३२ ई०।

६६८. दयानाथ दूबे—१८३२ ई० में उपस्थित।

इस वर्ष इन्होंने नायिका भेद का एक ग्रंथ 'आनन्द रस' (रागकल्पद्रुम) नाम का लिखना प्रारम्भ किया था।

६६९. रामदीन—अलीगंज, जिला एटा के बन्दीजन। जन्म १८३३ ई०।

६७०. माखन लखेरा—जन्म १८३४ ई०।

कोई विवरण नहीं। संभवतः वही 'माखन कवि' जिनका उल्लेख शिव सिंह ने किया है, और जिनको १८१३ ई० में उत्पन्न कहा है।

टि०—कवि का नाम माखन है; लखेरा स्थान सूचक है, कवि नाम का अंग नहीं है। दोनों माखन भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ६३८

६७१. **बेनीदास कवि**—मेवाड़ के बंदीजन। जन्म १८३५ ई०।

१ सुंदरी तिलक। यह मेवाड़ के इतिहास लेखकों में थे।

टि०—सरोज के अनुसार यह "सं० १८९० (१८३३ ई०) में 'मारवाड़' देश के प्रबन्ध लेखक अर्थात् तारीख नवीसों में नौकर थे"। अतः १८३५ ई० (सं० १८९२) इनका जन्म काल कदापि नहीं हो सकता। यह कवि का उपस्थिति काल है।

—सर्वेक्षण ५९५

६७२. **छेदीराम कवि**—१८३७ ई० में उपस्थित।

उक्त वर्ष में 'कवि नेह' नाम से विरचित एक पिंगल ग्रंथ के रचयिता।

६७३. **अनुनैन कवि**—जन्म १८३९ ई०।

इनके द्वारा रचित नखशिख अच्छा कहा गया है।

६७४. **औध कवि**—जन्म १८३९ ई०।

शिव सिंह ने इस कवि की कविता का एक नमूना उद्धृत किया है, पर इसके विषय में कुछ जानते नहीं। उन्हें इनके अजोध्या प्रसाद वाजपेयी (सं० ९३) होने का संदेह है।

टि०—सरोजकार का संदेह ठीक है।

—सर्वेक्षण ८, ४

६७५. **नरोत्तम**—दोआब के। जन्म १८३९ ई०।

६७६. **मनीराम मिसर**—साढ़ि, जिला कान्हपुर के। जन्म १८३९ ई०।

कोई विवरण नहीं। यह सम्भवतः वही हैं, जिनका उल्लेख बिना किसी तिथि के शिव सिंह ने श्रृङ्गारी कवि के रूप में किया है।

टि०—सरोज के मनीराम मिश्र (सं० ७०१) के अज्ञात तिथि मनीराम (सर्वेक्षण ६७४) से अभिन्न होने के कोई प्रमाण सुलभ नहीं।

६७७. **सेवक कवि**—१८४० ई० में उपस्थित।

१ सुन्दरी तिलक। यह राजा रतनसिंह के यहाँ चरखारी दरबार में थे। सम्भवतः यही सं० ५७९ वाले सेवक भी हैं।

टि०—ग्रियर्सन के ५७९, ६७७ संख्यक दोनों सेवक अभिन्न हैं।

६७८. **फालकाराव**—ग्वालियर के। जन्म १८४४ ई०।

यह लछिमन राव के मंत्री थे और इन्होंने कवि प्रिया (सं० १३४) का एक अच्छा तिलक किया था।

६७९. **मीतूदास गौतम**—हरधौरपुर, जिला फतहपुर के। जन्म १८४४ ई०।

वेदान्त सम्बन्धी कई ग्रन्थों के रचयिता।

६८०. रघुनाथ उपाध्या—जौनपुर के। जन्म १८४४ ई०।

निर्णय मंजरी नामक ग्रन्थ के रचयिता।

टि०—सरोज में 'सं० १९२१ में उ०' कहा गया है।

—सर्वेक्षण ७४३

६८१. सुखदीन कवि—जन्म १८४४ ई०।

श्रृङ्गारी कवि।

६८२. सूखन कवि—जन्म १८४४ ई०।

श्रृङ्गारी कवि।

६८३. भवानीदास कवि—जन्म १८४५ ई०।

कोई विवरण नहीं। जयकृष्ण (सं० ८३०) भवानीदास के पुत्र थे, लेकिन सन्देह है कि यह भवानीदास वही हैं अथवा कोई दूसरे।

टि०—जयकृष्ण का रचनाकाल सं० १७७६–१८२५ वि० है, अतः इनके पिता भवानीदास १८४५ ई० (सं० १९०२) में कदापि नहीं उत्पन्न हो सकते। यह भवानीदास जयकृष्ण के पिता से भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण २७४

१८४५ ई० कवि का उपस्थितिकाल है।

—सर्वेक्षण ६१६

६८४. बलदेवदास कवि—हाथरस के जौहरी। जन्म १८४६ ई०।

इन्होंने कृष्ण खण्ड का पंक्ति प्रति पंक्ति भाषानुवाद किया है।

टि०—१८४८ ई० (सं० १९०३) इनका जन्मकाल नहीं है। इसी वर्ष इन्होंने विचित्र रामायण की रचना की थी।

—सर्वेक्षण ५०४

६८५. अवध बकस—जन्म १८४७ ई०।

इनकी कविताएँ सरस हैं। शिव सिंह को इनके गाँव या प्रान्त का नाम नहीं मालूम।

टि०—सरोज में इनके नाम से उद्धृत छन्द से इनका यह नाम संदिग्ध सिद्ध होता है। कुछ पता नहीं यह राजा का नाम है अथवा कवि का।

६८६. सहजराम सनाढ्य—बंधुआ के। जन्म १८४८ ई०।

प्रहलाद चरित्र के रचयिता।

टि०—सहजराम सरोजकार की मिथ्या-सृष्टि हैं। यह सहजराम बनिया (५९२) से अभिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ८८९, ८९०

६८७. अनीस कवि—जन्म १८५४ ई० ।

दिग्विजय भूषण ।

टि०—अनीस की रचना सं० १७९८ में रचित दलपति राय वंशीधर के अलंकार रत्नाकर में है । अतः १८५४ ई० पूर्णरूपेण भ्रष्ट है । यह न तो जन्मकाल है, न उपस्थितिकाल ।

—सर्वेक्षण २७

६८८. भूमिदेव कवि—जन्म १८५४ ई० ।

टि०—१८५४ ई० (सं० १९११) उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल ।

—सर्वेक्षण ६१५

६८९. भूसुर कवि—जन्म १८५४ ई० ।

टि०—१८५४ ई० (सं० १९११) उपस्थितिकाल है, न कि जन्मकाल ।

—सर्वेक्षण ६१९

६९०. जै नरिन्द सिङ्घ—उपनाम नरेन्द्र सिंह, पटियाला के महाराज, १८५७ ई० में उपस्थित, मृत्यु १८६२ ई० ।

सुन्दरी तिलक ।

टि०—कवि का नाम नरेन्द्र सिंह, उपनाम नरिन्द है । ग्रियर्सन ने न जाने कहाँ से 'जै' जोड़ दिया है ।

—सर्वेक्षण ४२२

अध्याय ११

महारानी विक्टोरिया के शासन में हिंदुस्तान

[१८५७-१८८७]

यह अध्याय इस ग्रंथ के वास्तविक ऐतिहासिक अंश का उपसंहार प्रस्तुत करता है। यह पूर्णतया 'महारानी का भारत' युग का वर्णन करता है, जो आंतरिक अशांतियों से मुक्त है, ज्ञान प्रसार और ज्ञान प्राप्ति के लिए जिसमें हर प्रकार का प्रोत्साहन दिया गया है। इसका एक परिणाम यह हुआ है कि मुद्रण कला का पूर्ण और विस्तृत प्रसार हुआ है। लखनऊ, बनारस और पटना में बड़े-बड़े मुद्रणालय स्थापित हो गए हैं, जहाँ से पुरानी और नई, अच्छी और बुरी, सभी प्रकार की छपी पुस्तकों की बाढ़ सी आ गई है। साथ ही साथ हिंदुस्तान के प्रायः प्रत्येक भाग में छोटे-छोटे छापाखाने कुकुरमुत्तों की भाँति बढ़ गए हैं, और आज शायद ही कोई महत्व का कसबा होगा, जहाँ एक या दो प्रेस न हों। कुछ भी रुपये खर्च कर हर एक लिक्खाड़ अब अपनी कृतियों को लीथो या टाइप में छपा सकता है, और अनेक बार वह अपनी शक्ति और अवसर का उपयोग कर भी लेता है।

जिस युग की समीक्षा हम कर रहे हैं, भाषा प्रेसों का प्रादुर्भाव उसकी प्रमुख विशेषता है। सैकड़ों पृष्ठ क्षणिक अस्तित्व में आए और शीघ्र ही अपनी स्वाभाविक मृत्यु पा गए। उनमें से कुछ ही बच बचाकर विनाश के सामान्य नियम के अपवाद रूप में हम तक पहुँच पाए हैं। यहाँ भारतीय देशी भाषा के समाचार पत्रों के स्वर की ओर संकेत करने का उपयुक्त स्थान नहीं है। मैं यहाँ इसकी ओर ध्यान भर आकर्षित कर दे रहा हूँ और जान बूझकर इस चर्चा को बचा रहा हूँ। यहाँ इतना अवश्य कह देना चाहता हूँ कि बँगला पत्रकारिता को कलंकित करने वाले राजद्रोही और कटुभाषी समसामयिकों की तुलना में, हिंदी समाचार-पत्र नियमतः और सामान्यतः कहीं अधिक अच्छे हैं।

इतने बृहत साहित्य को पूर्णतया और पूर्ण रूप में वर्णित करना मेरे लिए अत्यन्त कठिन है। मैंने कुछ ऐसे नाम चुन लिए हैं, जो मुझे चुनने के योग्य समझ पड़े, और इस चयन को भी मैं बहुत संतोषजनक नहीं समझता। इस

समय हिंदुस्तान में कोई भी स्वतंत्र समीक्षा-पत्र नहीं है, जिसका पथ-प्रदर्शन मैं स्वीकार करता; और मैं आवश्यकता-वश अपने सीमित-अध्ययन पर ही निर्भर रहने के लिए विवश और बाध्य हो गया हूँ। हाँ, शिव सिंह सरोज में आए हुए नामों से मुझे अवश्य सहायता मिली है। पूर्व युगों के लिए तो ओसानेवाली समय की डलिया मेरी सहायिका थी, जिसने भूसा उड़ा दिया था और हमारी परख के लिए अन्न एकत्र कर दिया था; किंतु इस समय तो न केवल भूसे का अनुपात अन्न से अत्यधिक है, बल्कि दोनों अभी तक एक ही में मिले जुले पड़े हुए हैं, अलग भी नहीं हुए हैं।

ऐसी परिस्थिति में, मैं नीचे दी हुई सूची प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसमें शिव सिंह सरोज में आए हुए सभी नाम हैं, साथ ही उन लोगों के भी नाम हैं, जो मेरे अध्ययन काल में मुझसे मिले और संग्रह योग्य प्रतीत हुए। मुझे यह निःसंकोच कह देना चाहिए कि इस युग के बहुत से लेखक और पिछले युग के भी (जिनमें से सौभाग्य से अभी कुछ जीवित हैं), [भविष्य में] एक ही अध्याय में उल्लिखित होंगे। इनमें से कुछ जैसे हरिश्चंद्र, विद्रोह बाद के युग के हैं; परंतु विशिष्ट वर्ग के लेखकों पर सरलता से एक साथ पूर्ण विचार कर लेने की दृष्टि से जान बूझकर पिछले युग में सम्मिलित कर लिए गए हैं।

६९१. **उमापति त्रिपाठी**—पंडित उमापति त्रिपाठी, अयोध्या जिला फैजाबाद के रहनेवाले। मृत्यु १८७४ ई०।

संस्कृत साहित्य के प्रत्येक अंग का इन्होंने गंभीर अध्ययन किया था। पहले यह बनारस में रहते थे, लेकिन अंत में यह अयोध्या (औध) में बस गए थे, जहाँ यह अध्यापन और लेखन के कार्य में व्यस्त रहे। यह १८७४ ई० में दिवगंत हुए। इनके सर्वाधिक प्रसिद्ध ग्रंथ संस्कृत में हैं, किंतु इन्होंने कुछ छोटी पुस्तकें जैसे दोहावली, रत्नावली आदि भाषा में भी लिखी हैं। यह 'कोविद' उपनाम से लिखते थे।

६९२. **रघुनाथ दास**—अयोध्या, जिला फैजाबाद के महंत रघुनाथ दास। १८८३ ई० में जीवित थे।

मूलतः यह पैंतेपुर जिला फतेहपुर के ब्राह्मण थे, लेकिन सांसारिक धन दौलत छोड़ यह राम के भक्त हो गए और उनकी प्रशंसा में सैकड़ों भजन बना डाले। देखिए ६९३।

टि०—पैंतेपुर जिला सीतापुर में है, न कि फतहपुर में। —सर्वेक्षण ७४२

६९३ अजोध्या प्रसाद बाजपेयी,—सातनपुरवा, जिला रायबरेली वाले। १८८३ ई० में जीवित।

संस्कृत और भाषा दोनों के महान विद्वान के रूप में यह कवि परम प्रसिद्ध है। इनकी कविताएँ सरल और असाधारण सौंदर्य से संयुक्त हैं। इनके ग्रंथों में से निम्नांकित का उल्लेख किया जा सकता हैं—

(१) छन्दानन्द।
(२) साहित्य सुधा सागर।
(३) राम कवित्तावली।

शिव सिंह का कहना है कि यह सामान्यतया महन्त रघुनाथदास (संख्या ६९२) अथवा चन्दापुर में राजा जगमोहन सिंह (मिलाइए संख्या ७०९) के साथ रहते हैं। यह 'औध' नाम से लिखते हैं (मिलाइए सं० ६७४)।

६९४. गोकुल परसाद—लाला गोकुल परसाद, बलिरामपुर, जिला गोंडा के कायस्थ। १८८३ ई० में जीवित।

इन्होंने १८६८ ई० में, स्वर्गीय राजा दिगबिजै सिंह (सिंहासनारोहणकाल १८३६ ई०) के सम्मान में दिगबिजै भूषन (मूल ग्रंथ में Dig संकेत से उल्लिखित) नामक काव्यसंग्रह, जिसमें १९२ कवियों की रचनाओं के चयन हैं, संकलित किया। यह अष्टजाम (रागकल्पद्रुम), चित्र कलाधर, दूती दर्पण और अन्य ग्रंथों के भी रचयिता हैं। यह 'व्रज' नाम से लिखते थे।

टि०—बलिरामपुर नहीं, बलरामपुर। रागकल्पद्रुम में किसी दूसरे अष्टयाम का उल्लेख है, व्रज के अष्टयाम का नहीं; क्योंकि यह सं० १९०० के बाद की रचना है और रागकल्पद्रुम सं० १९०० में प्रकाशित हो गया था।

६९५ जानकी परसाद—जोहा बनकटी, जिला रायबरेली के भाँट। १८८३ ई० में जीवित।

यह ठाकुर प्रसाद (संख्या ? ५७०) के पुत्र हैं और फारसी तथा संस्कृत दोनों के अच्छे जानकार हैं। उर्दू में इन्होंने एक इतिहास 'यादनाम' नामक लिखा है। भाषा में यह (१) रघुवीर ध्यानावली, (२) राम नवरत्न, (३) भगवती विनय, (४) राम निवास रामायण, (५) रामानन्द विहार, (६) नीति विलास ग्रंथों के रचयिता हैं। यह कवि चित्रात्मकता और शान्त रस में बढ़ा-चढ़ा है। या तो यह अथवा दूसरे जानकी प्रसाद (सं० ५७७) इसी नाम के वह तीसरे कवि हैं जिनका उल्लेख शिव सिंह ने बिना तिथि दिए हुए किया है और जिसने सिंहराज से एक दुसाला माँगने के लिए एक चातुर्य पूर्ण छन्द,

(acrostic) लिखा था, जिसके प्रथम तीन चरणों के प्रथमाक्षर के योग से 'दुसाला' शब्द बनता है।

टि०—यह भाँट नहीं थे, पँवार ठाकुर थे। ग्रियर्सन में संख्या ५७० पर ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी का वर्णन है। यह उनके पुत्र नहीं हैं। इनके पिता का नाम भवानी सिंह था। इनके उर्दू ग्रन्थ का नाम शाहनामा है, न कि 'शादनामा'। यह दुशाला माँगने वाले जानकी प्रसाद (सर्वेक्षण २६२) से निश्चय ही भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण २६१

६९६. महेस दत्त—घनौली जिला बाराबंकी वाले। १८८३ ई० में जीवित।

यह 'काव्य संग्रह' नामक एक उपयोगी संग्रह-ग्रन्थ के रचयिता हैं (मूल ग्रन्थ में Kab संकेत से उल्लिखित), जो संवत् १९३२ (१८७५ ई०) में छपा था। संभवतः वही जिनका उल्लेख शिव सिंह ने 'महेश कवि' नाम से किया है, जो १८०३ ई० में पैदा हुए थे।

टि०—घनौली नहीं, धनौली। सरोज के महेश कवि (सर्वेक्षण ६८४) इनसे भिन्न हैं। उनका नाम राजा शीतला बख्श बहादुर उपनाम महेश था। वह बस्ती के राजा थे।

६९७. नंद किसोर मिसर—उपनाम लेखराज; गँधौली जिला सीतापुर के रहनेवाले। १८८३ ई० में जीवित।

(१) रस रत्नाकर, (२) लघु भूषण अलंकार, (३) गंगा भूषण ग्रंथों के रचयिता। यह गँधौली गाँव के लंबरदार हैं। यही संभवतः वह और दो कवि भी हैं, जिनका उल्लेख शिव सिंह ने 'नंद कवि' और 'नंद किशोर कवि' नाम से किया है। अन्तिम 'राम कृष्ण गुन माल' के रचयिता हैं।

टि०—सरोज के नंद कवि (सर्वेक्षण ४२४) और नंद किशोर कवि (सर्वेक्षण ४२९) इन नंद किशोर से भिन्न हैं। इनकी अभिन्नता का कोई प्रमाण सुलभ नहीं। लेखराज का तो पूरा विवरण विनोद (१८१९) में दिया गया है।

—सर्वेक्षण ८२२

६९८. मातादीन मिसर—१८८३ ई० में जीवित।

इन्होंने शाहनामा का भाषानुवाद किया। संवत् १९३३ (१८७६ ई०) में इन्होंने 'कवि रत्नाकर' नामक संग्रह प्रकाशित कराया, जिसमें २० कवियों की कविताएँ संकलित हैं। (मूल ग्रंथ में Kab संकेत से उल्लिखित)।

टि०—कवि रत्नाकर नहीं, कवित्त रत्नाकर । यह ग्रन्थ दो भागों में है, प्रथम में २९ और द्वितीय में १८ कवि हैं । संभवतः २९ को २० पढ़ा गया है ।

—सर्वेक्षण ७१२

६९९. शिव प्रसाद—राजा शिव प्रसाद, सी० एस० आई०, बनारस वाले । जन्म १८२३ ई० । १८८७ ई० में जीवित ।

यह महाशय भारत में शिक्षा प्रसार के लिए परम प्रसिद्ध हैं । यह बीबी रतनकुँवरि (संख्या ३७६) के पौत्र हैं । यह हिंदुस्तानी भाषा को सर्व प्रिय बनाने के लिए परम प्रयत्नशील रहे हैं और अपने इस प्रयत्न के लिए परम प्रख्यात हैं । आगरा, दिल्ली, लखनऊ अथवा असली हिंदुस्तान की बोलचाल की भाषा को, जो फारसी लदी उर्दू और संस्कृत लदी हिंदी के बीच की चीज हो, यह हिंदुस्तानी कहते हैं । इन प्रयत्नों ने भारत के देशी लोगों में एक स्फूर्ति-पूर्ण विवाद खड़ा कर दिया है, जिसका निर्णय अभी तक नहीं हो सका है ।[1] यह शिक्षा संबंधी अनेक ग्रंथों के रचयिता हैं । इनके द्वारा रचित, और स्वयं इन्हीं के द्वारा भेजी हुई, पुस्तक-सूची आगे इसी खंड में जोड़ दी गई है ।

इनके जीवन का वृत्तांत कुछ तो लोकनाथ घोष रचित 'माडर्न हिस्ट्री आफ़ द इंडियन चीफ़्स, राजाज़, जमींदार्स एटसेटरा' से और कुछ स्वयं राजा साहब द्वारा ग्रंथकार के पास प्रेषित सामग्री से संकलित किया गया है । ग्यारहवीं शती के अंत में रणथंभौर (जयपुर राज्य) में पँवार (प्रमार) जाति का धानधल नामक एक व्यक्ति था । एक जैन यती के आशीर्वाद से पुत्र-प्राप्ति होने के कारण वह जैन धर्मानुयायी हो गया और ओसवाल जाति में दाखिल कर लिया गया । तेरहवीं शती के अंत में जब अलाउद्दीन ने रणथंभौर को जीता और लूटा, यह वंश क्रमशः अहमदाबाद और चंपानेर गया और अंत में खंभात में बस गया । धानधल से २६ वीं पीढ़ी में अमर दत्त हुए । इन्होंने शाहजहाँ (१६२८–१६५८) को एक हीरा देकर इतना प्रसन्न कर लिया कि सम्राट ने इनको 'राय' की उपाधि दी और इन्हें दिल्ली ले आए तथा बादशाही जौहरी बना दिया । राय अमर दत्त पीछे एक पुत्र छोड़कर मरे, जिसने मुर्शिदाबाद के सेठ मानिकचंद्र की बहन से विवाह किया । इस

१. १४ सितंबर १९४९ को हिंदी के राष्ट्रभाषा हो जाने से हिंदी और हिंदुस्तानी का विवाद जाके कहीं अब सदा के लिए समाप्त हुआ है ।

—अनुवादक

विवाह से उत्पन्न सबसे छोटा बच्चा, जगत सेठ फतहचंद्र, अपने मामा सेठ द्वारा गोद ले लिया गया। उसके दो बड़े भाई नादिरशाही में दिल्ली में मार डाले गए, अतः परिवार मुर्शिदाबाद में बस गया। फतहचंद्र के पौत्र जगत सेठ महताब राय और उनके चचेरे भाई राजा डालचंद्र अँगरेजों की मदद करने और लार्ड क्लाइव से मिल जाने के कारण, नवाब कासिमअली खाँ [मीर कासिम] द्वारा वंदी बना लिए गए थे। राजा डालचंद्र बच निकले और बनारस आए, जहाँ उन्होंने अवध के नवाब वज़ीर की छत्र-छाया में अपने दिन बिताए।

राजा शिव प्रसाद बाबू गोपीचन्द के पुत्र और राजा डालचन्द के प्रपौत्र हैं। जब यह ग्यारह या बारह ही वर्ष के थे, इनके पिता का देहान्त हो गया। इनकी माता और पितामही बीबी रतनकुँअर ने (संख्या ३७६), जो अपने युग की परम विदुषी स्त्रियों में थीं, इनका पालन-पोषण किया। इनकी आंशिक शिक्षा बनारस कालेज में हुई, जो उस समय अँगरेजी स्कूल मात्र था। यह वस्तुतः ऐसे व्यक्ति के उदाहरण हैं, जिसने स्वयं आत्म-निर्णय एवं आत्म-शिक्षण किया हो। अत्यन्त विनम्रता के साथ, जो उनका गुण है, वह अपनी पितामही के सम्बन्ध में लिखते हैं, "जो कुछ भी थोड़ी बहुत जानकारी मुझे है, उसका अधिकांश मैंने उनसे पाया।" अपनी बाल्यावस्था में पहले यह उग्र यूरोपियन विरोधी विचार धारा के थे, अतः सत्रह वर्ष की ही उम्र में गवर्नर जनरल के अजमेर स्थित तत्कालीन एजेण्ट कर्नल सदरलैण्ड की कचहरी में जाने के लिये इन्होंने भरतपुर के स्वर्गीय महाराज के वकील का पद स्वीकार कर लिया था। यह कहते हैं—"महाराज की अधीनता में मेरा उस समय का मासिक व्यय प्रायः ५००० रु० था; लेकिन मैंने दरबार को एक दम भीतर तक सड़ा और दुनिया में सबसे अधिक गया गुजरा पाया। मैं निराश हो गया, त्यागपत्र दे दिया, वापस आ गया, और योगी बन जाना चाहा, किन्तु मेरे मित्रों ने मुझपर फ़ब्तियाँ कसनी शुरू कीं। उन्होंने मुझे बेवकूफ़ और सिड़ी कहा। वे कहते थे—'पतंग अच्छा चढ़ा था, लेकिन गोता खा गया' अथवा 'अन्धे के हाथ बटेर लग गई थी।' मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सका और मैंने किसी ऐसे की नौकरी करना निश्चित किया, जो महाराज भरतपुर से बड़ा हो। मैंने फिरोजपुर के सामने पड़े लार्ड हार्डिंज के खेमे में नौकरी कर ली। मुदकी की लड़ाई समाप्त हो गई थी, सोबराँव की होने वाली थी। मेरे साथ जो व्यवहार हुआ, मेरी आँखें खुल गई और मैंने निश्चय किया कि अब किसी भी देशी की नौकरी नहीं करूँगा।" जब श्री एडवर्ड्स रक्षित पहाड़ी रियासतों के

सुपरिंटेंडेंट हुए, यह शिमला एजेंसी के मीर मुंशी के रूप में पदोन्नत हो गए। ये अपने जीवन के इस भाग को सर्वोत्तम मानते हैं। जब श्री एडवर्ड्स १८५१ या १८५२ में छुट्टी पर घर गए, राजा शिवप्रसाद ने त्याग-पत्र दे दिया; और अपनी माता की वृद्धावस्था के कारण बनारस ही में स्वतन्त्र जीवन बिताने का विचार किया, लेकिन गवर्नर जनरल के बनारस स्थित तत्कालीन एजेण्ट श्री टकर ने इन्हें उक्त एजेंसी का मीर मुंशी होने के लिए राजी कर लिया; और बाद में जन-शिक्षा-विभाग में कार्य करने के लिए इन्हें तत्पर किया तथा संयुक्त इंस्पेक्टर का पद प्राप्त करा दिया। सर डब्ल्यू० म्यूर ने इन्हें पूर्ण इंस्पेक्टर बना दिया। तीस वर्ष तक सरकार की सेवा करने के अनन्तर ये एक खासी अच्छी पेंशन पाकर कार्य-मुक्त हुए और अब बनारस में रह रहे हैं। ये सरकार से अनेक प्रकार सम्मानित किए गए हैं, जिनमें से वंश परम्परा के लिए राजा की उपाधि और 'कंपेनियनशिप आफ़ द मोस्ट एक्ज़ाल्टेड स्टार आफ़ इंडिया' [सितारे हिंद] के खिताब का उल्लेख किया जा सकता है। इनके द्वारा इस ग्रंथकार को लिखे गए एक पत्र का निम्नलिखित अंश इस विवरण का उपसंहार भली भाँति कर सकेगा—"मैंने अभी अभी अपने एक मित्र को इंगलैंड लिखा है कि यदि आपको कभी किसी ऐसे आदमी के नाम की जरूरत पड़े, जो अपने को कम से कम संतोषी, कृतज्ञ और सुखी तो कहता हो, तो आप शिव प्रसाद का नाम ले सकते हैं। मेरे एक पुत्र और तीन पौत्र हैं।......। इस समय मेरा पेशा देश और दिमाग़ को तहज़ीबयाफ़्ता बनाना है।"

राजा शिव प्रसाद के भाषा ग्रन्थों की सूची निम्नलिखित है—

संख्या	ग्रंथ	विषय	विवरण
१.	वर्णमाला	प्रारंभिक पाठ्य पुस्तक	कहानियों और चित्रों सहित।
२.	बालबोध	सरल पाठ्य पुस्तक	श्री डब्ल्यू० एडवर्ड्स द्वारा पहले अँगरेजी में लिखित।
३.	विद्यांकुर	चैंबर के 'रुडिमेंट आफ़ नालेज' और 'इंट्रोडक्शन टू साइंस' के कुछ पन्नों का हिंदी में ग्रहण।	सचित्र। पहले श्री एडवर्ड्स द्वारा पहाड़ी स्कूलों के लिए लिखित। इसका उर्दू रूपांतर 'हक़ायक़ुल' मौजूदात कहा जाता है।

संख्या	ग्रंथ	विषय	विवरण
४.	वामा मन-रंजन	पूर्व और पश्चिम की कुछ प्रसिद्ध नारियाँ।	श्री एच० सी० टकर के लिए अँगरेजी और बँगला पुस्तकों से सामग्री ली गई। इसका उर्दू रूपांतर 'हिकायतुल सालिहात' कहलाता है।
५.	हिंदी व्याकरण	व्याकरण	इसका उर्दू प्रतिरूप 'सर्फ़-व-नह्व-ए-उर्दू' कहलाता है। संख्या १९।
६.	भूगोल हस्तामलक भाग १ एशिया	भूगोल	कम से कम १०० आकर ग्रंथों से संकलित, रंगीन मानचित्रों सहित। इसका उर्दू रूपांतर 'जाम-ए-जहाननुमा' कहलाता है। सं० २०।
७.	छोटा भूगोल हस्तामलक	भूगोल हस्तामलक (सं० ६) का संक्षेप।	उर्दू में यह 'छोटा जाम-ए-जहाननुमा' कहलाता है।
८.	इतिहास तिमिरनाशक (तीन भागों में)	प्रारंभिक युग से महारानी के घोषणा-पत्र, १८५८ ई०, तक के भारत का इतिहास।	अँगरेजी में 'हिस्ट्री आफ़ हिंदुस्तान' उर्दू में 'आईन-ए-तारीखनुमा'।
९.	गुटका	संकलन	
१०.	मानव धर्म सार	मनु की विधियों का चयन	मूल संस्कृत सहित।
११.	"	"	सर विलियम जोन्स के अँगरेजी अनुवाद सहित। (प्रेस में)।
१२.	सैंडफर्ड और मर्टन की कहानी	किस्सए सैंडफर्ड-व-मर्टन का हिंदी रूपांतर।	
१३.	सिक्खों का उदय-अस्त	सिक्ख जाति का उत्थान और पतन	प्रामाणिक और सरकारी अभिलेखों से संकलित। इसका उर्दू रूपांतर 'सिक्खों का तुलूअ और ग़रूब' प्रेस में है।

संख्या	ग्रंथ	विषय	विवरण
१४.	स्वयंबोधउर्दू	उर्दू अपने आप सिखाने वाली प्रथम पुस्तक	मुद्रण बाह्य। अब नहीं छपती।
१५.	अँगरेजी अक्षरों के सीखने का उपाय	रोमन लिपि	,, ,,
१६.	बच्चों का इनाम	छोटे बच्चों को उपहार देने के लिए एक छोटी पुस्तिका	
१७.	राजा भोज का सपना	एक कहानी	श्री एच० सी० टकर के लिए लिखित।
१८.	वीरसिंह का वृत्तांत	बाल हत्या के विरुद्ध	श्री डब्ल्यू० एडवर्ड्स के लिए लिखित। अब नहीं छपता।

उर्दू

१९.	सर्फ-व-नह्व-ए उर्दू	उर्दू व्याकरण	
२०.	जाम-ए-जहाननुमा	भूगोल	
२१.	छोटा जाम-ए जहाननुमा	जाम-ए-जहाननुमा (२०) का संक्षेप।	
२२.	मज़ामीन	संग्रह	
२३.	कुछ बयान अपनी ज़ुबान का	बनारस इंस्टिच्यूट में देशी भाषाओं पर दिया हुआ व्याख्यान	
२४.	दिल बहलाव (तीन भागों में)	विविध संग्रह	श्री एच० सी० टकर के लिए लिखित।
२५.	किस्सए सैंडफर्ड-व-मर्टन	सैंडफर्ड ऐंड मर्टन का अनुवाद अथवा ग्रहण	,,

संख्या	ग्रंथ	विषय	विवरण
२६.	दुन्नलन	ईसाई धर्म की खूबियाँ अथवा एक मेथाडिस्ट ईसाई संभ्रांत पुरुष का जीवन। ग्रेस केनेड़ी के ग्रंथ का संक्षेप।	श्री एच० सी० टकर के लिए अनूदित। अब नहीं छपता।
२७.	गुलाब और चमेली का क़िस्सा	ऊपर के ग्रंथ से लिया हुआ।	
२८.	सच्ची बहादुरी	सत्य शौर्य	श्री एच० सी० टकर के लिए अनूदित।
२९.	मिक़राबुल काहिलीन	वास्तविक जीवन	,, लिखित।
३०.	शहादते क़ुरानी बर कुतुबे रब्बानी	बाइबिल की प्रामाणिकता कुरान द्वारा सिद्ध।	एक सज्जन के लिए लिखित।
३१.	तारीखे कलीसा	चर्च का प्रारंभिक इतिहास	,,
३२.	फ़ारसी सर्फ़-व-नह्व	उर्दू में फ़ारसी व्याकरण	

७००. लछूमीनाथ ठाकुर—मैथिल, १८७० ई० में उपस्थित।

बैसवाड़ी बोली में अत्यधिक लिखनेवाले प्रशंसा-प्राप्त लेखक।

७०१. फतूरीलाल—तिरहुत के कायस्थ। १८७४ ई० में उपस्थित।

मैथिली बोली में लिखित, १८७३–७४ के अकाल का वर्णन करने वाले 'कवित्त अकाली' नामक अत्यंत जन-प्रिय ग्रंथ के रचयिता। देखिए, जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, अतिरिक्त अंक, १८८१, पृष्ठ २४ (मैथिल क्रेस्टोमैथी[1], लेखक जी० ए० ग्रियर्सन)।

७०२. चंद्र झा—१८८३ ई० में जीवित।

१. Chrestomathy—चुने अंशों का संकलन। —अनुवादक।

मिथिला के पर्याप्त-प्रसिद्ध-प्राप्त जीवित कवि। यह दरभंगा नरेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के दरबारी कवि हैं और बिहारी भाषा की मैथिली बोली में लिखित अत्यंत प्रशंसित 'रामायण' नामक ग्रंथ के रचयिता हैं।

७०३. जान साहिब—मृत्यु १८८३ ई० के आसपास हुई।

यह उन श्री जान क्रिश्चियन का कवि नाम है, जो एक मात्र ऐसे यूरोपीय हिंदी लेखक हैं, जिनसे मेरा परिचय है और जिनकी भाषा कविता जनता तक पहुँची है। इन्होंने प्रचुर संख्या में ईसाई भजनों की रचना की है, जो तिरहुत के प्रत्येक गानेवाले को मालूम हैं, जिनमें से अधिकांश इनका मूल अर्थ समझे बिना इन्हें गाते हैं। इनका सर्वाधिक प्रतिष्ठा-प्राप्त ग्रंथ 'मुक्ति-मुक्तावली' है, जो ईसामसीह का पद्यबद्ध जीवन-चरित है।

७०४. अंबिका दत्त व्यास—बनारसी। १८८८ ई० में जीवित।

नवोदित लेखक। इन्होंने कई नाटक लिखे हैं, जिनका उल्लेख संख्या ७०६ में हुआ है। इनका 'भारत सौभाग्य' महारानी विक्टोरिया की जयंती के अवसर पर लिखा गया था। इनके अन्य ग्रंथों में 'मधुमती' का उल्लेख किया जा सकता है, जो इसी नाम के एक लघु बँगला उपन्यास का अनुवाद है।

७०५. छोटूराम तिवारी—बनारसी। जन्म १८४० ई० के लगभग। मृत्यु १८८७ ई०।

यह महाशय अनेक वर्षों तक पटना कालेज में संस्कृत के प्रोफेसर थे। इस ग्रंथकार का यह परम सौभाग्य है कि वे इसको अपने घनिष्ट मित्रों में परिगणित करते थे। अपने देश की प्राचीन भाषा कविता का उनका ज्ञान गंभीर और ठीक ठीक था और उनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई थी। अपनी भाषा के लेखक के रूप में उनका यश 'राम कथा' पर निर्भर करता है, जिसका, मेरा खयाल है, कोई भी प्रामाणिक संस्करण कभी नहीं प्रकाशित हुआ। निश्चय ही यह अत्यंत शुद्ध और श्रेष्ठतम आधुनिक हिंदी का आदर्श है, जो गँवारपन और पंडिताऊपन दोनों से पूर्णतया मुक्त है। इन्होंने इसका प्रूफ़ अनेक वर्षों तक अपने पास रखा और मृत्युपर्यंत लगातार संशोधन और परिष्कार करते रहे। यह कृति इतनी प्रशंसित हुई कि प्रूफ़ शीट ही बहुतायत से बिक गई और अत्यधिक जनप्रिय हुई। इसके अंश इधर हाल की प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों और संग्रह ग्रंथों में प्रमुख स्थानों पर संकलित हैं।

यह देवीदयाल त्रिपाठी के पुत्र थे। इनके दो भाई और थे—एक इनसे बड़े शीतलप्रसाद, हिंदी में सर्व प्रथम अभिनीत 'जानकी मंगल' नाटक के रचयिता; दूसरे इनसे छोटे गोपीनाथ, जो कालीप्रसाद तिवारी (सं० ७३९) के पिता थे।

७०६. बिहारी और हिंदी नाटकों पर टिप्पणी

हिन्दी नाटक अभी हाल का ही उगा पौदा है। यह सत्य है कि कुछ प्रारंभिक लेखकों ने भी ऐसे ग्रंथ लिखे, जिन्हें उन्होंने नाटक कहा। उदाहरण के लिए निवाज (सं० १९८) ने शकुंतला लिखा और व्रजवासीदास (सं० ३६९) तथा अन्यों ने 'प्रबोध चंद्रोदय' के अनुवाद किए; किंतु ये केवल नाम के नाटक थे—पात्रों के प्रवेश और निष्क्रमण से विहीन। इसी प्रकार महाकवि देव (सं० १४०) कृत 'देव माया प्रपंच', महाराज बनारस के लिए लिखित 'प्रभावती' और रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह (सं०५२९) के लिए लिखित 'आनंद रघुनंदन' दृश्य काव्य के तत्वों से हीन है।

पहला हिंदी नाटक, जिसमें पात्र-प्रवेश, पात्र-निष्क्रमण आदि का बराबर निर्देश है, गिरिधरदास (गोपालचंद्र) (सं० ५८०) का 'नहुष नाटक' है। इसमें नहुष द्वारा इंद्र का सिंहासन से हटाया जाना और पुनः आसीन होना वर्णित है। ग्रंथकर्ता के पुत्र, हरिश्चंद्र, उस समय सात वर्ष के थे, जब यह नाटक लिखा जा रहा था, अतः यह सन् १८५७ ई० में लिखा गया।

वास्तविक नाटक के रूप में दूसरा हिंदी नाटक शकुंतला का राजा लक्ष्मण सिंह कृत हिंदी अनुवाद है, जो बाद में श्री पिनकाट द्वारा संपादित हुआ है। इसके बाद हरिश्चंद्र (सं ५८१) का विद्यासुंदर आया, जिसका आधार उसी नाम की प्रख्यात बँगला कविता है, पर सौभाग्य से यह उसकी अश्लीलता से मुक्त है। चौथा नाटक श्री निवासदास का 'तप्ता संवरण' और पाँचवाँ हरिश्चन्द्र कृत 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' तथा छठाँ तोताराम कृत 'केटो कृतान्त' है। इन आदर्शों ने अनेक अनुकरण करने वाले उत्पन्न कर दिए।

पहला हिन्दी नाटक, जिसका अभिनय हुआ, छोटूराम तिवारी (संख्या ७०५) के बड़े भाई, शीतलप्रसाद तिवारी कृत 'जानकी मंगल' था। यह प्रयोग सं० १९२५ (१८६८ ई०) में बनारस थियेटर में हुआ था और अत्यन्त सफल रहा था। इसके पश्चात् श्री निवास दास कृत 'रणधीर प्रेम मोहिनी' और हरिश्चन्द्र कृत 'सत्य हरिश्चन्द्र' का प्रयोग इलाहाबाद और कानपुर में हुआ।

इसके विपरीत बिहार में लगभग पाँच शताब्दियों से नाट्य परम्परा बनी हुई है। विद्यापति ठाकुर (१४०० ई०) (सं० १७) 'पारिजात हरण' और 'रुक्मिणी स्वयंवर' इन दो नाटकों के रचयिता थे। इन नाटकों की हस्तलिखित प्रतियाँ उपलब्ध हैं, ऐसा मेरा विश्वास है। पर मैंने इन्हें

देखा नहीं है। लाल झा (सं० ३६३) 'गौरी परिणय' के रचयिता थे। इस शताब्दी के प्रारम्भ में भानुनाथ झा (सं० ६४१) ने 'प्रभावती हरण' लिखा। हर्षनाथ झा (सं० ६४२) 'उखा हरन' या (संस्कृत में) उषा हरण के रचयिता हैं। ये सभी कवि मैथिल ब्राह्मण थे। यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि इनकी कृतियाँ भाषा नाटक के अन्तर्गत नहीं आ सकतीं, क्योंकि पात्र या तो संस्कृत में अथवा प्राकृत में बातें करते हैं, केवल गीत मैथिली में हैं।

हरिश्चन्द्र द्वारा दी गई हिन्दी नाटकों की सूची निम्न प्रकार से है—

नाटक का नाम	लेखक
नहुष नाटक	गिरिधरदास
शकुन्तला	लक्ष्मण सिंह
मुद्राराक्षस	हरिश्चन्द्र
सत्य हरिश्चन्द्र	"
विद्या सुन्दर	"
अन्धेर नगरी	"
विषस्य विषमौषधम्	"
सती प्रताप	"
चन्द्रावली	"
माधुरी	"
पाखण्ड विडम्बन	"
नवमल्लिका	"
दुर्लभ बधु	"
प्रेम जोगिनी	"
जैसा काम वैसा परिणाम	"
कर्पूर मंजरी	"
नील देवी	"
भारत दुर्दशा	"
धनंजय विजय	"
वैदिकी हिंसा	"
बूढ़े मुँह मुहासे, लोग चले तमासे	गोकुल चन्द
अद्भुत चरित्र या गृह चंडी	श्रीमती

तप्ता संवरण	श्री निवास दास
रणधीर प्रेम मोहिनी	"
केटो कृतांत	तोताराम
सज्जाद संबुल	केशवराम भट्ट
शमशाद सौसन	"
जय नारसिंह की	देवकी नन्दन तिवारी
होली खगेस	"
चक्षु दान	"
पद्मावती	बाल कृष्ण भट्ट
शर्मिष्ठा	"
चन्द्र सेन	"
सरोजिनी	गणेशदत्त
सरोजिनी	राधाचरण गोसाईं
मृच्छकटिक	गदाधर भट्ट
वारांगना रहस्य	बद्री नारायण चौधरी
विज्ञान विभाकर	जानी विहारीलाल
ललिता नाटिका	अंबिकादत्त व्यास
देव पुरुष दृश्य	"
वेणी संहार	"
गो संकट	"
भारत सौभाग्य	"
जानकी मंगल	शीतला प्रसाद तिवारी
दुःखिनी बाला	राधाकृष्ण दास
पद्मावती	"
महारास	महाराजकुमार खड्गलाल बहादुर मल्ल
रामलीला	दामोदर शास्त्री
मृच्छकटिक	"
बाल खेल	"
राधामाधव	"
बेनिस का सौदागर	बालेश्वर प्रसाद
मृच्छकटिक	ठाकुर दयाल सिंह
वेनिस का सौदागर	"

टि०—यह सूची यद्यपि भारतेंदु के ही अनुसार है, फिर भी 'माधुरी', 'नव मल्लिका' और 'जैसा काम वैसा परिणाम' ये तीनों नाटक भारतेंदु कृत नहीं माने जाते ।

अध्याय ११ का परिशिष्ट

७०७. पंचम कवि—डलमऊ जिला रायबरेली के कवि और भाट ।

जन्म (? उपस्थिति)—१८६७ ई० ।

टि०—१८६७ ई० (सं० १९२४) कदापि जन्मकाल नहीं हो सकता, क्योंकि इसके १० वर्ष बाद ही सरोज का प्रणयन हुआ । यह कवि का उपस्थिति काल है ।

७०८. फूलचंद—बैसवाड़ा के ब्राह्मण ।

जन्म (? उपस्थिति)—१८७१ ई० ।

शिव सिंह इस नाम के दो कवियों का उल्लेख करते हैं । दूसरा तिथि विहीन है ।

टि०—१८७१ ई० (सं० १९२८) कवि का उपस्थिति काल है । इन्होंने इस संवत के दो ही वर्ष बाद सं० १९३० में 'अनिरुद्ध स्वयंबर' नाम ग्रंथ लिखा था ।

—सर्वेक्षण ४९१

७०९. सुदरसन सिंह—चंदापुर के राजा (देखिए सं० ६९३)

जन्म (? उपस्थिति) १८७३ ई० ।

इन्होंने अपनी कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित किया है ।

टि०—१८७३ ई० (सं० १९३०) निश्चय ही कवि का उपस्थितिकाल है, क्योंकि इसके ४ ही वर्ष बाद सरोज की रचना हुई ।

७१०. मानिकचंद—सीतापुर जिले के कायस्थ ।

जन्म (? उपस्थिति)—१८७३ ई० ।

टि०—१८७३ ई० (सं० १९३०) निश्चय ही कबि का उपस्थितिकाल है, क्योंकि इसके ४ ही वर्ष बाद सरोज की रचना हुई ।

७११. आनंद सिंह—उपनाम दुर्गा सिंह, अहन्नन दिकौलिया जिला सीतापुर के रहने वाले । १८८३ ई० में जीवित ।

७१२. ईश्वरी परसाद त्रिपाठी—पीर नगर जिला सीतापुर के । १८८३ ई० में जीवित ।

इन्होंने 'राम विलास' नाम से वाल्मीकि रामायण का भाषानुवाद विभिन्न छन्दों और महाकाव्य-रूप में किया है ।

७१३. उमराव सिङ्घ पँवार—सैदपुर जिला सीतापुर के भाट (bard)। १८८३ ई० में जीवित।

टि०—सरोज में सैदगाँव लिखा है, न कि सैदपुर। यह क्षत्रिय थे, भाट नहीं।

—सर्वेक्षण ६१.

७१४. गुरुदीनराय बंदीजन—पैंतेया जिला सीतापुर के भाट। १८८३ ई० में जीवित।

यह ईसा नगर जिला खीरी के राजा रणजीत सिंह साह जाँगरे (सं० ७१६) के दरबारी कवि थे।

टि०—पैंतेया नहीं, पैंतेपुर। यह जाँगरे के साह या राजा थे।

—सर्वेक्षण १८२

७१५. बलदेव कवि अवस्थी—दासापुर जिला सीतापुर के। १८८३ ई० में जीवित।

हथिया के राजा दलथंभन सिंह गौड़ सवैया के नाम पर इन्होंने श्रृङ्गार सुधाकर नामक नायिका भेद का ग्रंथ लिखा था।

टि०—दलथंभन सिंह पँवार ठाकुर थे, यह हथिया के रहने वाले थे। सरोज में 'सवैया हथिया' दिया भी गया है, ग्रियर्सन में केवल सवैया रह गया है। श्रृङ्गार सुधाकर की रचना सं० १९३० में हुई।

—सर्वेक्षण ५०३

७१६. रनजीत सिङ्घ साह जाँगरे—ईसा नगर जिला खीरी के। १८८३ ई० में जीवित।

हरिवंश का अनुवाद किया है।

७१७. ठाकुर परसाद त्रिवेदी—अलीगंज, जिला खीरी के। १८८३ ई० में जीवित।

७१८. हजारीलाल त्रिवेदी—अलीगंज, जिला खीरी के। १८८३ ई० में जीवित।

नीति और शांत रस के कवि।

७१९. गंगादयाल दुबे—निसगर जिला रायबरेली के। १८८३ ई० में जीवित।

संस्कृत और भाषा दोनों में प्रवीण कहे जाते हैं।

७२०. दयाल कवि—बैंती जिला रायबरेली के। १८८३ ई० में जीवित।

यह भौन कवि (सं० ६११) के सुपुत्र हैं।

७२१. विश्वनाथ—टिकई जिला रायबरेली के भाट। १८८३ ई० में जीवित

इन्होंने किसी रणजीत सिंह (? संख्या ७१६) की प्रशंसा की है। यह सभवतः वही 'विस्वनाथ कवि' हैं, जिनका उल्लेख शिव सिंह ने किया है और जो शिव सिंह के अनुसार १८४४ ई० में उत्पन्न हुए थे और जिन्होंने लखनऊ के लोगों के चालचलन, रीति नीति पर कई छंद लिखे हैं।

टि०—इन विश्वनाथ ने जाँगरे वाले रणजीत सिंह की प्रशंसा नहीं की है। इन्होंने सरोजकार शिवसिंह के पिता रणजीत सिंह की प्रशंसा की है।

—सर्वेक्षण ५४७

लखनऊ के लोगों के चाल चलन पर कवित्त लिखने वाले विश्वनाथ इनसे भिन्न हैं और संभवतः बिसवाँ जिला सीतापुर के रहने वाले थे।

—सर्वेक्षण ५४६

७२२. ब्रिंदावन—सेमरौता जिला रायबरेली के ब्राह्मण। १८८३ ई० में जीवित।

? राग कल्पद्रुप। कोई विवरण नहीं। यह सम्भवतः वही हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने 'बृन्दावन कवि' नाम से किया है।

टि०—बृंदावन परवर्ती कवि हैं। इनकी रचना का रागकल्पद्रुम (संवत १९००) में संकलित होना संभव नहीं। सरोज के 'वृंदावन कवि' (सर्वेक्षण ५६२) का अस्तित्व नहीं सिद्ध होता, अतः इनसे तादात्म्य की बात ही नहीं उठती।

७२३. लछिराम कवि—होलपुर जिला बाराबंकी के भाट और कवि। १८८३ ई० में जीवित।

इन्होंने शिव सिंह (सरोज के रचयिता) के नाम पर नायिका भेद का एक ग्रन्थ रचा और उसका नाम शिव सिंह सरोज रखा। देखिए सं० १२६।

७२४. संत बकस—होलपुर जिला बाराबंकी के भाट। १८८३ ई० में जीवित। मिलाइए संख्या १२६।

७२५. समरसिंह—हड़हा जिला बाराबंकी के क्षत्रिय। १८८३ ई० में जीवित। एक रामायण के रचयिता।

७२६. सिव परसन्न कवि—रामनगर जिला बाराबंकी के साकद्वीपी ब्राह्मण। १८८३ ई० में जीवित।

७२७. सीतारामदास—बीरापुर जिला बाराबंकी के बनिया। १८८३ ई० में जीवित।

७२८. गुनाकर त्रिपाठी—काँथा जिला उन्नाव के। १८८३ ई० में जीवित।

यह भाषा और संस्कृत दोनों में रचना करते हैं। इनका वंश ज्योतिष विद्या के लिए प्रसिद्ध है।

७२९. सुखराम—चौहत्तरी जिला उन्नाव के ब्राह्मण। १८८३ ई० में जीवित।

यह संभवतः वही 'सुखराम कवि' हैं, जिनको शिव सिंह ने शृङ्गारी कवि कहा है और जिनको १८४४ ई० में उत्पन्न (? उपस्थित) माना है।

टि०—चौहत्तरी नहीं, चहोतर।

—सर्वेक्षण ९४३

सरोज के ८७९, ९४३ संख्यक दोनों सुखराम एक हो सकते हैं।

७३०. देवीदीन—बिलग्राम जिला हरदोई के बन्दीजन। १८८३ ई० में जीवित।

इनके श्रेष्ठतम ग्रंथ 'नखशिख' और 'रस दर्पण' हैं।

टि०—नखशिख और रस दर्पण यही दो इनके ग्रंथ हैं, जो सुन्दर हैं।

—सर्वेक्षण ३७८

७३१. मातादीन सुकल—अजगरा जिला परतापगढ़ के। १८८३ ई० में जीवित।

यह परतापगढ़ के राजा अजित सिंह के दरबारी कवि थे। 'ज्ञान दोहावली' नाम से इनके कुछ छन्द साहिब प्रसाद सिंह के 'भाषा सार' में मिलेंगे।

७३२. कन्हैया बख्श—बैसवाड़ा (औध) के बैस। १८८३ ई० में जीवित।

इनकी अच्छी रचनाएँ शान्त रस की हैं।

टि०—'शान्त रस का इनका काव्य उत्तम है', न कि 'इनकी अच्छी रचनाएँ शान्त रस की हैं।'

—सर्वेक्षण ८८

७३३. गिरिधारी भाट—मऊ रानीपुरा, जिला झाँसी, बुन्देलखण्ड के। १८८३ ई० में जीवित।

७३४. जबरेस—बुन्देलखण्डी भाट। १८८३ ई० में जीवित।

७३५. रनधीर सिङ्घ—राजा रणधीर सिंह सिरमौर, सिंगरामऊ के। १८८३ ई० में जीवित।

कवियों के आश्रयदाता होने के अतिरिक्त, स्वयं भी काव्य रत्नाकर (१८४० ई० में लिखित) और भूषण कौमुदी (१८६० ई० में लिखित) ग्रंथों के रचयिता हैं। मऊ नामक कई कस्बे भारत भर में हैं, लेकिन मैं शिव सिंह द्वारा उल्लिखित मऊ की पहचान नहीं कर सका।

टि०—सिंगरामऊ जौनपुर जिले में है।

७३६. सिवदीन—पण्डित शिवदीन उपनाम रघुनाथ, रसूलाबाद के ब्राह्मण। १८८३ ई० में जीवित।

भव महिम्न और अन्य ग्रंथों के रचयिता। संभवतः यह वही हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने बिना कोई विवरण दिए हुए 'शिवदीन कवि' नाम से किया है। रसूलाबाद नाम के कई कस्बे भारत भर में हैं, मैं नहीं जानता प्रसंग-प्राप्त रसूलाबाद कौन है।

टि०—यह शिवदीन (सर्वेक्षण ७६९) दूसरे शिवदीन कवि (सर्वेक्षण ८५२) से अभिन्न हो सकते हैं।

७३७. रामनारायन—कायस्थ। १८८३ ई० में जीवित।

शृंगारी कवि। यह महाराज मानसिंह (संख्या ५९९) के मुंशी हैं।

७३८. अंबिका परसाद—१८८३ ई० में जीवित।

यह शाहाबाद जिले के हैं। भोजपुरी बोली में बहुत से गीत इन्होंने लिखे हैं, जो बहुत प्रतिभापूर्ण तो नहीं है, पर कवि की मातृभाषा के उदाहरण के रूप में इनका मूल्य है। 'सेविन ग्रामर्स आफ़ द बिहारी डायलेक्ट्स' भाग २ में इनके कई गीत दिए गए हैं।

७३९. काली परसाद तिवारी—बनारसी। १८८८ ई० में जीवित।

यह महाशय झौगंज सिटी स्कूल पटना में हेड पंडित हैं। यह कई स्कूली ग्रंथों और भाषा रामायण के रचयिता हैं। रामायण गद्य-पद्य मिश्रित हिंदी और सरल शैली में है तथा अत्यंत प्रशंसित है। यह पंडित छोटूराम तिवारी (सं० ७०५) के भतीजे हैं।

७४०. बिहारीलाल चौबे—पटना कालेज में संस्कृत के सहायक प्रोफेसर। १८८८ में जीवित।

यह महाशय अनेक उपयोगी पाठ्यग्रंथों के रचयिता होने के अतिरिक्त 'बिहारी तुलसी भूषण बोध' नामक एक लाभदायक अलंकार ग्रंथ के भी कर्ता हैं। यह बिब्लिओथेका इंडिका के लिए तुलसीदास (सं० १२८) की सतसई का एक अच्छा संस्करण संपादित कर रहे हैं।

अध्याय १२

विविध

इस अध्याय में कुछ ऐसे साधारण कवियों के नाम हैं, जिनकी तिथियाँ मैं स्थिर नहीं कर सका हूँ।

१. तुलसी (संख्या १५३) के कवि माला में उद्धृत, अतः १६२५ ई० के पहले उपस्थित कवि :—

७४१. संख कवि

७४२. साहब कवि

७४३. सिद्ध कवि

७४४. सुबुद्धि कवि

७४५. स्रीकर कवि

७४६. स्राहठ कवि

२. कालीदास त्रिवेदी (सं० १५९) के हजारा में उद्धृत, अतः १७१८ ई० के पहले उपस्थित कवि :—

७४७. जसवंत कवि (२)

टि०—'इन जसवंत को सरोज में' सं० १७६२ में उ० कहा गया है। हजारे में उद्धृत जसवंत संभवतः प्रसिद्ध जोधपुर नरेश महाराज जसवंत सिंह (शासनकाल सं० १६९५–१७३५) हैं। सरोज का संवत् अशुद्ध है।

७४८. तीखी कवि—यदि मैं शिव सिंह को ठीक ठीक समझ रहा हूँ, तो इनकी कविताएँ हजारा में हैं।

७४९. तेही कवि—यदि मैं शिव सिंह को ठीक ठीक समझ रहा हूँ, तो इनकी कविताएँ हजारा में हैं।

टि०—तीखी (सर्वेक्षण ३२८) और तेही (सर्वेक्षण ३२९) इन दोनों कवियों के विवरण में केवल 'ऐजन' लिखा गया है, जो प्रमाद से लिख उठा है और जिसका कुछ भी अर्थ नहीं हो सकता। ग्रियर्सन ने शिव सिंह को ठीक ठीक नहीं समझा है। इन दोनों कवियों की कविता के हजारा में होने का उल्लेख शिव सिंह ने नहीं किया है। साथ ही इन कवियों का अस्तित्व भी नहीं सिद्ध होता।

७५०. दिलाराम कवि

टि०—सरोज में दिलाराम का नाम है (सर्वेक्षण ३५२), पर इनकी कविता के हजारा में होने का कोई उल्लेख नहीं है।

७५१. रामरूप कवि—मैंने इनके कई गीत मिथिला में संकलित किए हैं।

टि०—सरोज सप्तम संस्करण में रामरूप कवि (सर्वेक्षण ७५१) अवश्य हैं, पर तृतीय संस्करण में इनके स्थान पर रसरूप नाम है। न तो रामरूप की और न रसरूप की ही कविता के हजारा में होने का उल्लेख सरोज में है।

७५२. लोधे कवि

टि०—सरोज में इस कवि को 'सं० १७७० में उ०' कहा गया है। हजारा में इनकी कविता होने का भी उल्लेख है।

३. भिखारीदास (सं० ३४४) के काव्य निर्णय में उल्लिखित, अतः १७२३ ई० के पूर्व उपस्थित कवि :—

७५३. लोकनाथ कवि

राग कल्पद्रुम में भी

टि०—सरोज में लोकनाथजी को 'सं० १७८० में उ०' कहा गया है। इसी संवत के आसपास इनकी मृत्यु हुई।

—सर्वेक्षण ८२०

७५४. गुलाम नबी—बिलग्राम जिला हरदोई के सैयद गुलाम नबी, उपनाम रसलीन कवि।

अरबी और फ़ारसी के विद्वान होने के अतिरिक्त, यह भाषा के भी आचार्य थे। इन्होंने 'अंग दर्पण' (१६३७ ई०) नामक नखशिख एवं 'रस प्रबोध' (१७४१ ई०) नाम काव्यशास्त्र के ग्रंथ लिखे। इन तिथियों में कहीं अशुद्धि है। संभवतः बाद वाली तिथि ही शुद्ध है।

टि०—ग्रियर्सन का अनुमान ठीक है। रस प्रबोध का रचनाकाल सं० १७९८ (१७४१ ई०) है। अंगदर्पण की रचना सं० १७९४ (१७३७ ई०) में हुई। ग्रियर्सन ने पूरे एक सौ वर्ष की भूल न जाने कहाँ से कर दी है।

—सर्वेक्षण ७५५

७५५. बलि कवि—शृङ्गारी कवि।

टि०—सरोज में इस कवि का उल्लेख दो बार (सर्वेक्षण ५२२, ५६९) हो गया है, पर कहीं भी इनका दास द्वारा उल्लिखित होना नहीं लिखा गया है। हाँ, दूसरी बार इनकी कविता के हजारा में होने का निर्देश अवश्य है।

काव्य निर्णय में दास ने इनका भी नाम लिया है, इसमें संदेह नहीं। यह नाम रसलीन के ठीक बाद आया है।

७५६. रहीम कवि—यह अब्दुर्रहीम खानखाना (सं० १०८) से भिन्न कवि हैं। इनके प्रसिद्ध नाम-राशि कवि और इनकी रचनाओं को अलग करना कठिन है।

टि०—रहीम, अब्दुर्रहीम खानखाना से भिन्न नहीं हैं। सरोजकार के भ्रम ने इस कवि की सृष्टि की है। उसने दास का मंतव्य ठीक से नहीं समझा है।

—सर्वेक्षण ७९८

४. कवि सूदन (सं० ३६७) द्वारा उल्लिखित, अतः १७५३ ई० के पूर्व उपस्थित कवि :—

७५७. सनेही कवि

७५८. सिवदास कवि—गार्सां द तासी ने (भाग १, पृ० ४७४) इस नाम के एक कवि का उल्लेख किया है, जो जयपुर का निवासी था, जिसका एक ग्रंथ शिव चौपाई है, जिसका उद्धरण वार्ड ने अपने 'हिस्ट्री आफ़ द हिंदूज़' (भाग २, पृ० ४८१) में दिया है। यह एक और भी ग्रंथ के रचयिता हैं, जिसका नाम गार्सां द तासी ने 'पोथी लोक उक्ति रस जुक्ति' दिया है, जिसको वह कहते हैं कि मैं नहीं समझता।

टि०—'लोक उक्ति रस जुक्ति' का दूसरा नाम 'लोकोक्ति रस कौमुदी' है। यह लोकोक्तियों में नायिका भेद है। इसकी रचना सं० १८०९ में हुई थी।

—सर्वेक्षण ८४८

७५९. सुमेर सिंह साहेबजादे—सुंदरी तिलक में भी।

टि०—सूदन ने 'सुमेर' कवि का उल्लेख किया है (सर्वेक्षण ९०७), न कि सुमेर सिंह साहेबजादे का। सुमेर सिंह साहेब जादे (सर्वेक्षण ९०८) भारतेन्दु युगीन कवि हैं। इनकी रचना सुंदरी तिलक में है। यह निजामाबाद जिला आजमगढ़ के रहने वाले थे और हरिऔध जो को काव्य और साहित्य की प्रेरणा देने वाले थे।

७६०. सूरज कवि

७६१. हरि कवि—भाषा-भूषण (सं० ३७७) की चमत्कार चन्द्रिका नामक टीका और कवि प्रिया (सं० १३४) की 'कविप्रियाभरण' नामक

छंदोवद्ध टीका के रचयिता। इन्होंने अमर-कोश का भी भाषानुवाद किया है। (? राग कल्पद्रुम, मिलाइए सं० १७०, ५६७, ५८९)।

टि०—यह वस्तुतः बिहार निवासी प्रसिद्ध टीकाकार हरिचरण दास (सर्वेक्षण ९९५) हैं। इन्होंने कविप्रियाभरण की रचना सं० १८३५ और चमत्कार चन्द्रिका की सं० १८३४ में की। सूदन ने इनका उल्लेख नहीं किया है। अमर कोश की टीका आजमगढ़ी हरजू (सर्वेक्षण ९८७) ने सं० १७९२ में की थी।

७६२. हितराम

टि०—हितराम ने सं० १७२२ में सिद्धांत समुद्र या श्री कृष्ण श्रुति विरदावली की रचना की थी।

—सर्वेक्षण १०००

५. कृष्णानन्द व्यासदेव (सं० ६३८) के रागसागराद्भव राग-कल्पद्रुम में उद्धृत, अतः १८४३ ई० के पूर्व स्थित कवि[१] :—

७६३. छबीले कवि—ब्रज के।

टि०—विनोद (३३२) के अनुसार छबीले का रचनाकाल सं० १७०० है।

—सर्वेक्षण २४८

७६४. जगन्नाथ दास—यह संभवतः वही हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने 'जगन्नाथ कवि, प्राचीन' नाम से किया है। देखिए सं० ६०१

टि०—जगन्नाथदास (सर्वेक्षण २८६) की जगन्नाथ कविराय छाप थी। यह अकबरी दरबार से सम्बन्धित थे। यह संगीतज्ञ कवि थे। यह उन जगन्नाथ कवि (१) प्राचीन (सर्वेक्षण २८४) से भिन्न हैं, जिनका रचनाकाल सं० १७७६ है।

७६५. जुगराज कवि—यह कुछ 'बहुत ही सरस' कविताओं के रचयिता कहे जाते हैं।

टि०—सरोज में (सर्वेक्षण २५८) इस कवि के सम्बन्ध में यह उल्लेख नहीं है कि इस कवि की रचना राग कल्पद्रुम में है।

७६६. धोंधेदास—ब्रजवासी।

टि०—विनोद के अनुसार (संख्या ३३६) इनका रचनाकाल सं० १७०० है।

—सर्वेक्षण ३८६

१. उक्त ग्रन्थ की भूमिका में उल्लिखित और इस ग्रन्थ में संख्या ६३८ पर उद्धृत अन्य अनेक नामों को भी देखिए।

७६७. नामदेव—इनकी कविताएँ सिख ग्रंथ में भी हैं। (देखिये सं० २२, १६९)

टि०—इन महाराष्ट्र वैष्णव कवि नामदेव का जन्मकाल शक सं० ११९२ (सं० १३२६ वि०) और मृत्युकाल शक सं० १२७२ (सं० १४०६ वि०) माना जाता है। सरोज में इनका उल्लेख नहीं है।

—हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ ६६

७६८. बलिराम दास—व्रजवासी।

श्रृङ्गार संग्रह में भी। संभवतः वही बलिराम, जिनका उल्लेख गार्सां द तासी ने (भाग १, पृ० १०५) मैक० (भाग २, पृष्ठ १०८) के आधार पर 'चित विलास' के रचयिता के रूप में किया है। चित विलास सृष्टि विधान सम्बन्धी ग्रंथ है। इसमें मानव जीवन का लक्ष्य और पुरुषार्थ, स्थूल और सूक्ष्म शरीर की रचना तथा मोक्ष-प्राप्ति के साधनों का वर्णन हुआ है।

टि०—कुछ निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि बलराम दास व्रजवासी ने ही चित विलास की रचना की।

७६९. बिशनदास—कुछ दृष्टिकूट सम्बन्धी दोहों के भी रचयिता एक कवि का नाम।

टि०—सरोज में पद वाले विष्णुदास (सर्वेक्षण ५२६) और कूट दोहों के रचयिता विष्णुदास (सर्वेक्षण ५२७) विभिन्न व्यक्ति स्वीकृत हैं। इनकी अभिन्नता का कोई प्रमाण नहीं। पद वाले विष्णुदास वल्लभ संप्रदाय के हैं। इनका रचनाकाल सं० १६२० और १६८० के बीच है।

७७०. भगवाम हित राम राय

टि०—इनका समय सं० १६५० के आसपास है। —सर्वेक्षण ६०४

७७१. मननिधि कवि—

टि०—सरोज में (सर्वेक्षण ६५१) यह उल्लेख नहीं है कि इनकी कविता रागकल्पद्रुम में है।

७७२. मनिकण्ठ कवि

टि०—मणिकण्ठ ने (सर्वेक्षण ६५२) बैताल पचीसी का भाषानुवाद सं० १७८२ में किया था। सरोज में इनके भी सम्बन्ध में उल्लेख नहीं है कि इनकी रचना रागकल्पद्रुम में है।

७७३. मुरारिदास—व्रजवासी।

टि०—भक्तमाल छप्पय १२८ में मुरारिदास का उल्लेख है, अतः यह सं० १६४९ के पूर्व या आसपास उपस्थित थे। —सर्वेक्षण ६४९

७७४. रसिकदास—ब्रजवासी ।

टि०—हिन्दी साहित्य में चार रसिकदास हुए हैं ।

(१) रसिकदास—हित हरिवंश के राधावल्लभीय संप्रदाय के। इनका जन्मकाल सं० १७४४-५१ है ।

(२) रसिकदास—स्वामी हरिदास के टट्टी संप्रदाय के। नरहरिदास के शिष्य ।

(३) रसिकदास, गोस्वामी हरिराय जी । इनकी अन्य छापें रसिक प्रीतम, रसिक शिरोमणि और रसिक राय भी हैं । वल्लभाचार्य के वंशज और वल्लभ संप्रदाय के । जन्म सं० १६४७, मृत्यु सं० १७७२।

(४) रसिकदास गोपिकालंकार जी महाराज—गोपिकाभट्ट के नाम से भी ख्यात । वल्लभ संप्रदाय के गोस्वामी द्वारिकेश जी के पुत्र ।

—(सर्वेक्षण ७४७)

७७५. रामराय, राठौर ।

यह राजा खेमपाल राठौर के पुत्र थे ।[1]

टि०—भक्तमाल छप्पय ११९ में रामरैन या रामराइ राठौर हैं । सरोज में (सर्वेक्षण ७३१) विवरण इनका दिया गया है, उदाहरण रामराइ सारस्वत ब्राह्मण का । कहा नहीं जा सकता रामराइ राठौर कवि थे भी अथवा नहीं। सरोज के आधार पर ग्रियर्सन में इन्हें कवि स्वीकार किया गया है । इनका समय सं० १६४९ के आसपास होना चाहिए ।

७७६. लच्छनदास कवि

मैंने ब्रजभाषा में लिखित इनके नाम की छाप वाली एक कविता मिथिला में पाई है ।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण ८१३) में यह उल्लेख नहीं है कि लक्ष्मणदास की कविता राग कल्पद्रुम में है ।

७७७. लछमन सरनदास

टि०—इस कवि का अस्तित्व ही नहीं है । सरोज में उद्धृत पद में 'दास सरन लछिमन सुत भूप' का अर्थ है—यह दास लछिमन सुत अर्थात् वल्लभाचार्य की शरण में है ।

—सर्वेक्षण ८१८

१. यह विवरण ७७६ संख्यक लच्छनदास के विवरण के नीचे प्रमाद से छप गया है।

—अनुवादक

७७८. सगुनदास कवि

टि०—यह वल्लभाचार्य के शिष्य थे। इनका रचनाकाल सं० १६०० के आसपास है। —सर्वेक्षण ९२५

७७९. स्यामनोहर कवि

टि०—इस कवि का भी अस्तित्व नहीं। सरोज में उद्धृत पद में 'श्याम मनोहर' शब्द कृष्ण का सूचक है।

—सर्वेक्षण ८९२

६. ठाकुर प्रसाद (सं० ५७०) के रस चंद्रोदय में उद्धृत, अतः १८६३ ई० के पूर्व उपस्थित कविः—

७८०. कालिका कवि—बनारस के कवि और बंदीजन कालिका। १८८३ ई० में जीवित।

सुंदरी तिलक में भी।

टि०—जब इन्हें १८८३ में जीवित स्वीकार किया गया है, फिर न जाने क्यों इस अज्ञात कालीन प्रकरण में इन्हें स्थान दे दिया गया है।

७. गोकुल प्रसाद (सं० ६९४) के दिग्विजय भूषण में उद्धृत, अतः १८६८ ई० के पूर्व उपस्थित कविः—

७८१. खान कवि

७८२. धुरंधर कवि—शृङ्गार संग्रह में भी।

७८३. नायक कवि—शृङ्गार संग्रह में भी।

टि०—नायक का नाम सूदन की प्रणम्य कवि-सूची में भी है, अतः यह सं० १८१० के पूर्व या आसपास उपस्थित थे।

—सर्वेक्षण ३९६

८. हरिश्चंद्र (सं० ५८१) के सुंदरी तिलक में उद्धृत, अतः १८६९ ई० के पूर्व उपस्थित कविः—

७८४. अलीमन कवि

७८५. कवि राम—उपनाम रामनाथ कायस्थ। शिव सिंह ने इस नाम के दो कवि दिए हैं। एक को उन्होंने १८८३ ई० में जीवित लिखा है, दूसरे को १८४१ ई० में उत्पन्न कहा है। संभवतः दोनों एक ही हैं।

टि०—ग्रियर्सन का अनुमान ठीक है। —सर्वेक्षण ९२, ९३

७८६. तुलसी स्त्री ओझा जी—जोधपुर (मारवाड़) के।
यह अच्छे शृङ्गारी कवि कहे गए हैं।

टि०—यह भारतेंदु कालीन हैं।

—सर्वेक्षण ३१७

७८७. दयानिधि—पटना के ब्राह्मण।

संभवतः वही 'दयानिधि कवि' जिनका उल्लेख शिवसिंह ने बिना तिथि के किया है। मिलाइए सं० ३६५।

टि०—कुछ कहा नहीं जा सकता कि दोनों दयानिधि एक हैं अथवा दो।

७८८. नजीब खाँ—उपनाम रसिया, महाराजा पटियाला के मंत्री।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण ७४८) में इन्हें वि० (विद्यमान) कहा गया है। फिर भी न जाने क्यों इन्हें इस अज्ञातकालीन प्रकरण में ला बिठाया गया।

७८९. नवनिधि कवि

टि०—सं० १९०५ में नवनिधिदास ने मंगल गीता नाम ग्रंथ रचा था।

—सर्वेक्षण ४०१

७९०. नवीन कवि—शृंगारी कवि।

टि०—नवीन का असल नाम गोपाल सिंह कायस्थ था। इन्होंने सं० १८९५ में 'सुधासर' नाम संग्रह ग्रंथ संकलित किया था।

—सर्वेक्षण ४००

७९१. नरेस कवि—इनकी एक मुक्तक रचना से ज्ञात होता है कि यह किसी नायिक भेद के रचयिता थे। (देखिए संख्या ८७ पर टिप्पणी)।

७९२. पारस कवि

टि०—विनोद (२२०८) में पारस को वर्तमान प्रकरण में १९२६ वि० से पूर्व के कवियों में स्थान दिया गया है।

७९३. महराज कवि—शृंगार संग्रह में भी।

टि०—विनोद (१२३४) में इन्हें सं० १८७६ से पहले का कहा गया है।

७९४. रिखिनाथ कवि—शृंगार संग्रह में भी। शृंगारी कवि।

टि०—इन्होंने सं० १८३० में अलंकार मंजरी की रचना की।

—सर्वेक्षण ७६०

७९५. सेखर कवि—शृंगारी कवि।

टि०—इनका पूरा नाम चंद्रशेखर वाजपेयी था। इनका जन्म सं० १८५५ में हुआ और मृत्यु सं० १९३२ में।

—सर्वेक्षण ९१४

७९६. हनुमान कवि—बनारस के कवि और वंदीजन।

टि०—हनुमान बनारसी का जन्म सं० १८९८ में हुआ और मृत्यु सं० १९३६ वि० में। सरोज में इन्हें 'वि०' (विद्यमान) कहा गया है, फिर भी न जाने कैसे इन्हें इस अज्ञातकालीन प्रकरण में ठेल दिया गया है।

९. महेशदत्त (संख्या ६९६) के काव्य-संग्रह में उद्धृत, अतः १८७५ ई० के पूर्व उपस्थित कवि:--

७९७. क्रिपाराम—नरायनपुर जिला गोंडा के ब्राह्मण।

इन्होंने दोहा चौपाइयों में, सरल भाषा में, संपूर्ण भागवत पुराण का अनुवाद किया था। मिलाइए सं० ३२८।

टि०—भागवत पुराण का यह भाषानुवाद सं० १८१५ में हुआ।

—सर्वेक्षण ११२

७९८. नवलदास—गुरगाँव, जिला बाराबंकी के क्षत्रिय। यह ज्ञानसरोवर नामक काव्य के रचयिता हैं। शिव सिंह द्वारा इनकी तिथि सं० १३१६ (१२५९ ई०) दी गई है, जो निश्चय ही अशुद्ध है।

टि०—शिव सिंह सरोज (सर्वेक्षण ४४०) में इनकी तिथि सं० १३१९ दी गई है। भाषा काव्य संग्रह में यह तिथि १९१३ है। पर इनका वास्तविक रचनाकाल सं० १८१७-३८ है। ज्ञानसरोवर की रचना सं० १८१८ में हुई थी।

१०. उन विभिन्न कवियों की सूची जिनको मैंने अनेक अन्य सूत्रों, मुख्यतया शिव सिंह सरोज से संकलित किया है और जिनकी तिथियाँ मैं नहीं निश्चित कर सका हूँ—

७९९. अमर जी कवि—राजपूताना के। शिव सिंह के अनुसार इनका उल्लेख टाड ने अपने राजस्थान में किया है, पर मैं खोज निकालने में असमर्थ रहा।

८००. कल्यान सिङ्घ भट्ट

८०१. कालीचरन बाजपेयी

टि०—सरोज (सर्वेक्षण १२०) में इन्हें 'वि०' लिखा गया है, फिर भी इन्हें अज्ञात कालीन प्रकरण में ढकेल दिया गया है।

८०२. काली दीन कवि—इन्होंने दुर्गा की प्रशंसा में कविताएँ अनूदित कीं।

८०३. कुंज गापी—जयपुर के गौड़ ब्राह्मण।

शृंगारी कवि।

टि०—इन्होंने उषा चरित्र की रचना सं० १८३१ में और 'पत्तल' की सं० १८३३ में की।

—सर्वेक्षण १२८

८०४. केसव राम कवि।

भ्रमरगीत नामक ग्रंथ के रचयिता, जो गार्सां द तासी के अनुसार कृष्णदास (सं० ८०६) के द्वारा लिखा गया।

टि०—कवि का नाम केशवराम (सर्वेक्षण ६६) है। भ्रमरगीत अनेक लोगों ने रचे हैं।

८०५. क्रिपाल कवि—शृंगारी कवि।

८०६. क्रिशनदास—भक्तमाल के एक टीकाकार। (देखिए संख्या ५१), देखिए गार्सां द तासी भाग १, पृष्ठ ३०२। गार्सां द तासी ने इनको एक भ्रमरगीत (देखिए सं० ८०४) नामक अन्य ग्रंथ और 'प्रेम सत्व निरूप' नामक एक अन्य धार्मिक ग्रंथ का भी रचयिता माना है।

टि०—भक्तमाल के टीकाकार कृष्णदास सरोज में नहीं हैं। ये 'भ्रमरगीत' और 'प्रेम सत्व निरूप' के रचयिता से भिन्न हैं अथवा अभिन्न, नहीं कहा जा सकता।

८०७. खान सुलतान कवि

टि०—इस कवि का अस्तित्व संदिग्ध है।

—सर्वेक्षण १४१

८०८. खुसाल पाठक—रायबरेली के। इन्होंने एक नायिकाभेद लिखा है।

टि०—सरोज में (सर्वेक्षण १४४) इस कवि का केवल नाम ग्राम है। इन्होंने नायिका भेद का भी कोई ग्रंथ लिखा, ऐसा कोई उल्लेख नहीं हुआ है। ग्रियर्सन ने ऐजन का भ्रांत अर्थ किया है। सरोज में इस कवि के विवरण में 'ऐजन' लिखा गया है, जिसका कोई अर्थ नहीं है।

८०९. खूबचंद कवि—मारवाड़ के।

इन्होंने ईडर के राजा गंभीर साहि की प्रशंसा में एक कविता लिखी है।

८१०. खेतल कवि—इन्होंने एक नायिका भेद लिखा है।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण १४३) के निरर्थक ऐजन का भ्रांत अर्थ करके इन्हें नायिका भेद का रचयिता माना गया है। यह जैन थे। इनकी छाप खेतसी, खेता, खेतल है। इसका रचनाकाल सं० १७४८ है।

८११. गंगाधर कवि—इन्होंने बिहारी सतसई की एक टीका (सं० १९६) कुंडलिया और दोहा छंदों में 'उपसतसैया' नाम से लिखी है।

८१२. गज सिह—'गज सिंह विलास' के रचयिता। (फिर भी मिलाइए सं० १९० से)।

टि०—विनोद (८३०) के अनुसार गज सिंह का रचनाकाल सं० १८०८-४४ है।

८१३. गीध कवि—इनके कुछ मुक्तक छप्पय और दोहे ही अब बचे हैं।

८१४. गुमानी कवि—पटना के। इन्होंने कुछ कविताएँ लिखी हैं, जो बिहार में हर एक की जबान पर हैं। प्रथम तीन चरण संस्कृत के हैं और चौथे चरण में हिन्दी की कोई लोकोक्ति है। इण्डियन ऐंटिक्वेरी में कुछ उदाहरण प्रकाशित हुए हैं। एक उदाहरण यह है :—

यावद्रामः शस्त्रधारी
नायातीहत्वत्संहारी
तावत्तस्मै देया नारी
ज्यों भीजे त्यों कंबल भारी

(मन्दोदरी रावण से कहती है)

(संस्कृत) इसके पहले कि शस्त्रधारी राम तुमसे युद्ध करने के लिए यहाँ आवें, उनकी पत्नी उन्हें दे दो (क्योंकि)

(हिन्दी) जैसे-जैसे कमली भींगती है, वैसे-वैसे वजनी होती जाती है।

८१५. गुलामराम कवि—इनकी कविताएँ अच्छी कही जाती हैं।

टि०—संभवतः यह मिरजापुर के प्रसिद्ध रामायणी रामगुलाम द्विवेदी हैं, जो सं० १८७४ में विद्यमान थे। —सर्वेक्षण १९३

८१६. गुलामी कवि—इनकी कविताएँ अच्छी कही जाती हैं।

टि०—यह गुलामी कवि ऊपर वर्णित गुलाम राम कवि से अभिन्न हैं।
—सर्वेक्षण १९३, १९४

८१७. गोसाँई कवि—राजपूताना के। इनके नीति सम्बन्धी सामयिक दोहे अच्छे हैं।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण १९६) में इन्हें सं० १८८२ में उ० कहा गया है, फिर भी अज्ञातकाल में इस कवि को ला पटका गया है।

८१८. गोपालराय कवि—इन्होंने कुछ छन्द नरेन्द्र लाल साहि और आदिल खाँ की प्रशंसा में लिखे हैं।

टि०—गोपालराय वृन्दावन के थे और गौड़ीय संप्रदाय के वैष्णव थे। यह

पटियाला नरेश महाराज नरेन्द्र सिंह के दरबार से सम्बन्धित थे। इनका रचनाकाल सं० १८८५-१९०७ वि० है।

—सर्वेक्षण १६८

८१९. गोपाल सिङ्घ—व्रजवासी। इन्होंने 'तुलसी शब्दार्थ प्रकाश' लिखा है। इसमें अष्टछाप का वर्णन है। देखिए संख्या ३५।

टि०—इस कवि के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता। हाँ, एक जयगोपाल सिंह अवश्य हुए हैं, इन्होंने भी तुलसी शब्दार्थ प्रकाश नाम ग्रंथ सं० १८७४ में लिखा था; पर इस तुलसी शब्दार्थ प्रकाश का अष्टछाप से कोई सम्बन्ध नहीं। यह विविध ज्ञान सम्बन्धी ग्रंथ है। यह जयगोपाल सिंह बनारस के दारानगर मुहल्ले के रहने वाले थे।

—सर्वेक्षण २०९

८२०. गोविन्द राय—राजपूताना के वन्दीजन। यह हाड़ावती नामक ग्रंथ के रचयिता हैं। यह हाड़ावंश का इतिहास है। (मिलाइए, टाड का राजस्थान भाग २, पृष्ठ ४५४; कलकत्ता संस्करण भाग २, पृष्ठ ४९९)।

टि०—विनोद (१०८) में इन गोविन्दराय का जन्मकाल सं० १६०९ दिया गया है।

८२१. घासी भट्ट

८२२. चक्र पानि—मैथिल कवि। (देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बङ्गाल, जिल्द ५३, पृष्ठ ९१)।

८२३. चतुरभुज—मैथिल कवि (देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बङ्गाल, जिल्द ५३, पृष्ठ ८७)।

८२४. चोखे कवि—शिव सिंह कहते हैं कि इनकी कविताएँ 'चोखी' हैं।

८२५. छत्तन कवि

८२६. जगनेस कवि

८२७ जनारदन भट्ट—इन्होंने 'वैद्यरत्न' नामक औषधि का ग्रंथ लिखा है।

टि०—वैद्य रत्न का रचनाकाल सं० १७४९ माघ सुदी ६ है।

—सर्वेक्षण २७९

८२८. जयानंद—यह मैथिल कवि थे, जाति के करन कायस्थ थे। (देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ५३, पृष्ठ ८५)

८२९. जुगुल परसाद चौबे—इन्होंने एक अच्छी दोहावली लिखी है।

८३०. जै क्रिशन कवि—यह कवि भवानीदास के पुत्र थे। मिलाइए संख्या ६८३। इन्होंने छंद सार नामक पिंगल ग्रंथ रचा है।

टि०—छंद सार का रचनाकाल सं० १७७६ वि० है ।

—सर्वेक्षण २७४

८३१. जै सिङ्घ कवि—श्रृङ्गारी कवि ।

८३२. टहकन कवि—पंजाबी । इन्होंने संस्कृत से भाषा में 'पांडव के यज्ञ' नामक ग्रंथ का अनुवाद किया है ।

टि०—टहकन ने 'अश्वमेध भाषा' की रचना सं० १७२६ में की ।

—सर्वेक्षण ३१०

८३३. ठाकुरराम कवि—शांत रस के कवि ।

८३४. डाक—खेती संबंधी कवि । [देखिए घाघ सं० २१७ और मिलाइए 'बिहार पीज़ैंट लाइफ़']

८३५. ढाकन कवि

८३६. दयादेव कवि—श्रृङ्गार संग्रह में भी ।

टि०—सूदन की प्रणम्य कवि सूची में इनका नाम है, अतः यह सं० १८१० के आसपास या पूर्व उपस्थित थे ।

८३७. दान कवि—श्रृङ्गारी कवि ।

८३८. दिलीप कवि

टि०—दिलीप ने सं० १८५९ में रामायण टीका नाम ग्रंथ लिखा ।

—सर्वेक्षण ३७६

८३९. देवनाथ कवि

टि०—सं० १८४० में इन्होंने 'सगुन विलास' की रचना की ।

—सर्वेक्षण ३७२

८४०. देवमनि कवि—चाणक्य राजनीति के प्रथम १६ अध्यायों का भाषा में भाष्य किया है (राग कल्पद्रुम, मिलाइए सं० ५७४, ९१९) ।

टि०—सं० १८२४ के आसपास या पूर्व उपस्थित ।

—सर्वेक्षण ३७४

८४१. देवी कवि—श्रृंगारी कवि । देवी शब्द से प्रारंभ होनेवाले अनेक कवियों में से संभवतः एक ।

८४२. देवीदत्त कवि—सामयिक एवं शांत रस की रचना करनेवाले कवि ।

टि०—इन्होंने सं० १८१२ में बैताल पचीसी का भाषानुवाद किया ।

—सर्वेक्षण ३६६

८४३. देवी सिङ्घ कवि—श्रृङ्गार संग्रह में भी ।

टि०—इन्होंने सं० १७२१ में शृङ्गार शतक की रचना की। यह भूषण के आश्रयदाता थे।

—सर्वेक्षण ३७९

८४४. द्विजनंद कवि

८४५. नजामी—बैसवाड़ी बोली में लिखित, इनके नाम की छाप से युक्त, एक छोटी कविता मैंने मिथिला में सुनकर संकलित की है। इसके अतिरिक्त मुझे इस कवि के संबंध में और कुछ नहीं मालूम।

८४६. नंदराम कवि—शांत रस के कवि।

टि०—इन्होंने सं० १७४४ में कलियुग वर्णन संबंधी नंदराम पचीसी नाम ग्रंथ लिखा।

—सर्वेक्षण ४२७

८४७. नंदीपति—मैथिल कवि, देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ५३, पृष्ठ ७९।

८४८. नबी कवि—शृंगार संग्रह में भी। एक सुंदर नखशिख के रचयिता।

८४९. नवल किशोर कवि—कोई विवरण नहीं। यह संभवतः 'नवल' से प्रारंभ होने वाले अन्य अनेक कवियों में से एक हैं और संभवतः वही हैं, जिनका उल्लेख शिवसिंह ने 'नवल कवि' के नाम से किया है और कोई तिथि नहीं दी है।

टि०—दोनों कवि भिन्न-भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ४३७, ४३८

८५०. नाथ—शृंगार संग्रह में भी। कई कवि जैसे काशीनाथ (सं० १३९), उदयनाथ (सं० ३३४), शिवनाथ (सं० ६३२) आदि नाथ छाप से लिखते हैं, जिसने बड़ी गड़बड़ी उत्पन्न कर दी है। मिलाइए संख्या ६८, १४७, १६२, ४४०, ६३२।

८५१. नेही कवि

टि०—दलपतराय वंशीधर के 'अलंकार रत्नाकर' में इनकी कविता उदाहृत है, अतः यह सं० १७९८ के पूर्व या आसपास उपस्थित थे।

—सर्वेक्षण ३९२

८५२. नैन कवि

८५३. पखाने कवि

टि०—इस नाम का कोई कवि नहीं हुआ। राय शिवदास की कविता में लोकोक्ति के अर्थ में 'पखाने' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसे कवि छाप समझ

लिया गया है। कविता राय शिवदास के 'लोकोक्ति रस कौमुदी' ग्रन्थ की है।

—सर्वेक्षण ४८२

८५४. परधान केशवराय कवि—इन्होंने पशु चिकित्सा संबंधी 'शालि होत्र' नामक ग्रंथ लिखा है। (रागकल्पद्रुम)। यह संभवतः वही हैं, जिन्हें शिव सिंह ने बिना तिथि अथवा तथ्य दिए हुए 'प्रधान कवि' नाम से उल्लिखित किया है।

टि०—प्रधान केशवराय, प्रधान कवि से भिन्न हैं। प्रधान कवि तो रामनाथ प्रधान के लिए प्रयुक्त हुआ है।

—सर्वेक्षण ४६२

८५५. परमल्ल—यह संकर के पुत्र और श्रीपाल चरित्र नामक जैन ग्रंथ के रचयिता थे। देखिए गार्सां द तासी, प्रथम भाग, पृष्ठ ४०१; मिलाइए वही, प्रथम भाग, पृष्ठ ५२०।

८५६. पुरान कवि

८५७. पुश्कर कवि—रस रत्न नामक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—'रस रतन' साहित्य ग्रंथ न होकर, एक उत्पाद्य प्रेम कहानी है। इसकी रचना सं० १६७३ में हुई थी।

—सर्वेक्षण ४८३

८५८. पुरन चन्द जूथ—'राम रहस्य' रामायण बनाई है।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण ४८९) में इनका नाम 'पूथ पूरनचन्द' दिया गया है। 'पूथ' को 'यूथ' समझकर 'जूथ' कर दिया गया है।

८५९. प्रेम केश्वर दास—भागवतपुराण के बारहवें स्कंध का भाषानुवाद करने वाले। गार्सां द तासी (प्रथम भाग, पृष्ठ ४०४) के अनुसार इंडिया आफ़िस लाइब्रेरी में इसकी एक प्रति है।

८६०. फेरन कवि

टि०—फेरन रीवाँ नरेश महाराज विश्वनाथ सिंह जू देव (शासनकाल सं० १८९२-१९११) के दरबारी कवि थे। इनका रचनाकाल सं० १९२० है।

—सर्वेक्षण ४९१

८६१. बकसी कवि—संभवतः वही जिनका रागकल्पद्रुम की भूमिका में बकसू नाम से उल्लेख हुआ है।

टि०—बकसी रीतिकालीन कोई कायस्थ कवि हैं। बकसू तानसेन से भी पहले के कोई संगीतज्ञ कवि हैं। दोनों भिन्न-भिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ५७५

८६२. बजरंग कवि

८६३. बदन कवि

टि०—बदन कवि ने सं० १८०९ में 'रसदीप' की रचना की थी।

—सर्वेक्षण ५६०

८६४. बंसीधर मिसर—संडीला के। शांत रस के कवि।

टि०—सरोज में इनको 'सं० १६७२ में उ०' कहा गया है। यह इनका उपस्थिति काल है। महेशदत्त के अनुसार यह इनका मृत्युकाल है। न जाने कैसे ग्रियर्सन ने सरोज के इस स-तिथि कवि को अ-तिथि बना दिया।

—सर्वेक्षण ५२५

८६५. बरग राय—गोपाचल कथा या ग्वालियर का इतिहास नामक ग्रंथ के रचयिता। देखिए गार्सां द तासी, भाग १, पृष्ठ ५१८

८६६. बाबू भट्ट कवि

८६७. बिदुख कवि—कृष्ण लीला वर्णन करने वाले कवि।

८६८. बिंदादत्त कवि—शृंगारी कवि।

८६९. बिसंभर कवि—शृङ्गारी कवि।

८७०. बिसेसर कवि

८७१. बुद्धसेन कवि

८७२. बुद्ध सिङ्घ—पंजाबी। माधवानल या माधोनल की आख्यायिका का भाषा में श्रेष्ठ अनुवाद करनेवाले। (मिलाइए सं० २१६, ६२९)

८७३. बुलाकीदास—घाटो अथवा विशेष रूप से चैत के महीने में गाए जानेवाले, भोजपुरी बोली में रचित, बहुत से गीतों के कर्ता। देखिए, 'सम भोजपुरी सांग्स'—जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, अंक २८.

८७४. बेनीमाधव भट्ट—

टि०—बेनीमाधव भट्ट उपनाम 'प्रवीण' संवत १७९८ के पूर्व उपस्थित थे।

—सर्वेक्षण ५८२

८७५. बैन कवि

८७६. बोधीराम कवि

८७७. ब्रजमोहन कवि—शृङ्गारी कवि।

८७८. ब्रजेस कवि—बुन्देलखडी।

टि०—इनका जन्म सं० १७६० में हुआ। यह ओरछे के रहने वाले थे। इनका रचना काल सं० १७९० है।

—सर्वेक्षण ५२९

८७९. ब्रिन्द कवि

टि०—नीति के दोहों वाले प्रसिद्ध वृन्द का जीवन काल सं० १७००-८० है।

—सर्वेक्षण ५६६

८८०. भगवानदास निरंजनी—इन्होंने भर्तृहरि शतक का 'भर्तृहरि सत' नाम से भाषानुवाद किया था।

टि०—इन्होंने केवल वैराग्य शतक का अनुवाद किया है। इनका रचना काल सं० १७२८-५६ है।

—सर्वेक्षण ६०३

८८१. भंजन—मैथिल कवि। देखिए, जर्नल आफ़ रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, अंक ५२, पृष्ठ ९०,

८८२. भड्डुर—कृषि सम्बन्धी कवि। देखिए घाघ सं० २१७ और मिलाइए 'बिहार पीज़ैंट लाइफ़'। परम्परा से यह ज्योतिषी माने जाते हैं और कहा जाता है कि यह शाहाबाद जिले के रहनेवाले थे। इनके सम्बन्ध में अनेक जन-श्रुतियाँ प्रचलित हैं।

८८३. भोलानाथ—कन्नौज के ब्राह्मण।

इन्होने बैताल पचीसी का छन्दोबद्ध अनुवाद किया (राग सागर)।

८८४. मंगद कवि

८८५. मनसाराम कवि—श्रृङ्गार संग्रह में भी। नायिका भेद के रचयिता। यह सभवतः वही हैं, जिन्हें शिव सिंह ने 'मनसा कवि' नाम से उल्लिखित किया है और अनुप्रासों का कुशल प्रयोक्ता कहा है।

टि०—ग्रियर्सन का अनुमान ठीक है।

—सर्वेक्षण ६३९, ६४०

८८६. मनीराय कवि—श्रृङ्गारी कवि।

८८७. मन्य कवि—श्रृङ्गारी कवि।

८८८. मनोहरदास निरंजनी—ज्ञान चूर्ण बचनिका नामक वेदांत ग्रंथ के रचयिता।

टि०—ज्ञानचूर्ण बचनिका का मूल नाम 'ज्ञान वचन चूर्णिका' है। इन्होंने सं० १७१६ में ज्ञानमंजरी की रचना की थी।

—सर्वेक्षण ७११

८८९. महताब कवि—एक प्रशंसित नखसिख के रचयिता।

८९०. महिपति—मैथिल कवि। देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ५३, पृष्ठ ८४।

८९१. मानिकदास कवि—मथुरा के। इन्होंने 'मानिक बोध' नामक कृष्ण-लीला का ग्रंथ रचा।

८९२. मीरन कवि—शृङ्गार-संग्रह में भी। एक सुप्रसिद्ध नखशिख के रचयिता।

८९३. मुनिलाल कवि

टि०—यह प्रसिद्ध कवि असोथर वासी मून हैं। सरोज में (सर्वेक्षण ६४१) इन्हें सं० १८६० में उ० कहा गया है।

—सर्वेक्षण ६९४

८९४. मुसाहिब—बिजावर के राजा। इन्होंने विनय पत्रिका (देखिए सं० १२८) और रसराज (देखिए सं० १४६) की टीकाएँ लिखी हैं।

टि०—मुसाहिब बिजावर के राजा नहीं थे, बिजावर के राजा के मुसाहिब थे। इनका नाम पंडित लक्ष्मीप्रसाद था। इन्होंने सं० १९०९ में शृङ्गार कुंडली की रचना की थी। इनका रचनाकाल सं० १९०४-५६ है।

—सर्वेक्षण ७१०

कुछ पता नहीं कि इन्होंने विनय पत्रिका और रसराज की टीकाएँ की थीं अथवा नहीं।

८९५. मून—असोथर, गाजीपुर के ब्राह्मण। अनेक ग्रंथों के रचयिता, जिनमें 'राम रावण का युद्ध' का उल्लेख किया जा सकता है।

टि०—सरोज में इन्हें 'सं० १८६० में उ०' लिखा गया है, फिर भी इन्हें अ-तिथि बना दिया गया है। यह ८९३ संख्यक मुनिलाल से अभिन्न हैं।

—सर्वेक्षण ६४१

८९६. रघुराम—गुजराती, अहमदाबाद वाले। 'माधव विलास' नामक ग्रंथ के रचयिता। (? राग कल्पद्रुम, मिलाइए संख्या ६२९)।

टि०—रघुराम गुजराती ने सं० १७५७ में 'सभासार नाटक' नाम ग्रंथ रचा था।

—सर्वेक्षण ७८७

८९७. रघुलाल कवि—शृंगारी कवि।

८९८. रजब कवि—शृंगार संग्रह में भी। दोहों के सुप्रसिद्ध रचयिता।

टि०—रजब का जन्म सं० १६२४ में एवं देहावसान सं० १७४६ में हुआ।

—सर्वेक्षण ७७७

८९९. रतनपाल कवि—नीति संबंधी अनेक दोहों के रचयिता।

टि०—इनके दरबारी कवि देबी ने सं० १७४२ में प्रेम रत्नाकर की रचना की थी।

—सर्वेक्षण ७६८

९००. रमापति—(!) शृङ्गार संग्रह में भी। मैथिल कवि। देखिए, जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, जिल्द ५३, पृष्ठ ८३।

९०१. रसपुंजदास—दादू पंथी। 'प्रस्तार प्रभाकर' और 'वृत्त बिनोद' नामक दो अच्छे पिंगल ग्रंथों के रचयिता।

टि०—'प्रस्तार प्रभाकर' का रचनाकाल स० १७८१ है।

—सर्वेक्षण ७५४

९०२. रामचरन—गनेशपुर जिला बाराबंकी के ब्राह्मण। कायस्थ कुलभास्कर नामक संस्कृत ग्रंथ एवं कायस्थ धर्म दर्पण नामक भाषा ग्रंथ के रचयिता।

टि०—यह अयोध्या के महन्त थे। इनका रचनाकाल सं० १८४१-८१ है।

—सर्वेक्षण ७३२

९०३. रामदत्त कवि।

टि०—सं० १८५५ में इन्होंने दान लीला नाम ग्रंथ रचा था।

—सर्वेक्षण ७८५

९०४. रामदया कवि—'राग माला' नामक ग्रन्थ के रचयिता (राग कल्पद्रुम)। मिलाइए संख्या ४००।

९०५. रामदेव सिङ्घ—खड़ासा के सूर्यवंशीय क्षत्रिय।

टि०—सरोज में इन्हें रामसिंह देव कहा गया है।

—सर्वेक्षण ७२५

९०६. रामनाथ मिसर—आजमगढ़ के।

टि०—यह सं० १९६४ में उपस्थित थे।

—सर्वेक्षण ७८८

९०७. रामबख्श—उपनाम राम कवि। यह सिरमौर के राना के दरबारी कवि थे। यह भाषा साहित्य के एक ग्रंथ एवं बिहारी सतसई (सं० १९६) की एक टीका के रचयिता हैं।

९०८. रामलाल कवि

९०९. रामसखे कवि—ब्राह्मण। 'नृत्य राघव मिलन नाटक' के रचयिता।

टि०—'नृत्य राघव मिलन' का रचनाकाल सं० १८०४ है।

—सर्वेक्षण ७२८

९१०. रामसेवक कवि—ध्यान चिंतामणि नामक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—रामसेवक सतनामी संप्रदाय के थे। इनका समय सं० १८१७-८६ के बीच है।

—सर्वेक्षण ७८४

९११. रमाकांत—मैंने इसी कवि के समझ कर मिथिला में ब्रजभाषा के कुछ गीत एकत्र किये हैं।

९१२. रायचंद कवि—गुजरात के अंतर्गत नागौर के निवासी। शिव सिंह के अनुसार मुर्शिदाबाद के जगत सेठ राजा डालचंद के दरबारी कवि। (१) गीत गोविंदादर्श (गीत गोविंद का अनुवाद) तथा (२) लीलावती (राग कल्पद्रुम) नामक दो विद्वतापूर्ण ग्रंथों के रचयिता। मुर्शिदाबाद में एक राजा डालचंद थे, जो राजा शिवप्रसाद (सं० ६९९) के पितामह थे। संभवतः यही शिव सिंह द्वारा उल्लिखित व्यक्ति हैं।

टि०—गीतगोविंदार्श की रचना सं० १८३१ में हुई।

—सर्वेक्षण ७८०

ऊपर दिए सारे विवरण एवं अनुमान ठीक हैं।

९१३. राय जू कवि—शृंगारी कवि। संभवतः यह शिवसिंह द्वारा उल्लिखित शृङ्गारी 'राय कवि' भी हैं।

टि०—ग्रियर्सन का अनुमान ठीक है।

९१४. लछुमन कवि—इन्होंने पशु चिकित्सा संबंधी शालिहोत्र नाम ग्रंथ लिखा है।

टि०—इन लक्ष्मण का रचनाकाल सं० १९००-०७ है।

—सर्वेक्षण ८२९

९१५. लछुमन सिङ्घ—शृङ्गारी कवि।

टि०—सरोज में इन्हें 'सं० १८१० में उ०' कहा गया है।

९१६. लक्ष्मी कवि—शिव सिंह के अनुसार इनका नामोल्लेख सूदन ने किया है।

टि०—अतः लक्ष्मी कवि सं० १८१० के आसपास या इसके कुछ पूर्व उपस्थित थे।

—सर्वेक्षण ८२९

९१७. ललितराम कवि

९१८. लाजव कवि

९१९. लालकवि—इन्होंने चाणक्य राजनीति (राग कल्पद्रुम) का भाषानुवाद किया। मिलाइए, संख्या ५२५, ५७४ और ८४०।

९२०. लालचंद कवि—दृष्टिकूटात्मक कवित्तों और कुंडलियों के रचयिता।

९२१. लोकमनि कवि—शिवसिंह का कहना है कि सूदन ने इनका उल्लेख किया है।

टि०—अतः इनका समय सं० १८१० के पूर्व या आसपास होना चाहिए।

—सर्वेक्षण ८२८

९२२. लोने कवि—बुंदेलखण्डी वन्दीजन। श्रृङ्गारी कवि।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण ८१०) में इन्हें 'सं० १८७६ में उ०' कहा गया है।

९२३. वजहन—शांत रस के वेदांत संबंधी दोहों के रचयिता।

९२४. वहाब—एक प्रख्यात बारहमासा के रचयिता।

९२५. वाहिद कवि—श्रृङ्गारी कवि।

९२६. सत्रुजीत सिङ्घ—बुंदेलखंड के अंतर्गत दतिया के बुन्देला राजा। रसराज की टीका के रूप में एक अलंकार ग्रन्थ के रचयिता। (सं० १४६)।

टि०—रसराज की टीका शत्रुजीत सिंह के दरबारी कवि बखतेस ने सं० १८२२ में बनाई थी।

—सर्वेक्षण ९४५

९२७. सबल स्याम कवि

टि०—इनका जन्म सं० १६८८ में हुआ था।

—सर्वेक्षण ८९५

९२८. संभुनाथ मिसर—मुरादाबाद जिला उन्नाव के।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण ९५३) में इन्हें गंज मुरादाबाद वाले कहा गया है। विनोद (११९७) के अनुसार इनका रचना काल सं० १८६७ है।

९२९. संभु परसाद कवि—श्रृङ्गारी कवि।

९३०. सरस राम—सुन्दर नामक राजा के दरबारी, मैथिल कवि। देखिए जर्नल आफ़ एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, अंक ५३, पृष्ठ ८७। संभवतः यह सुन्दर तिरहुत के राजा सुन्दर ठाकुर थे, जो १६४१ ई० में गद्दी पर बैठे और १६६६ ई० में दिवंगत हुए।

९३१. ससिनाथ कवि—श्रृङ्गारी कवि।

टि०—यह प्रसिद्ध सोमनाथ चतुर्वेदी हैं। यह सवैयों में शशिनाथ छाप रखते थे। इनका रचना काल सं० १७९४-१८१२ है।

—सर्वेक्षण ९१७, ९१६

९३२. सिवराज—जयपुर के ।

(?) श्रृङ्गार संग्रह में भी। एक लेखक जिनके सम्बन्ध में गार्सों द तासी (भाग १, पृष्ठ ४७६) यह लिखता है—"रतनमाला नामक ग्रन्थ के लिए, जिसको वार्ड ने अपने 'हिस्ट्री आफ़ द हिंदूज़' भाग २, पृष्ठ ४८१ पर उद्धृत किया है, हम इनके ऋणी हैं। मैं नहीं जानता कि यह वही ग्रन्थ है अथवा नहीं, जिसका उपयोग विलसन ने अपने कोश में किया है। यह कोश वानस्पतिक और खनिज औषधियों की संस्कृत हिंदी नाम-सूची है। वार्ड द्वारा उल्लिखित एक अन्य ग्रन्थ शिवसागर के लिए भी हम इनके ऋणी हैं।' रचयिता का उल्लेख शिव सिंह सरोज में भी हुआ है।

टि०—सरोज में इस विवरण के किसी कवि का उल्लेख नहीं। सरोज (सर्वेक्षण ८५१) में एक शिवराज हैं, जिन्हें 'सामान्य कवि' कहा गया है और कोई विवरण नहीं दिया गया है।

९३३. सुजान कवि—श्रृङ्गारी कवि।

टि०—घनानंद-प्रिया सुजान राय। सं० १८०० के आसपास उपस्थित।

—सर्वेक्षण ९११

९३४. सुन्दर कवि—असनी जिला फतेहपुर के भाट और कवि। रस प्रबोध नामक ग्रन्थ के रचयिता।

९३५. सुलतान कवि—श्रृङ्गारी कवि।

९३६. सोभ कवि—श्रृंगारी कवि।

टि०—इस कवि का अस्तित्व नहीं सिद्ध होता।

—सर्वेक्षण ८९७

९३७. सोभनाथ कवि

टि०—यह प्रसिद्ध सोमनाथ चतुर्वेदी ही हैं। इनका रचनाकाल सं० १७९४-१८१२ है। इन्हीं का उल्लेख पीछे ससिनाथ (सं० ९३१) नाम से भी हुआ है। 'म' का 'भ' हो जाने से इस कवि की सृष्टि हो गई है।

—सर्वेक्षण ८९८

९३८. हनुमन्त कवि—राजा भानुप्रताप के दरबारी कवि।

टि०—भानुप्रताप बिजावर के राजा (शासन काल १९०४-५६) थे। यही हनुमंत का भी समय है।

—सर्वेक्षण ९७६

९३९. हरचरनदास कवि—बृहत्कवि-वल्लभ नामक भाषा साहित्य के एक ग्रंथ के रचयिता।

टि०—वृहत्कवि-वल्लभ का रचना काल सं० १८३९ है। इसका उल्लेख पीछे ७६१ संख्या पर हरि कवि नाम से हो चुका है।

—सर्वेक्षण ९९५

९४०. हरजीवन कवि

टि०—१९३८ के आस पास उपस्थित गुजराती कवि।

—सर्वेक्षण ९८५

९४१. हरदयाल कवि—श्रृङ्गारी कवि

९४२. हरिचंद कवि—व्रज के अंतर्गत बरसाना के निवासी। छंद स्वरूपिणी पिंगल ग्रंथ के रचयिता।

९४३. हरिदेव कवि—व्रज के अन्तर्गत वृन्दावन के बनिया। छंद पयोनिधि नामक पिंगल ग्रंथ के रचयिता।

टि०—इनका रचना काल सं० १८९२–१९१४ है।

—सर्वेक्षण ९६३

९४४. हरि वल्लभ कवि—शांत रस के कवि।

टि०—हरिवल्लभ जी ने सं० १७०१ माघ ११ को श्रीमद्भगवद्गीता की टीका प्रस्तुत की थी।

—सर्वेक्षण ९७२

९४५. हरिभानु कवि—नरिन्द्र भूखन नामक भाषा साहित्य के एक ग्रंथ के रचयिता।

९४६. हरिलाल कवि—श्रृङ्गार संग्रह में भी। यह संभवतः शिव सिंह द्वारा बिना तिथि दिए श्रृंगारी कवि के रूप में स्वीकृत दूसरे हरिलाल कवि भी हैं।

९४७. हितनन्द कवि—सम्भवतः वही, जिनका उल्लेख रागकल्पद्रुम की भूमिका में हितआनन्द नाम से हुआ है।

९४८. हीरालाल कवि—श्रृङ्गारी कवि।

टि०—इन्होंने सं० १८३९ में राधाशतक नाम ग्रन्थ रचा।

सर्वेक्षण ९९३

९४९. हुलासराम कवि—सालिहोत्र (रागकल्पद्रुम) नाम पशु चिकित्सा सम्बन्धी ग्रंथ के लेखक। सम्भवतः यह हुलास नाम श्रृङ्गारी कवि के रूप में शिवसिंह द्वारा उल्लिखित कवि भी हैं।

टि०—सरोज के दूसरे हुलास (सर्वेक्षण ९९४) अस्तित्व हीन कवि हैं।

९५०. हेम कवि—श्रृङ्गार संग्रह में भी। श्रृङ्गारी कवि।

९५१. हेम गोपाल कवि—एक कूट छन्द के रचयिता। इनका यही एक छन्द उपलब्ध है।

टि०—सरोज (सर्वेक्षण ९८१) में इन्हें 'सं० १७८० में उ०' कहा गया है।

९५२. हेमनाथ कवि—यह केहरी के कल्यान सिंह के दरबारी कवि थे।

टि०—सरोज में इनका यह विवरण है—'केहरी कल्यान सिंह के यहाँ थे।' स्पष्ट है केहरी स्थान का सूचक नहीं है। ग्रियर्सन ने तृतीय अनुक्रमणिका में भी इस शब्द को स्थान दिया है। स्पष्ट ही वे इसे स्थान-सूचक समझते थे।

हेमनाथ सं० १८७५ के पूर्व किसी समय वर्तमान थे।

—सर्वेक्षण ९८२

अनुक्रमणिका १

व्यक्ति-नाम

[यह अनुक्रमणिका पूर्णतः नए सिरे से तैयार की गई है और मूल का अनुवाद नहीं है। मूल अनुक्रमणिका में १५६४ नाम थे। यहाँ केवल उन कवियों की अनुक्रमणिका दी गई है, जिनका विवरण इस ग्रंथ में है। जिन व्यक्तियों या कवियों के विवरण में केवल नामोल्लेख हुआ है, उनका नाम इसमें सन्निविष्ट नहीं है। मूल अनुक्रमणिका आंग्ल वर्णानुक्रमसे थी और पर्याप्त भ्रष्ट भी थी।

इस कवि नामानुक्रमणिका के साथ सरोज और ग्रियर्सन के संवतों की तुलनात्मक तालिका भी प्रस्तुत कर दी गई है, जिससे इस ग्रंथ पर सरोज का आभार सहज ही विदित हो सके। इस तालिका का उपयोग निम्नांकित बातें जान कर किया जा सकता है—

(१) कवि के आगे जो अंक है, उसी संख्या पर उसका विवरण ग्रियर्सन में है। यह पृष्ठ संख्या नहीं है, कवि संख्या है। इसी प्रकार तृतीय स्तंभ में पहली संख्या सरोज में उक्त कवि की संख्या है। उक्त संख्याओं पर कवि उक्त ग्रंथों में ढूँढ़ा जा सकता है।

(२) ग्रियर्सन के बहुत से कवि सरोज के अनुसरण पर हैं, पर या तो ये एक ही कवि के द्वितीय रूप हैं अथवा अस्तित्व हीन कवि हैं। ऐसे कवियों को कोष्टक में घेर दिया गया है, इनकी संख्या ४३ है। जो कवि किसी दूसरे कवि के प्रतिरूप हैं, उनके नाम के सामने उसी स्तंभ में उस कवि की संख्या भी लिख दी गई है जिसके वे प्रतिरूप हैं। जो अस्तित्वहीन कवि हैं, उनके नाम के आगे उसी स्तंभ में कोई संख्या नहीं दी गई है।

(३) ग्रियर्सन में कुछ ऐसे भी कवि हैं, जिनका अस्तित्व संदिग्घ है। उनके नामों के आगे कोष्टक के भीतर सन्देह सूचक चिह्न (!) लगा दिया गया है। ऐसे कवि संख्या में ५ हैं।

(४) ग्रियर्सन में ईस्वी सन प्रयुक्त हुआ है और सरोज में विक्रमी। सरोज के कुछ संवत् ईस्वी भी हैं। जहाँ वे ईस्वी सिद्ध हुए हैं, 'ई०' लिख दिया गया है। सरोज के संवत् सर्वेक्षण से जो कुछ भी सिद्ध हुए हैं, वह भी संक्षेप में

लिख दिया गया है। तुलना करके जाना जा सकता है कि ग्रियर्सन ने सरोज के संवत् को किस अर्थ में ग्रहण किया है और वह कहाँ तक ठीक है।

(५) संक्षेपण चिह्नों का निहित अर्थ यह है—

अ० = अशुद्ध

उप = (१) उपस्थितिकाल (२) यदि ग्रियर्सन प्रकरण में कोई सन् नहीं दिया गया है, तो इसका अर्थ हुआ कि सरोज का संवत् ग्रियर्सन में उपस्थितिकाल माना गया है।

ग्र = उक्त सन में कोई ग्रंथ रचा गया।

ज = (१) ग्रियर्सन प्रकरण में यदि कोई सन् नहीं दिया गया है, तो 'ज' का अर्थ हुआ कि सरोज का संवत् ग्रियर्सन में जन्मकाल के रूप में स्वीकृत हुआ है। (२) जन्मकाल।

म = मृत्युकाल

रा = राज्यकाल

वि० = विद्यमान, ग्रियर्सन प्रकरण में १८८३ ई० में, सरोज प्रकरण में १८७८ ई० में।

सं० = ग्रियर्सन कुछ निश्चय नहीं कर सके कि सरोज के संवत् को जन्मकाल मानें या उपस्थितिकाल।

× = कोई संवत नहीं दिया गया है।

—अनुवादक]

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
१. अंव्रर	५५१/ज	४८/१९१० उप
२. अम्बिकादत्त व्यास	७०४/वि०	
३. अंबिका प्रसाद	७३८/वि०	
४. अंबुज	६५५/ज	१२/१८७५ उप
५. अकबर	१०४/१५५६-१६०५ रा	१/१५८४ ई० उप
६. अक्षर अनन्य	२७७/ज	३०/१७१० ज
७. अग्रदास	४४/१५७५ उप	३५/१५९५ उप
८. (अजबेस प्राचीन) ५३०	२४/ज	२/१५७० अ०
९. अजबेस नवीन	५३०/१८३० उप	३/१८९२ उप
१०. अजीत सिंह	१९५/१६८१ ज १७२४ म	४७/१७८७ अ०
११. अनन्त	२५०/ज	२४/१६९२
१२. (अनन्य) २७७	४१८/ज	१५/१७९० उप
१३. (अनन्य दास चकदेवा) २७७	५/११४८ ज	३६/१२२५ अ०
१४. अनवर खाँ	३९७/ज	४३/१७८० उप
१५. अनाथ दास	२८७/ज	२९/१९१६ उप
१६. अनीस	६८७/ज	२७/१९११ अ०
१७. अनुनैन	६७३/ज	२८/१८९६
१८. अनूपदास	४३६/ज	१८/१८०१
१९. अबुल फ़ज़ल, फ़हीम	१११/१५५० ज	४९६/१५८० ई० उप
२०. अब्दुल फ़ैज़, फ़ैजी	११०/१५४७ ज	४९५/१५८० ई० उप
२१. अब्दुर्रहिमान	१८२/ज	३२/१७३८ ई० उप
२२. अब्दुर्रहीम खानखाना	१०८/१५५६ ज	१३८/१५८० ई० उप
२३. अब्दुल जलील	१७९/ज	२९७/१७३९ उप
२४. अभयराम	६४/ज	२०/१६०२
२५. अभिमन्यु	२२९/ज	२३/१६८० उप
२६. अमर जी राजपूताना वाले	७९९/×	४६/×
२७. अमरदास	२८१/ज	३३/१७१२ ज
२८. अमर सिंह	१९१/१६३४ उप	३८/१६२१ अ०
२९. अमरेश	९०/ज	११/१६३५
३०. अमृत	१२१/ज	२१/१६०२ ई० उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
३१. अयोध्या प्रसाद वाजपेयी	६९३।वि०	४।वि०
३२. अयोध्या प्रसाद शुक्ल	६२२।ज	९।१९०२
३३. अलीमन	७८४।१८६९ से पूर्व	२६।१९३३ उप
३४. अवधवख्श	६८५।ज	७।१९०४
३५. अवधेश चरखारी के	५२०।१८४० उप	५।१९०१ उप
३६. (अवधेश भूपा के) ५२०	५४२।ज	६।१८९५ उप
३७. अहमद	२२४।ज	१४।१६७० उप
३८. आछेलाल	६६७।ज	४५।१८८९
३९. आजम	६४८।ज	१३।१८६६ अ०
४०. आदिल	३८१।१७०३ ज	२५।१७६२
४१. आनंदघन	३४९।१७२० उप	२२।१७१५ ई० उप
४२. आनंद सिंह उपनाम दुर्गा सिंह	७११।वि०	१०।वि०
४३. आलम	१८१।१७०० ज	१६।१७१२ ई० अ०
४४. आसकरन दास	७१।१५५० उप	३७।१६१५ ई० उप
४५. आसिफ खाँ	२९९।ज	४४।१७३८
४६. इंदु	३९२।१७१९ ज	५०।१७६६
४७. इंद्रजीत त्रिपाठी	१७६।ज	५३।१७३९ उप
४८. इंद्रजीत सिंह, ओरछा (धीरज नरिंद)	१३६।१५८० उप	३८५।१६१५ ज
४९. इच्छाराम अवस्थी	४९७।उप	४८।१८५५ ग्र
५०. ईश	४३०।ज	५२।१७९६
५१. ईश्वर	१७७।ज	४९।१७३० उप
५२. ईश्वरी प्रसाद त्रिपाठी	७१२।वि	५१।वि०
५३. ईसुफ खाँ	४२१।ज	५४।१७९१
५४. उदयनाथ वंदीजन बनारसी	२८०।ज	५६।१७११
५५. उदयनाथ त्रिवेदी, कवींद्र	३३४।१७२० उप	७४।१८०४ ग्र
५६. उदय सिंह, जोधपुर नरेश	७६।१५८४ उप	५५।१५१२ अ०
५७. उदेस भाट	४५८।ज	५७।१८१५
५८. उनियारा के राजा (महासिंह)	६६०।उप	६२।१८८० अ०
५९. उमराव सिंह पँवार	७१३।वि०	६१।वि०
६०. उमापति त्रिपाठी, कोविद	६९१।१८७४ म	१११।१९३१ म
६१. उमापति मैथिल	१८।१४०० उप	

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
६२. उमेद	४९४।ज	६०।१८५३
६३. (ऊधो)	४९५।ज	५९।१८५३
६४. ऊधोराम	७९।ज	५८।१६१०
६५. ऋषिजू	६५४।ज	७५८।१८७२
६६. ऋषिनाथ	७९४।१८६९ से पूर्व	७६०।X
६७. ऋषिराम मिश्र	५९३।सं०	७५९।१९०१ अ०
६८. ओलीराम	८३।ज	१९।१६२१
६९. (औध) ६९३	६७४।ज	८।१८९६ उप०
७०. कनक	३०१।ज	१३०।१७४०
७१. कन्हैया बख्श	७३२।वि०	८८।वि०
७२. कबीरदास	१३।१४०० उप	९२।१६१० अ०
७३. कमच	२७८।१६५३ से पूर्व	११४।१७१० उप
७४. कमल नयन	४१०।ज	८९।१७८४ उप
७५. कमलेश	६५०।ज	८५।१८७०
७६. कमाल	१६।१४५० उप	१०२।१६३५ अ०
७७. करन बंदीजन (करणीदान) जोधपुर	३७०।उप	७१।१७८७ ग्र
७८. (करन ब्राह्मण) ३४६	५०४।उप	७०।१८५७ अ०
७९. करन भट्ट	३४६।ज	६९।१७९८ ग्र
८०. करनेश बंदीजन	११५।ज	६८।६११ ई० उप
८१. कलानिधि प्राचीन	२२८।ज	१०३।१६७२
८२. कलानिधि, श्री कृष्ण भट्ट, लाल	४५२।ज	१०४।१८०७ उप
८३. कल्याण	२९१।ज	१०१।१७२६ अ०
८४. कल्याणदास	४८।१५७५ उप	११८।१६०७ उप
८५. कल्याण सिंह भट्ट	८००।X	१३२।X
८६. (कवि दत्त) ५०८	४७५।ज	९४।१८३६ उप
८७. कविराज	६६१।ज	९०।१८८१
८८. कविराम, रामनाथ कायस्थ	७८५।१८९६ से पूर्व	९३।वि०
८९. (कविराय) ४७३	६५६।ज	९१।१८७५
९०. कवींद्र, नरवर वाले	४९६।ज	७५।१८५४ अ०
९१. कवींद्र सरस्वती	१५१।१६५० उप	७६।१६२२ ई० उप
९२. कादिर बख्श	८९।ज	७८।१६३५ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
९३. कान्ह, प्राचीन	४९१|ज	८६|१८५३ अ०
९४. कान्ह, कन्हई लाल	५५७|ज	८७|१९१४ उप
९५. कान्हरदास	५२|१६०० उप	१२४|१६०८ उप
९६. कामता प्रसाद ब्राह्मण लखपुरा	६४४|ज	९७|१९११ उप
९७. कारेबेग	३१७|ज	१०६|१७५६ उप
९८. कालिका	७८०|१८६३ से पूर्व	१०९|वि०
९९. कालिदास त्रिवेदी	१५९|१७०० उप	७३|१७४९ ग्र
१००. कालीचरण वाजपेयी	८०१|×	१३२|वि०
१०१. कालीदीन	८०२|×	११९|×
१०२. काली प्रसाद तिवारी	७३९|१८८८ में जीवित	
१०३. कालीराम	४६४|ज	१००|१८२६ अ०
१०४. काशीनाथ	१३९|१६०० उप	९५|१७५२
१०५. काशीराम	१७५|ज	९६|१७१५ उप
१०६. किंकर गोविंद	४५५|ज	९९|१८१०
१०७. किशोर सूर	३८५|ज	११५|१७६१ उप
१०८. कुंजगोपी	८०३×	१२८|×
१०९. कुञ्जलाल	५५५|ज	८३|१९१२ उप
११०. कुंदन	३०८|उप	८४|१७५२ उप
१११. कुम्भकरन, राना कुम्भा	२१|१४०० उप १४६९ म	१३१|१४७५ अ०
११२. कुम्भनदास	३९|१५५० उप	११६|१६०१ उप
११३. कुमार पाल	४|११५० उप	७२|१२२० उप
११४. कुमारमणि भट्ट	४३७|ज	६७|१८०३ उप
११५. कुलपति मिश्र	२८२|ज	१०५|१७१४ उप
११६. कृपाराम, जयपुर	३२८|१७२० उप	११२|१७७२ ग्र
११७. कृपाराम, नरैनापुर	७९७|१८७५ से पूर्व	११३|×
११८. कृपाल	८०५|×	१२९|×
११९. कृष्ण	६६६|ज	८२|१८८८
१२०. कृष्ण, औरंगजेब के आश्रित	१८०|ज	७९|१७४० उप
१२१. कृष्ण, जयपुर	३२७|१७२० उप	८१|१६७५ अ०
१२२. कृष्ण दत्त सिंह बिसेन	६०५|ज	१०८|१९०९ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
१२३. कृष्णदास	८०६।×	
१२४. कृष्णदास अष्टछापी	३६।१५५० उप	१२१।१६०१ उप
१२५. कृष्ण लाल	४५६।ज	८०।१८१४ अ०
१२६. कृष्णानंद व्यासदेव	६३८।१८४३ उप	११७।१८०६ अ०
१२७. केदार कवि	३।११५० उप	१२५।१२८० अ०
१२८. केवलराम व्रजवासी	४५।१५७५ उप	१२३।१७६७ अ०
१२९. केशव मैथिल	३६१।१७७५ उप	
१३०. केशवदास कश्मीरी	६३।१५४१ उप	१२२।१६०८ उप
१३१. केशवदास सनाढ्य मिश्र	१३४।१५८० उप	६३।१६२४ उप
१३२. केशवराम	८०४।×	६६।×
१३३. केशवराय बाबू	३००। ज	६५।१७३९ उप
१३४. केहरी	७०। ज	१०७।१६१०
१३५. खंडन	५३६। ज	१४२।१८२४ अ०
१३६. खडगसेन	२२०।ज	१४७।१६६० उप
१३७. खान	७८१।१८६८ से पूर्व	१४०।×
१३८. खान सुलतान (?)	८०७।×	१४१।×
१३९. खुमान वंदीजन चरखारी	१७०।१६८३ ज	१३५।१८४० उप
१४०. खुमान सिंह चित्तौर	२।८३० उप	१३७।८१२ अ०
१४१. खुसाल पाठक	८०८।×	१४४।×
१४२. खूबचद	८०९।×	१३९।×
१४३. खेतल	८१०।×	१४३।×
१४४. खेम व्रजवासी	८७।ज	१४६।१६३०
१४५. गंगादयाल दुबे	७१९।वि०	१५३।वि०
१४६. गंगाधर	८११।×	१५१।×
१४७. गंगा पति	३२०।१७१९ उप	१५२।१६४४ ज
१४८. गंगा पति	४८१।ज	१४८।१५९५ई०उप
१४९. गंगाप्रसाद, गंग	११९।ज	१४९।१८९०
१५०. गंगाप्रसाद, गंग, सपौली वाले	५९७।ज	१५४।१८९४उप
१५१. गगाराम	५४०।ज	
१५२. गंभीर राय	२०६।१६५०उप	१९२।१८७४ज
१५३. गजराज उपाध्याय	५८५।ज	

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
१५४. गजसिंह	८१२।X	२०६।X
१५५. गड्डु कवि	३८९।ज	१९९।१७७०अ०
१५६. गणेश बनारसी	५७३।वि०	१९७।वि०
१५७. गणेश मिश्र	८१।ज	२०४।१६१५
१५८. गदाधरदास	४६।१५७५उप	१५६।X
१५९. गदाधर भट्ट	५१२।ज	१५५।१९१२उप
१६०. गदाधर मिश्र	२५।ज	१५८।१५८०उप
१६१. गिरिधर होलपुर वाले	४८३।सं०	१६१।१८४४ उप
१६२. गिरिधर कविराय	३४५।न	१६२।१७७०
१६३. गिरिधारी बैसवारा के	६२५।ज	१५९।१९०४ उप
१६४. गिरिधारी भाट मऊ रानीपुर	७३३।वि०	२००।वि०
१६५. गीध	८१३।X	१९८।X
१६६. गुणाकर त्रिपाठी	७२८।वि०	१९१।वि०
१६७. गुनदेव	४९२।ज	१९०।१८५२
१६८. गुनसिंधु	५३५।ज	१९५।१८८२
१६९. गुमान मिश्र	३४९।१७४० उप	१८५।१८०५ उप
१७०. गुमानी कवि	८१४।X	
१७१. (गुरुदत्त प्राचीन) ६३१	६६३।ज	१८३।१८८७
१७२. गुरुदत्त सिंह, 'भूपति'	३३२।१७२० उप	६२१।१९०३ अ०
१७३. गुरुदत्त शुक्ल	६३१।ज	१८४।१८६४ उप
१७४. गुरुदीन पाँड़े	६३७।सं०	१८१।१८९१ ग्र
१७५. गुरुदीनराय बंदीजन	७१४।वि०	१८२।वि०
१७६. गुलाबसिंह पंजाबी	४८६।ज	२०१।१८४६ उप
१७७. गुलाम राम	८१५।X	१९३।X
१७८. (गुलामी) ८१५	८१६।X	१९४।X
१७९. गुलाल	६५७।ज	१८७।१८७५
१८०. गुलालसिंह	३९८।ज	२०५।१७८०उप
१८१. गोकुलनाथ बंदीजन	५६४।१८२० उप	१७२।१८३४ उप
१८२. गोकुल प्रसाद, ब्रज	६९४।वि०	५३३।वि०
१८३. गोकुल बिहारी (१)	२२१।ज	१७४।१६६०
१८४. गोधू	३१०।ज	२०३।१७५५

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
१८५. गोप नाथ	२२५।ज	१७५।१६७०
१८६. गोपा	२७।ज	१७१।१५९० अ०
१८७. गोपाल प्राचीन	२०८।ज	१६४।१७१५
१८८. गोपाल कायस्थ, रीवाँ	५३१।१८३० उप	१६५।१९०१ उप
१८९. गोपाल चंद्र उपनाम गिरिधरदास	५८०।१८३२ ज	१६३।१८९६ उप
१९० गोपाल बंदीजन बुंदेलखण्डी	५२२।१८४० उप	१६६।१८८४ उप
१९१. गोपालदास ब्रजवासी	२९७।ज	१७०।१७३६ उप
१९२. गोपाल राय	८१८।×	१६८।×
१९३. गोपाल लाल	४९३।ज	१६७।१८५२ उप
१९४. गोपाल शरण, राजा	२१५।ज	१६९।१७४८
१९५. गोपाल सिंह ब्रजवासी	८१९।×	२०९।×
१९६. गोपीनाथ बंदीजन बनारसी	५६५।१८२० उप	१७३।१८५० उप
१९७. गोवर्द्धन	२४४।ज	२०२।१६८८ उप
१९८. गोविंद अटल (?)	२२३।ज	१७७।१६७०
१९९. गोविंद जी	३०५।१६९३ उप	१७८।१७५७ उप
२००. गोविंददास अष्टछापी	४३।१५६७ उप	१७९।१६१५ उप
२०१. गोविंद राम	८२०।×	२०८।×
२०२. गोविंद सिंह, गुरु	१६९।१६६६ ज	१७६।१७२८ उप
२०३. गोसाईं	८१७।×	१९६।१८८२
२०४. ग्वाल प्राचीन	२८३।ज	१८९।१७१५
२०५. ग्वाल बंदीजन, मथुरा	५०७।१८१५ उप	१८८।१८७९ ग्र
२०६. घनराय	२४६।१६३३ ज	२०४।१६९२ ज
२०७. घनश्याम शुक्ल	९२।ज	२११।१६३५
२०८. घाघ	२१७।ज	२१५।१७५३
२०९. घासी भट्ट	८२१।×	२१६।×
२१०. घासीराम	२३०।ज	२१३।१६८०
२११. चण्डीदत्त	६०३।ज	२३५।१८९८ उप
२१२. चन्दन राय	३७४।उप	२२४।१८३० उप
२१३. चन्द सखी	९३।ज	२२९।१६३८
२१४. चन्द्र झा	७०२।वि०	
२१५. चन्द्र कवि भूपाल वाले	२१३।ज	२१८।१७४९ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
२१६. चन्द्र बरदाई	६।११९१ उप	२१७।१०९८ अ०
२१७. चक्रपाणि मैथिल	८२२।×	
२१८. चतुर बिहारी कवि	६५।ज	२२६।१६०५
२१९. चतुरसिंह राना	२५७।ज	२२७।१७०१
२२०. चतुर्भुज दास अष्टछापी	४०।१५६७ उप	२३१।१६०१ उप
२२१. चतुर्भुज मैथिल	८२३।×	
२२२. चरणदास	२३।ज	२३६।१५३७ अ०
२२३. चिंतामणि त्रिपाठी	१४३।१६५० उप	२३१ १७२९ उप
२२४. चिरंजीव	६०७।ज	२३८।१८७०
२२५. चूड़ामणि	६४७।ज	२२३।१८६१
२२६. चेतन चन्द्र	७२।ज	२३७।१८१६ ग्र
२२७. चैन सिंह, हरचरन खत्री	६२७।ज	२३३।१९१० उप
२२८. चोखे	८२४।×	२२५।×
२२९. छत्तन	८२५।×	२४५।×
२३०. छत्र	७५।ज	२५३।१६२५ अ०
२३१. छत्रसाल	१९७।१६५८ म	२४१।१६९०ई०उप
२३२. छबीले	७६३।१८४३ से पूर्व	२४८।×
२३३. छीत स्वामी	४१।१५६७ उप	२५१।१६०१ उप
२३४. छेदीराम	६७२।उप	२५२।१८९४ ग्र
२३५. छेम	३११।ज	२४७।१७५५ उप
२३६. छेम, डलमऊ वाले	१०३।१५३० उप	२५४।१५८२ उप
२३७. छेमकरन	३७३।१७११ ज	२४३।१८७५ उप
२३८. छैल	३१२।ज	२४९।१७५५ उप
२३९. छोटूराम तिवारी	७०५।१८८७ म	
२४०. जगजीवन	२६४।ज	२९२।१७०५
२४१. जगजीवनदास	३२३।१७६१ उप	३०४।१८४१ अ०
२४२. जगतसिंह, मेवाड़ नरेश	१८४।१६२८-५८ उप	
२४३. जगतसिंह बिसेन	३४०।१७७० उप	२५५।१७९८ ज
२४४. जगदीश	११७।ज	२९४।१५८८ई० उप
२४५. जगदेव	४२७।ज	२८३।१७९२

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
२४६. जगन	९८।ज	२७७।१६५२ उप
२४७. जगनन्द	२१८।ज	२८९।१६५८
२४८. जगनिक	७।११९१ उप	३०६।११२४ अ०
२४९. जगनेस	८२६। ×	२९९। ×
२५०. जगन्नज	१२२।१५७५ उप	
२५१. जगन्नाथ अवस्थी	६०१।वि०	२८५।वि०
२५२. जगन्नाथदास	७६४।१८४३ से पूर्व	२८४। ×
२५३. जगामग	१२३।१५७५ उप	३०२। ×
२५४. जदुनाथ	२३८।ज	२९३।१६८१
२५५. जनकेस	५५६।ज	२६४।१९१२ उप
२५६. जनार्दन	२८८।ज	२७८।१७१८ उप
२५७. जनार्दनभट्ट	८२७। ×	२७९। ×
२५८. जबरेश	७३४।वि०	३०७।वि०
२५९. जमालुद्दीन	८५।ज	२९८।१६२५ उप
२६०. जय, लखनऊ वाले	५९८।१८४५ उप	२७५।१७७८ उप
२६१. जय कृष्ण	८३०। ×	२७४। ×
२६२. जय चंद	६२८।१८०६ उप	
२६३. जयदेव	४५९।ज	२७१।१८१५
२६४. जयदेव कंपिला वाले	१६१।१७०० उप	२७०।१७७८ उप०
२६५. जयदेव मैथिल	१९।१४०० उप	
२६६. जयसिंह	८३१। ×	२७६। ×
२६७. जयसिंह सवाई, जयपुर नरेश	३२५।१६९९-१७४३रा	२९५।१७५५ उप
२६८. जयसिंह, मेवाड़ नरेश	१८८।१६८१-१७००रा	२९६।१६८१ई० उप
२६९. जयानंद मैथिल	८२८। ×	२८७।१६१५
२७०. जलालुद्दीन	८२।ज	२६८।१९१४ उप
२७१. जवाहिर	५५८।ज	२६७।१८४५ उप
२७२. जवाहिर बिलग्रामी	४८५।ज	२६६।१७६२ अ०
२७३. जसवंत	७४७।१७१८ से पूर्व	२६५।१८५५ उप
२७४. जसवंत सिंह बघेल	३७७।१७९७ उप १८१४ म	
२७५. जसोदानंद	४६५।ज	२८८।१८२८ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
२७६. जानकी प्रसाद पँवार	६९५।वि०	२६१।वि०
२७७. जानकी प्रसाद बनारसी	५७७।१८१४ उप	२६३।१८६० उप
२७८. जान साहिब, जान क्रिश्चियन	७०३।१८८३ म	
२७९. जीवन	७७।ज	२९१।१६०८
२८०. जीवन	४३८।ज	२८२।१८०३ अ०
२८१. जीवनाथ भाट	५९४।ज	२८१।१८७२ उप
२८२. जुगराज	७६५।१८४३ से पूर्व	२५८। ×
२८३. जुगुल	३१३।ज	२६०।१७५५ अ०
२८४. जुगुल किशोर भट्ट	३४८।१७४० उप	२५६।१७९५ उप
२८५. जुगुल प्रसाद चौबे	८२९। ×	२५९। ×
२८६. जुल्फकार	४०९।ज	३०५।१७८२ अ०
२८७. जैत	१२०। ×	२७३।१६०१ई० उप
२८८. जैनदीन अहमद	१४४। ×	२६९।१७३६ उप
२८९. जोध	११८।ज	३००।१५९०ई०उप
२९०. जोधराज	९।१३६३ उप	
२९१. जोयसी	२१९।ज	२९०।१६५८ उप
२९२. ज्ञानचंद यती	६५१।ज	२०७।१८७० उप
२९३. टहकन	८३२। ×	३१०। ×
२९४. टेर	६६५।ज	३०९।१८८८
२९५. टोडरमल	१०५।ज	३०८।१५८०ई०उप
२९६. ठाकुर प्राचीन	१७३।उप	३११।१७००
२९७. ठाकुर द्वितीय	४३४।१७४३ उप	
२९८. ठाकुर प्रसाद त्रिपाठी	५७०।ज	३१२।१८८२
२९९. ठाकुर प्रसाद त्रिवेदी	७१७।वि०	३१४।वि०
३००. ठाकुर प्रसाद मिश्र	६००।१८५० उप	४६९।१९२४ उप
३०१. ठाकुर राम	८३३। ×	३१३। ×
३०२. डाक	८३४। ×	
३०३. ढाखन	८३५। ×	३१५। ×
३०४. तत्ववेत्ता	२३१।ज	३२३।१६८० अ०
३०५. ताज	९९।ज	३२५।१६५२ उप
३०६. तानसेन	६०।१५६० उप	३२०।१५८८ई०उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
३०७. तारापति	४१९।ज	३२१।१७९०
३०८. (तीखी)	७४८।१७१८ से पूर्व	३२८।X
३०९. तीर्थराज	२६४।ज	३२७।१८०० उप
३१०. तुलसी, जदुनाथ के पुत्र	१५३।उप	३१८।१७१२ ग्र
३११. तुलसी ओझा	७८६।१८६९ से पूर्व	३१७।X
३१२. तुलसीदास, गोस्वामी	१२८।१६०० उप १६२४ म	३१६।१६०१ उप १५८३ ज १६८० म
३१३. तुलसीराम अग्रवाल	६४०।१८५४ उप	
३१४. तेग पाणि	२७१।ज	३२४।१७०८
३१५. (तेही)	७४९।१७१८ से पूर्व	३२९।X
३१६. तोष	२६५।ज	३३०।१७०५ उप
३१७. तोषनिधि	४३२।ज	३३१।१७९८ उप
३१८. दयादेव	८३६।X	३४०।X
३१९. दयानाथ दूबे	६६८।उप	३३९।१८८९ ग्र
३२०. दयानिधि	३६५।ज	३३८।१८११ उप
३२१. दयानिधि पटना वाले	७८७।१८६९ से पूर्व	३३७।X
३२२. दयाराम त्रिपाठी	३८७।ज	३३५।१७६९ उप
३२३. दयाल	७२०।वि०	३८०।वि०
३२४. दलपतिराय	६३५ सं०	३३३।१८८५ अ०
३२५. दलसिंह, राजा	४०७।ज	३३२।१७८१
३२६. दादू	१६३।१६०० उप	३४५।X
३२७. दान	८३७।X	३४६।१६०० अ०
३२८. दामोदर दास व्रजवासी	८४।१५६५ ज	३५५।X
३२९. दिनेश	६३३।१८०७ उप	३५२।१६५०
३३०. दिलदार	९६।ज	३५४।X
३३१. दिलाराम	७५०।१७१८ से पूर्व	३७६।X
३३२. दिलीप	८३८।X	३५६।१९१२ ग्र
३३३. दीनदयालगिरि	५८२।उप	३५७।१९२१ उप
३३४. दीनानाथ बुंदेलखंडी (!)	५५२।ज	३७७।१८७६
३३५. दीनानाथ अध्वर्यु	६५८।ज	

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
३३६. दील्ह	३२।ज	३७२।१६०५
३३७. दुर्गा	६४६।ज	३५८।१८६० उप
३३८. दुल्हाराम, रामसनेही	३२४।१७७६ उप, १८२४ म	
३३९. दूलह त्रिवेदी	३५८।उप	३५९।१८०३ उप
३४०. देव, काष्ठजिह्वा स्वामी	५६९।१८५० उप	३६१।५
३४१. देवकीनंदन शुक्ल	६३०।ज	३६४।१८७० उप
३४२. देवदत्त, महाकवि देव	१४०।ज	३६०।१६६१ अ०
३४३. देवदत्त, कुसमड़ा वाले	२६१।१६४६ ज	३४१।१८७०
३४४. देवदत्त, साढ़ वाले	५०८।१८१५ उप	३४२।१८३६ उप
३४५. देवनाथ	८३९। ×	३७३। ×
३४६. देवमणि	८४०। ×	२७४। ×
३४७. देबा	४७।१५७५ उप	३७०।१८८५ अ०
३४८. देवी कवि	८४१। ×	३६७। ×
३४९. देवीदत्त	८४२। ×	३६६। ×
३५०. देवीदास बुंदेलखंडी	२१२।१६८५ उप	३६३।१७१२ ज १७४२ ग्र
३५१. देवीदास सतनामी	४८७।१७९०	
३५२. देवीदास वंदीजन	३०६।ज	३६८।१७५० ज
३५३. देवीदीन बिलग्रामी	७३०।वि०	३७८।वि०
३५४. देवीराम	३०७।ज	३६९।१७५०
३५५. देवी सिंह	८४३। ×	३७९। ×
३५६. दौलत	९७।ज	३७१।१६५१
३५७. द्विजचंद	३१४।ज	३५१।१७५५
३५८. द्विजदेव, मान सिंह	५९१।१८५० उप १८७३ म	३४८।१९३० म
३५९. द्विजनंद	८४४। ×	३५०। ×
३६०. धन सिंह	४२२।ज	३८१।१७९१
३६१. धनीराम बनारसी	५७८।ज	३८२।१८८८ उप
३६२. धीर कवि	४६१।१७६५ उप	३८३।१८७२ उप
३६३. धुरंधर	७८२।१८६८ से पूर्व	३८४। ×

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
३६४. धोंधेदास	७६६।१८४३ से पूर्व	३८६।×
३६५. धौंकल सिंह	५९१।ज	३८७।१८६० उप
३६६. ध्रुवदास	५८।१५६० उप	
३६७. नंदकिशोर मिश्र, लेखराज	६९७।वि०	८२२।वि०
३६८. नंददास	४२।१५६७ उप	४२८।१५८५ ज
३६९. नंदन	८६।ज	४२३।१६२५
३७०. नंदराम	८४६।×	४२७।×
३७१. नंदलाल	८०।ज	४२५।१६११
३७२. नंदलाल	३९०।ज	४२६।१७७४
३७३. नंदीपति	८४७।×	
३७४. ननामी	८४५।×	
३७५. नजीब खाँ, रसिया	७८८।१८६९ से पूर्व	७४८।वि०
३७६. नजीर	१७१।१६०० से पूर्व	
३७७. नबी	८४८।×	३९७।×
३७८. नरबाहन	५७।१५६० उप	४०३।१६०० उप
३७९. नरसिया कवि, नरसी मेहता	२८।ज	४०४।१५९० अ०
३८०. नरहरि महापात्र	११३।१५५० उप	३८८।१६०० ई० उप
३८१. नरिंद	४१४।ज	४२१।१७८८
३८२. नरेंद्र सिंह, पटियाला नरेश	६९०।उप १८६२ म	४२२।१९१४ उप
३८३. नरेश	७९१।१८६९ से पूर्व	३९९।×
३८४. (नरोत्तम अंतर्वेदी) ५०१	६७५।ज	४१७।१८९६
३८५. नरोत्तम बुंदेलखंडी	५०१।ज	४१६।१८५६
३८६. नरोत्तमदास	३३।१५५३ ज	४१५।१६०२ ज
३८७. नव खान	४२६।ज	४०५।१७९२
३८८. नव निधि	७८९।१८६९ से पूर्व	४०१।×
३८९. नवल किशोर	८४९।×	४३७।×
३९०. नवलदास	७९८।१८७५ से पूर्व	४४०।१३१९ अ०
३९१. नवल सिंह	५२६।१८४१ ज	४३९।१९०८ उप
३९२. नवीन	७९०।१८६९ से पूर्व	४००।×
३९३. नागर, नागरीदास	९५।ज	३९८।१६४८ अ०

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
३९४. नाथ ब्रजवासी	६८।ज	४३६।१६४१ उप
३९५. नाथ, फाजिल अली के आश्रित	१६२।१७०० उप	४३१।१७३०
३९६. नाथ, मानिक चंद के आश्रित	४४०।ज	४३२।१८०३
३९७. नाथ (?)	८५०।×	४३०।×
३९८. नानक	२२।सरोजवत	३९१।१५२६ ज १५९६ म
३९९. नाभादास	५१।१६०० उप	४०२।१५४० अ०
४००. नामदेव	७६७।१८४३ से पूर्व	
४०१. नायक	७८३।१८६८ से पूर्व	३९६।×
४०२. (नारायण) ६४५	४५४।ज	४४४।१८०९
४०३. नारायण भट्ट ब्रजवासी	६६।ज	४०६।१६२० उप
४०४. नारायण राय बनारसी	५७२।वि०	४०७ वि०
४०५. निधान प्राचीन	२५४।ज	४१०।१७०८ उप
४०६. निधान ब्राह्मण	३५०।उप	४११।१८०८ उप
४०७. निधि	१३१।१६०० उप	४४२।१७५१
४०८. निपट निरंजन	१२९।ज	३८९।१६५० अ०
४०९. निवाज, अंतर्वेदी	१९८।१६५० उप	४१३।१७३९ व
४१०. (निवाज, बुंदेलखंडी) १९८	३४२।१७५० उप	४१४।१८०१ उप
४११. निवाज, जुलाहा, बिलग्रामी	४४८।ज	४१२।१८०४
४१२. निहाल प्राचीन	९१।ज	४४३।१६३५
४१३. निहाल, निगोहाँ वाले	४६०।ज	३९०।१८२०
४१४. नीलकंठ त्रिपाठी	१४८।१६५० उप	४१९।१७३०
४१५. (नीलकंठ मिश्र) १४८	१३२।१६०० उप	४१८।१६४८ अ०
४१६. नील सखी	५४८।ज	४२०।१९०२ अ०
४१७. (नीलाधर) १९०	१३३।१६०० उप	४४१।१७०५ अ०
४१८. नेही	८५१।×	३९२।×
४१९. नैन	८५२।×	३९३।×
४२०. नैसुक	५५०।ज	३९५।१९०४
४२१. नोने	५४५।ज	३९४।१९०१
४२२. पंचम प्राचीन	२०५।१६५० उप	४६३।१७३५ उप
४२३. पंचम बंदीजन बुंदेलखंडी	५५३।ज	४६५।१९११ अ०

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
४२४. पंचम डलमऊ वाले	७०७।सं०	४८६।१९२४ उप
४२५. (पखाने)	८५३। ×	४५३। ×
४२६. पजनेस	५१०।१८१६ ज	४४७।१८७२
४२७. पतिराम	२५८।ज	४७०।१७०१ उप
४२८. पद्मनाभ ब्रजवासी	५०।१५७५ उप	४७८।१५६० ज
४२९. पद्माकर भट्ट	५०६।१८१५ उप	४४६।१८३८ उप
४३०. पद्मेश	४४१।ज	४७६।१८०३
४३१. परबत	७४।उप	४७२।१६२४ अ०
४३२. परम बुंदेलखंडी	५३३।ज	४५४।१८७१
४३३. परमल्ल	८५५।×	
४३४. परमानन्द दास	३८।१५५० उप	४५९।१६०१ उप
४३५. परमानन्द लल्ला पौराणिक	५४१।ज	४५६।१८९४
४३६. परमेश प्राचीन	२२२।ज	४५१।१६६८
४३७. परमेश बन्दीजन	६१६।ज	४५२।१८९६
४३८. परशुराम	५५।ज	४७४।१६६० उप
४३९. परसाद	१८३।१६२३ ज	४५५ १६०० अ०
४४०. पराग	५६७।१८२० उप	४८४।१८८३ उप
४४१. पहलाद	२५९।ज	४६८।१७०१ अ०
४४२. पहलाद चरखारी के	५१३।१८१० उप	४८५। ×
४४३. पारस	७९२।१८६९ से पूर्व	४७९। ×
४४४. पुण्डरीक	३८८।ज	४७५।१७६९
४४५. पुखी	४४२।ज	४७७।१८०३
४४६. पुरान	८५६। ×	४८१। ×
४४७. पुरुषोत्तम	२००।१६५० उप	४६७।१७३० उप
४४८. पुष्कर	८५७। ×	४८३। ×
४४९. पुष्य या पुंड	१। उप	४९०।७७०
४५०. पूथ पूरनचंद	८५८। ×	४८९। ×
४५१. पृथ्वीराज	७३। उप	४७१।१६२४ उप
४५२. प्रताप साहि	१४९।१६३३ उप	४४८।१७६० अ०
४५३. प्रधान केशवराय	८५४। ×	४६१। ×
४५४. प्रवीण कविराय	२५१।ज	४५०।१६९२

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
४५५. प्रवीण राय पातुर	१३७।१५८० उप	४४९।१६४० उप
४५६. प्रसिद्ध	१२५।ज	४६०।१५९० ई०उप
४५७. प्राणनाथ, पन्ना वाले	१६७।१६५० उप	
४५८. प्राणनाथ, कोटा वाले	४०८।ज	४५८।१७८१ उप
४५९. प्राणनाथ बैसवारा के	४९०।१७९३ उप	४५७।१८५१ ग्र
४६०. प्रियादास	३१९।१७१२ उप	४६६।१७१९ अ०
४६१. प्रेमकेश्वर दास	८५९।×	
४६२. प्रेमनाथ	३५१।१७७० उप	४८७।१८३५ उप
४६३. प्रेम सखी	४२३।ज	४५३।१७९१ ज
४६४. (प्रेमी यमन) १८२	४३३।ज	४५५।१७९८ उप
४६५. फतूरी लाल	७०१।१८७४ उप	
४६६. फालका राव	६७८।ज	४९४।१९०१
४६७. फूलचंद	७०८।सं०	४९३।१९२८ उप
४६८. फेरन	८६०।×	४९१।×
४६९. वंदन पाठक	५७६।वि०	५६१।वि०
४७०. वंश गोपाल	५४९।ज	५८५।१९०२
४७१. वंश रूप	५८६।ज	५४१।१९०२
४७२. वंशीधर बनारसी	५७४।ज	५८४।१९०१ उप
४७३. वंशीधर वाजपेयी	६१७।ज	५८३।१९०१
४७४. वंशीधर श्रीमाली	६३६।सं०	३३३।१८८५ अ०
४७५. वंशीधर मिश्र संडीला	८६४।×	५२५।१६७२ उप
४७६. बकसी	८६१।×	५७५।×
४७७. बखतावर	६३४।१८१७ उप	
४७८. बजरंग	८६२।×	५७४।×
४७९. बदन	८६३।×	५६०।×
४८०. बनमालीदास गोसाईं	२८६।ज	५८१।१७१६ उप
४८१. बनवारी लाल	१९२।१६३४ उप	५७०।१७२२ उप
४८२. बरग राय	८६५।×	
४८३. बलदेवप्राचीन	२६३।ज	५०२।१७०४
४८४. बलदेव अवस्थी	७१५।वि०	५०३।वि०
४८५. बलदेव बघेलखण्डी	३५९।१७४९ ग्र	४९१।१८०९ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
४८६. बलदेव बुन्देलखण्डी	५१८।१८२० उप	
४८७. बलदेव, चरखारी वाले	५४३।ज	५००।१८९६ उप
४८८. बलदेवदास जौहरी	६८४।ज	५०४।१९०३ ग्र
४८९. बलदेवसिंह क्षत्रिय अवध वाले	६०२।१८५० उप	५०१।१९११ उप
४९०. बलभद्र कायस्थ	५११ ज	५४५।१९०१ उप
४९१. बलभद्र सनाढ्य मिश्र	१३५।१५८० उप	५१३।१६४२ उप
४९२. बलराम दास	७६८।१८४३ से पूर्व	५२३।×
४९३. बलवानसिंह, काशिराज	५६३।१८०० उप	११०।१८८९ ग्र
४९४. (बलि कवि) २८९	७५५।१७२३ से पूर्व	५२२।×
४९५. बलि जू	२८९।उप	५६९।१७२२
४९६. वल्लभ रसिक	२३९।ज	५१६।१६८१ उप
४९७. वल्लभाचार्य	३४।१४७८ ज १५३० म	४१८।१६०१ अ०
४९८. वाजीदा	२७२।उप	५६७।१७०८ उप
४९९. बाजेस	४६७।ज	५७६।१८३१ उप
५००. बादे राय	६१२।ज	५९६।१८८२ उप
५०१. बाबू भट्ट	८६६।×	५८८।×
५०२. बारक	१०१।ज	५८०।१६५५
५०३. बारन	१५८।ज	५६५।१७४० उप
५०४. बालकृष्ण त्रिपाठी	१३८।१६०० उप	५५५।१७८८
५०५. बालनदास	४८८।उप	५७७।१८५० ग्र
५०६. विक्रम साहि	५१४।१७८५ ज	५०६।१८८० ग्र
५०७. विजयसिंह	३७१।१७५३-८४रा	५९२।१७८७ अ०
५०८. विजयाभिनन्दन	२०१।१६५० उप	५४०।१७४० उप
५०९. विट्ठलनाथ गोसाईं	३५।१५५० उप	५१९।१६२४ उप
५१०. विन्दा दत्त	८६८।×	५५९।×
५११. विदुष	८६७।×	५६४।×
५१२. विद्यादास व्रजवासी	६९।ज	५७९।१६५०
५१३. विद्यानाथ	२९२।ज	५९०।१७३०
५१४. विद्यापति ठाकुर	१७।१४०० उप	
५१५. विपुल विट्ठल	६२।१५६० उप	५२०।१५८० उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
५१६. विश्वंभर	८६९।×	५७१।×
५१७. विश्वनाथ प्राचीन	१०२।ज	५५०।१६५५
५१८. विश्वनाथ अताई	४११।ज	५४९।१७८४ उप
५१९. विश्वनाथ वंदीजन टिकई वाले	७२१।वि०	५४७।वि०
५२०. विश्वनाथ सिंह, रीवाँ नरेश	५२९।१८१३-३४ रा	५४८।१८९१ उप
५२१. विश्वेश्वर	८७०।×	५६३।×
५२२. विष्णुदास	७६९।१८४३ से पूर्व	५२७।×
५२३. विहारी	२९८।ज	५५२।१७३८ उप
५२४. विहारी बुंदेलखंडी	४१३।ज	५५३।१७८६ उप
५२५. विहारीदास ब्रजवासी	२२६।ज	५५४।१६७० उप
५२६. विहारीलाल चौबे, सतसईकार	१९६।१६५० उप	५५१।१६०२ अ०
५२७. विहारीलाल चौबे, प्राफेसर	७४०।१८८८ में जीवित	
५२८. विहारीलाल त्रिपाठी	५२३।१८४० उप	८०२।१८८५ उप
५२९. विहारीलाल, 'भोज'	५१९।१८४० उप	६०८।१९०१ उप
५३०. बीरबल, ब्रह्म	१०६।ज	४९७।१५८५ ई०उप
५३१. बीर वाजपेयी, दाऊदादा	५१६।१८२० उप	५११।१८७१ अ०
५३२. बीरभान	१६८।१६५८ उप	
५३३. बीरवर कायस्थ दिल्ली वाले	३९५।१७२२ उप	५१२।१७७७ उप
५३४. बुद्धराव, हाड़ा, बूँदी नरेश	३३०।१७१०-४०उप	४९८।१७५५ उप
५३५. बुद्धसेन	८७१।×	५५८।×
५३६. बुधराम	२९०।उप	५६८।१७२२
५३७. बुध सिंह पंजाबी	८७२।×	५८७।×
५३८. बुलाकी दास	८७३।×	
५३९. वृंद	८७९।×	५६६।×
५४०. वृंदावन	७२२।वि०	५८६। त्रि०
५४१. वृंदावनदास ब्रजवासी	२२७।ज	५७८।१६७०
५४२. बेचू	३९९।ज	५७३।१७८०
५४३. वेदांगराय	१७४।१६५० उप	
५४४. बेनी, असनी वाले	२४४।ज	५०७।१६९० अ०
५४५. बेनी, बेंती वाले	४८४।सं०	५०८।१८४४ उप
५४६. बेनीदास	६७१।ज	५९५।१८९२ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
५४७. बेनी प्रगट	६५९।ज	५१०।१८८० उप
५४८. बेनी प्रवीण	६०८।ज	५०९।१८७६ उप
५४९. बेनीमाधव दास	१३०।१६०० उप	३४४।१६५५ उप
५५०. बेनीमाधव भट्ट	८७४।X	५८२।X
५५१. बैताल	५१५।१८२० उप	५७२।१७३४ अ०
५५२. बैन	८७५।X	५९१।X
५५३. (बोध) ४४९	५००।ज	५४४ १८५५ उप
५५४. बोधा	४४९।ज	५४३।१८०४ उप
५५५. बोधीराम	८७६।X	५५७।X
५५६. व्यास स्वामी, हरीराम शुक्ल	५४।१५५५ उप	५१५।१५९० उप
५५७. (व्यास जी कवि) ५४	२४२।ज	५१४।१६८५ अ०
५५८. ब्रजचंद	३८२।ज	५३०।१७६०
५५९. ब्रजदास	३१५।ज	५३५।१७५५ उप
५६०. ब्रजनाथ	४००।ज	५३३।१७८०
५६१. ब्रजपति	२३२।ज	५३९।१६८०
५६२. ब्रजमोहन	८७७।X	५३२।X
५६३. ब्रजराज	३९३।ज	५३८।१७७५
५६४. ब्रजलाल	२६०।ज	५३६।१७०२
५६५. ब्रजवासी दास	३६९।ज	५३७।१८१० उप १८२७ ग्र
५६६. ब्रजेस	८७८।X	५२९।X
५६७. (ब्राह्मणनाथ) ४४७	४४३।१७४६ सं०	६१४।१८३१
५६८. भंजन	४६८।ज	
५६९. भंजन मैथिल	८८१।X	५९९।X
५७०. भगवंतराय खींची	३३३।१७५० उप १७६० म	
५७१. भगवत रसिक	६१।१५६० उप	४९८।१६०१ अ०
५७२. भगवतीदास	२४५।ज	६०२।१६८८ ग्र
५७३. भगवानदास मथुरावासी	२९।ज	६०५।१५९०
५७४. भगवानदास निरंजनी	८८०।X	६०३।X
५७५. भगवान हितु राम राय	७७०।१८४३ से पूर्व	६०४।X

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संकेत
५७६. भगोदास	१४।१४२० उप	
५७७. भड्डरि	८८२।X	
५७८. भरमी	२७३।ज	६२३।१७०८
५७९. भवानंद	११।१४०० उप	
५८०. भवानीदास	६८३।ज	६१६।१९०२ उप
५८१. भवानी प्रसाद पाठक, भावन	६१८।१८४४.ज	६११।१८९१ उप
५८२. भानदास	५०९।१८१५ उप	६१७।१८५५ उप
५८३. भानुनाथ झा	६४१ १८५० उप	
५८४. भिखारीदास	३४४ ज	३४३।१७८० उप
५८५. भीषम	२४०।ज	६१२।१६८१ उप
५८६. भूधर असोथर वाले	३३६।१७५० उप	६२७।१८०३ उप
५८७. भूधर बनारसी	२५६।ज	६१८।१७००
५८८. भूप नारायण	६४५।१८०१ ज	६२५।१८५९
५८९. भूमिदेव	६८८।ज	६१५।१९११ उप
५९०. भूषण	१४५।१६६० उप	५९७।१७३८ उप
५९१. भूसुर	६८९।ज	६१९।१९११ उप
५९२. (भृंग)	२७४।ज	६२२।१७०८ अ०
५९३. भोज प्राचीन	६५३।ज	६०६।१८७२
५९४. भोज मिश्र	३३१।१७२० उप	६०७।१७८१ उप
५९५. भोलानाथ	८८३।X	६२६।X
५९६. भोला सिंह	५४४।१८३९।ज	६२०।१८९८
५९७. भौन बुन्देलखण्डी	३८३ ज	६०९।१७६०
५९८. भौन बैंतीवाले	६११।ज	६१०।१८८१ उप
५९९. मंगद	८८४।X	६८६।X
६००. मंचित	४१२।ज	६४५।१७८५ उप
६०१. मंडन	१५४।ज	६९६।१७१६ उप
६०२. मकरंद	४५७।ज	६४३।१८१४ उप
६०३. मकरद राय	६१०।ज	६४४।१८८० अ०
६०४. मणिकंठ	७७२।१८४३ से पूर्व	६५२।X
६०५. मणिदेव	५६६।१८२० उप	६४२।१८९६ उप
६०६. मतिराम त्रिपाठी	१४६।१६५०-८२ उप	६९५।१७३८ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
६०७. मदन किशोर	३८६।१७१० उप	७०१।१७०८ई०उप
६०८. (मदन किशोर) ३८६	४५०।ज	६६३।१८०७ अ०
६०९. मदन गोपाल शुक्ल	५९६।ज	६७६।१८७६ ग्र
६१०. मदन मोहन	२५३।ज	६८५।१६९२ उप
६११. मदन मोहन चरखारी वाले	५३७।ज	६७९।१८८०
६१२. मधुनाथ	४०१।ज	७०३।१७८०
६१३. (मधुसूदन)	२४१।ज	६७१।१६८१
६१४. मधुसूदन दास	४७६।ज	६७२।१८३९ उप
६१५. मन निधि	७७१।१८४३ से पूर्व	६५१।X
६१६. मनबोध झा	३६०।१७५० उप	
६१७. मनभावन	३७५।१७८० उप	६७९।१८३० उप
६१८. मनसा राम	८८५।X	६४०।X
६१९. मन सुख	३०२।ज	६५६।१७४० उप
६२०. मनियार सिंह	५८४।ज	६७०।१८६१ उप
६२१. मनिराम मिश्र कन्नौज वाले	४७७।ज	६७३।१८३९ उप
६२२. मनीराम मिश्र	६७६।ज	७०१।१८९६
६२३. मनीराय	८८६।×	६७५।×
६२४. मनोहर	४०२।ज	६८२।१७८० उप
६२५. मनोहरदास कछवाहा	१०७।१५७७ उप	५८०।१५९२ई० उप
६२६. मनोहरदास निरंजनी	८८८।X	७११।X
६२७. मन्नालाल 'द्विज' बनारसी	५८३।वि०	३४९।वि०
६२८. मन्य	८८७।X	६५०।×
६२९. मलिक मुहम्मद जायसी	३१।१५४० उप	७०८।१६८२ अ०
६३०. मलिन्द, मिहीलाल	६२३।ज	७०९।१९०२
६३१. मलूक दास	२४३।ज	६५९।१६८५ उप
६३२. मल्ल	३३७।१७५० उप	६९१।१८०३ उप
६३३. महताब	८८९।X	६८९।X
६३४. महबूब	३८४।ज	६९८।१७६२
६३५. महराज	७९३।१८६९ से पूर्व	६६५।×
६३६. (महा कवि) १५९	४०३ उप	६८८।१७८० उप
६३७. महानन्द वाजपेयी	५१९।ज	६९९।१९०१ उप

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
६३८. महिपति मैथिल	८९०।×	
६३९. महेशदत्त	६९६।वि०	६६८।वि०
६४०. माखन, लखेरावाले	६७०।१८३४ ज	६३८।१९११ उप
६४१. मातादीन मिश्र	६९८।वि०	७१२।वि०
६४२. मातादीन शुक्ल	७३१।वि०	६४७।वि०
६४३. माधवदास	२६।ज	६८७।१५८०
६४४. माधव सिंह, 'छितिपाल'	६०४।वि०	२४२।वि०
६४५. माधवानंद भारती	५८७।ज	६८७।१९०२ उप
६४६. (मान, चरखारीवाले) १७०	५१७।१८२० उप	७०२।×
६४७. मान, बैसवारा वाले	३७२।उप	६३०।१८१८ ग्र
६४८. मान कवीश्वरं राजपूतानावाले	१८६।१६६० उप	७१४।१७५६ अ०
६४९. मानदास व्रजवासी	१७२ाज	६२८.१६८० अ०
६५०. मान राय	११६।ज	७०४।१५८० ई० उप
६५१. मान सिंह, जयपुर नरेश	१०९।ज	७१५।१५९२ ई० उप
६५२. मानिकचंद्र कायस्थ	७१०.सं०	६९३.१९२० उप
६५३. मानिकचंद्र	७८।ज	६९२।१६०८ उप
६५४. मानिकचंद्र मथुरावासी	८९१।×	६४८।×
६५५. मिश्र	३०३।ज	६५७।१७४० उप
६५६. मीतूदास गौतम	६७९।ज	७०५।१९०१
६५७. मीर अहमद	४३५।१७४३ ज	
६५८. मीरन	८९२।×	६९०।×
६५९. मीर रुस्तम	२९४।ज	६६०।१७३५ उप
६६०. मीराबाई	२०।१४२० उप	७००।१४७५ अ०
६६१. मीरी माधव	२९५।ज	६६२।१७३५ उप
६६२. मुकुंद प्राचीन	२६६।ज	६३६।१७०५ उप
६६३. मुकुदलाल बनारसी	५६०।सं०	६३४।१८०३ उप
६६४. मुकुंद सिंह हाड़ा	१२७।ज	६३५।१७३५ अ०
६६५. (मुनिलाल) ८९५	८९३।×	६९४।×
६६६. मुबारक	९४।ज	६४६।१६४० ज
६६७. (मुरलीधर) १५७	१५६।सं०	६५८।१७४० उप
६६८. मुरारिदास	७७३।१८४३ से पूर्व	६४९।×

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
६६९. मुसाहिब	८९४।×	७१०।×
६७०. मुहम्मद	२९६।ज	६६१।१७३५ उप
६७१. मुहम्मद खाँ, भूपाल (सुलतान पठान)	२१४।ज	८८७।१७६१ उप
६७२. मूक जी	६६२।१८२९ उप	७१३।१७५० अ०
६७३. मून	८९५।×	६४१।१८६०
६७४. मेधा	६४९। उप	६९७।१८६७ ग्र
६७५. मोतीराम	२१६।ज	६५५।१७४० उप
६७६. मोतीलाल	३०।१५३३ज	६६७।१५९७
६७७. मोदनारायण, राजा प्रताप सिंह	३६२।१७७५ उप	
६७८. मोहन	२८४।ज	६३३।१७१५
६७९. मोहन	३२९।१७२०	६३२।१८७५
६८०. मोहनलाल भट्ट	५०२।१८०० उप	६३१।१८०३ उप
६८१. याकूब खाँ	३९४।ज	४२।१७७५ ग्र
६८२. रंगलाल	३६८।१७५० ज	७८१।१७०५ अ०
६८३. रघुनाथ प्राचीन	२७९।ज	७४०।१७१०
६८४. रघुनाथ बनारसी	५५९। उप	७३८।१८०२ ग्र
६८५. रघुनाथ उपाध्याय	६८०।१८४४ ज	७४३।१९२१ उप
६८६. रघुनाथ दास महन्त	६९२।१८८३ उप	७४२।×
६८७. रघुनाथ राय	१९३।१६३४ उप	७४१।१६३५ ई०उप
६८८. रघुराज सिंह, रीवाँ नरेश	५३२।वि०	७३७।वि०
६८९. रघुराम गुजराती	८९६।×	७८७।×
६९०. रघुराय बुंदेलखंडी	४२०।ज	७३४।१७९०
६९१. रघुलाल	८९७।×	७३६।×
६९२. रज्जब	८९८।×	७७७।×
६९३. रणजीतसिंह, जौंगरे के राजा	७१६।वि०	७९१।वि०
६९४. रणधीर सिंह, राजा शिरमौर	७३५।१८४० ग्र १८६० ग्र	७७६।वि
६९५. रतन, पन्नावाले	१५५।ज	७६७।१७३८ अ०
६९६. रतन कुँवरि	३७६।१७७७ ज	७६४।१८०८ अ०
६९७. रतनपाल	८९९।×	७६८।×

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
६९८. रतनसेन बंदीजन	१९९।१६२० उप	७६३।१७८८ अ०
६९९. रनछोर	१८९।१६८० उप	७७०।१७५० उप
७००. रमाकंत	९११। ×	
७०१. रमापति	९००। ×	
७०२. रविदत्त	६०४।ज	७६२।१७४२
७०३. रविनाथ	४२५।ज	७६१।१७९१
७०४. रसखान, इब्राहीम	६७।ज	७४५।१६३० उप
७०५. रसधाम	४६२।ज	७९४।१८२५
७०६. रसनायक, तालिब अली	४३९।सं०	७५७।१८०३
७०७. रसपुंज दास	९०१। ×	७५४। ×
७०८. रसरंग	६२०।ज	७५२।१९०१
७०९. रसराज	४०४।ज	७४४।१७८०
७१०. रसरास	२८५।उप	७५०।१७१५ अ०
७११. रसरूप	४१५।ज	७९२।१७८८ उप
७१२, रसलाल	४२८।ज	७५६।१७९३
७१३. रसलीन, गुलाम नबी	७५४।१७२३ से पूर्व	७५५।१७९८ ग्र
७१४. रसाल, अंगनेलाल	६०९।ज	७४६।१८८० उप
७१५. रसिकदास ब्रजवासी	७७४।१८४३ से पूर्व	७४७। ×
७१६. रसिक बिहारी	४०५।ज	७९५।१७८० उप
७१७. रसिकलाल	५३४।ज	७५३।१८८०
७१८. रसिक शिरोमणि	२६७।१६४८ ज	७४९।१७१५ उप
७१९. (रहीम) १०८	७५६।१७२३ से पूर्व	७९८। ×
७२०. राज सिंह, मेवाड़ नरेश	१८५।१६५४-८० रा	७९७।१७३७ उप
७२१. राजाराम	२३३।ज	७७४।१६८०
७२२. राजाराम	३९६।१७२१ ज	७७५।१७८८
७२३ राधेलाल	५५४।ज	७९३।१९११ उप
७२४. रामचरण	९०२। ×	७३२। ×
७२५. रामकृष्ण	५३८।ज	७२४।१८८६ अ०
७२६. राम जी	२५२।ज	७१८।१६९२
७२७. रामदत्त	९०३। ×	७८५। ×
७२८. रामदया	९०४। ×	७३०। ×

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
७२९. रामदास	११२।१५५० उप	७३३।१७८८ अ०
७३०. रामदास	४७८। ×	
७३१. रामदीन अलीगंज वाले	६६९।ज	७२२।१८९०
७३२. रामदीन त्रिपाठी	५२४।१८४० उप	७२१।१९११ उप
७३३. रामदेव सिंह, खड़ासा वाले	९०५। ×	७२५। ×
७३४. रामनाथ प्रधान	६२४।ज	७२४ १९०२ ग्र
७३५. रामनाथ मिश्र	९०६। ×	७८८। ×
७३६. रामनारायण कायस्थ	७३७।वि०	७२६।वि०
७३७. रामप्रसाद अग्रवाला	६३९।सं०	७९९।१९०१ उप०
७३८. राम प्रसाद बिलग्रामी	४४४ सं०	७८६।१८०३ अ०
७३९. राम बख्श, राम	९०७। ×	७१६। ×
७४०. राम भट्ट फर्रुखाबादी	४४५।ज	७८३।१८०३ उप
७४१. राम राय राठौर	७७५।१८४३ से पूर्व	७३१। ×
७४२. राम रूप	७५१।१७१८ से पूर्व	७५१। ×
७४३. रामलाल	९०८। ×	७२३। ×
७४४. रामसखे	९०९। ×	७२८। ×
७४५. राम सरन	३७९।१८०० उप	७८२।१८३२ उप
७४६. राम सहाय बनारसी	५६८।१८२० उप	७२०।१९०१ उप
७४७. रामसिंह बुंदेलखंडी	३८०।१८०० उप	७१७।१८३४ उप
७४८. राम सेवक	९१०। ×	७८४। ×
७४९. रामानंद, स्वामी	१०।१४००	
७५०. रायचंद गुजराती	९१२। ×	७८०। ×
७५१. राय जू	९१३। ×	७७८। ×
७५२. राव रतन राठौर	२०७।१६५० उप	६९६। ×
७५३. राव राना बंदीजन	५२१।१८४० उप	७६९।१८९१ उप
७५४. रुद्रमणि चौहान	४०६।ज	७९०।१७८०
७५५. रुद्रमणि मिश्र	३५२।१७४० उप	७८९।१८०३ उप
७५६. रूप नारायण	२६८।ज	७७२।१७०५ अ०
७५७. रूपसाहि	५०३।१८०० उप	७७३।१८१३ ग्र
७५८. लक्ष्मण	९१४। ×	८२६। ×
७५९. लक्ष्मणदास	७७६।१८४३ से पूर्व	८१३। ×

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
७६०. (लक्ष्मण शरणदास)	७७७।१८४३ से पूर्व	८१८। ×
७६१. लक्ष्मण सिंह	९१५। ×	८१४।१८१०
७६२. लक्ष्मी	९१६। ×	८२९। ×
७६३. लक्ष्मी नाथ मैथिल	७००।१८७० उप	
७६४. लक्ष्मीनारायण मैथिल	१२४।१६०० उप	७२५।१५८० ई० उप
७६५. लछिराम, होलपुर वाले	७२३।वि०	८१६।वि०
७६६. लच्छू	४६६।ज	८१५।१८२८
७६७. लतीफ़	४७०।ज	८३१।१८३४
७६८. ललितराम	९१७। ×	८२४। ×
७६९. लल्लू जी लाल	६२९।१८०३ उप	८०४।१८९२ अ०
७७०. लाजव	९१८। ×	८२७। ×
७७१. लाल	९१९। ×	८०३। ×
७७२. लाल, गोरेलाल	२०२।१६५८ उप	८००।१७३८ उप
७७३. लाल गिरिधर	४५१।ज	८०५।१८०७
७७४. लालचंद	९२०। ×	८०७। ×
७७५. लालजी कायस्थ	३२२।१७५१ उप	
७७६. लाल झा	३६३।१७८० उप	
७७७. लाल बनारसी	५६१।१७७५ उप	८०१।१८४७ उप
७७८. लालनदास	१००।ज	८०८।१६५२ अ०
७७९. लाल बिहारी	२९३।ज	८३०।१७३०
७८०. (लाल मुकुंद) ५६०	३९१।ज	८०६।१७७४ उप
७८१. लाला पाठक	४६९।ज	८०९।१८३१
७८२. लीलाधर	१९०।१६२० उप	८१२।१६१५ अ०
७८३. लोकनाथ	७५३।१७२३ से पूर्व	८२०।१७८० उप
७८४. लोकमणि	९२१। ×	८२८। ×
७८५. लोधे	७५२।१७१८ से पूर्व	८१९।१७७० उप
७८६. लोने सिंह	६१४।ज	८११।१८९२ ग्र
७८७. लोने बुंदेलखंडी	९२२। ×	८१०।१८७६
७८८. वजहन	९२३। ×	८३२। ×
७८९. वहाब	९२४। ×	८३३। ×
७९०. वाहिद	९२५। ×	८३१। ×

कवि	ग्रियसंन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
७९१. शंकर त्रिपाठी	६१३।ज	८६१।१८९१
७९२. शंभुनाथ त्रिपाठी	३६६।उप	८४०।१८०९ ग्र
७९३. शंभुनाथ, नृप शंभु	१४७।१६५० उप	८३७।१७३८ उप
७९४. शंभुनाथ वंदीजन	३५७।१७५० उप	८३८।१७९८ ग्र
७९५. (शंभुनाथ मिश्र, असोथर वाले) ३५७	३३८।१७५० उप	८३९।१८०३ उप
७९६. शंभुनाथ मिश्र, बैसवाड़ा वाले	६२१।ज	८४१।१९०१ ग्र
७९७. शंभुनाथ मिश्र, मुरादाबाद वाले	९२८। ×	९५३। ×
७९८. शंभु प्रसाद	९२९। ×	८४२। ×
७९९. शत्रुजीत सिंह	९२६। ×	९४५। ×
८००. शशिनाथ	९३१। ×	९१७। ×
८०१. शशि शेखर	२५५।१६४२ ज	११५।१७०५
८०२. शिरोमणि	२६२।ज	८९१।१७०३ उप
८०३. शिव कवि	८८।ज	९३४।१६३१
८०४. शिव अरसेला वन्दीजन	३३९।१७७० उप	७४३।१७९६ ज
८०५. शिव बिलग्रामी	४३१।१७३९ ज	८४४।१७९५
८०६. शिवदत्त बनारसी	५८८।ज	९४६।१९११ उप
८०७. शिवदास	७५८।१७५३ से पूर्व	८४८। ×
८०८. शिवदीन भिनगा	६०६।ज	८५७।१९१५ उप
८०९. शिवदीन, रघुनाथ	७३६।वि०	७३९।वि०
८१०. शिवनाथ बुन्देलखण्डी	१५२।१६६० उप	८४६।१७६० उप
८११. शिवनाथ शुक्ल	६३२।ज	८५५।१८७० अ०
८१२. शिवनारायण	३२१।१७३५ उप	
८१३. शिव प्रसन्न	७१६।वि०	८५८।वि०
८१४. शिवप्रकाश सिंह	६४३।ज	८५६।१९०१
८१५. शिवप्रसाद सितारे हिन्द	६९१।१८२३ ज १८८७ में जीवित	८४५।वि०
८१६. शिवराज	९३२। ×	८५१। ×
८१७. शिवराम	४१६।ज	८४७।१७८८ उप
८१८. शिवलाल दुबे	४७९।ज	८५०।१८३९
८१९. शिवसिंह	४१७।ज	८५३।१७८८ अ०

कवि	गियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
८२०. शिवसिंह सेंगर	५९५.ज	८५४।१८७८ ई० ग्र
८२१. शीतल त्रिपाठी	५२५।१८४० उप	८८५।१८९१ उप
८२२. शीतल राय	६१५।ज	८८६।१८९४
८२३ शेखर	७९५।१८६९ से पूर्व	९१४। ×
८२४. श्यामदास	३१६।ज	८९१।१७५५
८२५. (श्याम मनोहर)	७७९।१८४३ से पूर्व	८९२। ×
८२६. श्यामलाल	२६९।ज	८९६।१७०५
८२७. श्यामलाल, जहानाबादी	३४१।१७५० उप	९५५ १८०४ उप
८२८. श्यामशरण	३०९।ज	८९३।१७५३ अ०
८२९. श्रीकर	७४५।१६५५ से पूर्व	९४७। ×
८३०. श्री गोविन्द	२११।सं०	८६३।१७३० उप
८३१. श्रीधर राजपूताना के	१६६।ज	८६९।१६८० अ०
८३२. श्रीधर (श्रीधर मुरलीधर)	१५७।१६८३ सं०	८६८। ×
८३३. श्रीपति	१५०।ज	८६५।१७०० अ०
८३४. श्री भट्ट	५३।ज	८६४।१६०१ उप
८३५. श्री लाल गुजराती	४८९।ज	९५२।१८५०
८३६. श्री हठ	७४६।१६५५ से पूर्व	९५६।१७६० अ०
८३७. श्रुत गोपाल	१५।१४२० उप	
८३८. संख	७४१।१६५५ से पूर्व	९३८। ×
८३९. संगम	४८०।ज	९०१।१८४० ज
८४०. संत	३१८.ज	८७५।१७५९ अ०
८४१. संतजीव	३५३ १७४० उप	९३६।१८०३ उप
८४२. संतदास	२३५।ज	८७४।१६८० उप
८४३. संतन	४७२।ज	८७०।१८३४ अ०
८४४. संतन	४७३।ज	८७१।१८३४ अ०
८४५. संत बकस	७२४।वि०	८७२।वि
८४६. संपति	६५२।ज	९०५।१८७०
८४७. सकल	२४८।ज	९२०।१६९०
८४८. सखी सुख	४५३।ज	८७८।१८०७ उप
८४९. सगुण दास	७७८।१८४३ से पूर्व	९२५। ×
८५०. सदानंद	२३४।ज	९११।१६८०

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
८५१. सदाशिव	१८७।१६६० उप	९३३।१७३४ उप
८५२. सनेही	७५७।१७५३ से पूर्व	९४८। ×
८५३. सबल श्याम	९२७। ×	८९५ ×
८५४. सबल सिंह चौहान	२१०।ज	९१३।१७२७ ग्र
८५५. समनेस	५२८।१८१० उप	९४४।१८८१ उप
८५६. समर सिंह	७२५।वि०	९५४।वि०
८५७. सम्मन	४७१।ज	९०२।१८३४ अ०
८५८. सरदार	५७१।वि०	९२७।वि०
८५९. सरसराम मैथिल	९३०। ×	
८६०. सर्वसुख लाल	४२४।ज	९५१।१७९१
८६१. सहजराम बनिया	६९२।ज	८८९।१८६१ अ०
८६२. (सहजराम सनाढ्य) ५९२	६८६।ज	८९०।१९०५ अ०
८६३. सहीराम	२७५।ज	९१८।१७०८
८६४. सागर	४८२।ज	९०९।१८४३ उप
८६५. साधर	३९८।ज	९०४।१८५५
८६६. सामंत	१७८।ज	९२१।१७३८ उप
८६७. सारंग, असोथरवाले	३४३।१७५० उप	९५८।१७९३ उप
८६८. सारंगधर	८।१३६३ उप	९३२।१३३० अ०
८६९. साहब	७४२।१६५५ से पूर्व	९३९। ×
८७०. सिद्ध	७४३।१६५५ से पूर्व	९५७।१७८५ अ०
८७१. सिरताज	४६३।ज	९०६।१८२५
८७२. सिंह	४७४।ज	९००।१८३५ उप
८७३. सीताराम दास	७२७।वि०	९२३।वि०
८७४. सुंदर, असनीवाले	९३४। ×	९४१। ×
८७५. सुंदर श्रृंगारी	१४२।उप	८७६।१६८८ ग्र
८७६. सुदरदास	१६४।१६२० उप	८७७। ×
८७७. सुकवि	४९१।ज	९२४।१८५५
८७८. सुखदीन	६८१।ज	८८०।१९०१
८७९. (सुखदेव अंतर्वेदी) १६०	३३५।१७५० उप	८३६।१७९१ अ०
८८०. सुखदेव मिश्र कंपिलावाले	१६०।१७०० उप	८३४।१७२८ ग्र
८८१. (सुखदेवमिश्र दौलतपुरवाले)१६०३	५६।१७४० उप	८३५।१८०३ अ०

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
८८२. सुखराम	७२९।वि०	९४३।वि०
८८३. सुखलाल	३५४।१७४० उप	९३५।१८०३ उप
८८४. सुखानंद	४४६।ज	९५०।१८०३
८८५. सुजान	९३३। ×	९११। ×
८८६. सुदर्शन सिंह	७०९।सं०	९३७।१९३० उप
८८७. सुवंश शुक्ल	५८९।ज	९२६।१८३४ ज
८८८. सुबुद्धि	७४४।१६५५ से पूर्व	९४०। ×
८८९. सुन्ना सिंह, श्रीधर	५९०।उप	८६७।१८७४ ग्र
८९०. सुमेर सिंह, साहेबजादे	७५९।१७५३ से पूर्व	९०८। ×
८९१. सुलतान	९३५। ×	८८८। ×
८९२. सूखन	६८२।ज	८८१।१९०१
८९३. सूजा चारण	१९४।१६८१ उप	
८९४. सूदन	३६७।ज	९२९।१८१० उप
८९५. सूरज	७६०।१७५३ से पूर्व	९४९। ×
८९६. सूरति मिश्र	३२६।१७२० उप	९३१।१७६६ ग्र
८९७. सूरदास	३७ १५५० उप	९२८।१६४० म
८९८. सेख	२३६।ज	८८२।१६८० उप
८९९. सेन	१२।१४०० उप	९२२।१५६० अ०
९००. सेनापति	१६५।ज	९३०।१६८० उप
९०१. सेवक बनारसी	५७९।वि०	८८४।वि०
९०२. (सेवक चरखारी) ५७९	६७७।उप	८८३।१८९७ उप
९०३. (सोभ)	९३६। ×	८९७। ×
९०४. (सोभनाथ)	९३७। ×	८९८। ×
९०५. सोभनाथ सौंड़ी वाले	४४७।ज	९४२।१८०३ उप
९०६. स्कंदगिरि	५२७।सं०	१७।१९१६ उप
९०७. हजारीलाल त्रिवेदी	७१८।वि०	९९७।वि०
९०८. हटी नारायण	४९।१५७५ उप	
९०९. हठी	६६४।ज	९७४।१८८७
९१०. हनुमंत	९३८। ×	९७६। ×
९११. हनुमान	७९६।१८६९ से पूर्व	९७५।वि०
९१२. हरखनाथ झा	६४२।१८४७ न	

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
९१३. हरजीवन	९४०।×	९८५।×
९१४. हरजू	२७०।ज	९८७।१७०५
९१५. हरदयाल	९४१।×	९६५।×
९१६. हरदेव	५०५।१८०० उप	९८९।१८३०
९१७. (हरि) ९३९	७६१।१७५३ से पूर्व	९७१।×
९१८. हरिकेश	२०३।१६५० उप	९६८।१७६०
९१९. हरिचंद्र चरखारी वाले	२०४।१६५० उप	१००२।×
९२०. हरिचंद बरसानिया	९४२।×	९९६।×
९२१. हरिचरणदास	९३९।×	९९५।×
९२२. हरिजन प्राचीन	२४९।ज	९८६।१६९०
९२३. हरिजन, (सरदार के पिता)	५७५।१८५१ सं०	१००१।१९११
९२४. हरिदास कायस्थ पन्ना	५४६।ज	९६०।१९०१
९२५. हरिदास वंदीजन बाँदा	५३९।ज	९६१।१८६९
९२६. हरिदास स्वामी	५९।१५६० ज	९६२।१६४०
९२७. हरिदेव बृंदावनी	९४३।×	९६३।×
९२८. हरिनाथ गुजराती	३५५।ज	९९८।१८२६
९२९. हरिनाथ महापात्र	११४।उप	९९५।१६४४
९३०. हरिप्रसाद बनारसी	५६२।१७८५ उप	
९३१. हरिवंश मिश्र	२०९।१६६२ उप	९६९।१७२९
९३२. हरि वल्लभ	९४४।×	९७२।×
९३३. हरिभानु	९४५।×	९७९।×
९३४. हरिलाल	९४६।×	९९०।×
९३५. हरिश्चंद्र, (भारतेंदु)	५८१।१८५० ज १८८५ म	९८४।वि०
९३६. हरी राम	१४१।ज	९९१।१६८०
९३७. हरीहर	४२९।ज	९६७।१७९४
९३८. हित नंद	९४७।×	९७८।×
९३९. हितराम	७६२।१७५३ से पूर्व	१०००।×
९४०. हित हरिवंश	५६।१५६० उप	९७०।१५५९
९४१. हिमाचल राम	६२६।ज	९९२।१९०४
९४२. हिम्मत बहादुर	३७८।१८०० उप	९९९।१७६५

कवि	ग्रियर्सन संख्या/सन	सरोज संख्या/संवत
९४३. हिरदेस बंदीजन	५४७।ज	९६६।१९०१
९४४. हीरामनि	२३७।ज	९८८ १६८०
९४५. हीरालाल	९४८। ×	९९३। ×
९४६. हुलास राम	९४९। ×	९९४। ×
९४७. हुसेन	२७६।ज	९८०।१७०८
९४८. हेम	९५०। ×	९८३। ×
९४९. हेम गोपाल	९५१। ×	९८१।१७८०
९५०. हेम नाथ	९५२। ×	९८२। ×
९५१. होलराय	१२६।उप	९७७।१६४०

अनुक्रमणिका ९

ग्रंथ-नाम	
अंग दर्पण	७५४
अंग्रेजी अच्छरों के सीखने की उपाय	६९९
अंधेर नगरी	७०६
अणुभाष्य	३४
अद्भुत चरित्र	७०६
अध्यात्म प्रकाश	१६०
अनन्य जोग	५
अनवर चन्द्रिका	३९७
अनुराग बाग	५८२
अनेकार्थ (१)	४२
,, (२)	३८७
,, (३)	४३३,६३८
अन्योक्ति कल्पद्रुम	५८२
अमर कोश	१७०,५६७,५८९,६३८, ७६१
अमृतधार	११
अर्जुन विलास	५९६
अलंकार चन्द्रिका (१)	२७
,, (२)	४६२
अलंकार चन्द्रोदय	५१२
अलंकार दर्पण	३५५
अलंकार दीपक	३३८
अलंकार निधि	३४८
अलंकार भूषण	३३९
अलंकार माला	३२६
अलिफ़ नामा	१३

ग्रंथ-नाम	
अवतार चरित्र	६३८
अवध विलास	६२८
अश्वविनोद	७२
अष्टनाम (१)	१४०,६३८
,, (२)	६३८,६९४
अस्कन्द विनोद	५२७
आईन-ए-अकबरी	३७
आईन-ए-तारीखनुमा	६९९
आगम	१३
आनन्द रघुनन्दन	७०५
आनन्दरस (१)	५६१,६३८
आनन्दरस (२)	६४८,६६८
आनन्दाम्बुनिधि	५३१,६२९
आभास रामायण	६३८
आल्हखण्ड	६७
आह्निक	३७३
इतिहास तिमिर नाशक	६९९
इश्क महोत्सव	५५९
उपदेश कथा	६३८
उपनिषद	१२८
उपसतसैया	८११
उषा हरण	६४२,७०६
ऋतु संहार	२१०
कड़खा रामायण	१२८
कनरपी घाट लड़ाई	३६३
कर्णाभरण	११५
कर्पूर मंजरी	७०६

ग्रंथ-नाम

कलानिधि ३४९
कल्लोल तरंगिणी ३७४
कवि कुल कंणाभरण ३५८
कविकुल कल्पतरु १४३
कवितावली १२८
कवित्त अकाली ७०१
कवित्त रत्नाकर ६९८
कवित्त रामायण १२८,६३८
कविनेह ६७२
कवि प्रिया १३४,१३७,५७१,५७२
६३८,६७८,७६१
कविप्रियाभरण ७६१
कविमाला १५३
कवि वचन सुधा ५८१
कवि विनोद १५६,१५७
कवीन्द्र कल्प लता १५१
कवीर पांजी १३
कायस्थ कुल भास्कर ९०२
कायस्थ धर्म दर्पण ९०२
कालिदास हजारा, अध्याय १० की
भूमिका,१५९,३३४,३५८
काव्य कलाधर ५५९
काव्य कल्पद्रुम (१) १५०
" (२) १६५
" (३) ६१८
काव्य निर्णय ३४४
काव्य प्रकाश १४३
काव्य भूषण ५२८
काव्य विवेक १४३
काव्य विलास १४९
काव्य रत्नाकर ७३५

ग्रंथ-नाम

काव्य रसायन १४०
काव्य शिरोमणि ६१८
काव्य संग्रह ६९६
काव्य सरोज १५०
काव्याभरण ३७४
काशी का छाया चित्र ५८१
काशी खंड ६३८
काश्मीर कुसुम ५८१
किताब-ए-महाभारत ५६४
क़ियामत नामा १६७
किशोर संग्रह ३४८
क़िस्सा-ए-सैंडफ़र्ड व मर्टन ६९९
कुंडलिया गिरिधर कृत ३४५
कुंडलिया रामायण १२८
कुछ बयान अपना ज़ुबान की ६९९
कुमार पाल चरित्र ४
कृष्ण कल्लोल ४७२, ६२९
कृष्ण खंड ३७२, ६८४
कृष्ण गीतावली ६३८
कृष्ण चन्द्रिका (१) ३४९
" (२) ३९५
कृष्ण चरितामृत ३७३
कृष्ण दत्त भूषण ६०६
कृष्णावली १२८, ६३८
केटो कृतांत ७०६
केशरी प्रकाश ३७४
कोकसार ३४७, ६३८
कौतुक रत्नावली ६३८
खसरा १३
खास ग्रंथ १३
खुमान रायसा २

ग्रंथ-नाम	
ख्यात	७६
गंगा भूषण	६९७
गंगा लहरी	८१२
गजसिंह विलास	८१२
ग़ज़ले (सौदा की)	६३८
गणितांक	६३८
गणेश पुराण	३०
गया पत्तन	१७
गर्भावली रामायण	६३८
गीतगोविंद	१९, २०, २१, ४२, ९१२
गीत गोविंदादर्शन	९१२
गीतावली	१२८, ६३८
गुटका	६९९
गुरु कथा	३७३
गुरु न्यास	३२१
गुलजार विहार	१७
गुलाब और चमेली का किस्सा	६९९
गोपाचल कथा	८६५
गोपाल पचीसी	५३१
गोपीचन्द गान	६३८
गोपी पचीसी	५०७
गोरखनाथ की गोष्ठी	१३
गोरख मछेंद्र समाज	६३८
गोविंद सुखद विहार	५६८
गो संकट	७०६
गोसाईं चरित	१२८, १३०
गौरी परिणय	७०६
ग्रंथ	१२, २२, ६३८, ७६७
ग्रंथ चण्डी	७०६
ग्रंथ साहिब	१६९
चन्दन सतसई	३७४

ग्रंथ-नाम	
चन्द्र प्रबोध	४८६
चन्द्रसेन	७०६
चन्द्रालोक	३७७
चन्द्रावली	७०६
चन्द्रास्त	५८१
चन्द्रोदय	३३४
चक्राव्यूह	४९०
चक्षुदान	७०६
चमत्कार चन्द्रिका	७६१
चाँचर	१३
चार दरवेश	६३८
चितविलास	७६८
चित्र कलाधर	६९४
चित्र भूषण	६४९
चेत चन्द्रिका	५६४
चौंतीसा	१३
चौपाई रामायण	१२८
चौरासी वार्ता	३७
छंद छप्पनी	४७७
छंद पयोनिधि	९४३
छंद विचार	१४३
छंद विचार	१६०
छंद श्रृङ्गार	३४०
छंद सार (१)	५१
,, (२)	१४६
,, (३)	८३०
छंद स्वरूपिणी	९४२
छंदानंद	६९३
छंदार्णव	३४४
छत्र प्रकाश	१९७, २०२, ६३८
छप्पय रामायण	१२८

ग्रंथ-नाम		ग्रंथ-नान	
छोटा जाम-ए-जहाननुमा	६९९	तुलसी कृत रामायण	१२८
छोटा भूगोल हस्तामलक	६९९	तुलसी भूषण	५७१
जंजीराबंद	१५९	त्रिदीप	६०४
जगत विलास	१८४	दयाविलास	६३८
जगद्विनोद	५०६, ६३८	दशरथराय	१६०
जग मोहन	५५९	दशमस्कंध	४२,६२९
जमुना लहरी	५०७	दशावतार	५८०
जमुना शतक	४२०	दस पादसाह का ग्रंथ	१६९
जयचंद्र प्रकाश	६	दादू की वाणी	१६३
जयदेव विलास	१८८	दादूपंथी ग्रंथ	१६३
जय नरसिंह की	७०६	दान वाक्यावली	१७
जयसिंह कल्पद्रुम	३२५	दानलीला (१)	४२
जवाहिर रत्नाकर	४८५	,, (२)	२२०
जानकी मंगल (१)	१२८	दिग्विजय. भूषण	६९४
,, ,, (२)	७०५, ७०६	दिलबहलाव	६९९
जाम-ए-जहाननुमा	६९९	दीपमालिका चरित्र	२२०
जुक्ति रामायण	५७७, ५७८	दुःखिनी वाला	७०६
जैमिनीय सूत्र भाष्य	३४	दुल्लन	६९९
जैसा काम वैसा परिणाम	७०६	दुर्गाभक्ति तरंगिणी	७०६
जोग तत्व	२६१	दुर्लभ बंधु	७०६
ज्ञान उपदेश	६३८	दूती दर्पण	६९४
ज्ञान चूरन वचनिका	८८८	दूती विलास	५९७
ज्ञान प्रकाश	३२३	दूषण उल्लास	१४५
ज्ञान समुद्र	१४२	दृष्टिकूट सूरदास कृत	३७,५७१
ज्ञान सरोवर	७९८	देव पुरुष दृश्य	७०६
ज्ञान स्वरोदय	६३८	देव माया प्रपंच	१४०,७०६
झूलना	१३	देवी चरित्र सरोज	६०४
झूलना रामायण	१२८	दोहा रामायण	१२८
डाक्टरी	६३८	दोहावली (तुलसीदास कृत)	१२८,६३८
तप्ता संवरण	७०६	,, (उमापति त्रिपाठी कृत)	६९१
तारीख-ए-कलीसा	६९९	,, (जुगल प्रसाद कृत)	८२९

ग्रंथ-नाम

धनंजय विजय ७०६
धर्म तत्व सार ६३९
ध्यान चिंतामणि ९१०
ध्यान मंजरी ६३८
नख शिख, ८७ टि०, १३५, १४०, १४१, १४९, ३२६, ४०४, ४१९, ४३२, ४५२, ४७९, ४९४, ५०७, ५१०, ५३३, ५५७, ६३०, ६३३, ६३७, ६४४, ६४८, ६५५, ६६०, ६७३, ७३०, ८४८. ८८९, ८९२, नायिका भेद भी देखिए।
नजीर के शैर १७१
नयन पचासा १५४
नयनसुख (रागकल्पद्रुम में उल्लखित) ६३८
नरिंदभूषण ९४५
नल और दमयंती ३७
नलोदय १०२
नव मल्लिका ७०६
नहुष नाटक ७०६
नाटक ७०६ टि०
नाम माला (१) ४२, ६३८
नाम माला (२) ४३३, ६३८
नाम रामायण ५२६
नायक भेद, ८७ टि०, नायिकाभेद पर भी ग्रंथ देखिए।
नायिका भेद, ८७ टि०, ४४५, ४६५, नायिकाभेद पर भी ग्रंथ देखिए।
नायक भेद पर ग्रंथ—शब्दार्थ ८७ टि० देखिए, ८७, १४२, १४६, १४७, २०२, २४७, २५०, ३००

ग्रंथ-नाम

३०८, ३५६, ३७८, ४४५, ४५१, ४६५, ५२७, ५३६, ५६१, ६०८, ६१८, ६५०, ६६८, ७१५, ७२३, ७९१, ८०८, ८१०, ८२५, नख शिख भी देखिए।
नासिकेतोपाख्यान २४५
निर्णय मंजरी ६८०
नीति कथा ६३८
नीति विलास ६९५
नील देवी ७०६
नृत्य राघव मिलन ९०९
नैषध ३४९
पंच नलीय ३४९
पंच रत्न १२८, ६३४
पंचाध्यायी ४२
पच्छी विलास ६३०
पथिक बोध ३७४
पद की पोथी ३७६
पद की विलास ३७३
पद्मावत ३१, ६३८
पद्मावती ७०६
पद्मिनी कथा ६३८
पांडवों के यज्ञ ८३२
पाखंड विडंबन ७०६
पारसी प्रकाश १७४
पारिजात हरण ७०६
पार्वती मंगल १२८
पिंगल १४१, ६३८
पुराण १८२
पुरुष परीक्षा १७
पृथ्वीराज रायसा ६, ६३८

ग्रंथ-नाम	
पोथी दशम स्कंध	६२९
पोथी भागवत	६२९
पोथी लोक उकत रस जुगत	७५८
पोथी शाह मुहम्मद शाही	३५५
प्रथम ग्रंथ (जगजीवन दास का)	३२३
प्रबंध घटना	२१५
प्रबोध चंद्रोदय	६३८,६६९,७०६
प्रभावती	७०६
प्रभावती हरण	६४१,७०६
प्रसिद्ध महात्माओं का जीवनचरित्र	३४ टि०, ३७ टि०, ५६९,५८१
प्रस्तार प्रभाकर	९०१
प्रह्लाद चरित्र	६८६
प्रेम जोगिनी	७०६
प्रेम तरंग	१४०
प्रेम दीपिका (१)	१४०
" (२)	५१६
प्रेम पयोनिधि	४०७
प्रेम रत्न	३७६
प्रेम रत्नाकर (१)	२१२
" (२)	१४९ पुनश्च, ३४४
प्रेम सत्त्व निरूप	८०६
प्रेम सागर	४०, ६२९, ६३८
प्रेम सुमार्ग	१६९
फते प्रकाश	१५५
फते शाह भूषण	१५५
फरमाकोपिया	६३८
फाजिल अली प्रकाश	१६०
फ़ारसी सर्फ-व-नह्व	६९९
बंशी कल्पलता	५९३
बच्चों का इनाम	६९९
बधू विनोद	१५९

ग्रंथ-नाम	
बरवै अलंकार	६०९
बरवै नायिका भेद (१)	४४५
" (२)	४६५
बरवै रामायण	१२८, ६३८
वर्णमाला	६९९
बलख की रमैनी	१३
बलभद्र चरित्र	५११
वल्लभ दिग्विजय	३४
वसंत	१३
वसंत पच्चीसी	५९४
वाक मनोहर पिंगल	६३७
बाग बहार (१)	३४४
" (२)	५८२
बालक पुराण	५६४
बाल खेल	७०६
बाल बोध	६३७
बानी	१३
बामा मनरंजन (१)	४८२
" (२)	६९९
वारांगना रहस्य	७०६
बारामासा (१)	१३
" (२)	९२४
वार्तिक राजनीति	६२९
विक्रम विरुदावली	५१४
विक्रम सतसई	५१४
विचार माला	२८७
विचित्र नाटक	१६९
विजय मुक्तावली	७५,५६४
विजय विलास, अध्याय ९ की भूमिका	३७
विज्ञान गीता	१३४

ग्रंथ-नाम

विज्ञान विभाकर ७०६
विज्ञान विलास ३२०
विदुर प्रजागर ५७४
विद्यांकुर ६९९
विद्याभ्यास का फल ६३८
विद्या सुन्दर ७०३
विद्वन्मोद तरंगिणी, अध्याय १० की भूमिका, ५८९,५९०
विनय पचीसी ५३८
विनय पत्रिका १२८,५२९,६३८, ६४३,८९४,
विनयामृत ५६९
विष परीक्षा ६३८
विष्णुपद ३४
विष्णु विलास २०२
बीजक १३,१४,५२९,६३८
बीरवर नामा १०६
वीर सिंह का वृत्तान्त ६९९
बुद्ध सागर १६९
बूढ़े मुँह मुहासे, लोग चले तमासे ७०६
वृन्दावन सत ६३८
वृत्तविचार १६०
वृत्तविनोद ९०१
वृत्तभास्कर ३७३
वृत्तहार ५८५
वृहच्छिव पुराण ५९५,६१९
वृहत्कवि वल्लभ ९३९
वृहद रामायण माहात्म्य १२८
वेणी संहार ७०६
बेदरदी कथा ६३८

ग्रंथ-नाम

वैताल पचीसी (१) ६२६,६३८
" (२) ३६६,६३८
" (३) ६२९,६३८
" (४) ६३८,८८३
वैदिकी हिंसा ७०६
वैद्य मनोत्सव ६३८
वैद्य रत्न (१) ५९६
" (२) ८२७
वैश वंशावली ६२१
व्यंग्य शतक ४३२
व्यंग्यार्थ कौमुदी १४९
व्रज जात्रा ६३८
व्रज विलास ३६९,६३८
ब्रह्म विलास ४९७
ब्रह्मोत्तर खण्ड, ३५१,५९५,६५८
भगवद्गीता (राग कल्पद्रुम में उल्लिखित) ६३८
भगवती विनय ६९५
भजन ग्रंथ ३२१
भक्त उरबसी ५१, ३२२
भक्तमाल ३६,३७,४४,४५,५१,५७, ६७,१२८,३१९,३२२,६३८, ६४०,८०६
भक्तमाल प्रदीपन ५१
भक्त सिंधु १२८
भक्ति भाव ५०७
भरथरी गान ६३८
भरथरी शतक ६०४
भर्तृहरि शतक ६०४, ८८०
भवानी छंद १६६
भागवत (१) ३१९

ग्रंथ-नाम	
„ (२)	६२९
भागवत पुराण	१७,३४,३७,४०,१०५, १३५,५३२,६१४,६२९,६३८, ७९७,८५९
भारत जननी	७०६
भारत दुर्दशा	७०६
भारत भूषण	५८०
भारत सौभाग्य	७०४, ७०६
भौंवर सौंवर	४८६
भाव महिम्न	७३६
भाव विलास	१४०
भाषा अमर कोश	६३८
भाषा इंद्रजाल	६३८
भाषा ऋतु संहार	२१०
भाषा कायदा	६३८
भाषा कोश	६३८
भाषा चंद्रोदय	४८९
भाषा छंद	६३८
भाषा पिंगल	६३८
भाषा प्रकाश	५७८
भाषा भूषण	१४९,३७७,५७२,५८०, ६३५,६३६,६३८,६६०,७६१
भाषा वैदक	६३८
भाषा राजनीति	५७४
भाषा रामायण	७३९
भाषा साबर	६३४
भाषा सार	५१५, ७३१
भाषा सौन्दर्य लहरी	५८४
भूगोल वृत्तांत	६२८
भूगोल हस्तामलक	६९९
भूषण उल्लास	१४५

ग्रंथ-नाम	
भूषण कौमुदी	७३५
भूषण हजारा	१४५
भूप भूषण	११५
भोज भूषण	५१९
भ्रमर गीत	८०४,८०६
मंगल	१३
मज़ामीन	६९९
मनोज लतिका	६०४
मनोरंजन इतिहास	६३८
मधुप्रिया	५१०
मधुमती	७०४
मसादिर-ए-भाषा	६२९
महाभारत, अध्याय १० की भूमिका	७५,२१०,५५९,५६४,६६६, ६०७,६३८
महाभारत दर्पण	५६४
महाप्रलय	३२३
महोबाखण्ड, पृथ्वीराज रायसाका,	६,७
माधव विलास (१)	६२९,६३८
„ (२)	६३८,८९६
माधव सुलोचना	७९७
माधवानल (१)	२१६
„ (२)	६२९
„ (३)	८७२
माधुरी	७०६
मान चरित्र	१०९
मान मंजरी	६३८
मान लीला	४२
मानव धर्मसार	६९७
मानस भूषण	५७१
मानस शंकावली	५७६

ग्रंथ-नाम	
मानिक बोध	८९१
मिक़रातुल काहिलीन	६९९
मित्र मनोहर	५७४
मिश्र श्रृङ्गार	३३१
मुद्रा राक्षस	७०६
मुक्ति मुक्तावली	७०३
मुहूर्त चिंतामणि	३६६
मृच्छ कटिक	७०६
मोक्ष पंथ	४८६
रघुराज घनाक्षरी	३७३
रघुवंश	१२८,५९२
रघुवीर ध्यानावल	६९५
रणधीर प्रेम मोहिनी	७०६
रतन माला	९३२
रति विनोद	३३४
रत्नावली (उमापति त्रिपाठी कृत)	६९१
रत्नावली (नाटक)	३१
रमल प्रश्न	५९१
रमल भाषा	४८८
रमैनी	१३
रस कल्लोल (१)	३३८
रस कल्लोल (२)	५०४
रस कौमुदी	५४६
रस के पद	५९
रस चंद्रिका	१३८, ३३४
रस चंद्रोदय (१)	३३४
रस चंद्रोदय (२)	५७०,५७३
रस तरंगिणी	३३८
रस तरंगिणी	५८९
रस दर्पण	७३०
रस दीप	४९६

ग्रंथ-नाम	
रस निधि	४३१
रस प्रबोध (१)	७५४
,, (२)	९३४
रस मंजरी	१५५, ५८९
रस रंजन	१५२
रस रत्नाकर	६९७
रस रत्नावली	१५४
रस रहस्य	६३२
रस राज	१४६,४९४,६३८,९२६
रस विलास (१)	१४०
,, (२)	१५४
,, (३)	५११
रस सारांश	३४४
रसार्णव	३५६, ६३८
रसानद लहरी	१४०
रसिक प्रिया	१३४,३२६,३९४,४२१ ४७१,५७५,६३८
रसिक मोहन	५५९
रसिक रसाल	४३७
रसिक विलास (१)	१५८
,, (२)	३३९
राग कल्पद्रुम, अध्याय १० की भूमिका,	३४,३५,३६,६३८
रागमाला (१)	४००,६३८
,, (२)	९०४,६३८
राग विनोद	२०
राजदेव विलास	१८६
राजनीति (चाणक्य की)	५१, ५७४, ६२९,८४०,९११
राजनीति	६२९,६३८
राज पत्तन	१८९

ग्रंथ-नाम	
राज प्रकाश	१८५
राज रत्नाकर	१८७
राज रूपकाख्यात	१९५
राजाभरथरी गान	६३८
राजा भोज का सपना	६९९
राधाभूषण	५३९
राधा माधव	७०६
राधा शतक	६६४
राधा सुधा निधि	५६
राधिका विलास	१४०
राम कथा	७०५
राम कवित्तावली (अयोध्या प्रसाद वाजपेयी कृत)	६९३
राम कलेवा	६२४
राम कृष्ण गुणमाल	६९७
राम गीत माला	३७३
राम चंद्रिका	१३४,५७७,५७८,६३८
राम चरण चिह्न	६३८
राम चरित मानस	१२८
राम चरित्र	१७२
राम तत्व बोधिनी	६४३
राम नवरत्न	६७५
राम निवास रामायण	६९५
राम भूषण	२७
राम रत्नाकर	३७३
राम रहस्य रामायण	८५८
राम रावण का युद्ध	८९५
राम लला नहछू	१२८
राम लीला	७०८
राम विलास (१)	३७५,३६६
" (२)	७१२

ग्रंथ-नाम	
राम विनोद	६३८
राम सगुनावली	१२६
राम सतसई	१२८,६२४
राम सलाका	१२८,६३८
रामानंद विहार	६९५
रामानंद की गोष्ठ	१३
रामायण, अध्याय १० की भूमिका	१२८,१७२,७१२
रामायण (गजराज उपाध्या कृत)	५८५
" (गुलाबसिंह कृत)	४८६
" (चंद्र झा कृत)	७०२
" (चिंतामणि त्रिपाठी कृत)	१४३
" (तुलसीदास कृत)	१२८, ५७६,६३८
" (भगवंतराय कृत)	३३३
" (शंकर त्रिपाठी कृत)	६१३
" (समरसिंह कृत)	७२५
" (सहज राम कृत)	५९२
रामायण, आभास रा०	६३८
" कड़खा रा०	१२८
" कवित्त रा०	१२८
" कुंडलिया रा०	१२८
" गर्भावली रा०	६३८
" चौपाई रा०	१२८
" छप्पय रा०	१२८
" जुक्ति रा०	५७७
" झूलना रा०	१२८
" दोहा रा०	१२८
" नाम रा०	५२६
" बरवै रा०	१२८,६३८
" भाषा रा०	७३९

ग्रंथ-नाम	
,, राम निवास रा०	६९५
,, राम रहस्य रा०	८५८
,, राम विलास रा०	३५७
,, रोला रा०	१२८
,, श्लोकावली रा०	६३८
,, परिचिर्या	५६९
,, माहात्म्य	१२८
रामालंकृत मंजरी	१३४
रामाश्वमेध	४७६
रामास्पद	३७३
रायसा राव रतन	२०७
रास पंचाध्यायी (१४२) राग कल्पद्रुम में उद्धृत	६३८
रुक्मिणी मंगल	४२,६३८
रुक्मिणी स्वयंबर	७०६
रूप विलास (१)	५०३
,, ,, (२)	५०९
रेखता	१३
रोगांतक सार	६३८
लघु भूषण	६९७
लछमन शतक	१७०
लतायफ़-ए-हिंदी	६२९
ललित ललाम	१४६
ललिता नाटिका	७०६
लव ग्रंथ	३२१
लालचंद्रिका	५६१, ६२९
लीलावती	६३८, ९१२
लूना चमारी का मंत्र, राग कल्पद्रुम में उद्धृत	६३८
वाक़यात-ए-बाबरी	७०६
विवाद सार	१७

ग्रंथ-नाम	
विषस्यविषमौषधम्	७०६
वेद	१२८
वेनिस का सौदागर	७०६
बैताल पंच विंशतिका	३२६, ३६६
शंकर दिग्विजय	५८७
शकुंतला (१)	६२९
,, (२)	१९८, ७०६
शब्द कल्पद्रुम	६३८
शहशादे सौसन	७०६
शर्मिष्ठा	७०६
शहादत-ए-कुरानी बर कुतुब-ए-रब्बानी	६९९
शारंगधर पद्धति	८
शालिहोत्र	३५०, ३६५, ३७७, ४६९, ६३८, ६५७, ८५४, ९१४, ९४९
शाहनामा	६९८
शिव चौपाई	७५८
शिव पुराण	६२१
शिव राज भूषण	१४५
शिव सागर	९३२
शिव सिंह सरोज (१)	१५९, ५९५
,, (२)	७२३
शिव स्वरोदय	६३८
शिशुबोध	६३८
शृंगार कवित्त	५०७
शृंगार दोहा	५०७
शृंगार नवरस	५४७
श्रृङ्गार निर्णय	३४४
श्रृङ्गार लतिका	५९९
श्रृङ्गार रत्नाकर	६११
श्रृङ्गार रत्नावली	३७१

ग्रंथ-नाम		ग्रंथ-नाम	
श्रृङ्गार शिरोमणि	३७७	समर सार	३६४
श्रृङ्गार संग्रह	५७१	समय बोध	३२८
श्रृङ्गार सार	३७४	सतसई (बिहारी की)	१९६,२१३, २१४,२१५,३२६,३२७,३४६, ३९७,४०९,४२१,५५९,५६१, ५६२,५७१,६२९,६३८,८११, ९०७
श्रृङ्गार सारावली	६२७		
श्रृङ्गार सुधाकर	७१५		
श्रृङ्गार सौरभ	४४५		
श्री कृष्णावली	१२८,६३८		
श्रीपति सरोज	१५०	सतसई (विक्रम की)	५१४
श्रीपाल चरित्र	८५५	सतसई (चंदन की)	३७४
श्री भागवत	३३२,६२९	सतसई (तुलसी की)	१२८,७४०
श्री भागवत दशम स्कंध	६२९	सती प्रताप	७०६
श्री रामाज्ञा	१२८	सत्कवि गिराविलास	२५९
श्रुति भूषण	११५	सत्य हरिश्चंद्र	७०६
श्लोकावली रामायण	६३८	सब्द (दूल्हाराम के)	३४४
षट ऋतु (१) २१०,	६३८	सब्दावली (कबीर की)	१३
,, (२)	४७९,६३८	सब्दावली (शिवनारायण की)	३२१
,, (३)	६३८,६४८	सभाविलास	६२९,६३८
संकट मोचन	१२८	सरस रस	३२६,६३८
संगीत पचीसी	६३८	सरोजिनी	७०६
संगीत दर्पण	६३८	सर्पादि जंतून की पोथी	६३८
संगीत रत्नाकर	६३८	सर्फ-व-नह्व-ए-उर्दू	६९९
संगीत सार	६०,६३८	सर्व लोह प्रकाश	१६९
संत परवान	३२१	सर्व संग्रह	५२९
संत महिमा	३२१	साखी (कबीर की)	१३
संत विलास	३२१	साखी (दूल्हाराम की)	३२४
संत सागर	३२१	साधारण सिद्धांत	५९
संत सुंदर	३२१	सामुद्रिक	६३८
संतोपदेश	३२१	साहित्य चन्द्रिका	३४६
संताचारी	३२१	साहित्य दर्पण	५०७
सची बहादुरी	६९९	साहित्य दूषण	५०७
सज्जाद संबुल	७०६	साहित्य वंशीधर	५७४

ग्रंथ-नाम	
साहित्य भूषण	३४७
साहित्य रस	५०४
साहित्य सरसी	५७१
साहित्य सुधानिधि	३४०
साहित्य सुधा सागर	३९२
सिंहासन बत्तीसी	१४२,६२९,६३८
सिक्खों का उदय अस्त	६९९
सिक्खों का तुलूअ और गुरूब	६९९
सुंदर विद्या	१४२
सुंदर शतक	५३२
सुंदर श्रृङ्गार	१४२
सुंदर सांख्य	१६३, १६४
सुंदरी तिलक, अध्याय १० की भूमिका	५८१
सुंदरी तिलक नामावली	५८१, ५८३
सुख विधान	१३, १५
सुगा बहत्तरी	६३८
सुजान विनोद	१४०
सुजान सागर	३४७
सुदामा चरित्र	३३, ६३८
सुधा निधि	४३२
सुनीति प्रकाश	१६९
सुबोधिनी	३४, ३४ टि०
सुमिल विनोद	१४०
सूनि सार	६३४
सूम सागर	३०६
सूर सागर	३७, ६३८
सूर्य प्रकाश	३७०
सैंडफोर्ड और मर्टन की कहानी	६९९
स्त्री शिक्षा विधायक	६३८
स्नेह सागर	६३८
स्वयं बोध उर्दू	६९९
स्वरोदय	३०९

ग्रंथ-नाम	
स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षा	६३८
हकायकुल मौजूदात	६९९
हजारा, अध्याय १० की भूमिका,	१५९,३३४,३५८
हनुमत छबीसी	५८४
हनुमत भूषण	५७१
हनुन्नाटक	१७२,५९२
हनुमान नखशिख	१७०
हनुमान नाटक	६३८
हनुमान बाहुक	१२८,६३४
हम्मीर काव्य	६,८
हम्मीर चरित्र	८
हम्मीर रायसा	६,८
हम्मीर रासा	८
हरिनामावली	५२६
हरिवंश	३६०,७१६
हरिवंश दर्पण	५६४
हरिश्चन्द्र कला	५८१,७०६ टि०
हरिश्चन्द्र चन्द्रिका	३७ टि०, ५८१
हाड़ावती	८२०
हातिमताई	६३८
हारमाला, नरसी कृत	६३८
हास्यरस	६१०
हिंडोल	१३
हिन्दी व्याकरण	६९९
हिकायतुल सालिहात	६९९
हित चौरासी	५६
हित तरंगिणी	७९१
हितोपदेश	५१,६२९
हितोपदेश	६३८
हीर राँझा	६३८
होली	१३
होली खगेस	७०६

अनुक्रमणिका ३

स्थान-नाम

अकबरपुर १०६
अजगरा ७३१
अजमेर १६३, ३३४
अजयगढ़ ५४१,५५३
अयोध्या ३४,१२८,६९१,६९२
अन्हल ४
अमरकोट ११३
अमेठी ३१,१६०,२०९,३३२,३३४ ३५९,५८९,६०४
अलवर ८,९,६१
अलीगंज ६६९,७१७,७१८
अलीगढ़ ६३४
अवध (देखिए औध)
अहबन दिकौलिया ७११
अहमदाबाद १६३,६३५,६३६,६३९ ६९१,८९६
असनी ९२,११३,११४,११६,१७३, २४७,९३४
असी १२८
असोथर ३३३–३३९,३४१–३४३, ६४४
आगरा ३७,१७१,३२६
आजमगढ़ ९०६
आनंदपुर १६९
आमेर ४४,१०६,१०९,११४,१९६, ३२५,३३०
इटावा ११९,२१०

स्थान-नाम

इलाहाबाद १२८,७०६
इस्टकापुरी ४७६
ईडर ८०९
ईसा नगर ७१४,७१६
उज्जैन १,६२९,६४२
उदयपुर २० टि०, ४७,१८३,१८४, १८५,१८८,३७१
उनियारा १३५,३७७,६६०
उन्नाव ४२२,४७३,४७९,४८९,५९४, ५९५,६०१,६१८,७२८,७२९, ८०१,९२८
उरछा ५४,१३४–१३७
ऊँचगाँव बरसाना ६६
एकनौर ११९
एकौना ६१५
एटा ६६९
ओरछा—(देखिए उरछा)
औध—अध्याय १० की भूमिका, ३१,१०५,३३२,३५१,३५६, ३६४,३६५, ५७०,५९३, ५९९-६०३,६२४,६९१, ७३२.
कंपिला १६०,१६१,३५९,६६१
कंपिला नगर ४३२
कड़ा मानिकपुर २४३
कनरपी घाट ३६२
कन्नौज १९५,२१७,२६१,३७७,४७७, ६६७,८८३.

स्थान-नाम

करनाल ३४८
करमनासा १७
करौली २१२
कलकत्ता १७
कलुआ ३५१
काकूपुर ४५४,६४५
कौंथा ५९५,७२८
कौंधला ५१,३२२
कानौल ३६३
कान्हपुर १४३,१४४,१४५,१४६,
१४८,४५४,५०८,५२३,५२४,
६३०-३२,६४५,६७६,७०६
कालपी ३१ टि०, १०६
कालिंजर ५३८
काश्मीर ६३
किशुनदासपुर ५७०
कुंभलनेर ३१
कुरुक्षेत्र १२८
कुसमड़ा ? २६१
कैथल ३४८
कोटवा ३२३
कोटा १२७,४०८
खंभात ६९९
खंडासा ९०५
खजूर गाँव ६२१
खीरी ३५१,५९०,६१४,६२२,७१४,
७१६–१८
गंगा १२८
गँधौली ६९७
गाऊघाट ३७
गनेसपुर ९०२

स्थान-नाम

गया ३४,६३३
गलता ४४,५१
गाजीपुर ३२१,८९५
गुजरात २८,३५५,६२९,९१२
गूढ़ गाँव ७९८
गोकुल ३४,३५,३६,३७,४०,
६२,४३७
गोंडा १३०,३३९,३४०,५९६,६९४
गोपाचल ३७,११२
गोलकुंडा १५९
गोला गोकरननाथ ६२२
गोवर्द्धन ३४
ग्वालियर ३७,६०,७१,१४२,१७०,
२२०,६७८,८६५
चंदगढ़ २१०
चंदापुर ६९३,७०९
चंदावन ३२१
चंपारन ३४,६९९
चचेरी ४४६
चकदेवा ५
चकरपुर ६७७
चरखारी, अध्याय १० की भूमिका
१४९,१७०,२०४,३५९ टि०,
५०८,५०९,५१३,५१४,५१७-
२२,५२४,५२५,५३७,५४३
चिंताखेरा ६१७
चित्तौर २,२०,२१,३१
चित्रकूट १२८
चौजीतपुर ५५१
चौरा ३४
चौरा गाँव ५५९,५६४

स्थान-नाम

चौहत्तरी ७२९
छतरपुर १७३,५५६
जंबू १५९
जगन्नाथ ३४
जमसम ३६०
जमुना १२८
जयपुर (देखिए जयपुर)
जहानाबाद ३४१
जहाँगीराबाद सेंहुड़ा २०३
जाजमऊ ४७३
जायस ३१
जालौन ५४९
जूनागढ़ २८
जैतपुर १५४,५४८
जैपुर, अध्याय ९ की भूमिका,८,४४, १८०,३२७,३२८,५०२,५०६, ६२८,६६०,६९९,७५८,८०३
जोधपुर १९०,१९१,१९२,१९३, १९५,२७०,२७१,५८१,७८६,
जोहा बनकटी ६९५
जौनपुर ६८०
ज्वाला ३७
झाँसी ५२६,५३६,५४१,५५५,५५६, ७३३
टिकई ७२१
टिकारी ६३३
टीकमपुर १४३,१४४,१४५,१४६, १४८,५२३,५२४
टेहरी १२४,५३४
डलमऊ १००,१०३,६१२,६२३,७०७
डुमरौंव ६४३

स्थान-नाम

डौंरियाखेरा ३५६,३६४,३६५,४७१
तिरवा ३७७
तिरहुत ७०१,९३०
तिलवँडी २२
दकन ३४,३७,५१
दतिया ९२६
दरभंगा १७,३६०,३६२,३६३,६४१, ६४२,७०२
दासापुर ७१५
दिल्ली ४,१७,३७,११३,१२८,३४७, ३५२,३९५,४३३,६९१
देउतहा ३३९,३४०
देवरा नगर ३५९
दोआब ८७,१३२,१५९,१७६,२९२, ३११,३१९,३३४,३३५,३४५,३५८, ४४२,६७५
दौलतपुर ३३५,३५६,३५७
द्वारिका २०
धनौली ३७३, ६९६
धौलपुर २०२
नगर कोट १०६
नरनौल १०६
नरमदा १२८
नरवर ४५३,४९६
नरवर गढ़ ७१
नरवल ६५९
नरैन १६३
नरैनापुर ७६७
नवल गंज ५९४
नागपुर १४३, ५०५, ५०६
नागर ९१२

स्थान-नाम

नाहिल पुवायाँ ३७४
निगोहा ४६०
निमराना ८,९
निमार ७०
निसगर ७६९
नूरपुर २०६
पंचकोश ५५९, ५६४
पंजाब १२८,३४८,८३२,८७२
पंडितपुर २३
पचरुवा ४९७
पटना १६९,७०५,७३९,७८७,८१४
पटियाला ६९०,७८८
पट्टी ५९३
पन्ना (परना)—अध्याय १० की भूमिका, १४५,१४९,१५२,१५५ २०१,३४६,५०२,५०३,५०४, ५१०,५११,५४४,५४६
पलिया शाहगंज ६००
पसका १२८,१३०
पिहानी ६७,८५,८९
पीर नगर ७१२
पुफावती नगरी ६२९
पुरुषाबाद ४४५
पुरुषोत्तमपुरी १२८
पैतेपुर ५९२,६९२
पैंतेया ७१४
प्रतापगढ़ ७३१
प्रयाग १२८
प्रयागपुर १५०
फतूहाबाद ५९६
फतेहगढ़ ६

स्थान-नाम

फतेहपुर ९२,११३,११४,११६,१७३, २४७,३३३,३३५-३९,३४१-४३, ४७२,६४४, ६५८, ६७९, ६९२, ९३४
फरुंखाबाद ५८९
फैजाबाद २३,६२६,६९१,६९२
बँधुआ ६८६
बघेलखंड अध्याय १० की भूमिका ३५९,५२८,५२९,५३१,५३२
बनपुरा १५९,१७६,३३४,३५८
बनारस, अध्याय १० की भूमिका १३,१६,३४,११३,१२८, १५१, २५६,२८०,३५५, ३७६, ५५९, ८८,६९१,६९९,७०४,७०५,७०६
बरसाना ६६,४६३
बलरामपुर ५९६,६९४
बहराइच १५०,६०५,६०६,६१५
बाँकीपुर ३१,६३३
बाँडेर ४८९
बाँदा १२८,५०२, ५०६,५१२, ५२७, ५३४,५३८,५३९,५४५
बाँधौ (रीवाँ) १२,२४,६०,९२,११३, ११४,५२८-३२, ६२९,७०६
बाँसी ३०
बाग महल ५०३
वाछिल मितौली ६१४
बांजितपुर १७
बाड़ी ३३
बाराबंकी १२६, ३२३, ३७३, ४८३, ४९७,६९६,७२३-७२७,६९८,९०२
बिंदकी ४७२

स्थान-नान

बिगहपुर ५८९,८०१
बिजावर ८,१०६,८९८
विजय नगर ३४
बिलग्राम ९४,१७९,२०९,४०१,४३५, ४३९,४४४, ४४८,४८५,७३०, ७५४
बिलहरी ६२९
बिसपी १७
बिसफी १७
बिसवाँ ६१३
बिहार ३४,७०६
बीकानेर ५,७३
बीरापुर ७२७
बुंदेलखंड, अध्याय १० की भूमिका ७,३१ टि०, ५४, १०३, १३४-१३७, १४९,१५२, १५४,१५५, १६७, १७०,१९७, २००-२०५, २१२,३००, ३०८,३११, ३४२, ३४४,३४६, ३८०, ३८३,३९३, ४०७,४१०, ४११, ४१३,४२०, ४२५, ४२६,४२८, ४५३,४५५, ४५८, ४६४,४६७, ४९२,४९६, ५०१,५०४, ५०९-५११, ५१३, ५१४, ५१७-५२२,५२५, ५३३, ५३५-५३७,५४०-५५७, ५७०, ६२९,७३३,७३४, ८७८, ९२२, ९२६,
बुरहानपुर ७०
बूँदी, अध्याय ९ की भूमिका, १४६, ३३०, ३३४

स्थान-नाम

वृंदावन २०,५४,५९,६१,६४,१२८, १६५,२१८,३१९,३४७,३६१, ७२२, ९४३
बेंती ११३,३३४,४८४,६११,७२०
बेतिया ३४
बैसवाड़ा ३६४,३६५,३७२,४५१, ४९०,६०७,६१९,७०८,७३२
बौंडी ६१५
ब्रज २५,३४,३९,४३,४५,४८-५२, ५५,५९,६१-६९,८४,८७,९३, १६५,१७२,१९६,२२६,२२७, ४३७,६६४,७६३,७६८,७७३, ७७४,८१९,९४२,९४३
ब्रज हसीर १६८
भटिपुरा ७
भटौली ६२६
भरतपुर ६९९
भागलपुर १२८
भिनगा ३४०,६०५,६०६
भूपा ५४२
भूपाल १५८,२१३,२१४
भोगाँव ५७
(?) मंडला ५१६
मऊ २०६
मऊ रानीपुर ५५५,५५६,७३३
मकरंदपुर ६३०,६३१,६३२
मँगरौनी ३६३
मथुरा २९,३७,५२,१२८,३४७,५०७
मद्रास ३४
मधुबन ६२
मलावाँ ४७१

स्थान-नाम

मलीहाबाद १२८
महोबा ७,५३३
माड़ौ ७
मारवाड़ ७६,११३,१४९ पुनश्च १९०, १९१,१९४,१९५,३७०,३७१, ३७७,७८६,८०९
मिथिला १०,२०,२६,१०८,१२४, ३६२,३६३,७००,७०२
मीरापुर ५१,६३९,६४०
मुँरिया ३७५
मुजफ्फर नगर ३२२
मुरादाबाद ९२८
मुर्शिदाबाद ६९९,९१२
मेड़ता २०
मेवाड़ २,६,२१,३१,४७,१६४,१८३-१८९,६७१
मैनपुरी १४०,४४२,६६५
मौरावाँ ४२२,६१८
रणथंभौर ६,८,३७,३७ टि०
रतलाम २०७
रसूलाबाद ७३६
राजगढ़ १५८,२१३,२१४,५५४
राजनगर ५५७
राजापुर १२८
राजपूताना १६३,१६६,१८६,२७८, ३८९,४८९,६६२,७९९,८१७,८२०
रामनगर ५६९,७२६
रामपुर ४२
रायबरेली १००,१०३,११३,३३४, ३५६,४८४,५७०,६११,६१२,६१६, ६१७,६२३,६९३,६९५,७०७,७१९-७२२,८०८

स्थान-नाम

रीवाँ (बाँधौ)–अध्याय १० की भूमिका,१२,२४,६०,९२,११३,११४, ५२८-५३२,६२९,७०६
रुकुम नगर ४६९
लखनऊ ३७,११२,४६०,४८०,५७१, ५९८,६०८,६१२,६२०,६२७,७२१
लखपुरा ६४४
लहर तलाव १३
लहरतारा १०८ परिशिष्ट
लहरपुर १०५,१२८ परिशिष्ट
लाहौर १०५
सतावा ६१६
सपौली ५९७
सबलगढ़ २१०
समथर ६२५
समाने गाँव १४०
साँभर १६३
साढ़ि ५०८,६७६
सातनपुरवा ६२५,६९३
सिंगरा मऊ ७३५
सिंघलदीप ३१
सितारा १४५,१४७
सिरमौर ९०७
सीतापुर ३३,५९२,५९७,६०३, ६९७,७१०-७१५
सुगाबोना १७,१९
सुमेर पुर ६०१
सुलतान पुर ६०४
सूकरखेत १२८
सेमरौता ७२२

स्थान-नाम	
सैदपुर	७१३
सोरों	१२८
शाहजहानाबाद	१२८
शाहजहाँपुर	३७४,३७५,४९४
शाहाबाद	६४३,७३८
शिवराजपुर	४५४,६४५
श्रीनगर	१४६,१५५,५५८
हड़हा	७२५
हथिया	७१५
हमीरपुर	१०६,३७९
हरदोई	६७,८५,८९,९४,१७९,२०९,३४९,४३१,४३५,४३९,४४३,४४४,४४७,४४८,४७१,४८५,६०९,७३०,७५४
हरधौरपुर	६७९
हस्तिनापुर	१२८
हाजीपुर	१२८
हाथरस	६३४,६८४
हिमालय	१२८
हिंदुस्तान	१२८
होलपुर	१२६,४८३,७२३,७२४

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय

C39.8208
J5 Sa38 Te

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

वाराणसी–१ कलकत्ता–७

मुद्रक :

विद्या मन्दिर प्रेस (प्राइवेट) लि.

मानमन्दिर, वाराणसी